JANNAT KE TALABGARO KE LIYE MADANI GULDASTA (HINDI)

हर इस्लामी भाई और बहन के लिये यक्सां मुफ़ीद

जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता

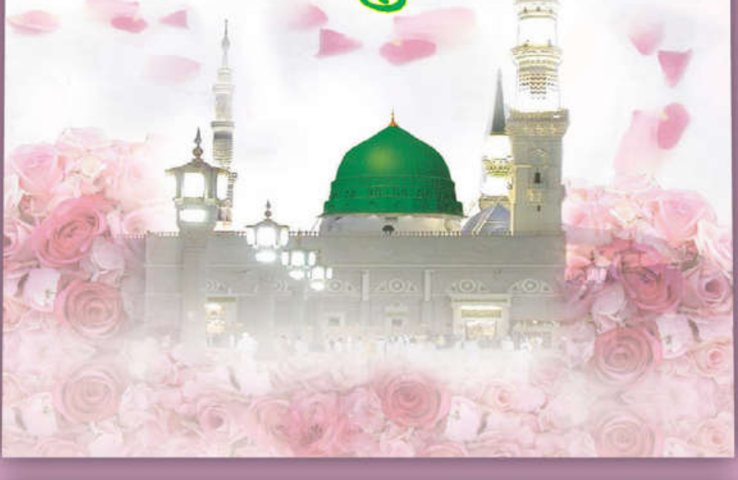

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

المدینۃ العلمیۃ
(دعوت اسلامی)
شعبہ تخریج

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

***अज़* : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़ मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा 'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह किताब "**जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता**" उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबित़ा करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

"म-दनी इन्आ़मात" से मुतअ़ल्लिक़
अहम मा'लूमात व तरग़ीबात

जन्नत के त़लब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता

पेशकश

मजलिसे म-दनी इन्आ़मात व मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)
(शो'बए तख़रीज)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना
देहली - 1 फ़ोन : (079) 25391168

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : **जन्नत के त़लब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता**

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए तख़रीज) और **मजलिसे म-दनी इन्आ़मात**

त़बाअ़ते अव्वल : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सिने 1434 हिजरी

त़बाअ़ते दुवुम : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सिने 1438 हिजरी

नाशिर : 421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁..... **अजमेर** : **मक्तबतुल मदीना**, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385

❁..... **बरेली** : **मक्तबतुल मदीना**, दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994

❁..... **गुलबर्गा** : **मक्तबतुल मदीना**, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503

❁..... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना**, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

❁..... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045

❁..... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना**, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212

❁..... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महारास्ट्र, फ़ोन : 09326310099

❁..... **अनंतनाग** : **मक्तबतुल मदीना**, मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन होल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438

❁..... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना**, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861

❁..... **इन्दोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शोप नम्बर 13, बोम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

❁..... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शोप 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कोम्पलेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अ़रेबिक कोलेज, बेंग्लोर, कर्नाटक : 08088264783

❁..... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना**, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

म-दनी इल्तेजा : किसी और को येह किताब (तख़रीज शुदा) छापने की इजाज़त नहीं।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	6	म-दनी इन्आ़मात का म-दनी जाइज़ा	34
पहले इसे पढ़ लीजिये !	10	घर में म-दनी माहोल बनाने के	
रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	12	19 म-दनी फूल	37
म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-रकत	13	बरोज़े क़ियामत वज़्न दार अ़मल	42
आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के		निज़ामुल अवक़ात की तरकीब बना	
लिये बिशारते उ़ज़्मा	14	लीजिये !	43
सीने का दर्द	14	सुब्ह़ की फ़ज़ीलत	44
पीर शरीफ़ के रोज़े वाला म-दनी इन्आ़म	16	म-दनी इन्आ़मात पर आसानी से	
नेक बनने का नुस्ख़ा	20	अ़मल करने का म-दनी त़रीक़ा	46
अ़ज़ीमुल मर्तबत उ़मूर, इस्तिक़ामत	21	याद करने और पढ़ने-सुनने का	
म-दनी मुहा़सबा	22	म-दनी निसाब	61
आइये, ग़ौर करें !	23	इस्लामी बहनें तवज्जोह फ़रमाएं	62
हि़कमते अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ	25	ख़ाने पूर करने का त़रीक़ा	79
शरीअ़त व त़रीक़त	25	इजतिमाई फ़िक्रे मदीना का त़रीक़ा	80
फ़ैज़ाने औलियाए किराम رحمہم اللہ السلام	29	म-दनी वज़ाहतें (4 क़ाइदे)	83
हर एक के लिये अ़मल करना आसान	32	सामाने म-दनी इन्आ़मात	85
दुआ़ए अ़त्तार	33	26 सेकन्ड्ज़ में इनफ़िरादी कोशिश	86
शैत़ान का ख़त़रनाक वार	33	बयान का आसान त़रीक़ा	87
		नमाज़े बा जमाअ़त और तकबीरे	
		ऊला के फ़ज़ाइल	90

www.dawateislami.net

आ'माल का मुहासबा (फ़िक्रे मदीना)	94	सूरतुल फ़ातिहा	125
फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत का आसान तरीक़ा	109	सूरतुल फ़ील	129
एक वक़्त में दो जगह जलवा नुमाई	110	सूरतुल कुरैश	130
निगाहों की हिफ़ाज़त और फ़ुज़ूल गोई से बचने का म-दनी तरीक़ा	113	सूरतुल माऊन	131
गुफ़्त्गू की चार क़िस्में	114	सूरतुल कौसर	132
गुफ़्त्गू का मुहासबा	116	सूरतुल काफ़िरून	133
अगर जन्नत दरकार हो तो	116	सूरतुन्नस्र	134
गुफ़्त्गू लिख कर मुहासबा करने वाले बुज़ुर्ग	116	सूरतुल लहब	135
बात चीत के मुहासबे का तरीक़ा	117	सूरतुल इख़्लास	137
लिख कर बात करने की आदत बनाने का तरीक़ा	118	सूरतुल फ़लक़	138
ज़बान और निगाह की हिफ़ाज़त की ब-र-कतें	119	सूरतुन्नास	139
ख़्वाब था या हक़ीक़त	119	दुआए कुनूत, अत्तहिय्यात	141
मेरे नसीब यूं जागे	121	दरूदे इब्राहीम	142
याद करने का म-दनी निसाब		दुआए मासूरा	143
अज़ान	122	छे कलिमे	143
अज़ान के बा'द की दुआ	123	इमाने मुफ़स्सल	146
इक़ामत	124	इमाने मुजमल	147
		बालिग़ मर्द व औरत के जनाज़े की दुआ	147
		ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ	147

www.dawateislami.net

ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ	148	त़लाक़े किनाया का बयान	314
तलबिय्यह (लब्बैक)	148	**हि़स्सए मिन्हाजुल आ़बेदीन**	
पढ़ने-सुनने का म-दनी निसाब		तौबा का बयान	320
		तक़्वा का बयान	338
हि़स्सए बहारे शरीअ़त		कान की हि़फ़ाज़त का बयान	353
मुर्तद का बयान	149	आंख, पेट, दिल और ज़बान की	
नजासतों का बयान	170	हि़फ़ाज़त का बयान	355
नजिस चीज़ों (कपड़े वग़ैरा) के पाक		रजा व ख़ौफ़ का बयान	364
करने का त़रीक़ा	181	इख़्लास का बयान	380
झूट का बयान	195	उ़जब का बयान	395
ग़ीबत और चुग़ली का बयान	202	**मुतफ़र्रिक़ात**	
बुग़्ज़ व ह़सद का बयान	225	जिन की नमाज़े क़ज़ा हैं ......!	435
तकब्बुर का बयान	231	क़ज़ा नमाज़ें पढ़ने का आसान त़रीक़ा	436
वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान	233	नवाफ़िल की जगह क़ज़ाए उ़मरी पढ़िये	436
शादी शुदा इस्लामी भाईयों		ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना के 12	
और इस्लामी बहनों के लिये		म-दनी फूल	438
महरमात का बयान	245	आंखों के क़ुफ़्ले मदीना के 12	
हुक़ूक़े ज़ौजैन का बयान	267	म-दनी फूल	440
बच्चों की परवरिश का बयान	274	केसिट इजतिमाअ़ के 12 म-दनी फूल	443
त़लाक़ का बयान	283	सूरतुल मुल्क	445
ज़िहार का बयान	296	श-ज-रए आ़लिय्या क़ादरिय्या	
		अ़त्तारिय्या	457
		माख़ज़ व मराजेअ़	459

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"शेड्यूल फ़िक्रे मदीना कीजिये" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "19 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم **:**

"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(الجامع الصغیر،الحدیث۹۳۲۶،ص۵۵۷، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ि़यादा, उतना सवाब भी ज़ि़यादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्खे़ पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾15﴿दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، ج۲،ص۴۰۷، رقم: ۱۷۳۱،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा ﴾17﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा فَسْئَلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۙ (پ ۱۴، النحل: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।

पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴾18﴿ जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगा ﴾19﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه *का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड और पेम्फ़लेट मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाइयें।*

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा** मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस " **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-रकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **म-दनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

पहले इसे पढ़ लीजिये !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को एक **मुक़र्ररा वक़्त** तक के लिये **ख़ास मक़सद** के तह़्त इस दुन्या में भेजा है, इरशादे बारी तआ़ला है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾
(پ۱۸،المؤمنون:۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं ।*

"**तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुक़द्दसा के तह़्त लिखा है : और (क्या तुम्हें) **आख़िरत** में जज़ा के लिये उठना नहीं ! बल्कि तुम्हें **इबादत के लिये पैदा किया** कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे **आ'माल की जज़ा दें ।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **ज़िन्दगी** बहुत मुख़्तसर है इसी में क़ब्रो ह़श्र के त़वील तरीन मुआ़मलात के लिये तय्यारी करनी है, ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते है : जल्दी करो ! जल्दी करो ! **तुम्हारी ज़िन्दगी क्या है ?** येही सांस तो हैं कि अगर रुक जाएं तो तुम्हारे उन आ'माल का सिलसिला भी मुन क़त़अ़ हो जाए जिन से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करते हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जिस ने **अपना जाइज़ा लिया और अपने गुनाहों पर चन्द आंसू बहाए ।**

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت و ما بعدہ، بیان المبادرة الی العمل...الخ، ج۵، ص۲۰۵)

लिहाज़ा ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर कीजिये कि हमारा **मक़्सदे ह़यात** क्या है ? अब तक हम ने अपनी ज़िन्दगी किस त़रह़ गुज़ारी ? नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र और मीज़ान व पुल सिरात़ पर **हमारा क्या बनेगा ?** हमारे वोह अ़ज़ीज़ो

www.dawateislami.net

अक़ारिब जो हम से पहले दुन्या से रुख़्सत हो गए क़ब्र में न जाने उन के साथ क्या हो रहा होगा ? اِنْ شَآءَاللّٰہ इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने से लज़ाइज़े दुन्या से छुटकारा, ज़िन्दगी के क़ीमती लमह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद करने से **नजात** और मौत की याद की ब-रकत से **नेकियों की रग़बत** के साथ साथ अज्रे कसीर भी ह़ासिल होगा, चुनान्चे

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : (**आख़िरत के मुआमले में**) **घड़ी भर** के लिये **ग़ौरो फ़िक्र** करना 60 साल की इ़बादत से बेहतर है।

(الجامع الصغیرللسیوطی،الحدیث:۵۸۹۷،ص۳۶۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **मक़्सदे ह़यात** को समझने और **दुन्या व आख़िरत बेहतर** बनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** को अपना लीजिये । चुनान्चे आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! मुसलमानों की **दुन्या व आख़िरत बेहतर** बनाने के लिये सुवाल नामे की सूरत में इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, दीनी त़-लबा के लिये **92**, और दीनी त़ालिबात के लिये **83** जब कि म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40**, (ख़ुसूसी या'नी गूंगे और बहरे इस्लामी भाइयों के लिये **27** और क़ैदियों के लिये **52**) **म-दनी इन्आ़मात** पेश किये गए हैं। म-दनी इन्आ़मात का रिसाला **मक्तबतुल मदीना** से मिल सकता है, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ इस को पुर कर के **म-दनी माह की** 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाना होता है। **अपने गुनाहों का एह़तेसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाइज़ा लेते हुए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में फ़िक्रे मदीना करना कहते हैं।**

www.dawateislami.net

आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये, अगर फ़िलह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, आ'ला **ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان **की पच्चीसवीं शरीफ़** की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम 25 सेकन्ड्ज़ के लिये इस को देख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले को भरने का ज़ेहन बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल मग़फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और रोज़ाना पाबन्दी से **फ़िक्रे मदीना** करने वाले कितने ख़ुश नसीब और सआ़दत मन्द होते हैं इस का अन्दाज़ा लगाने के लिये चन्द म-दनी बहारें मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ! चुनान्चे

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करना मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए,** अभी मैं उस प्यारे प्यारे

www.dawateislami.net

रुखे़ रौशन के जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अलफ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए :

"जो म-दनी क़ाफ़िले में रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं,
मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।"

शुक्रिय्या क्यूं कर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा | *कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया*

(वसाइले बख़्शिश, स. 172)

म-दनी इन्आ़मात ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा कर दिया है ! इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे

म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-रकत

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ का बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे बड़े भाई जान को **म-दनी इन्आ़मात** का एक रिसाला तोह़फ़े में दिया। वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ारमोला दे दिया गया है ! बस येह **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला** उन की ज़िन्दगी में **म-दनी इनक़िलाब** ले आया इस की ब-रकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को नमाज़ का जज़्बा मिला और नमाजे़ बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के नमाज़ी बन चुके हैं, **दाढ़ी मुबारक** भी सजा ली और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला भी पुर करते हैं।

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू झड़ी

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस म-दनी बहार से लगाइये। चुनान्चे

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़मा

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़लफ़िया बयान है कि माहे रजबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अलफ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए :

जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।**

म-दनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है *क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वास्त़े सोग़ात है*

सीने का दर्द

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक फ़ौजी इस्लामी भाई का बयान है, "मैं ने तीस दिन के **म-दनी क़ाफ़िले में** सफ़र के दौरान इस्लामी भाइयों से कहा : पहले के बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن किस क़दर रियाज़ात व इ़बादात बजा लाते थे और एक हम हैं कि अगर्चे सुन्नतें सीखने के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर हैं मगर हमें अच्छा खाना और इत़मीनान से सोना मिल जाता है, नीज़ रियाज़ात व इ़बादात के लिये भी सख़्त मशक़्क़तों का सामना नहीं करना पड़ता। येह कहते हुए मेरे जज़्बाते क़ल्बी मु-तलात़िम हो गए और मैं रोने लगा यहां तक कि रोते रोते मेरी हिचकियां बन्ध गईं, मेरी सोच येह थी कि हम जैसे आराम त़लब लोग क़ुर्बे ख़ुदावन्दी किस त़रह़ ह़ासिल करेंगे ? यकायक मेरे **सीने में शदीद दर्द** उठा और मुझ पर ग़ुनूदगी

www.dawateislami.net

त़ारी हो गई, आंखें तो क्या बन्द हुईं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से मेरे दिल की आंखें खोल दीं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं ने ख़्वाब में देखा, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं साथ ही सरकारे बग़दाद हुज़ूरे गौसे पाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ भी मौजूद हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक होंटों को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे, अलफ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए। **''तेरे सीने का दर्द तेरे गुनाहों को धो रहा है।''** फिर हुज़ूर गौसे पाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाने लगे : बेशक इस दौरे पुर फ़ितन में ''जो कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इख़्लास के साथ **''म-दनी इन्आ़मात''** के मुत़ाबिक़ अ़मल करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह **''वली''** बन जाएगा और उस की हर दुआ़ **मक़्बूल** होगी। सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह सुन कर मुस्कुराने लगे।''

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नफ़्ल रोज़ा रखना बहुत बड़ी सआ़दत है, **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **म-दनी इन्आ़मात** में नफ़्ली इ़बादात का शौक़ दिलाते हुए हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रखने की तरग़ीब दिलाई है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कसीर इस्लामी भाई पीर शरीफ़ के रोज़े का एहतिमाम करते हैं, इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ! चुनान्चे

www.dawateislami.net

पीर शरीफ़ के रोज़े वाला म-दनी इन्आ़म

ग़ालिबन 1992 की बात है, बलूचिस्तान के शहर सबी के एक इस्लामी भाई ने कुछ यूं बताया कि तवज्जोहे मुर्शिद से मेरा **म-दनी इन्आ़मात** पर पाबन्दी से अ़मल था, बिल ख़ुसूस हर **पीर शरीफ़ का रोज़ा** रखने वाले **म-दनी इन्आ़म** से बहुत मह़ब्बत थी और एक अ़र्से से इस का मा'मूल भी था। इस साल **12 रबीउ़न्नूर शरीफ़** पीर के दिन आई और 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ को तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तह़्त पाकिस्तान के तक़रीबन तमाम शहरों और दुन्या के कई ममालिक में जश्ने विलादत की ख़ुशी में अ़ज़ीमुश्शान जूलूस का एहतिमाम किया जाता है लिहाज़ा बा'द ज़ोहर जुलूसे मीलाद में शिर्कत की भी तरकीब थी, मुझे तशवीश होने लगी कि सबी शहर की गर्मी पाकिस्तान भर में मशहूर है, रोज़ा रख कर दोपहर के वक़्त जुलूसे मीलाद में कैसे शिर्कत करूंगा, मगर **पीर शरीफ़** के रोज़े वाले **म-दनी इन्आ़म** से मह़ब्बत ने मुझे रोज़ा रखने पर मजबूर कर दिया, अब जुलूसे मीलाद में शिर्कत का वक़्त आया तो फिर हिम्मत टूटने लगी, शशो पन्ज में पड़ गया कि क्या करूं मगर **जुलूसे मीलाद का शौक़ मुझे** न रोक सका और मैं भी जुलूस के साथ चल पड़ा। शदीद गर्मी, तेज़ धूप, गर्म हवा और प्यास की शिद्दत के मारे कुछ ही देर में ह़ालत ग़ैर होने लगी, कई बार ऐसा लगा कि गिर पडूंगा, ज़ेह्न में आया कि रोज़ा तोड़ दूं मगर मैं ऐसा न कर सका, ख़ैर, जैसे तैसे घर पहूंचा और बिस्तर पर आ कर पड़ गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने रोज़ा पूरा किया रात को जब सोया तो मेरी सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, क्या देखता हूं कि दो नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग जल्वा फ़रमा हैं और दोनों बहुत ख़ुश नज़र आ रहे हैं।

www.dawateislami.net

जिन का चेहरा ज़ियादा रौशन था उन्हों ने अपने साथ मौजूद बुज़ुर्ग की जानिब इशारा कर के मुझ से पूछा इन्हें जानते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं, उन्हों ने फ़रमाया : येह **जिब्राईले अमीन** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ والتسليم हैं, येह सुन कर जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ والتسليم ने उन की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया : इन्हें जानते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं, तो फ़रमाया : येह तुम्हारे नबी **ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم हैं और मेरी आंख खुल गई।

मनाना जश्ने मीलादुन्नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे　जुलूसे पाक में जाना कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे

लगाते जाएंगे हम या रसूलल्लाह के ना'रे　मचाना मरह़बा की धूम भी हरगिज़ न छोड़ेंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **"जन्नत के त़लब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता"** आप के हाथों में है। आप भी **जन्नत** के लिये कमरबस्ता हो जाइये और म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल शुरूअ़ कर दीजिये ! बल्कि (इस्तिक़ामत पाने के लिये) दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइये। शायद आप के ज़ेह्न में आए : **म-दनी इन्आ़मात** क्या हैं ? इन पर अ़मल कैसे किया जाए ? क्या मुझ जैसा गुनहगार और बे अ़मल भी इन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कर सकता है ? क्या मैं दूसरों को तरग़ीब दिला सकता हूं वग़ैरा। आप से **म-दनी इल्तिजा** है कि **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ इस म-दनी गुलदस्ते को अव्वल ता आख़िर तवज्जोह के साथ मुकम्मल पढ़ लें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो आप भी **म-दनी इन्आ़मात** के आ़मिल बन जाएंगे और **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए दूसरों को भी इन की तरग़ीब दिलाएंगे।

www.dawateislami.net

इस म-दनी गुलदस्ते में **म-दनी इन्आ़मात** से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीलात मौजूद हैं मसलन **म-दनी इन्आ़मात** की अहम्मिय्यत व ज़रूरत, इन पर अ़मल करने और करवाने की तरग़ीब, इस में पेश आने वाली रुकावटों और वस्वसों का ह़ल, फ़िक्रे मदीना और इस पर इस्तिक़ामत का त़रीक़ा, फ़िक्रे मदीना करने वालों के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की दुआ़ओं का तज़्किरा, इजतिमाई फ़िक्रे मदीना का त़रीक़ा, 26 सेकन्ड्ज़ में **इनफ़िरादी कोशिश**, बयान का आसान त़रीक़ा, आंखों और ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना के म-दनी फूल, लिख कर बात करने का त़रीक़ा, घर में **म-दनी माह़ोल** बनाने के 19 म-दनी फूल, नीज़ अपने रोज़ मर्रह मा'मूलात में **म-दनी इन्आ़मात** का निफ़ाज़ कैसे किया जाए वग़ैरा। याद करने का निसाब मसलन अज़ान व इक़ामत, अज़ान की दुआ़, छे कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुजमल, दुआ़ए क़ुनूत वग़ैरा और बहारे शरीअ़त और मिन्हाजुल आ़बिदीन से जिन जिन अबवाब को पढ़ना या सुनना **म-दनी इन्आ़मात** में शामिल है वोह अबवाब भी इस गुलदस्ते में शामिल कर दिये गए हैं। ज़िम्मादारान के लिये **म-दनी इन्आ़मात** की तरग़ीब दिलाने और अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये इस म-दनी गुलदस्ते में बेहतरीन म-दनी फूल हैं इन्हें चुन कर ख़ूब इन की ख़ुश्बू फैलाएं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को **म-दनी इन्आ़मात** का आ़मिल बनाए और दौलते इख़्लास से माला माल फ़रमाए, आमीन।

जदीद तरतीब व इज़ाफ़े के साथ इस म-दनी गुलदस्ते में दर्जे ज़ैल उमूर का ख़याल रखने की कोशिश की गई है।

❁ जदीद तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ कम्प्यूटर कम्पोज़िंग जिस में रुमूज़े अवक़ाफ़ (फ़ुल स्टॉप, कोमाज़ वग़ैरा) का मक्दूर भर एहतिमाम किया गया है ❁ एह़तियात के साथ मुक़र्रर प्रूफ़ रीडिंग ❁ आयाते क़ुरआनिया, अह़ादीसे मुबारका और फ़िक़्ही मसाइल की तफ़्सील (किताब, बाब, फ़स्ल, जिल्द

www.dawateislami.net

और सफ़्ह़ा नम्बर) के साथ अस्ल माख़ज़ से ह़त्तल मक्दूर तख़रीज व तत़बीक़ ❁ तख़रीज की तफ़्तीश ❁ अ़-रबी इ़बारात और आयाते क़ुरआनिया के मतन की तत़बीक़ ❁ मिन्हाजुल आ़बिदीन के मख़्सूस अबवाब मौलाना मुह़म्मद सईद अह़मद नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَوِى के तर्जमे से लिये गए हैं अलबत्ता बा'ज़ मक़ामात पर तस्हील कर दी गई है। ❁ बहारे शरीअ़त के अबवाब में भी तस्हील और बा'ज़ मक़ामात पर इस्त़िलाह़ात की ता'रीफ़ात का बैनुल क़ुवैसीन "()" इलतिज़ाम किया गया है जब कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की हिलालैन की इ़बारात के लिये येह अन्दाज़ "[ ]" इख़्तियार किया गया है। ❁ अकसर मुश्किल अलफ़ाज़ पर (तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की निय्यत से) ऐ'राब का एहतिमाम भी किया गया है। ❁ आयाते क़ुरआनिया का तर्जमा इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से दिया गया है (अलबत्ता बहारे शरीअ़त से लिये गए अबवाब में सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का तर्जमा बर क़रार रखा है और कन्ज़ुल ईमान का ज़ौक़ रखने वालों के लिये हाशिये में तर्जमए कन्ज़ुल ईमान का एहतिमाम किया गया है) और ❁ आख़िर में माख़ज़ व मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मोअल्लिफ़ीन के नामों, उन के सिने वफ़ात और मत़ाबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि इस किताब को पेश करने में उ़-लमाए किराम دامت فيوضهم ने जो मेह़नत व कोशिश की उसे क़बूल फ़रमा कर इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इ़ल्मो अ़मल में ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلّم

शो'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

नेक बनने का नुस्ख़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्तारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़्ह़ा 12 पर ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है, दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है।"

(سنن النسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلاۃ...الخ، الحدیث:۱۲۹۴، ج۱، ص۲۲۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारा हर काम चाहे अच्छा हो या बुरा उस का असर हमारे बात़िन या'नी दिल पर ज़रूर पड़ता है और दिल को जिस्म का बादशाह कहा जाता है, ब हुक्मे ह़दीस : "अगर येह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त रहता है और येह ख़राब हो तो पूरा जिस्म ख़राब हो जाता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب فضل من استبرء لدینہ، الحدیث:۵۲، ج۱، ص۳۳)

इन्सान जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक **सियाह नुक़्ता** लगा दिया जाता है ह़त्ता कि गुनाहों की कसरत दिल को सियाह कर देती है और इस पर नेकी की बात असर नहीं करती। जब इन्सान नेकी करता है तो नेकी का असर ब हुक्मे क़ुरआनी येह है कि "नेकियां गुनाहों को ख़त्म कर देती हैं।" (پ۱۲، ھود:۱۱۴) चुनान्चे नेकियों की ब-रकत से दिल **साफ़ व शफ़्फ़ाफ़** हो जाते हैं और इन्सान साह़िबे रूह़ानिय्यत हो जाता है फिर वोह बड़ी बड़ी इ़बादात व मुजाहदात पाबन्दी व इस्तिक़ामत के साथ बजा लाता है।

www.dawateislami.net

अ़ज़ीमुल मर्तबत उमूर

मन्क़ूल है कि सरकारे **ग़ौसे आ'ज़म** और **सय्यिदुना इमामे आ'ज़म** رَحِمَهُمَا اللّٰهُ الْاَکْرَم ने चालीस बरस इ़शा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई (بہجۃ الاسرار، ذکرطریقہ، ص ۱٦٤) हुज़ूर सय्यिदुना **ग़ौसुल आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने पच्चीस बरस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हुए इ़राक़ शरीफ़ के जंगलात में गुज़ार दिये। (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعاً بشیٔ من عجائب، ص ۱۱۸)۔ कई कई दिन फ़ाक़े किये। इसी त़रह़ दीगर मुजाहदात भी बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल हैं। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने कई कई बरस मुसल्सल रोज़े भी रखे। रोज़ाना तीन तीन सो, पांच पांच सो और **हज़ार हज़ार नवाफ़िल** अदा किये। रोज़ाना पूरा कुरआने पाक तिलावत कर लेते, कई कई हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा करते। येह सब कैसे हो जाता और पाबन्दी के साथ ऐसे अ़ज़ीमुल मर्तबत उमूर किस त़रह़ अन्जाम दे लेते थे......?.......?

आख़िर वोह कौन सी त़ाक़त थी

इस्तिक़ामत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़ाक़त का नाम रूह़ानिय्यत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा इस ने'मते उ़ज़्मा के सबब मुश्किल तरीन मुआ़मलात भी आसान तर हो जाते हैं और रफ़्ता रफ़्ता **इस्तिक़ामत** भी मिल जाती है, मगर इब्तिदाअन हमें अपने नफ़्स पर जब्र करना होगा, इस के इ़बादात की त़रफ़ माइल न होने के बा वुजूद लगे रहना होगा। जब कुछ अ़र्से की मशक़्क़त के बा'द रूह़ानिय्यत की किरनें दिल को मुनव्वर करेंगी तो इस के सबब इस्तिक़ामत

www.dawateislami.net

भी ह़ासिल हो जाएगी । बुजु़र्गों का येह मक़ूला भी ख़ूब है "اَلْاِسْتِقَامَةُ فَوقَ الْكَرَامَةِ(سبع سنابل، ص ۴۴)" या'नी इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है । मगर इस के लिये हर अ़मल इख़्लास से पुर होना ज़रूरी है जभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **फ़ज़्ल भी शामिले ह़ाल होगा ।**

म-दनी मुह़ासबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होना भी दर ह़क़ीक़त रूह़ानिय्यत ही की तलाश है । हम ग़ौर करें कि.......

﴾1﴿ हम **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से क्यूं वाबस्ता हुए.....? ﴾2﴿ वोह कौन सा जज़्बा था जिस ने हमें इस **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने पर मजबूर किया.....? ﴾3﴿ क्या सोच कर और किस **मक़्सद** के तह़त हम ने सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** को अपनाया......?

क्यूंकि हर काम चाहे दीनी हो या दुन्यवी, इस का कोई मक़्सद ज़रूर होता है ताकि इस को सामने रख कर जल्द अज़ जल्द अपनी मंज़िल को पाया जा सके ।

इसी त़रह़ हम भी इस **म-दनी माह़ोल** से एक **मक़्सद** के तह़त ही वाबस्ता हुए, अगर हम ग़ौर करते हुए अपनी वाबस्तगी के इब्तिदाई रिक़्क़त भरे लम्ह़ात याद करें जब हम नए नए **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए तो क्या उस वक़्त ज़ेहन के किसी गोशे में भी येह था कि हम किसी **मन्सब को पाने के लिये म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो रहे हैं ।

www.dawateislami.net

हरगिज़ नहीं बल्कि ह़क़ीक़तन हमारे साथ तो यूं हुवा कि एक "**वलिय्ये कामिल**" (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) की तवज्जोह और "**दा'वते इस्लामी**" के **म-दनी माह़ोल** ने हमारे दिल में हलचल पैदा की और कुछ इस्लामी भाई हमारी वाबस्तगी का सबब बने जिन्हों ने **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ हमारा येह ज़ेह्न बनाया कि हम जैसे कमज़ोर व ना तुवां, गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वालों के लिये **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी माह़ोल** बहुत बड़ा सहारा है। बस हम अपनी आख़िरत संवारने के मुक़द्दस जज़्बे के साथ **गुनाहों से बचने और नेकियां करने** का ज़ेह्न ले कर इस **म-दनी माह़ोल** की त़रफ़ बढ़े और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी के हो कर रह गए।

आइये ग़ौर करें

कहीं ऐसा तो नहीं ! कि हम जिस मक़्सद को ले कर इस **म-दनी माह़ोल** के क़रीब हुए थे, आज ना दानिस्ता अपने इस मक़्सद को भुलते जा रहे हों। कहीं हमें **दोबारा** वाबस्ता होने की ज़रूरत तो नहीं ? क्यूंकि वाबस्ता कहलाना और है और वाबस्ता होना और .....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई यूं कहे कि **नेकियों** में दिल नहीं लगता, **नमाज़ों** में लुत़्फ़ नहीं आता, **तिलावत** की त़रफ़ दिल माइल नहीं होता। **सुन्नतों** पर अ़मल में सुस्ती रहती है। न **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र होता है न ही **मद्रसे** में मज़ा आता है। **नमाज़े फ़ज्र** के लिये उठा नहीं जाता, **इजतिमाअ़** में भी ज़बर दस्ती आता हूं, आह ! **रूह़ानिय्यत** नाम की कोई शै मैं अपने अन्दर नहीं पाता। पहले नेकियों में **लज़्ज़त** मिलती थी, अब नहीं मिलती।

www.dawateislami.net

पहले ना'तों में ख़ूब **रोता** था मगर अब दिल की **सख़्ती** के बाइ़स रोना भी नहीं आता..... या बा'ज़ इस्लामी भाइयों का, मस्जिद में मद्रसा न लगने या **ता'दाद कम** हो जाने पर तो दिल उदास हो मगर नमाज़ में दिल न लगने या **जमाअ़त छूटने** पर कम होने वाली नेकियों पर कोई रन्ज त़ारी न हो। ह़ल्के़ में **बद मज़गी** हो जाने पर फ़िक्र मन्द हों मगर ज़बान से **फ़ुज़ूल बातें** निकलें या (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَل) **बद निगाही** की आफ़त में जा पड़ें तो फ़िक्र तो दूर की बात **माथे पर शिकन** भी न आए। **म-दनी कामों** की कमी पर रन्जीदा तो हों मगर अ़मल में सुस्ती से होने वाली **बरबादी और तबाही पर** ध्यान न हो, कोई ज़िम्मादार **नाराज़** हो जाए तो परेशान हों, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी के ख़ौफ़ से ख़ुद को मह़रूम पाएं तो कहीं ऐसा तो नहीं कि **दीनी कामों की गहमा गहमी में हम ने म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी के अस्ल मक़्सद को भूला दिया हो।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़लाके़ में **म-दनी काम** कम होने के बाइ़स दिल कुढ़ना यक़ीनन सआ़दत है मगर इस के साथ साथ अपने **म-दनी मक़्सद** की जानिब भी ध्यान रखना ज़रूरी है, जिसे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक जुम्ले में समो दिया है (या'नी)

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَل

ऐसा नहीं होना चाहिये कि **नेक बनाने का जज़्बा** तो बर क़रार रहे, मगर **नेक बनने का जज़्बा** कम हो जाए।

www.dawateislami.net

हि़क्मते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी काम की पुख़्तगी के लिये उस के ज़िम्मेदारान का ख़ुद मज़बूत़ व बा हौ़सला होना बहुत ज़रूरी है, जभी उन के ज़रीए़ होने वाले काम पाएदार व देरपा होगा। इस की मिसाल हमारे सामने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की मुबारक ज़ात है कि जब आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने नेकी की दा'वत देने का इरादा फ़रमाया तो ख़ुद को फ़क़त़ 72 नहीं बल्कि बे शुमार म-दनी इन्आ़मात से मुज़य्यन फ़रमाया फिर तक़्वा व परहेज़ गारी का पैकर बन कर जब आप ने नेकी की दा'वत की सदा बुलन्द फ़रमाई तो इस की ब-र-कतें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की सूरत में सारी दुन्या में आम होने लगीं, इसी लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने "**म-दनी इन्आ़मात**" के ज़रीए़ हमें तक़्वा व परहेज़गारी की राह पर चलाने की कोशिश की है। आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "**म-दनी काम में तरक़्क़ी, अख़्लाक़ी तरबिय्यत व तक़्वा मिले इस ग़रज़ से मैं ने म-दनी इन्आ़मात का सिल्सिला शुरूअ़ किया।**"

शरीअ़त व त़रीक़त

याद रखिये ! हम एक ऐसी मज़हबी तह़रीक से वाबस्ता हैं जिस में **शरीअ़त व त़रीक़त** दोनों का रंग अपनी ब-र-कतें लुटा रहा है। येह **म-दनी इन्आ़मात** एक तह़रीक के अमीर ही नहीं बल्कि एक वलिय्ये कामिल के इरशादात हैं जिन का मक़्सद अपने मुरीदीन, त़ालिबीन, मोहि़ब्बीन और तमाम उम्मते मुस्लिमा में फ़राइज़ व

वाजिबात की पाबन्दी और सुनन व मुस्तह़ब्बात पर अ़मल का जज़्बा पैदा करने के साथ साथ अख़्लाक़िय्यात की दुरुस्ती और तक़्वा व परहेज़गारी के ज़रीए ख़ुसूसी निखा़र पैदा करना है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरत्तब कर्दा "**म-दनी इन्आ़मात**" को देख कर ऐसा मह़सूस होता है गोया सेकड़ों साल पहले इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى अपनी मशहूरे ज़माना तस्नीफ़ "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" में इन की अहम्मिय्यत व ज़रूरत बयान फ़रमा गए हैं और इन **म-दनी इन्आ़मात** का निफ़ाज़ आप के भी पेशे नज़र था चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

(जन्नतियों को जन्नत में दाखि़ले के वक़्त कहा जाएगा)

येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी। (پ ۲۹، الدهر: ۲۲)

इस आयत से मा'लूम हुवा कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जन्नत में जाना उसे नसीब होगा जिस ने दुन्या में कोशिश की और ख़ुदा की बन्दगी में मसरूफ़ रहा। इस लिये हम ने इबादत की ह़क़ीक़त में नज़र की, इस के त़रीक़ों पर ग़ौर किया, इस के बुन्यादी उमूर व मक़ासिद पर नज़र दौड़ाई तो ग़ौर करने से मा'लूम हुवा कि इबादत में इस्तिक़ामत निहायत दुश्वार व मुश्किल है इस राह में निहायत तंग व तारिक घाटियां उ़बूर करना पड़ती हैं। शदीद मशक़्क़तों का सामना करना पड़ता है, बड़ी बड़ी आफ़ात रास्ते में पेश आती हैं और मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचने में बहुत सी रुकावटें दरपेश हैं इस रास्ते में गूनागूं हलाक और तबाह कुन चीज़ें मख़्फ़ी हैं, अल ग़रज़ इस रास्ते का ऐसा मुश्किल और पेचीदा होना ज़रूरी है क्यूंकि येह जन्नत का रास्ता है

www.dawateislami.net

और जन्नत में पहुंचना आसान नहीं और इबादत का इतना मुश्किल होना हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस इरशाद की तस्दीक़ करता है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सुन लो, जन्नत ख़िलाफ़े नफ़्स काम करने से ह़ासिल होगी और दोज़ख़ में लोग शहवात की पैरवी की वजह से जाएंगे ।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنةوصفة نعیمها و اهلها،الحدیث:۲۸۲۲،ص ۱۵۱۲)

एक और ह़दीसे पाक में है : "सुन लो कि जन्नत ऊंचे टीले पर पथरीली ज़मीन की त़रह़ है और दोज़ख़ सेह़न में नर्म व हमवार ज़मीन की मानिन्द है ।"

(مسند احمد بن حنبل ، مسند عبدالله بن العباس الحدیث:۳۰۱۷،ج ۱،ص ۷۰۰)

फिर इबादत से मुतअ़ल्लिक़ा मुश्किलात के साथ साथ इन्सान एक कमज़ोर मख़्लूक़ है और वोह त़रह़ त़रह़ की सुऊ़बतों (मुश्किलों) में मुब्तला है और दीन के मुआ़मले में आदमी की सोच तरक़्क़ी के बजाए तनज़्ज़ुल (ज़वाल) की त़रफ़ माइल है फिर दुन्यवी मसरूफ़िय्यात भी बहुत हैं और इबादत के लिये वक़्त बहुत कम । इधर इन्सान की उ़म्र बहुत थोड़ी है और मज़ीद येह कि इन्सान आ'माले सालेह़ा की बजा आवरी में बहुत ला परवाही करता है । ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वग़ैरा का ख़याल बहुत कम रखता है और जिस पाक ज़ात ने आ'माल को परखना है वोह "**समीअ़ व बसीर**" है । मज़कूरा तमाम तर मुश्किलात के साथ साथ मौत हर घड़ी क़रीब से क़रीब तर चली आ रही है और इन्सान को जो सफ़र दरपेश है वोह बहुत त़वील है ।

www.dawateislami.net

इन तमाम मुश्किलात में घिरे हुए इन्सान को मा'लूम होना चाहिये कि इस ख़त़रनाक और अहम तरीन सफ़र का तौशा (ज़ादे राह) इख़्लास के साथ इबादत कर के ह़ासिल किया जा सकता है और सफ़र में ज़ादे राह का होना निहायत ज़रूरी है और इस ज़ादे राह की तय्यारी का वक़्त तेज़ी से गुज़र रहा है और हरगिज़ फिर पलट कर नहीं आने वाला। जो शख़्स इस थोड़े से वक़्त में ज़ादे राहे आख़िरत तय्यार करने में काम्याब हो गया समझ लीजिये कि वोह नजात पा गया और हमेशा के लिये सआ़दत ह़ासिल कर ली, लेकिन जिस ने इस अनमोल वक़्त को फ़ुज़ूल गोई या नफ़्स परस्ती की मजालिस और गफ़लतों में गुज़ार दिया और ज़ादे आख़िरत जम्अ़ न कर सका वोह ना काम व ना मुराद रहा और तबाह व बरबाद होने वालों में से हो गया।

मज़्कूरा वुजूहात के **बाइस** सफ़रे आख़िरत की तय्यारी जिस क़दर मुश्किल है इस से कहीं ज़ियादा अहम भी है। इस लिये इस सफ़र के लिये कमर बस्ता होने वाले बहुत थोड़े हैं और फिर जम कर इस्तिक़्लाल से इस सफ़र की मनाज़िल तै करने वाले इस से भी कम हैं। **"मगर मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचने वाले ही ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को प्यारे हैं"** इन्ही को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मह़ब्बत व मा'रिफ़त के लिये मुन्तख़ब किया और इन्ही लोगों को रब तआ़ला तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है। फिर येही लोग जन्नत के ह़क़दार हैं और उस की रिज़ा का मक़ाम पाते हैं। तो हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें अपनी रह़मत से सआ़दत मन्द करे और कामयाब लोगों में शामिल करे। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم (منہاج العابدین، مترجم، ص ۱۰)

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "नेकी की दा'वत" आ़म करने के मन्सब को अगर हम समझने की कोशिश करते हुए औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام की मुबारक ज़िन्दगियों पर ग़ौर करें तो पता चलता है कि जब भी दीन में मुख़्तलिफ़ फ़ित्ने पैदा हुए, बाति़ल अ़क़ाइद की दा'वत और बद आ'मालियां आ़म होने लगीं और लोग नेकी के रास्ते से दूर होने लगे तो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام ने आगे बढ़ कर दीन में पैदा होने वाले इस **बिगाड़ को ख़त्म करने** और मह़बूब صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **सुन्नतों को ज़िन्दा** करने का बेड़ा उठाया और गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले लोगों में, इजतिमाई व इनफ़िरादी त़ौर पर नेकी की दा'वत के ज़रीए़ म-दनी इन्क़िलाब बरपा फ़रमाया। लोग उन के हाथों पर **ताइब व मुरीद** हो कर शरीअ़त व त़रीक़त की पाबन्दी करने लगे, फिर उन्हों ने इन्हें अपने रंग में रंग कर सुन्नतों का जज़्बा और इ़बादत के शौक़ के साथ दीन का दर्द अ़त़ा फ़रमा कर, ह़स्बे मरातिब इन्हें किसी "ज़िम्मादारी का ताज" पहना कर हुक्म दिया कि जाओ और **म-दनी इन्आ़मात** के आ़मिल बन कर (या'नी तक़्वा व परहेज़गारी अपना कर) **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र के ज़रीए़ इनफ़िरादी व इजतिमाई कोशिश करते हुए लोगों तक "नेकी की दा'वत" पहुंचा कर उन्हें इसी म-दनी रंग में रंग दो जिस में तुम्हें मैं ने रंगा है ताकि **अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का सिल्सिला जारी व सारी रहे।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام की इनफ़िरादी व इजतिमाई कोशिशों और नेकी की दा'वत की ब-र-कतों से आज तक दीने इस्लाम का चमन लहलहा रहा है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लहलहाता रहेगा।

www.dawateislami.net

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहा़नी शख़्सिय्यत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

आज के इस पुर फ़ितन दौर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक "**वलिय्ये कामिल**" को उम्मत की इस्लाह़ के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया जिसे दुन्याए अहले सुन्नत **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम से पुकारती है, इन का त़रीक़ा भी सलफ़ सालेह़ीन व औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ है। गुनाहों की दलदल में धंसे हुए लाखों मर्द व ज़न बिल ख़ुसूस नौ जवान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **की निगाहे विलायत** की ब-रकत से नेकी के रास्ते पर गामज़न हो गए। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इन्हें सिल्सलए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या के ज़रीए **सरकारे बग़दाद हु़ज़ूरे गौसे पाक** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की गुलामी का पट्टा अ़त़ा फ़रमा कर अपने रंग में रंगा और सुन्नतों की मह़ब्बत और नेकी की दा'वत का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाया। (इस से मुतअ़ल्लिक़ सेकडों म-दनी बहारें मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रिसालों में पढ़ी जा सकती हैं)

जिस त़रह़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام अपने मुतअ़ल्लिक़ीन (या'नी तअ़ल्लुक़ रखने वालों) को मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियां अ़त़ा फ़रमाते रहे इसी त़रह़ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने भी सारी दुन्या में मज़हबे मुहज़्ज़ब मस्लके अहले सुन्नत की तक़विय्यत

www.dawateislami.net

के लिये मर्कज़ी मजलिसे शूरा, इन्तिज़ामी काबीनात व मजालिस का एक मज़बूत़ म-दनी निज़ाम अ़त़ा फ़रमाया जिस की ब-रकत से लाखों आ़शिक़ाने रसूल सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज सजाए, **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए सारी दुन्या में सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ लोगों को इस रंग में रंगने में मसरूफ़ हैं जिस रंग में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इन्हें रंगा है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम चाहते हैं कि दुन्या के कोने कोने में **कुरआनो सुन्नत** की दा'वत आ़म हो और बद अ़क़ीदगी व बे अ़मली के ख़ातिमे के साथ साथ हमें रूहा़निय्यत भी हा़सिल रहे तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **"म-दनी इन्आ़मात"** के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल बेहतरीन ज़रीआ़ है। (**म-दनी इन्आ़मात** से मुतअ़ल्लिक़ वज़ाह़ती बयान اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप आगे मुलाह़ज़ा फ़रमाएंगे।)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं कि **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना चूंकि दुन्या व आख़िरत के बे शुमार फ़वाइद पर मुश्तमिल है लिहाज़ा शैत़ान इस बात की भरपूर कोशिश करेगा कि आप को इस्तिक़ामत न मिले, मगर आप हिम्मत न हारें और मेहरबानी फ़रमा कर दूसरे इस्लामी भाइयों को भी **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की तरग़ीब दिलाते रहें। दो या एक बार कहने से अगर कोई अ़मल न करे तो

www.dawateislami.net

मायूस न हो जाया करे बल्कि मुसल्सल कहते रहें। कानों में बार बार पड़ने वाली बात कभी न कभी दिल में भी उतर ही जाएगी। याद रखियें अगर एक भी इस्लामी भाई ने आप के समझाने पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के लिये सवाबे जारिय्या हो जाएगा, आप को सुकूने क़ल्ब ह़ासिल होगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप के अ़लाक़े में कुरआनो सुन्नत का म-दनी काम न सिर्फ़ चलेगा बल्कि दौड़ेगा, नहीं नहीं इस के तो पर लग जाएंगे और बे साख़्ता मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ उड़ना शुरूअ़ कर देगा** और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में आप का बेड़ा पार होगा।

कुछ नेकियां कमा ले, जल्द आख़िरत बना ले कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

हर एक के लिये अ़मल करना आसान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप के पास कोई दीनी मन्सब हो या न हो, आप ने दाढ़ी, इमामा और म-दनी लिबास अपनाया हो या नहीं या आज पहली मरतबा ही "**इन म-दनी इन्अ़ामात**" के ज़रीए "**दा'वते इस्लामी**" के **म-दनी माह़ोल** से मुतअ़ारिफ़ हो रहे हों आप भी "**म-दनी इन्अ़ामात**" के मुत़ाबिक़ आसानी से अ़मल कर सकते हैं, याद रखिये, हम कितने भी मसरूफ़ हों اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ "**म-दनी इन्अ़ामात**" के मुत़ाबिक़ अ़मल करने से न हमारे दुन्यवी **काम काज** मुतअस्सिर होंगे न ही **ता'लीम** में ह़रज होगा और न ही हमारे घरबार और **कारोबार** के मुआ़मलात में रुकावटें होंगी बल्कि रुकावटें दूर होंगी, क्यूंकि "**म-दनी इन्अ़ामात**" के मुत़ाबिक़ अ़मल करने वालों को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस त़रह़ अपनी दुआ़ओं से नवाज़ रहे हैं :

www.dawateislami.net

दुआए अ़त्तार : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को **मदीनए मुनव्वरा** के सदा बहार फूलों की त़रह़ **मुस्कुराता** रखे कभी भी आप की **ख़ुशियां** ख़त्म न हों, ह़यात व ममात (मौत), बरज़ख़ व सकरात (ह़ालते नज़्अ़) और क़ियामत के जांसोज़ लमह़ात में हर जगह **मसर्रतें** और शादमानियां नसीब हों, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की और तमाम **क़बीले की मग़फ़िरत** करे, **जन्नतुल फ़िरदौस** में आप को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تعالیٰ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जवार अ़त़ा फ़रमाए।

(اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं कि जब मुझे मा'लूम होता है कि फ़ुलां इस्लामी भाई या इस्लामी बहन का "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल है तो दिल बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना हो जाता है। या सुनता हूं कि फ़ुलां ने ज़बान और आंखों का या इन में से किसी एक का "क़ुफ़्ले मदीना" लगाया है तो अ़जीब कैफ़ो सुरूर ह़ासिल होता है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दुआ़ और आप की तरग़ीब का अन्दाज़ देख कर मह़सूस होता है कि **दुन्या और आख़िरत की बेहतरी** के ख़्वाहिश मन्द हर मुसलमान को चाहिये कि वोह **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने वाला बन जाए।

शैत़ान का ख़त़रनाक वार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल में सुस्ती की एक वजह इस का मुश्किल मह़सूस होना भी है। इस लिये शैत़ान की कोशिश होती है कि कोई "**म-दनी इन्आ़मात**" का

www.dawateislami.net

रिसाला पढ़ न सके और येह वस्वसा डालता है कि येह तो बहुत मुश्किल है। मैं **72 म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ किस त़रह़ अ़मल कर सकता हूं ? **इस त़रह़ रिसाला ह़ासिल करने और इस की ख़ाना पुरी करने से रोक लेता है ।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह शैत़ान का ख़त़रनाक वार है। (जो हमें नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने से मह़रूम रखना चाहता है) अगर हम कुछ तवज्जोह दें और इन **म-दनी इन्आ़मात** पर ग़ौर करें तो हमें अन्दाज़ा होगा कि इन के मुत़ाबिक़ अ़मल करना मुश्किल नहीं बल्कि आसान है । क्यूंकि हमें रोज़ाना 72 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल नहीं करना बल्कि रोज़ाना जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना है उस के तीन दरजे हैं पहला और दूसरा दरजा 17 और तीसरा सिर्फ़ 16 **म-दनी इन्आ़मात** पर मुश्तमिल है। इबतिदाअन चाहें तो तीनों दरजों से **चन्द म-दनी इन्आ़मात** का इन्तिख़ाब कर लें और इन के मुत़ाबिक़ अ़मल शुरूअ़ कर दें।

8 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन पर हफ़्ते में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है, 6 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन पर महीने में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है और 8 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन पर 12 माह में **सिर्फ़ एक बार** अ़मल करना है ।

म-दनी इन्आ़मात का म-दनी जाइज़ा

वस्वसा : इतना मसरूफ़ दौर, फिर हर त़रफ़ से गुनाहों की यलग़ार और नेकियों पर अ़मल दुश्वार। इन ह़ालात में म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल के लिये इसरार, क्या म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल इस क़दर ज़रूरी है ?

www.dawateislami.net

जवाबे वस्वसा : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में जो **म-दनी इन्आ़मात** अ़त़ा फ़रमाए हैं उस में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीके़ ही तो दिये हैं, आइये हम शैत़ान के तमाम वस्वसों को दूर करते हुए ग़ौर करें तो मा'लूम होगा कि ....

इन म-दनी इन्आ़मात में बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात फ़राइज़ व वाजिबात पर मुश्तमिल हैं या'नी शरई त़ौर पर हर मुसलमान पर लाज़िम हैं और इन पर तवज्जोह दे कर अपना मा'मूल न बनाने पर आख़िरत में शदीद पकड़ की वई़द है । (जैसा कि फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी और ह़राम कर्दा चीज़ों से इजतिनाब नीज़ कुछ **म-दनी इन्आ़मात** सुन्नतों और मुस्तह़ब्बात पर मुश्तमिल हैं ।) इन **म-दनी इन्आ़मात** में से बा'ज़ **म-दनी इन्आ़मात** नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ हैं (मसलन पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में बा जमाअ़त ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की सअ़्य के साथ अदा करना, सुन्नते क़ब्लिय्या और नवाफ़िले बा'दिया वग़ैरा की आ़दत बनाना) **बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात ज़बान और निगाह की ह़िफ़ाज़त के त़रीक़ों पर मुश्तमिल हैं** (मसलन ह़त्तल मक्दूर निगाहें नीची रखना, फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकालने के लिये ज़रूरी गुफ़्तगू भी कम लफ़्ज़ों में या लिख कर करना वग़ैरा ।)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता न भी होते फिर भी नमाज़ तो पढ़नी ही थी और बदनिगाही से बचना भी लाज़िमी था। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** ने मज़ीद आसानी फ़रमा दी है ।

www.dawateislami.net

मज़ीद 6 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन का तअ़ल्लुक़ मुतालए़ से है (मसलन बहारे शरीअ़त और मिन्हाजुल आ़बिदीन के मख़्सूस अबवाब का मुत़ालआ़) ।

बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात के ज़रीए़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें ऐसे गुनाहों से बचने का म-दनी ज़ेहन अ़ता फ़रमा रहे हैं जो मुआ़शरे में आ़म हैं और जिन की त़रफ़ हमारी तवज्जोह नहीं, मसलन राज़ की बात की हि़फ़ाज़त करना, झूट, ग़ीबत(1) चुग़ली, हसद तकब्बुर, वा'दा ख़िलाफ़ी, फ़िल्में-डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा से ख़ुद को मह़फ़ूज़ रखना।

बा'ज़ **म-दनी इन्आ़मात** के ज़रीए़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने अख़्लाक़ी निखा़र पैदा करने की कोशिश फ़रमाई है।** जैसे **ग़ुस्सा** आ जाने पर चुप साध कर **दर गुज़र** से काम लेना, "**जी**" कहने की आ़दत डालना, दूसरे की बात सुनने के बजाए उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ करने की आ़दत निकालना, तू तुकार से बचते हुए **आप जनाब** से गुफ़्तगू की आ़दत डालना, **क़ह्क़हा** लगाने से गुरेज़ करना, फ़ुज़ूल बात निकलने पर **इस्तिग़फ़ार या दुरूद शरीफ़** पढ़ना, हफ़्ते में कम अज़ कम एक मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर ग़मख़्वारी करते हुए **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** की तरग़ीब दिलाना नीज़ घर में **म-दनी माह़ोल** बनाने के लिये 19 म-दनी फूल वग़ैरा के मुत़ाबिक़ मा'मूल बनाना।

मदीना

(1) इस मौज़ूअ़ पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मशहूरे ज़माना तसनीफ़ "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" का मुत़ालआ़ इन्तिहाई ज़रूरी व मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

"या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में "म-दनी माह़ोल" बनाने के 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये ﴾2﴿ वालिदा या वालिद साहि़ब को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइए ﴾3﴿ दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहि़ब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाऊं चूमा करें ﴾4﴿ वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, उन से आंखें हरगिज़ न मिलाए, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये ﴾5﴿ उन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर्अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये ﴾6﴿ सन्जीदगी अपनाइये, घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर ग़ुस्से हो जाने, खाने में ऐ़ब निकालने, छोटे भाई-बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बह़सें करते रहने की अगर आप की आ़दतें हों तो अपना रविय्या यकसर तबदील कर दीजिये, हर एक से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये । ﴾7﴿ घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी । ﴾8﴿ मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी "**आप**" कह कर ही मुख़ात़िब हों । ﴾9﴿ अपने मह़ल्ले की मस्जिद में इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख

www.dawateislami.net

खुल जाए वरना कम अज़् कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) मयस्सर आए और फिर काम काज में भी सुस्ती न हो। ﴾10﴿ घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिलसिला हो और आप अगर सर परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए, सब को नर्मी के साथ **मक्तबतुल मदीना** से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो केसिटें, ऑडियो / विडियो सीडीज़ सुनाइये-दिखाइये, **म-दनी चेनल** दिखाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "म-दनी नताइज" बर आमद होंगे। ﴾11﴿ घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र सब्र और सब्र कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो "**म-दनी माह़ोल**" बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है। ﴾12﴿ **म-दनी माह़ोल** बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स **ज़रूर ज़रूर ज़रूर** दीजिये या सुनिये। ﴾13﴿ अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिल सोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है **اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِن** : "या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है।" (المستدرک للحاکم،ج۲،ص۱۶۲، الحدیث:۱۸۵۵) ﴾14﴿ सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए़ शरई न हो। ﴾15﴿ **मसाइलुल कुरआन**

www.dawateislami.net

सफ़ह़ा 290 पर है : हर नमाज़ के बा'द अव्वल व आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ के साथ येह कु़रआनी दुआ़ एक बार पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में **म-दनी माह़ोल** क़ाइम होगा : (दुआ़ येह है)

(اَللّٰھُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾

(''اَللّٰھُمَّ'' आयते कु़रआनी का हि़स्सा नहीं) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी अवलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़गारों का पेश्वा बना* (پ ۱۹، الفرقان:۷۴) ﴾16﴿ ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 12 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबारका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِیْدٌ ﴿۲۱﴾ فِیْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾

(***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कु़रआन है लौह़े मह़फ़ूज़ में*) (پ۳۰،البروج:۲۱،۲۲) (अव्वल-आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़)

याद रहे ! बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है ख़ुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए ख़ास कर बीवी अपने शौहर पर येह अ़मल न करे । ﴾17﴿ नीज़ ना फ़रमान अवलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आसमान की त़रफ़ रुख़ कर के ''یَاشَھِیْدُ'' 21 बार पढ़िये । (अव्वल-आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

www.dawateislami.net

﴾18﴿ **म-दनी इन्अ़ामात** के मुत़ाबिक़ अ़मल की आ़दत बनाइये और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो अवलाद में नर्मी और ह़िकमते अ़-मली के साथ **म-दनी इन्अ़ामात** का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से घर में म-दनी इनक़िलाब बरपा हो जाएगा। ﴾19﴿ पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ़ कीजिये। **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-रकत से भी घरों में **म-दनी माह़ोल** बनने की "**म-दनी बहारें**" सुनने को मिलती हैं।

سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के पुर ह़िक्मत तरबिय्यती म-दनी फूलों की महक से मह़सूस होता है कि अगर वालिदैन येह चाहते हैं कि हमारी अवलाद ना फ़रमानी छोड़ कर फ़रमां बरदार बन जाए तो उन्हें अपनी अवलाद को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता कर देना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो वोह **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कतों और इस ज़माने के सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मुस्तफ़ीज़ हो कर वालिदैन के इत़ाअ़त गुज़ार और बा अदब बन जाएंगे।

(बल्कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के अन्दाज़े तरबिय्यत से तो यूं मह़सूस होता है कि आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ चाहते हैं कि आज का हर मुसलमान ऐसा बा किरदार हो कि उसे किसी भी ज़ाविये से परखा जाए तो येह बेहतर ही नज़र आए।)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी इन्अ़ामात में ऐसे इन्अ़ामात भी हैं जो म-दनी माह़ोल की ब-रकत से तन्ज़ीमी त़ौर पर पहले ही से नाफ़िज़ हैं और जिन के बारे में माहाना कारकर्दगी लेने का सिलसिला भी जारी है जिस की वजह से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अकसर म-दनी इन्अ़ामात पर हमें अ़मल करने का मौक़अ़ भी मिलता है।

जैसा कि रोज़ाना **दो दर्स** देना या सुनना, कम अज़ कम दो इस्लामी भाइयों को **म-दनी इन्अ़ामात** और **म-दनी क़ाफ़िले** की **तरग़ीब** दिलाना, म-दनी कामों में कम अज़ कम **दो घन्टे** सर्फ़ करना, **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) में पढ़ना या पढ़ाना और फ़ारिग़ होते ही इ़शा की जमाअ़त से **दो घन्टे** के अन्दर घर पहुंचना, चन्द एक ही की दोस्ती से बचना, मर्कज़ी मजलिसे शूरा व दीगर मजालिस और अपने निगरान की **इत़ाअ़त करना,** किसी से इख़्तिलाफ़ की सूरत में दूसरों पर इज़्हार न करना, जो **म-दनी माह़ोल** से दूर हो गए तन्ज़ीमी तरकीब के तह़्त उन की **वाबस्तगी** के लिये कोशिश करना और दौराने गुफ़्तगू **दा'वते इस्लामी** की **इस्त़िलाह़ात** का इस्ति'माल नीज़ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये कोशिश करना। (हफ़्ते में एक बार) इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत, सारी रात ए'तिकाफ़, बा'द इजतिमाअ़ मुलाक़ात, अ़लाक़ाई दौरा में शिर्कत, नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल मक्तूब भेजना, **केसिट या** VCD **इजतिमाअ़ और मस्जिद इजतिमाअ़** में शिर्कत। (महीने में एक बार) रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए **म-दनी इन्अ़ामात** का रिसाला पुर कर के अपने ज़िम्मेदार को

www.dawateislami.net

जम्अ़ करवाना। जदवल के मुत़ाबिक़ **तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करना, एक को तरग़ीब दिला कर **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने के लिये तय्यार करना और **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करवाना। हर बारह माह में तीस दिन के लिये और उ़म्र भर में **यक मुश्त बारह माह** के लिये सफ़र करना।

बरोज़े क़ियामत वज़्न दार अ़मल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ग़ौर करने से मा'लूम हुवा कि इन **म-दनी इन्आ़मात** का निफ़ाज़ इतना मुश्किल नहीं जितना मह़सूस होता है। अगर हम इख़्लास के साथ कोशिश करें तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इन **म-दनी इन्आ़मात** पर ब आसानी अ़मल कर सकते हैं। **सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم इरशाद फ़रमाते हैं : जो अ़मल दुन्या में जितना दुश्वार होगा बरोज़े क़ियामत मीज़ान में उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा। (تذکرۃ الاولیاء،ذکر ابراھیم بن ادھم، ص ۹۵)

जब हम हिम्मत कर के **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल शुरूअ़ करेंगे तो हो सकता है कि इबतिदाअन मुश्किल मह़सूस हो मगर फिर ब तदरीज اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आसानी हो जाएगी। हर मुश्किल काम का येही उसूल है।

> ***सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा*** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *का **फ़रमाने अ़ज़मत** निशान है :*
>
> اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِہٖ وَیَدِہٖ *या'नी **मुसलमान** वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे **मुसलमान मह़फ़ूज़** रहें।*
>
> (صحیح البخاری،الحدیث:۱۰،ج۱،ص۱۵)

www.dawateislami.net

निज़ामुल अवक़ात की तरकीब बना लीजिये और जमाअ़ते इ़शा से दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये

तमाम **म-दनी इन्आ़मात** के निफ़ाज़ के लिये जदवल की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते है : "**इबादात और रियाज़ात** में **वक़्त** की बहुत अहम्मिय्यत है इस लिये रोज़ाना के **निज़ामुल अवक़ात** तरतीब दीजिये।" चुनान्चे अपने रिसाले "**अनमोल हीरे**" में यूं इरशाद फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो अपना यौमिय्या निज़ामुल अवक़ात तरतीब दे लेना चाहिये। अव्वलन इ़शा की नमाज़ पढ़ कर ह़त्तल इमकान दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। रात को फ़ुज़ूल चोपाल लगाना, होटलों की रोनक़ बढ़ाना और दोस्तों की मजलिसों में वक़्त गंवाना (जब कि कोई दीनी मस्लह़त न हो) बहुत बड़ा नुक़्सान है। तफ़सीरे रुहुल बयान, जिल्द 4 सफ़ह़ा नम्बर 166 पर है : "**क़ौमे लूत़ की तबाह कारियों में से येह भी था कि वोह चौराहों पर बैठ कर लोगों से ठठ्ठा मस्ख़री करते थे।**"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़ उठिये ! दोस्त ब ज़ाहिर कैसे ही नेक सूरत हों उन की दिल आज़ार और ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार से ग़ाफ़िल कर देने वाली महफ़िलों से तौबा कर लीजिये। रात को दीनी मशाग़िल से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाइये कि रात का आराम दिन के आराम के मुक़ाबले में ज़ियादा सिह़्ह़त बख़्श है और ऐन फ़ित़रत का तक़ाज़ा भी। चुनान्चे पारह 20 सूरतुल क़सस आयत नम्बर 73 में इरशाद होता है :

www.dawateislami.net

وَمِنۡ رَّحۡمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَ النَّهَارَ لِتَسۡكُنُوۡا فِيۡهِ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस ने अपनी मेहर (रह़मत) से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल ढूंडो (या'नी कसबे मआ़श करो) और इस लिये कि तुम ह़क़ मानो ।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَنَّان "नूरुल इरफ़ान" सफ़ह़ा 629 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि कमाई के लिये दिन और आराम के लिये रात मुक़र्रर करनी बेहतर है। रात को बिला वजह न जागे, दिन में बेकार न रहे अगर मा'ज़ूरी (मजबूरी) की वजह से दिन में सोए और रात को कमाए तो ह़रज नहीं जैसे रात की नोकरियों वाले मुलाज़िम वग़ैरा ।

सुब्ह़ की फ़ज़ीलत

निज़ामुल अवक़ात मुतअ़य्यन करते हुए काम की नोइय्यत और कैफ़िय्यत को पेशे नज़र रखना मुनासिब है। मसलन जो इस्लामी भाई रात को जल्दी सो जाते हैं सुब्ह़ के वक़्त वोह तरो ताज़ा होते हैं। लिहाज़ा इल्मी मशाग़िल के लिये सुब्ह़ का वक़्त बहुत मुनासिब है। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ "तिरमिज़ी" ने नक़्ल की है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत के लिये सुब्ह़ के अवक़ात में ब-रकत अ़ता फ़रमा।" (ترمذی ج۳ ص۶ حدیث ۱۲۱۶)

चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी (या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) मेरी उम्मत के तमाम उन दीनी व दुन्यावी कामों में ब-रकत दे जो वोह सुब्ह़ सवेरे किया करें जैसे सफ़र, त़लबे इल्म, तिजारत वग़ैरा ।(मिरआतुल मनाजीह़, जि, 5 स, 491)

www.dawateislami.net

कोशिश कीजिये कि सुब्ह़ उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक सारे कामों के अवक़ात मुक़र्रर हों मसलन इतने बजे तहज्जुद, इ़ल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तकबीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र (इसी त़रह़ दीगर नमाज़ें भी) इशराक़, चाश्त, नाश्ता, कसबे मआ़श, दो पहर का खाना, घरेलू मुआ़मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोह़बत (अगर येह मुयस्सर न हो तो तन्हाई बदरजहा बेहतर है), इस्लामी भाइयों से दीनी ज़रूरियात के तह़त मुलाक़ात वग़ैरा के अवक़ात मुतअ़य्यन कर लिये जाएं। जो इस के आ़दी नहीं हैं उन के लिये हो सकता है शुरूअ़ में कुछ दुश्वारी पेश आए। फिर जब आ़दत पड़ जाएगी तो इस की ब-र-कतें भी ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

दिन लह्व में खोना तुझे, शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं
रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया, फ़रमाने ह़क़ टाला किया
शुक्रे करम तर्से जज़ा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

(बयानाते अ़त्तारिय्या, हि़स्सए सिवुम, स.19)

अगर हम आयन्दा सफ़ह़ात पर दिये हुए म-दनी इन्आ़मात पर आसानी से अ़मल करने के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारने की कोशिश करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन म-दनी इन्आ़मात की ब-र-कतें ह़ासिल कर सकेंगे।

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात पर आसानी से अ़मल करने का म-दनी त़रीक़ा

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा 72 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने का जज़्बा रखने वाले इसे ज़रूर पढ़े ।

यक़ीनन हर अ़मल मेरा तेरी नज़रों से क़ाइम है ......

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : जो कोई **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ इख़्लास के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करेगा तो **वोह** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **प्यारा बन जाएगा** और आप उस के लिये दुआ़ फ़रमाते हैं कि या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! जो तेरी रिज़ा के लिये इन **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल करे उसे इस से पहले मौत न दे जब तक वोह मदीना न चूम ले **याद रखें** ! मौत तमाम तर सख़्तियों समेत पीछा किये चली आ रही है अ़न क़रीब मरना, अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा । **यक़ीनन वोह लोग ख़ुश नसीब हैं जो मरने से पहले मौत की तय्यारी कर लेते हैं, काश ! हम अपना रोज़ाना का मा'मूल इस त़रह़ बना लें !**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से रोज़ाना सोने से क़ब्ल (1) हर वक़्त **बा वुज़ू** रहने की निय्यत के साथ वुज़ू कर के (2) **सलातुत्तौबा**, (3) **आयतुल**

www.dawateislami.net

कुरसी, तस्बीहे फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہا **, सूरतुल इख़्लास नीज़ सूरतुल मुल्क, सोने की दुआ** और **सोते वक़्त के अवराद** वग़ैरा पढ़ कर (4) यकसूई के साथ **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासबा करते हुए जिन जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी कर के) (5) **सुन्नत बॉक्स** जिस में (आईना, सुर्मा, कन्घा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल और क़ैंची मौजूद हो) सिरहाने रख कर **सुन्नत** की निय्यत से **चटाई** और न होने की सूरत में **ज़मीन** पर सो जाएं और मदीने की यादों में खो जाएं।

म-दनी एह़तियातें

मुमकिन हो तो पाजामे या शलवार पर एक चादर तहबन्द की त़रह़ बांध लें ताकि नींद में भी **पर्दे में पर्दा** रहे। घर से बाहर भी इस की आ़दत बनाएं। एक तकिये पर या एक चादर में दो इस्लामी भाई हरगिज़ न सोएं। हमेशा दो इस्लामी भाइयों के दरमियान कम अज़ कम चार फ़िट का फ़ासिला रखें। मुमकिन हो तो कोई चीज़ बीच में रख लें मगर ऐसा बेग न रखें जिस में कोई किताब या तह़रीर हो। दूसरे के पाऊं इस त़रफ़ होने का अन्देशा हो तो सुन्नत बॉक्स भी वहीं सिरहाने रखें जिस के ऊपर या अन्दर किसी क़िस्म की तह़रीर या लेबल वग़ैरा न हो। इसी त़रह़ ता'वीज़ और जेब की तह़रीर निकाल कर मह़फ़ूज़ जगह पर रख दें ताकि किसी और सोने वाले के पाऊं इस त़रफ़ न हों, आप के अपने पाऊं भी किसी तह़रीर की त़रफ़ तो नहीं हो रहे येह ग़ौर कर लिया करें और इन बातों का हमेशा ख़याल रखा करें।

बा अदब बा नसीब *बे अदब बे नसीब*

www.dawateislami.net

सुब्हे़ सादिक़

काश ! सुब्हे़ सादिक़ से आधा घन्टा क़ब्ल बेदार हो कर **बिस्तर** और **लिबास** हमेशा तह कर के रखने की निय्यत के साथ तह कर लें। (6) **तहिय्यतुल वुज़ू** की निय्यत के साथ **तहज्जुद** अदा फ़रमा लें। (7) **अज़ान व इक़ामत** के वक़्त ख़ामोश रह कर **जवाब** दें फिर (8) **सदाए मदीना** (1) लगाते हुए कम अज़् कम किसी एक इस्लामी भाई को अपने साथ मस्जिद में ला कर (9) **सुन्नते क़बलिया** अदा फ़रमाएं।

नमाज़े फ़ज्र

(10) फिर बा जमाअ़त मअ़ तकबीरे ऊला पहली सफ़ में (11) **ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़** पैदा करने की कोशिश करते हुए नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाएं (दीगर नमाज़ों में भी इसी त़रह़ **एह़तिमाम** फ़रमाएं)

मदीना

सदाए मदीना के वक़्त एह़तियात

❶ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इरशाद फ़रमाते हैं कि अज़ाने फ़ज्र के बा'द बिग़ैर मेगा **फ़ोन** दो दो इस्लामी भाई **सदाए मदीना** लगाएं (मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये सदा लगा कर उठाने को **दा'वते इस्लामी** की इस्तिलाह़ में सदाए मदीना कहा जाता है) मगर इस बात का ख़याल रखिये कि इतनी **ज़ोरदार** आवाज़ें न हों कि मरीज़ों, बच्चों और जो इस्लामी बहनें घर में नमाज़ में मशग़ूल हों या पढ़ कर दोबारा लेट गई हों **उन को तशवीश हो**। दर्स बयान करने, ना'त शरीफ़ पढ़ने और स्पिकर चलाने वग़ैरा में हमेशा नमाज़ियों, तिलावत करने वालों और सोने वालों की ईज़ा रसानी से बचना **शरअ़न वाजिब है**। कहीं ऐसा न हो कि हम ज़ाहिरी इबादत से ख़ुश हो रहे हों मगर इस में दूसरों की परेशानी का बाइस बन कर ह़क़ीक़त में مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **गुनाहगार और दोज़ख़ के ह़क़दार बन रहे हों।**

अमीरे अहले सुन्नत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

www.dawateislami.net

बा'द नमाज़ दुआ़ के आदाब का लिहाज़ रखते हुए खुशूअ़ व खुज़ूअ़ के साथ दुआ़ मांगे। बा'द नमाज़ आयतुल कुरसी, सूरतुल इख़्लास और तस्बीहे़ फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا पढ़ लें, फिर (12) फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम **दो दर्स** (मस्जिद, घर, दुकान, बाज़ार वग़ैरा में जहां सुहूलत हो) रोज़ाना देने या सुनने की निय्यत के साथ (13) **पर्दे में पर्दा** के एहतिमाम के साथ **क़िब्ला रू** दर्स में शिर्कत फ़रमाएं। (निगाहें नीची किये जितनी देर मुमकिन हो दो ज़ानू हो कर बैठें हमेशा दर्सो बयान में इसी त़रह़ बैठने की कोशिश फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं मगर इसरार न फ़रमाएं।)

इनफ़िरादी कोशिश

दर्स से फ़राग़त के बा'द (14) कम अज़ कम दो इस्लामी भाइयों को **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ **म-दनी क़ाफ़िला** व **म-दनी इन्आ़मात** और दीगर म-दनी कामों की तरग़ीब दिलाएं (ताकि सुब्ह़ से ही हमारा ज़ेह्न **इनफ़िरादी कोशिश** के लिये तय्यार हो जाए) (15) सर पर सब्ज़ सब्ज़ **इमामा शरीफ़** (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो), अगर बढ़ती हों तो **जुल्फ़ें, एक मुश्त दाढ़ी,** सफ़ेद कुर्ता कली वाला सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिन्डली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमाया मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर रखने के मा'मूल के साथ (सर पर सफ़ेद चादर और **पर्दे में पर्दा** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना) सारा दिन अ़मल की निय्यतों का अ़ज़्म लिये **म-दनी हुल्या** अपनाइये।

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं

बयान कर्दा **म-दनी हुल्ये** में जब किसी इस्लामी भाई को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ बल्कि **बाग़े मदीना** हो जाता है। **दुआ़ए अ़त्त़ार :** या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और मदनी हुल्ये में रहने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में लग रहा है म-दनी हुल्ये में वोह कितना शानदार

(16) अब कम अज़ कम तीन आयात की तिलावत मअ़ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान शरीफ़** व तफ़्सीर (अगर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पढ़ना दुश्वार मा'लूम हो तो मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की तफ़्सीर नूरुल इरफ़ान पढ़ें कि काफ़ी आसान है) (17) **12 मिनट पर्दे में पर्दा** किये क़िब्ला रू, किसी सुन्नी आ़लिम की **इस्लामी किताब** और **फ़ैज़ाने सुन्नत** के तरतीब वार कम अज़ कम **चार सफ़ह़ात** पढ़ने का सिलसिला फ़रमाइये।

अवराद व वज़ाइफ़

फिर आंखों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने की निय्यत से 12 मिनट आंखें बन्द कर के (18) **शजरए अ़त्त़ारिय्या से** चन्द अवराद, कम अज़ कम 70 बार इस्तिग़फ़ार, 166 बार لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ , फिर 3 बार

www.dawateislami.net

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ लें (येह ज़िन्दगी भर के लिये मा'मूल बना लें) (19) जिस **निगरान** के भी मा तहृत हैं हमेशा (शरीअ़त के दाइरे में रह कर उन की) **इताअ़त फ़रमाइये ।**

मस्जिद में एह़तियात़

जब तक मस्जिद में रहें ज़बान की हिफ़ाज़त के पेशे नज़र कुफ़्ले मदीना में ही आ़फ़िय्यत है । (**दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** में ज़बान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों से बचाने और फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकालने के लिये ज़रूरी बात भी कम लफ़्ज़ों में लिख कर या इशारों में करना और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में नादिम हो कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लेना, ज़बान का कुफ़्ले मदीना कहलाता है ।) लिहाज़ा ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाते हुए (20) ज़रूरी गुफ़्तगू भी **कम से कम अलफ़ाज़** में (21) कम अज़ कम 4 **बार लिख कर या इशारे** से कीजिये और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में नादिम हो कर **इस्तिग़फ़ार या दुरूद शरीफ़** पढ़ लीजिये (22) नज़रें झुका कर सामने वाले के चेहरे पर **निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्तगू** करने की आ़दत डालिये और इस के लिये कम अज़ कम 12 मिनट रोज़ाना **कुफ़्ले मदीना ऐनक** का इस्ति'माल करना मुफ़ीद है । (23) दौराने गुफ़्तगू **दा'वते इस्लामी** की इस्तिलाह़ात के इस्ति'माल और **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्ती के लिये भी कोशिश फ़रमाइये, **हंसने** और **क़हक़हा** लगाने से हर सूरत बचिये ।

www.dawateislami.net

मज़ीद एह़तियातें

(24) आप और **जी** कहने की आ़दत डालिये और (25) दूसरों की बात इत़्मीनान से सुनने की बजाए उस की **बात काट कर** अपनी बात शुरूअ़ न करें। नीज़ बात समझ जाने के बावुजूद बे साख़्ता "हैं ?, जी ? या क्या ?" बोल कर या अबरू या चेहरे के इशारे से दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़ह़मत न देने और (26) सलाम का जवाब और छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो उस के जवाब में يَرْحَمُكَ الله इतनी आवाज़ से कहे कि वोह सुन ले और (27) आयन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ और मिज़ाज पुर्सी पर शिकवा करने की बजाए اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال और किसी ने'मत को देख कर مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कहने की निय्यत के साथ (28) **इशराक़ व चाश्त** अदा फ़रमा लें।

"**म-दनी पन्ज सूरह**" सफ़ह़ा 277 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर ज़िक्रुल्लाह करता रहा यहां तक कि आफ़ताब बुलन्द हो गया फिर दो रकअ़तें पढ़े तो उसे पूरे ह़ज व उ़मरा का सवाब मिलेगा।"

(سنن الترمذی، کتاب السفر، باب ما یستحب من الجلوس...الخ، الحدیث:۵۸۶،ج۲، ص۱۰۰)

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कितना आसान नुस्ख़ा है ह़ज व उ़मरा का सवाब लूटने का, फिर भी जो सुस्ती करे तो मुक़द्दर ही की बात है।

हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उ़मूमन नमाज़े इशराक़ अदा कर के ही मस्जिद शरीफ़ से दौलत ख़ाने पर तशरीफ़ ले जाते थे।

(احیاء العلوم، کتاب ترتیب الاوراد و تفصیل احیاء اللیل، الباب الاول فی فضیلۃالاوراد...الخ، ص ۴۳۹، ج ۱)

कभी कभी हमें भी बल्कि हमेशा ही इस सुन्नत को अदा करना चाहिये।

हि़क्मते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 15 वीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहा़नी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने कैसी प्यारी हि़कमत के साथ हमें **म-दनी इन्आ़मात** के ज़रीए़ नमाज़े इशराक़ तक रुकने की मीठी सुन्नत अदा करने और ह़ज व उ़मरा का सवाब हा़सिल करने का आसान त़रीक़ा अ़त़ा फ़रमाया है। इस त़रह़ हम थोड़ी सी तवज्जोह देने से अपने दिन का आग़ाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कर सकेंगे और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** में से 28 **म-दनी इन्आ़मात** दिन के शुरूअ़ होते ही हा़सिल करने में कामयाब हो जाएंगे।

www.dawateislami.net

घर में म-दनी माह़ोल

(29) फिर **आंखों का कुफ़्ले मदीना** लगाते हुए ह़त्तल इमकान **नीची निगाहें** किये घर पहुंचें और (30) **घर में म-दनी माह़ोल** बनाने के लिये **19 म-दनी फूल** [1] के मुत़ाबिक़ अपना मा'मूल रखें। हमेशा मद्रसा, स्कूल, कॉलेज, दुकान या नोकरी वग़ैरा के लिये जाते हुए (31) **मुसलमानों को सलाम** करते हुए, बिला ज़रूरत इधर उधर देखने और साइन बोर्ड वग़ैरा पर नज़र डालने से बचने की कोशिश करते हुए, निगाहें नीची किये, अगर दरूदे पाक पढ़ते हुए पहुंचे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तक़रीबन 12 मिनट में **313 मरतबा दुरूद शरीफ़** पढ़ने में कामयाब हो सकते हैं।

मज़ीद पूरे दिन इन बक़िय्या **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश करें मसलन (32) रोज़ाना कम अज़ कम एक **बयान या म-दनी मुज़ाकरा** सुनें या 1 घन्टा 12 मिनट **म-दनी चेनल देखें और** (33) **ना मह़रम रिश्तेदारों नीज़ भाभी से भी** शरई पर्दा **फ़रमाएं और** (34) अपने घर के बर आमदों से बिला ज़रूरत बाहर और दूसरों के **घरों में झांकने से** भी हर सूरत बचें नीज़ (35) गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **गुस्से का इलाज** करने, दर गुज़र से काम लेने, (36) फ़ुज़ूल सुवालात (जिन के ज़रीए़ मुसलमान उ़मूमन झूट के कबीरा गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं मसलन बिला ज़रूरत पूछना आप को हमारा खाना पसन्द आया ? आप का सफ़र कैसा गुज़रा वग़ैरा) और (37) **दूसरों** से इस्ति'माल के लिये चीज़ें मसलन चादर, **फ़ोन**, गाड़ी वग़ैरा **मांगने से बचने**

---

❶...... घर में **म-दनी माह़ोल** बनाने के लिये **19 म-दनी फूल** इसी किताब के सफ़ह़ा 37 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

की कोशिश फ़रमाइये (38) घर या बाहर टीवी, वी सी आर या इन्टर नेंट वग़ैरा पर **फ़िल्मे ड्रामे या गाने बाजे** वग़ैरा सुनने देखने की आ़दत निकालने (39) **मज़ाक़ मस्ख़री, तन्ज़ और दिल आज़ारी से बचने (40) तोहमत, गाली गलोच और नाम बिगाड़ने** (या'नी किसी को सुवर, गधा, चोर, लम्बू, ठिंगू, मोटा वग़ैरा कहने) से भी बचने की कोशिश करें। (41) वक़्त पर **क़र्ज़** की अदाएगी (42) मुसलमानों के **उ़यूब** पर मुत्त़लअ़ हो जाने पर उस की **पर्दा पोशी और राज़ की बात की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने (43) झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर, बद गुमानी और वा'दा ख़िलाफ़ी** से ख़ुद को बचाने की कोशिश फ़रमाइये (44) आ़जिज़ी के ऐसे अलफ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर निफ़ाक़, झूट और रियाकारी के मुर्तकिब होने से बचने की भी कोशिश फ़रमाएं। (मसलन इस त़रह़ कहना मैं ह़क़ीर हूं, कमीना हूं, वग़ैरा जब कि दिल में ख़ुद को ह़क़ीर न समझता हो)

नमाज़े इशा

बा'दे मग़रिब ह़त्तल इमकान सुन्नत के मुत़ाबिक़ **पर्दे में पर्दा** किये (45) **अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ (46) मिट्टी के बरतन में, पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए** (या'नी भूक से कम) खाना तनावुल फ़रमा लें। (ज़हे नसीब ! रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट **पेट पर पथ्थर बांधने की सआ़दत नसीब हो जाए**), फिर कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को अपने साथ मस्जिद ले जा कर पहली सफ़ में नमाज़े इशा अदा फ़रमाएं। बा'दे नमाज़ (47) कम अज़ कम **दो घन्टे दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों (मसलन **इनफ़िरादी कोशिश**, दर्स बयान, **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** वग़ैरा) में देने की

www.dawateislami.net

निय्यत फ़रमाएं (48) किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी भाई से) इख़्तिलाफ़ की सूरत में दूसरों पर इज़्हार करने की बजाए **तन्ज़ीमी तरकीब** से मस्अला हल फ़रमाएं। (49) (बिला मस्लह़ते शरई) ज़ाती दोस्तियों से इजतिनाब करते हुए सब के साथ **यक्सां तअ़ल्लुक़ात रखते हुए** (50) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में ह़ाज़िरी की सआ़दत पा कर मर्कज़ी मजलिसे शुरा की इत़ाअ़त करते हुए इशा की नमाज़ से दो घन्टे के अन्दर अन्दर घर पहुंच जाएं।

हफ़्तावार 8 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का आसान त़रीक़ा

बरोज़ जुमा'रात : पाबन्दी के साथ (1) हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में आग़ाज़ से शरीक हो कर (जितना बैठ सकें उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची किये बयान, ज़िक्रो दुआ़ और खड़े हो कर सलातो सलाम में शिर्कत और (2) आगे बढ़ कर **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए चार से **मुलाक़ात** (कम अज़ कम एक से पता, फ़ोन नम्बर ज़रूर लें, बा'द में राबेत़ा भी रखें) और मस्जिद में (मअ़ ह़ल्क़ा, तहज्जुद व नमाज़े फ़ज्र, इशराक़ व चाश्त) **सारी रात ए'तिकाफ़** फ़रमाएं।

बरोज़ जुमुआ़ : कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को (3) **मक्तूब** ज़रूर रवाना करें (मक्तूब में **म-दनी क़ाफ़िले** और **म-दनी इन्आ़मात** वग़ैरा की तरग़ीब दिलाएं। इस की तरकीब के लिये मद्रसे में लिफ़ाफ़े, लिखने के लिये सफ़ह़ात और जिस मक़ाम पर क़ाफ़िले सफ़र करते हैं वहां के शहर / गाऊं के इस्लामी भाइयों के नाम व पते और फ़ोन नम्बर्ज़ की डायरियां मौजूद हों ताकि मक्तूब रवाना करने में आसानी रहे) जो इस्लामी भाई नहीं लिख सकते या जिन्हें ख़त़ लिखने का त़रीक़ा नहीं

www.dawateislami.net

आता उन्हें त़रीक़ा सिखाएं या मुख़्तसर जामेअ़ अन्दाज़ में लिख कर दें । इस्लामी भाइयों में इस की आ़दत डालना बहुत ज़रूरी है । मक्तूबात के मुआ़मले में अकसर इस्लामी भाई बहुत घबराते हैं जब कि इस के बहुत जल्द और अच्छे नताइज निकलते हैं । (अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه के रिसाले में ख़ाली सफ़ह़े पर बत़ौरे मकतूब मुख़्तसर मज़्मून तह़रीर कर के भी रवाना किये जा सकते हैं) **इस सिल्सिले में एक इस्लामी भाई की ज़िम्मेदारी हो कि वोह दूसरे ही दिन तमाम रसाइल व मक्तूबात पोस्ट कर दे ।**

बरोज़ सनीचर : कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को साथ ले जा कर (4) **मस्जिद इजतिमाअ़** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाएं ।

बरोज़ इतवार : (5) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत फ़रमाएं या किसी भी दिन इस के लिये वक़्त निकालें ।

बरोज़ पीर शरीफ़ : (6) रोज़ा रख लीजिये (रह जाने की सूरत में किसी भी दिन तरकीब कीजिये) नीज़ खाने में **जव शरीफ़ की रोटी** भी तनावुल फ़रमाएं ।

बरोज़ मंगल : (7) किसी बीमार या दुखी के घर या हस्पताल जा कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़म ख़्वारी फ़रमाएं उस को तोह़फ़ा (**मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रिसाले या पेम्फ़लेट, ऑडियो केसिट, ऑडियो / वीडियो सीडीज़) पेश करने के साथ साथ **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के इस्ति'माल का मशवरा ज़रूर दें ।

बरोज़ बुध : (8) ऐसे इस्लामी भाई जो पहले म-दनी माह़ोल में थे और अब नहीं आते तलाश कर के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता करने की भर पूर **कोशिश** फ़रमाएं (मगर जिस पर तन्ज़ीमी पाबन्दी हो उसे न छेड़ें) ।

www.dawateislami.net

माहाना 6 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का आसान त़रीक़ा

हर **म-दनी माह** की चांद रात को बा'दे नमाज़े मग़रिब इनफ़िरादी या इजतिमाई त़ौर पर (1) **म-दनी इन्आ़मात** का पुर शुदा रिसाला अपने मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं और नया रिसाला ह़ासिल करने की तरकीब के साथ इस माह जदवल के मुत़ाबिक़ तीन दिन के (2) **म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की पक्की** निय्यत कर के तारीख़ तै कर लें और मुक़र्ररा तारीख़ पर सफ़र भी फ़रमाएं। **म-दनी इन्आ़मात** और **म-दनी क़ाफ़िले** से मुतअ़ल्लिक़ इनफ़िरादी कोशिश इसी वक़्त से शुरूअ़ कर के पहले ह़फ़्ते ही में (3) कम अज़ कम एक इस्लामी भाई का **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाएं और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये** तय्यार कर के रवाना फ़रमाएं। (पिछले माह जितने इस्लामी भाइयों ने आप की **इनफ़िरादी कोशिश** से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करना शुरूअ़ किया उन के पुर कर्दा रिसाले वुसूल कर के इन्हें नए रिसाले मुहय्या करें)

म-दनी माह की पहली पीर शरीफ़ : (4) कम अज़ कम 112 या 12 रूपै किसी सुन्नी आ़लिम (या इमामे मस्जिद, मोअज़्ज़िन, ख़ादिम वग़ैरा) को **तोहूफ़ा** पेश करें और मद्रसे में (5) **अज़ान** और इस के बा'द की **दुआ़, इक़ामत, कुरआन शरीफ़ की आख़िरी दस सूरतें, दुआ़ए कुनूत, अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम** عَلَيْهِ السَّلَام **और कोई एक दुआ़ए मासूरा** (मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ) ज़बानी याद करने की तरकीब बनाएं (6) **बालिग़, ना बालिग़ व नाबालिग़ा** के **जनाज़े की दुआ़एं, छे कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुजमल, तकबीरे तशरीक़ और तलबिया** (या'नी लब्बैक) येह सब तर्जमे के साथ ज़बानी याद करने और सिखाने का एहतिमाम फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

सालाना 8 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का आसान त़रीक़ा

रोज़ाना बा'दे नमाज़े इ़शा **दा'वते इस्लामी** के **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में सालाना 8 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल के लिये सीखने सिखाने का एहतिमाम फ़रमाएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद देखेंगे। (1) मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कम अज़ कम एक बार **कुरआने पाक नाज़िरा** पढ़ने की तरकीब फ़रमाएं। (ज़िम्मेदार को चाहिये कि शुरकाए मद्रसा की पाबन्दी के लिये रोज़ाना ह़ाज़िरी ले) (2) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की कुतुब **तमहीदुल ईमान** (मअ़ ह़ाशिया ईमान की पहचान), **हुस्सामुल ह़रमैन** (3) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** और तमाम **म-दनी रसाइल** (जो आप को मा'लूम हैं) (4) नीज़ म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट (जो आप के इ़ल्म में हों) पढ़ या सुन लें। (म-दनी गुलदस्ता या बहारे शरीअ़त और मिन्हाजुल आ़बिदीन भी मद्रसे में ब आसानी दस्तयाब हो ताकि) रोज़ाना (5) **बहारे शरीअ़त** जिल्द 2 ह़िस्सा 9 से **मुर्तद का बयान**, जिल्द 1, ह़िस्सा 2 से **नजासतों का बयान** और **कपड़े पाक करने का त़रीक़ा** (नजासतों के अह़काम आसानी से सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुख़्तसर रिसाला **कपड़े पाक करने का त़रीक़ा** का मुत़ालआ़ भी किया जा सकता है) जिल्द 3 ह़िस्सा 16 से **ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान,** (अगर शादी शुदा हैं तो) जिल्द 2 ह़िस्सा 7 से **मह़रमात का बयान** और **हुक़ूक़े ज़ौजैन, जिल्द 2 ह़िस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का**

www.dawateislami.net

बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन कर इस **इन्तिहाई अहम म-दनी इन्आ़म** पर भी अ़मल कर लें। इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की आख़िरी तस्नीफ़ (6) **मिन्हाजुल आ़बिदीन** से **तौबा, इख़्लास, तक़वा, ख़ौफ़ व रजा, उ़जब व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की ह़िफ़ाज़त का बयान** भी पढ़ या सुन लें (7) **बहारे शरीअ़त या शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **की मायए नाज़** तस्नीफ़ **नमाज़ के अह़काम से वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ दुरुस्त** कर के किसी सुन्नी आ़लिम या मुबल्लिग़ को सुना दें। इस के लिये (8) जदवल के मुत़ाबिक़ हर साल 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र बेह़द मुफ़ीद रहेगा। (नीज़ ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भी निय्यत फ़रमाएं)। अगर हम ने तवज्जोह और सन्जीदगी के साथ सीखने सिखाने का येह म-दनी सिल्सिला क़ाइम रखा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द साल भर के 8 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाएगी।

यूं **साल** भर में इन 8 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने वालों के लिये 72 **म-दनी इन्आ़मात** का येह शरीअ़त और त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ सिर्फ़ 64 **म-दनी इन्आ़मात** का रह जाएगा और जो चीज़ें सालों से मा'लूम न थी या याद न हो सकी थीं वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी ह़िकमत के तह़त मिलने वाले **म-दनी इन्आ़मात** की ब-रकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सीखने और याद करने में कामयाब हो जाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

तमाम ज़िम्मेदारान को चाहिये कि **मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)** में इन **म-दनी इन्आ़मात** के असबाक़ को मुकम्मल करवाने की ज़रूर सअ़्य फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

याद करने का म-दनी निसाब

❁अज़ान ❁अज़ान के बा'द की दुआ़ ❁ इक़ामत ❁सूरए फ़ातिह़ा ❁आख़िरी दस सूरतें ❁दुआ़ए कुनूत ❁अत्तहिय्यात ❁ दुरूदे इब्राहीम ❁एक अ़-रबी दुआ़ ❁ छे कलिमे (मअ़ तर्जमा) ❁ईमाने मुफ़स्सल (मअ़ तर्जमा) ❁ईमाने मुजमल (मअ़ तर्जमा) ❁बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ ❁ ना बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ ❁ ना बालिग़ा के जनाज़े की दुआ़ ❁तलबिय्या या'नी लब्बैक (मअ़ तर्जमा)

पढ़ने / सुनने का म-दनी निसाब

❁तम्हीदुल ईमान (मअ़ हाशिया ईमान की पहचान) ❁ हुस्सामुल ह़रमैन ❁ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब ❁ तमाम म-दनी रसाइल ❁ बहारे शरीअ़त जिल्द 2 ह़िस्सा 9 से मुर्तद का बयान ❁ जिल्द 1 ह़िस्सा 2 से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का त़रीक़ा ❁ जिल्द 3 ह़िस्सा 16 से ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान ❁ वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान (अगर शादी शुदा है तो) ❁ जिल्द 2 ह़िस्सा 7 से मह़रमात का बयान ❁ हुक़ूक़े ज़ौजैन ❁जिल्द 2 ह़िस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान ❁त़लाक़ का बयान ❁ज़िहार का बयान❁त़लाक़े किनाया का बयान। "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" के अबवाब ❁तौबा ❁इख़्लास ❁तक़्वा ❁ख़ौफ़ व रजा ❁उ़जब व रिया ❁आंख ❁कान ❁ज़बान ❁दिल और ❁पेट की ह़िफ़ाज़त का बयान ❁दुरुस्त मख़ारिज के साथ एक बार कुरआने पाक नाज़िरा पढ़ना।

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनें तवज्जोह फ़रमाएं

इस्लामी बहनो ! शैत़ान की पहली कोशिश येही होती है कि वोह "**म-दनी इन्आ़मात**" का रिसाला पढ़ने ही न दे और दिल में येह वस्वसा डालता है कि येह तो बहुत मुश्किल है इस पर अ़मल करना तो ना मुमकिन है, मैं "63" इन्आ़मात पर कैसे अ़मल करूंगी ।

इस्लामी बहनो ! येह शैत़ान का ख़त़रनाक वार है जो हमें नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने से मह़रूम करना चाहता है अगर कुछ तवज्जोह दें और इन **म-दनी इन्आ़मात** पर ग़ौर करें तो अन्दाज़ा होगा कि इन इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल करना इतना मुश्किल नहीं ।

क्यूंकि !

रोज़ाना 63 इन्आ़मात पर अ़मल नहीं बल्कि रोज़ाना सिर्फ़ 47 इन्आ़मात पर अ़मल करना है । 3 इन्आ़मात तो ऐसे हैं जिन पर पूरे हफ़्ते में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है । 3 इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर पूरे महीने में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है और 10 इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर तो साल भर में सिर्फ़ एक ही बार अ़मल करना है ।

इस्लामी बहनो ! ग़ौर करने पर मा'लूम होता है कि इन इन्आ़मात को अपने ऊपर नाफ़िज़ करना इतना मुश्किल नहीं है जितना मह़सूस होता है अगर आप इख़्लास के साथ कोशिश करें तो येह इन्आ़मात आप यक़ीनन ह़ासिल कर सकती हैं । सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं जो अ़मल दुन्या में जितना दुश्वार होगा बरोज़े क़ियामत मीज़ान में उतना ही वज़्नदार होगा । (تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابراھیم بن ادھم، ص۹۵) जब आप हिम्मत कर के

www.dawateislami.net

अ़मल शुरूअ़ कर देंगी तो हो सकता है इब्तिदा में मुश्किल मह़सूस हो मगर फिर ब तदरीज إِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आसानी हो जाएगी। हर मुश्किल काम का येही उसूल है अगर आप आयन्दा सफ़ह़े पर दिये हुए **म-दनी इन्आ़मात** पर आसानी से अ़मल करने के म-दनी त़रीक़े को पूरी तवज्जोह से पढ़े और इस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारने की कोशिश करें तो आसानी के साथ इन इन्आ़मात की ब-र-कतें ह़ासिल कर सकती हैं।

म-दनी इन्आ़मात पर आसानी से अ़मल करने का म-दनी त़रीक़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा 63 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने का जज़्बा रखने वाली इस्लामी बहनें इसे ज़रूर पढ़ें।

यक़ीनन हर अ़मल मेरा तेरी नज़रों के क़ाइम है.....

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं जो कोई **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ इख़्लास के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करेगा तो वोह إِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा बन जाएगा और आप उस के लिये दुआ़ फ़रमाते हैं कि या रब्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो तेरी रिज़ा के लिये इन **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल करे उसे इस से पहले मौत न दे जब तक वोह मदीना न चूम ले।

www.dawateislami.net

याद रखें ! मौत तमाम तर सख़्तियों समेत पीछा किये चली आ रही है । अ़न क़रीब मरना, अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भूगतना पड़ेगा । **यक़ीनन वोह लोग ख़ुश नसीब हैं जो मरने से पहले मौत की तय्यारी कर लेते हैं ।**

काश ! हम अपना रोज़ाना का मा'मूल इस त़रह़ बना लें !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से रोज़ाना सोने से क़ब्ल (1) हर वक़्त **बा वुज़ू** रहने की निय्यत के साथ वुज़ू कर के (2) **सलातुत्तौबा (3) आयतुल कुर्सी, तस्बीहे़ फ़ाति़मा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا **सूरतुल इख़्लास नीज़ सूरतुल मुल्क,** सोने की दुआ़ और सोते वक़्त के अवराद वग़ैरा पढ़ कर (4) यकसूई के साथ **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासबा करते हुए जिन जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी कर के) (5) **सुन्नत बॉक्स** जिस में (आईना, सुर्मा, कन्घा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल और कैंची मौजूद हो) सिरहाने रख कर सुन्नत की निय्यत से **चटाई** और न होने की सूरत में **ज़मीन** पर सो जाएं और मदीने की यादों में खो जाएं ।

म-दनी एह़तियातें

सोते वक़्त अपने पैरों की त़रफ़ ऐसा बेग न रखें जिस में कोई किताब या तह़रीर हो । दूसरों के पाऊं इस त़रफ़ होने का अन्देशा हो तो सुन्नत बॉक्स भी वहीं सिरहाने रखें जिस के ऊपर या अन्दर किसी क़िस्म की तह़रीर या लेबल वग़ैरा न हो । इसी त़रह़ ता'वीज़ भी उतार कर मह़फ़ूज़ जगह पर रख दें । ताकि किसी और सोने वाले के पाऊं इस त़रफ़ न हों आप के अपने पाऊं भी किसी तह़रीर की

www.dawateislami.net

त़रफ़ तो नहीं हो रहे येह ग़ौर कर लिया करें और इन बातों का हमेशा ख़याल रखा करें ।

बा अदब बा नसीब　　　　*बे अदब बे नसीब*

सुब्हे़ सादिक़

काश ! सुब्हे़ सादिक़ से आधा घन्टा क़ब्ल बेदार हो कर **बिस्तर** और **लिबास** हमेशा तह कर के रखने की निय्यत के साथ तह कर लें। (6) **तह़िय्यतुल वुज़ू** की निय्यत के साथ **तहज्जुद** अदा फ़रमा लें। (दिन भर में कम अज़ कम एक बार अलग से तह़िय्यतुल वुज़ू पढ़ने पर ही अ़मल माना जाएगा ।) (7) **अज़ाने फ़ज्र** के वक़्त ख़ामोश रह कर **जवाब** दें फिर (8) फ़ज्र की **सुन्नतें** अदा फ़रमाएं ।

नमाज़े फ़ज्र

और (9) **ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़** पैदा करने की कोशिश करते हुए (बारी के दिनों के इ़लावा) (10) पांचों वक़्त की नमाज़ें पाबन्दी के साथ अदा करने की निय्यत के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा करें (अपने घर में नमाज़ के लिये कोई जगह मख़्सूस करना मुस्तह़ब है इसे मस्जिदे बैत कहते हैं) । बा'द नमाज़ दुआ़ के आदाब का लिह़ाज़ रखते हुए ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ दुआ़ मांगें जिन नमाज़ों में नवाफ़िल अदा करने हों उन के नफ़्ल भी पढ़ें । बा'द नमाज़ **आयतुल कुर्सी, सूरतुल इख़्लास** और तस्बीहे़ फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡھَا पढ़ लें, फिर हो सके तो बा'दे फ़ज्र (या किसी और नमाज़ के बा'द) (11) फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम दो दर्स (मद्रसा, स्कूल, घर, कॉलेज, वग़ैरा में जहां सहूलत हो) रोज़ाना देने

www.dawateislami.net

या सुनने की निय्यत के साथ (12) **पर्दे में पर्दा** के एहतिमाम के साथ **क़िब्ला रू** दर्स में शिर्कत फ़रमाएं (निगाहें नीची किये जितनी देर मुमकिन हो दो ज़ानू हो कर बैठें और हमेशा दर्स व बयान में इसी त़रह़ बैठने की कोशिश फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं मगर इसरार न फ़रमाएं।)

इनफ़िरादी कोशिश

हमेशा दर्स से फ़राग़त के बा'द शुरकाए दर्स में से कम अज़ कम दो इस्लामी बहनों को (13) **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** और दीगर म-दनी कामों की तरग़ीब दिलाएं (ताकि सुब्ह़ से ही हमारा ज़ेह्न **इनफ़िरादी कोशिश** के लिये तय्यार हो जाए) (14) अब कम अज़ कम तीन आयात की तिलावत मअ़ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान शरीफ़** व तफ़सीर (अगर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पढ़ना दुश्वार मा'लूम हो तो मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی की तफ़्सीर नूरुल इरफ़ान पढ़ें कि काफ़ी आसान है) और (15) **12 मिनट** किसी सुन्नी आ़लिम की **इस्लामी किताब** और **फ़ैज़ाने सुन्नत** के तरतीब वार कम अज़ कम **चार सफ़ह़ात** पढ़ने का सिलसिला **पर्दे में पर्दा** किये क़िब्ला रू हो कर फ़रमाएं।

अवराद व वज़ाइफ़

फिर आंखों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने की निय्यत से हो सके तो 12 मिनट आंखें बन्द कर के (18) **श-ज-रए अ़त्तारिय्या**

www.dawateislami.net

से चन्द अवराद, कम अज़ कम 70 बार इस्तिग़्फ़ार, 166 बार لَاالٰہَ اِلَّا اللّٰہ, फिर 3 बार ، مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ लें (येह ज़िन्दगी भर के लिये मा'मूल बना लें) (19) जिस **ज़िम्मादार** के भी आप मा तह़्त हैं हमेशा (शरीअ़त के दाइरे में रह कर उन की) **इत़ाअ़त फ़रमाएं ।**

कुफ़्ले मदीना

ज़बान की आफ़तों से ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र कुफ़्ले मदीना ही में आ़फ़िय्यत है। (**दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में ज़बान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों से बचाने और फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकालने के लिये ज़रूरी बात भी कम लफ़्ज़ों में लिख कर या इशारों में करना और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में नादिम हो कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लेना, ज़बान का कुफ़्ले मदीना कहलाता है।) लिहाज़ा कुफ़्ले मदीना लगाते हुए (17) ज़रूरी गुफ़्तगू भी कम से कम अल्फ़ाज़ में, (18) कम अज़ कम **4 बार लिख कर या इशारे** से कीजिये और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में नादिम हो कर **इस्तिग़्फ़ार या दुरूद शरीफ़ पढ़ लें (19)** नज़रें झुका कर सामने वाले के चेहरे पर **निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्तगू** करने की आ़दत डालें (20) दौराने गुफ़्तगू **दा'वते इस्लामी** की **इस्त़िलाह़ात** का इस्ति'माल और **तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये भी कोशिश फ़रमाएं**। हंसने और क़ह्क़हा लगाने से हर सूरत बचें।

मज़ीद एह़तियातें

(21) आप और **जी** कहने की आ़दत डालिये (22) दूसरे की बात इत़मीनान से सुनने की बजाए उस की **बात काट कर**

www.dawateislami.net

अपनी बात शुरूअ़ न करें। नीज़ बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख़्ता (हैं ?, जी ? या क्या ?) बोल कर या अबरू या चेहरे के इशारे से दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़हमत न देने और (23) **सलाम का जवाब** और छींकने वाली اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो उस के जवाब में يَرْحَمُکَ الله इतनी आवाज़ से कहे कि वोह सुन ले और (24) आयन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ और मिज़ाज पुर्सी पर शिकवा करने की बजाए اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی کُلِّ حَال और किसी ने'मत को देख कर مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कहने की निय्यत के साथ (25) **इशराक़ व चाश्त** अदा फ़रमा लें। "**म-दनी पन्ज सूरह**" सफ़्ह़ा नम्बर 277 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर ज़िक्रुल्लाह करता रहा यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो गया फिर दो रकअ़तें पढ़े तो उसे पूरे ह़ज व उ़मरा का सवाब मिलेगा।"

(سنن الترمذی کتاب السفر، باب ما یستحب من الجلوس فی المسجد...الخ ج ۲،ص ۱۰۰،حدیث: ۵۸۶)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कितना आसान नुस्ख़ा है ह़ज व उ़मरा का सवाब लूटने का, फिर भी जो सुस्ती करे तो मुक़द्दर ही की बात है।

हिक्मते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 15 वीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने

www.dawateislami.net

कैसी प्यारी ह़िकमत के साथ हमें **म-दनी इन्आ़मात** के ज़रीए़ नमाज़े इशराक़ की मीठी सुन्नत अदा करने और ह़ज व उ़मरा का सवाब ह़ासिल करने का आसान त़रीक़ा अ़त़ा फ़रमाया है । इस त़रह़ हम थोड़ी सी तवज्जोह देने से अपने दिन का आग़ाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कर सकेंगे और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** में से 25 **म-दनी इन्आ़मात** दिन के शुरूअ़ होते ही ह़ासिल करने में कामयाब हो जाएंगे ।

जब भी शरई इजाज़त से बाहर निकलें तो हमेशा शरई पर्दे के साथ (26) **म-दनी बुर्क़अ़, दस्ताने, जुर्राबें** पहनें (म-दनी बुर्क़अ़, दस्ताने, जुर्राबें शरई पर्दे का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं दस्तानों और जुर्राबों से खाल की रंगत नहीं झलकनी चाहिये।) और बे पर्दगी से बचने के लिये ऐसा चुस्त या बारिक लिबास (जिस से जिस्म की हैअत ज़ाहिर हो या रंगत झलके) हरगिज़ न पहनें नीज़ गुनाहों भरा फ़ैशन करने मसलन बाल कटवाने, अब्रू बनवाने, चालीस दिन से ज़ाइद नाख़ुन बढ़ाने वग़ैरा से भी बचें (नेल पॉलिश और अफ़शां वुज़ू और ग़ुस्ल में रुकावट हैं) (27) किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी बहन से) इख़्तिलाफ़ की सूरत में दूसरों पर इज़्हार करने की बजाए **तन्ज़ीमी तरकीब से** मस्अला ह़ल फ़रमाएं। (28) (बिला मस्लह़ते शरई) ज़ाती दोस्तियों से इजतिनाब करते हुए सब के साथ **यक्सां तअ़ल्लुक़ात रखते हुए**

www.dawateislami.net

(29) **मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में** ह़ाज़िरी की सआ़दत पाएं फिर आंखों का कुफ़्ले मदीना लगाते हुए ह़त्तल इमकान **नीची निगाहें** किये दुरूदे पाक पढ़ती हुई (30) **मग़रिब से** पहले घर पहुंचें और **घर में म-दनी माह़ोल** बनाने के लिये 19 **म-दनी फूलों**[1] के मुत़ाबिक़ अपना मा'मूल रखें।

अहम बात

मज़ीद पूरे दिन इन बक़िय्या **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश करें, मसलन (31) रोज़ाना कम अज़ कम एक **बयान या म-दनी मुज़ाकरा** सुनें या 1 घन्टा 12 मिनट **म-दनी चेनल देखें** और (32) ना मह़रम रिश्तेदारों नीज़ देवर व जेठ से भी **शरई पर्दा** फ़रमाएं और (33) अपने घर के बर आमदों से बिला ज़रूरत बाहर और दूसरों के **घरों में झांकने से** भी हर सूरत बचें। नीज़ (34) गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **गुस्से का इलाज** करने, **दर गुज़र से काम लेने,** (35) **फ़ुज़ूल सुवालात** (जिन के ज़रीए़ मुसलमान उ़मूमन झूट के कबीरा गुनाह में मुब्तला होते हैं मसलन बिला ज़रूरत पूछना आप को हमारा खाना पसन्द आया? आप का सफ़र कैसा गुज़रा वग़ैरा) और (36) **दूसरों से इस्ति'माल** के लिये चीज़ें मसलन कपड़े, फ़ोन, ज़ेवरात वग़ैरा **मांगने से बचने** की कोशिश फ़रमाएं (37) घर या बाहर टीवी, वी सी आर या इन्टरनेट वग़ैरा पर **फ़िल्में डिरामे या गाने बाजे वग़ैरा सुनने देखने की आ़दत निकालने** (38) मज़ाक़ मस्ख़री, तन्ज़ और दिल आज़ारी से बचने

1....... घर में म-दनी माह़ोल बनाने के लिये 19 म-दनी फूल इसी किताब के सफ़ह़ा 37 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

(39) **तोहमत, गाली गलोच** और नाम बिगाड़ने (या'नी किसी को चोर, जादूगर, लम्बी, ठिंगनी, मोटी वग़ैरा कहने) से भी बचने की कोशिश करें। (40) वक़्त पर **फ़र्ज़** की अदाएगी, (41) मुसलमानों के **उ़यूब पर मुत्त़लअ़ हो जाने पर उस की पर्दा पोशी और राज़ की बात की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने (42) झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर, बद गुमानी** और **वा'दा ख़िलाफ़ी** से ख़ुद को बचाने की कोशिश फ़रमाएं। (43) आ़जिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर **निफ़ाक़, झूट और रियाकारी** की मुर्तकिब होने से भी बचने की कोशिश फ़रमाएं (मसलन इस त़रह़ कहना मैं ह़कीर हूं, कमीनी हूं वग़ैरा जब कि दिल में ख़ुद को ह़क़ीर न समझती हो) (44) अपने घर में जानदारों की **तसावीर या स्टिकर न लगाएं।** (जिस घर में जानदार की तसवीर या कुत्ता हो उस घर में रह़मत के फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते अगर आप ख़ुद मुख़्तार हैं तो हर लिबास, दीवार, बोतल, बॉक्स बल्कि हर चीज़ पर से तसावीर का ख़ातिमा कर के सवाब कमाइयें। बच्चों को जानदारों की तसावीर वाले बाबा सूट भी न पहनाया करें) **म-दनी मुन्नों या मुन्नियों को बहलाने के लिये (45) झूट न बोलें** (मसलन खाना खा लो ! खिलौना दूंगी, सो जाओ ! देखो बिल्ली आ रही है वग़ैरा) जब कि वाक़ेअ़तन ऐसा न हो तो येह झूट है।

नमाज़े इ़शा

बा'दे मग़रिब ह़त्तल इम्कान सुन्नत के मुत़ाबिक़ **पर्दे में पर्दा** किये (46) **अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ (47) मिट्टी के बरतन में, पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए** (या'नी भूक से कम) खाना तनावुल फ़रमा लें।

www.dawateislami.net

काश ! हम अपना हफ़्ता वार मा'मूल कुछ इस त़रह़ रखें

तमाम इस्लामी बहनें हफ़्तावार 3 **म-दनी इन्आ़मात** ह़ासिल करने के लिये हर

इतवार

पाबन्दी के साथ (1) हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में आग़ाज़ से शरीक हो कर (जितना बैठ सकें उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची किये बयान, ज़िक्रो दुआ़ और खड़े हो कर सलातो सलाम में शिर्कत और (2) आगे बढ़ कर **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए **चार से मुलाक़ात** (कम अज़ कम एक से पता, फ़ोन नम्बर ज़रूर लें) और बा'द में राबेत़ा भी रखें।

बरोज़ पीर शरीफ़

(3) **रोज़ा** रख लीजिये (रह जाने की सूरत में किसी भी दिन तरकीब कीजिये) नीज़ खाने में **जव शरीफ़ की रोटी** तनावुल फ़रमा लें।

माहाना 3 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का आसान त़रीक़ा येह है

कि हर **म-दनी माह** में पहली बुध को इनफ़िरादी या इजतिमाई त़ौर पर (1) **म-दनी इन्आ़मात** का पुर शुदा रिसाला अपनी मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं।

ख़ास बात

म-दनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ **इनफ़िरादी कोशिश** उसी वक़्त से शुरूअ़ कर के पहले हफ़्ते ही में (2) कम अज़ कम एक

www.dawateislami.net

इस्लामी बहन का **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाएं** (पिछले माह जितनी इस्लामी बहनों ने आप की **इनफ़िरादी कोशिश** से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करना शुरूअ़ किया उन के पुर कर्दा रिसाले वुसूल कर के उन्हें नए रिसाले मुहय्या करें) (3) हर माह हैज़ नीज़ निफ़ास के अय्याम में जितनी देर नमाज़ में सर्फ़ होती है उतनी देर ज़िक्रो दुरूद या दीनी मुत़ालआ़ (बिग़ैर आयत व तर्जमा छूए) करने में मसरूफ़ रहें।

सालाना 10 म-दनी इन्आ़मात के हुसूल का आसान त़रीक़ा येह है

काश ! इस्लामी बहनें साल भर में एक बार कुछ इस त़रह कर लें !

साल भर में जिन 10 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना है इस में आसानी के लिये घर में रोज़ाना कुछ देर मुन्दरिजए ज़ैल त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मुत़ालआ़ और याद करने का एहतिमाम फ़रमाएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद देखेंगी।

रोज़ाना इस्लामी बहनें (1) **अज़ान** और **इस के बा'द की दुआ़, क़ुरआन शरीफ़ की आख़िरी दस सूरतें, दुआ़ए क़ुनूत, अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम** عَلَیْہِ السَّلَام और कोई एक **दुआ़ए मासूरा** (मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ) ज़बानी याद करने की तरकीब बनाएं (2) **छे कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुजमल, तकबीरे तशरीक़ और तलबिय्या** (या'नी लब्बैक) येह सब तर्जमे के साथ ज़बानी याद करने और सिखाने का एहतिमाम फ़रमाएं। (नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ या रह जाने की सूरत में किसी और दिन पढ़ने का मा'मूल बनाइये) (3) मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त

www.dawateislami.net

अदाएगी के साथ कम अज़् कम एक बार **कुरआने पाक नाज़िरा** ख़त्म करने के लिये **मद्रसतुल मदीना बालिग़ात** में ज़रूर वक़्त दें (ज़िम्मेदार को चाहिये कि शुरकाए मद्रसा की पाबन्दी के लिये रोज़ाना हाज़िरी ले) (4) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه की कुतुब **तमहीदुल ईमान** (मअ़ हाशिया ईमान की पहचान), **हुस्सामुल ह़रमैन** (5) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तमाम **म-दनी रसाइल** (जो आप को मा'लूम हैं) (6) और **म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट** (जो आप के इ़ल्म में हों) पढ़ या सुन लें। (जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता या बहारे शरीअ़त और मिन्हाजुल आ़बिदीन भी मद्रसे में ब आसानी दस्तयाब हो ताकि)

रोज़ाना (7) **बहारे शरीअ़त** जिल्द 2 हिस्सा 9 से **मुर्तद का बयान**, जिल्द 1 हिस्सा 2 से **नजासतों का बयान** और **कपड़े पाक करने का त़रीक़ा** (नजासतों के अह़काम आसानी से सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुख़्तसर रिसाला **कपड़े पाक करने का त़रीक़ा** का मुत़ालआ़ भी किया जा सकता है) जिल्द 3 हिस्सा 16 से **ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान**, (अगर शादी शुदा हैं तो) जिल्द 2 हिस्सा 7 से **मह़रमात का बयान** और **हुक़ूक़े ज़ौजैन, जिल्द 2 हिस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान** और **त़लाक़े किनाया का बयान** पढ़ या सुन कर इस **इन्तिहाई अहम म-दनी इन्आ़म** पर भी अ़मल कर लें।

www.dawateislami.net

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की आख़िरी तस्नीफ़ (8) **मिन्हाजुल आ़बिदीन** से **तौबा, इख़्लास, तक़्वा, ख़ौफ़ व रजा, उ़जब व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की ह़िफ़ाज़त का बयान** भी पढ़ या सुन लें (9) **बहारे शरीअ़त या शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **की मायए नाज़** तस्नीफ़ **इस्लामी बहनों की नमाज़ से वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ दुरुस्त** कर के किसी मुबल्लिग़ा या मह़रम मुबल्लिग़ को सुना दें। (10) इस साल बारी के दिनों में रह जाने वाले र-मज़ानुल मुबारक के रोज़ों की क़ज़ा कर लें (बारी के दिनों में नमाज़ मुआ़फ़ है मगर रोज़े क़ज़ा करने होते हैं)

अगर हम ने तवज्जोह और सन्जीदगी के साथ सीखने सिखाने का येह म-दनी सिलसिला क़ाइम रखा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द साल भर के **10 म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाएगी।

यूं **साल** भर में इन 10 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने वालियों के लिये 63 **म-दनी इन्आ़मात** का येह शरीअ़त और त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ सिर्फ़ 53 **म-दनी इन्आ़मात** का रह जाएगा और जो चीज़े सालों से मा'लूम न थीं, या याद न हो सकी थीं वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी ह़िक्मत के तह़त मिलने वाले **म-दनी इन्आ़मात** की ब-रकत से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सीखने और याद करने में कामयाब हो जाएंगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

तमाम ज़िम्मादारान को चाहिये कि **मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात)** में इन **म-दनी इन्आ़मात** के असबाक़ को मुकम्मल कराने की ज़रूर सअ़य फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

याद करने का म-दनी निसाब

❁अज़ान ❁अज़ान के बा'द की दुआ़ ❁इक़ामत ❁सूरए फ़ातिहा़ ❁आख़िरी दस सूरतें ❁दुआ़ए कुनूत ❁अत्तहि़य्यात ❁दुरूदे इब्राहीम ❁एक अ़-रबी दुआ़ ❁छे कलिमे (मअ़ तर्जमा) ❁ईमाने मुफ़स्सल (मअ़ तर्जमा) ❁ईमाने मुजमल (मअ़ तर्जमा) ❁बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ ❁ ना बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ ❁ना बालिग़ा के जनाज़े की दुआ़ ❁तलबिय्या या'नी लब्बैक (मअ़ तर्जमा)

पढ़ने / सुनने का म-दनी निसाब

❁तम्हीदुल ईमान (मअ़ ह़ाशिया ईमान की पहचान) ❁हु़सामुल ह़रमैन ❁कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब ❁तमाम म-दनी रसाइल ❁बहारे शरीअ़त जिल्द 2 हि़स्सा 9 से मुर्तद का बयान ❁जिल्द 1 हि़स्सा 2 से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का त़रीक़ा ❁जिल्द 3 हि़स्सा 16 से ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान ❁वालिदैन के हु़क़ूक़ का बयान (अगर शादी शुदा है तो) ❁ जिल्द 2 हि़स्सा 7 से मह़रमात का बयान ❁ हु़क़ूक़े ज़ौजैन ❁जिल्द 2 हि़स्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान ❁त़लाक़ का बयान ❁ज़िहार का बयान ❁त़लाक़े किनाया का बयान । "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" के अबवाब ❁तौबा ❁इख़्लास ❁तक़्वा ❁ख़ौफ़ व रजा ❁उ़जब व रिया ❁आंख ❁कान ❁ज़बान ❁दिल और ❁पेट की हि़फ़ाज़त का बयान ❁दुरुस्त मख़ारिज के साथ एक बार कुरआने पाक नाज़िरा पढ़ना ।

www.dawateislami.net

तवज्जोह फ़रमाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो ! पिछले सफ़ह़ात मुलाह़ज़ा फ़रमाने के बा'द आप ने मह़सूस किया होगा कि **म-दनी इन्आ़मात** में दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां पोशीदा हैं और दिये गए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ सन्जीदगी से इन **म-दनी इन्आ़मात** को ब तदरीज अपने ऊपर नाफ़िज़ करना कोई मुश्किल काम नहीं बस थोड़ी सी हिम्मत और जज़्बे की ज़रूरत है। अगर हम ने हिम्मत कर के इन पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ख़ूब ब-र-कतें मह़सूस होंगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : हो सकता है आप में से किसी को मेरे "**म-दनी इन्आ़म**" मुश्किल मा'लूम हों मगर हिम्मत न हारें : ह़दीसे पाक में है :

اَفْضَلُ الْعِبَادَۃِ اَحْمَزُھَا या'नी "अफ़्ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत ज़ियादा हो।"

(کشف الخفاء ومزیل الالباس، حرف الھمزہ مع الفاء، ج ۱، ص ۱۴۱، الحدیث: ۴۵۹)

सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "दुन्या में जो अ़मल जितना दुश्वार होगा बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में वोह उतना ही वज़्नदार होगा।"

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابراھیم بن ادھم، ص ۹۵)

मज़ीद फ़रमाते हैं : जब **आप** अ़मल शुरूअ़ कर देंगे तो वोह आप के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आसान हो जाएगा। ग़ालिबन आप को तजरिबा होगा कि सख़्त सर्दी के वक़्त वुज़ू के लिये बैठते हैं तो सर्दी

www.dawateislami.net

से दांत बजते हैं फिर हिम्मत कर के जब वुज़ू शुरूअ़ कर देते हैं तो इबतिदाअन ठन्डक ज़ियादा मह़सूस होती है और फिर ब तदरीज कम हो जाती है। हर मुश्किल काम का येही उसूल है मसलन किसी को कोई मोहलिक बीमारी लग जाए तो वोह बे चैन हो जाता है फिर रफ़्ता रफ़्ता जब आ़दी हो जाता है तो कुव्वते बरदाश्त भी पैदा हो जाती है।

लिहाज़ा फ़ौरन से पेशतर **आप म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला **मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमा लीजिये और **म-दनी इन्आ़म** नम्बर 15 : "क्या आज आप ने यकसूई के साथ कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासबा करते हुए) जिन जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी फ़रमाई ?" के मुत़ाबिक़ अ़मल शुरूअ़ कर दीजिये, इस **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल के लिये आप जब अपना रिसाला खोलेंगे तो हर **म-दनी इन्आ़म** के नीचे तीस दिनों के ख़ाने नज़र आएंगे। आप बिला नागा वक़्ते मुक़र्ररा पर **फ़िक्रे मदीना** करते हुए जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की सआ़दत मिली नीचे ख़ाने में (✓) वरना (०) लिख दीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ब तदरीज अ़मल में इज़ाफ़े के साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत मह़सूस फ़रमाएंगे। **ह़दीसे पाक** में है, कि आख़िरत के मुआ़मले में घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना साठ साल की इबादत से बेहतर है।

(الجامع الصغیر للسیوطی، حرف الفاء، الحدیث:۵۸۹۷، ص ۳۶۵)

तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लीजिये कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना पाबन्दी से फ़िक्रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल करेंगे।

www.dawateislami.net

जै़ल में चन्द **म-दनी इन्आ़मात** दिये गए हैं और बतौ़रे नमूना इन के नीचे तीस दिनों के ख़ानों में अ़मल होने या न होने की सूरत में निशान लगाने का अन्दाज़ पेश किया गया है :

ख़ाने पुर करने का त़रीक़ा

मदीना : (1) क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले **अच्छी अच्छी निय्यतें कीं** ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरग़ीब दिलाई ?

~~1~~	~~2~~	③	④	~~5~~	⑥	~~7~~	~~8~~	⑨	~~10~~	~~11~~	~~12~~	~~13~~	~~14~~	~~15~~	मीज़ान
~~16~~	~~17~~	~~18~~	~~19~~	~~20~~	~~21~~	~~22~~	~~23~~	~~24~~	~~25~~	~~26~~	~~27~~	~~28~~	~~29~~	~~30~~	26

मदीना : (28) **आज आप ने (घर में या बाहर)** किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **गुस्से का इलाज** फ़रमाया या बोल पड़े ? नीज़ **दर गुज़र** से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ़ ढूंडते रहे ?

~~1~~	②	~~3~~	~~4~~	⑤	~~6~~	~~7~~	~~8~~	⑨	~~10~~	~~11~~	⑫	~~13~~	~~14~~	~~15~~	मीज़ान
⑯	⑰	~~18~~	~~19~~	~~20~~	~~21~~	~~22~~	~~23~~	㉔	~~25~~	~~26~~	~~27~~	~~28~~	~~29~~	~~30~~	23

मदीना : (29) आज आप ने किसी से ऐसे **फ़ुज़ूल सुवालात** तो नहीं किये जिन के ज़रीए़ मुसलमान उ़मूमन **झूट** के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं ? (मसलन बिला ज़रूरत पूछना आप को हमारा खाना पसन्द आया ? वग़ैरा)

~~1~~	②	~~3~~	~~4~~	~~5~~	~~6~~	~~7~~	⑧	~~9~~	~~10~~	~~11~~	~~12~~	~~13~~	~~14~~	~~15~~	मीज़ान
~~16~~	~~17~~	~~18~~	~~19~~	~~20~~	~~21~~	~~22~~	~~23~~	~~24~~	~~25~~	~~26~~	~~27~~	~~28~~	~~29~~	~~30~~	28

मदीना : (31) क्या आज आप ने घर के म-दनी मुन्नों को बहलाने के लिये **झूट** तो नहीं बोला ? (मसलन खाना खा लो ! खिलोना दूंगी, सो जाओ ! देखो बिल्ली आ रही है वग़ैरा जब कि वाक़िअ़तन ऐसा न हो तो येह झूट है)

~~1~~	②	③	~~4~~	~~5~~	⑥	~~7~~	~~8~~	~~9~~	⑩	~~11~~	⑫	~~13~~	~~14~~	~~15~~	मीज़ान
⑯	~~17~~	18	~~19~~	~~20~~	~~21~~	~~22~~	23	~~24~~	~~25~~	~~26~~	27	~~28~~	~~29~~	~~30~~	24

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

इजतिमाई फ़िक्रे मदीना का त़रीक़ा

﴾म-दनी क़ाफ़िला, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान और म-दनी मश्वरों वग़ैरा में इजतिमाई फ़िक्रे मदीना की इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये﴿

अभी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इजतिमाई फ़िक्रे मदीना होगी, तमाम इस्लामी भाई अपने अपने **म-दनी इन्आ़मात के रसाइल और** क़लम हाथ में ले लीजिये, अ़मल की सूरत में (✓) और न होने की सूरत में (०) का निशान बना दें। जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल हो, उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाइये, सिर्फ़ अपने रिसाले पर तवज्जोह रखिये, दूसरों के रिसाले पर नज़र न डालिये।

यौमिया 50 म-दनी इन्आ़मात

(1) **अच्छी अच्छी निय्यतों** वाला म-दनी इन्आ़म (2) **पांचों नमाज़ें** पहली सफ़ में पढ़ने वाला म-दनी इन्आ़म (3) **सूरतुल मुल्क** पढ़ने वाला म-दनी इन्आ़म (4) **अज़ान व इक़ामत** का जवाब देने वाला म-दनी इन्आ़म (5) **313 मरतबा दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला म-दनी इन्आ़म (6) आते जाते **मुसलमानों को सलाम** करने वाला म-दनी इन्आ़म (7) **आप और जी** कहने वाला म-दनी इन्आ़म (8) जाइज़ बात के इरादे पर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहने वाला म-दनी इन्आ़म (9) **सलाम व छींक** का जवाब देने वाला म-दनी इन्आ़म (10) **दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ात** इस्ति'माल करने वाला म-दनी इन्आ़म (11) **मिट्टी के बरतन** इस्ति'माल करने वाला म-दनी इन्आ़म (12) **घर में दर्स देने वाला** म-दनी इन्आ़म

(13) **इशा की जमाअ़त** के वक़्त से दो घन्टे के अन्दर अन्दर घर पहुंच जाने वाला म-दनी इन्आ़म (14) फ़ैज़ाने सुन्नत के कम अज़ कम 4 **सफ़हा़त** पढ़ने वाला म-दनी इन्आ़म (15) रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने वाला म-दनी इन्आ़म (16) **सलातुत्तौबा** पढ़ने वाला म-दनी इन्आ़म (17) **चटाई इस्ति'माल** करने वाला म-दनी इन्आ़म (18) **सुन्नतें क़बलिय्या** पढ़ने **वाला म-दनी इन्आ़म** (19) **इशराक़ व चाश्त** वाला म-दनी इन्आ़म (20) **तहिय्यतुल वुज़ू** वाला म-दनी इन्आ़म (21) **कन्ज़ुल ईमान** से कम अज़ कम 3 आयात पढ़ने वाला म-दनी इन्आ़म (22) **इनफ़िरादी कोशिश** वाला म-दनी इन्आ़म (23) **म-दनी कामों** में 2 **घन्टे सर्फ़ करने वाला** म-दनी इन्आ़म (24) निगरान की **इत़ाअ़त करने** वाला म-दनी इन्आ़म (25) दूसरों से **चीज़ें न मांगने** वाला म-दनी इन्आ़म (26) **तन्ज़ीमी तरकीब** के मुत़ाबिक़ मसाइल के ह़ल वाला म-दनी इन्आ़म (27) **पर्दे में पर्दा** वाला म-दनी इन्आ़म (28) **गु़स्से के इलाज** वाला म-दनी इन्आ़म (29) **फु़ज़ूल सुवालात** से बचने वाला म-दनी इन्आ़म (30) **शरई पर्दा** करने वाला म-दनी इन्आ़म (31) कम अज़ कम 12 मिनट **आंखें बन्द रखने** वाला म-दनी इन्आ़म (32) **घर में म-दनी माह़ोल बनाने** वाला म-दनी इन्आ़म (33) **तोहमत लगाने** से बचने वाला म-दनी इन्आ़म (34) **दूसरों की बात न काटने** वाला म-दनी इन्आ़म (35) **सदाए मदीना** वाला म-दनी इन्आ़म (36) **निगाहें नीची** रखने वाला म-दनी इन्आ़म (37) **घरों के अन्दर झांकने से बचने** वाला म-दनी इन्आ़म (38) **ग़ीबत** वगै़रा से बचने वाला **म-दनी इन्आ़म**

www.dawateislami.net

(39) **बा वुज़ू रहने** वाला म-दनी इन्आ़म (40) **क़ुफ़्ले मदीना ऐ़नक इस्ति'माल** करने वाला म-दनी इन्आ़म (41) **क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर से बचने** वाला म-दनी इन्आ़म (42) **पर्दा पोशी** करने वाला म-दनी इन्आ़म (43) **यक्सां तअ़ल्लुक़ात वाला** म-दनी इन्आ़म (44) **ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़** वाला म-दनी इन्आ़म (45) **रियाकारी से बचने** वाला म-दनी इन्आ़म (46) कम अज़ कम **चार बार लिख कर गुफ़्त्गू** करने वाला म-दनी इन्आ़म (47) **म-दनी चेनल देखने** वाला म-दनी इन्आ़म (48) **दिल आज़ारी** से बचने वाला म-दनी इन्आ़म (49) **कम अल्फ़ाज़ में गुफ़्त्गू** निमटाने वाला म-दनी इन्आ़म (50) **म-दनी हुल्या** अपनाने वाला म-दनी इन्आ़म

क़ुफ़्ले मदीना कारकर्दगी

(1) कम अज़ कम 12 मरतबा **लिख कर** गुफ़्त्गू की सआ़दत मिली ? (2) कम अज़ कम 12 मरतबा **इशारे से** गुफ़्त्गू की सआ़दत मिली ? (3) कम अज़ कम 12 मरतबा **निगाहें गाड़े बिग़ैर** गुफ़्त्गू की सआ़दत मिली ? (4) कम अज़ कम 12 मिनट **क़ुफ़्ले मदीना ऐ़नक** इस्ति'माल करने की सआ़दत मिली ?

जिन म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल से महरूमी रही उन पर अ़मल की निय्यत फ़रमा लीजिये, नीज़ येह भी निय्यत कीजिये कि रोज़ाना फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर माह 3 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने वाले **म-दनी इन्आ़म** पर ज़रूर अ़मल करेंगे। (اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ)

www.dawateislami.net

म-दनी वज़ाह़तें

म-दनी इन्आ़मात की वज़ाह़तों और रिआ़यतों से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात के जवाबात के लिये तन्ज़ीमी त़ौर पर चार क़ाइदे मुक़र्रर किये गए हैं।

क़ाइदा नम्बर 1 : बा'ज़ **म-दनी इन्आ़मात** चन्द "अज्ज़ा" पर मुश्तमिल हैं मसलन : तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन वाला म-दनी इन्आ़म, इस **म-दनी इन्आ़म** में 4 जुज़्व हैं, लिहाज़ा ऐसे **म-दनी इन्आ़मात** के अकसर अज्ज़ा पर अ़मल होने की सूरत में **तन्ज़ीमी त़ौर पर अ़मल मान लिया जाएगा।** (अकसर से मुराद आधे से ज़ियादा मसलन 100 में से 51 अकसर कहलाएगा)

क़ाइदा नम्बर 2 : बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर किसी दिन अ़मल न होने की सूरत में दूसरे दिन अ़मल किया जा सकता है मसलन : **फ़ैज़ाने सुन्नत के चार सफ़ह़ात पढ़ने, 313 बार दुरूदे पाक** पढ़ने या कम अज़ कम 3 आयात की तिलावत (मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीर) से मह़रूमी रही। इस सूरत में जितने दिन नागा हुवा, उन का ह़िसाब लगा कर अ़मल कर लेने पर तन्ज़ीमी त़ौर पर अ़मल मान लिया जाएगा।

क़ाइदा नम्बर 3 : बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर अ़मल की आ़दत बनाने में वक़्त लगता है। मसलन क़ह्क़हा, तू तुकार से बचने और निगाहें झुका कर चलने की आ़दत बनाने वाले **इन्आ़मात,** ऐसे **म-दनी इन्आ़मात** पर ज़मानए कोशिश के दौरान अ़मल मान लिया जाएगा।

www.dawateislami.net

क़ाइदा नम्बर 4 : बा'ज़ म-दनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर सह़ीह़ उ़ज़्र (या'नी ह़क़ीक़ी मजबूरी) की बिना पर अ़मल की कोई सूरत न हो या इस दौरान दूसरे **म-दनी काम में मशग़ूलिय्यत है** मसलन **ज़िम्मेदार** वग़ैरा का दीगर **म-दनी कामों** में मसरूफ़िय्यत **के** बाइ़स **मद्रसतुल** मदीना बालिग़ान में शिर्कत न कर सकना या वालिदैन की वफ़ात या इन की रिहाइश दूर होने की सूरत में **दस्त बोसी** और अनपढ़ होने के बाइ़स **लिख कर बात करने से** मह़रूमी हो तो भी तन्ज़ीमी त़ौर पर इन पर अ़मल मान लिया जाएगा ।

गुस्सा ईमान को ख़राब करता है

*ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : गुस्सा ईमान को इस त़रह़ **ख़राब** करता है जिस त़रह़ ऐलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को **ख़राब** कर देता है ।*

(شعب الایمان للبیهقی،الحدیث: ۸۲۹۴،ج۶،ص ۳۱۱)

गुस्से की ता'रीफ़

***नफ़्स के उस जोश** का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ (दूर) करने पर उभारे ।*

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 655)

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

*ह़दीसे पाक में है : "जिस शख़्स ने गुस्सा ज़ब्त़ कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा ।"* (الجامع الصغیر للسیوطی،الحدیث:۸۹۹۷،ص ۵۴۱)

www.dawateislami.net

आओ नेक बनें और बनाएं !
के 18 हुरूफ़ की निस्बत से अठ्ठारह
"सामाने म-दनी इन्आमात" की फ़ेहरिस्त

﴾1﴿ **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ ﴾2﴿ श-ज-रए अ़त्तारिय्या ﴾3﴿ तम्हीदुल ईमान, हुस्सामुल ह़रमैन ﴾4﴿ जन्नत के त़लब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता (मिन्हाजुल आ़बिदीन और बहारे शरीअ़त के मुन्तख़ब अबवाब व मज़ामिन और म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ सूरतें, छे कलिमे, अवरादो वज़ाइफ़ और दुआ़ओं का बेहतरीन मजमूआ़) ﴾5﴿ म-दनी रसाइल (रसाइल से मुराद **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल हैं) ﴾6﴿ फ़ैज़ाने सुन्नत ﴾7﴿ म-दनी फूल के पेम्फ़्लेट ﴾8﴿ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला (फ़िक्रे मदीना के दौरान रोज़ाना ख़ाने पुर करने के लिये) ﴾9﴿ क़ुफ़्ले मदीना का म-दनी पेड़ मअ़ क़लम (लिख कर गुफ़्तगू की आ़दत बनाने के लिये) ﴾10﴿ क़ुफ़्ले मदीना का कार्ड (बराए नेकी की दा'वत सीने पर सजाने के लिये) ﴾11﴿ सब्ज़ इमामा शरीफ़ मअ़ सरबन्द शरीफ़ ﴾12﴿ म-दनी चादरें (ओढ़ने के लिये सफ़ेद और **पर्दे में पर्दे** के लिये कथ्थई) ﴾13﴿ **म-दनी बुर्क़अ़**, दस्ताने और मौज़े शरई पर्दे का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं ﴾14﴿ क़ुफ़्ले मदीना का ऐनक (निगाहों की हिफ़ाज़त के लिये) ﴾15﴿ क़ुफ़्ले मदीना का पथ्थर (ख़ामोशी की आदत डालने और सुन्नतें सिद्दीक़ी अदा करने के लिये) ﴾16﴿ सुन्नत बोक्स (बत़ौरे सुन्नत सोते वक़्त सिरहाने और सफ़र में साथ रखने के लिये आईना, कन्घी, सूई-धागा, मिस्वाक, तेल की शीशी और क़ैंची) ﴾17﴿ चटाई ﴾18﴿ मिट्टी के बरतन।

दुआ़ए अ़त्तार : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो कोई येह सामाने **म-दनी इन्आ़मात** अपने यहां बसाए और इन को इस्ति'माल भी करता रहे मुझे और उस को **इख़्लास** की ला ज़वाल दौलत, जल्वए मह़बूब में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न, जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला और प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल

www.dawateislami.net

कमो बेश 26 सेकन्ड्ज़ में इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा

जेब से **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला** निकाल कर इसे पेश करते हुए यूं कहिये : **येह तोहूफ़ा** रखिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़े इस रिसाले में अ़त़ा फ़रमाए हैं। इन में 72 **म-दनी इन्आ़मात** ब सूरते सुवालात दिये गए हैं, मगर 72 पर रोज़ाना अ़मल नहीं करना है बल्कि यौमिय्या **म-दनी इन्आ़मात** में 3 दरजे हैं, पहले दर्जे में सिर्फ़ 17 **म-दनी इन्आ़मात** हैं। चाहे आप एक से अ़मल शुरूअ़ कीजिये, बस रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर लिया करें (फिर इन्हें रिसाला खोल कर दिखाइये और कहिये :) येह देखिये ! हर सुवाल के नीचे 30 ख़ाने बने हुए हैं। जिस इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत मिले तो उस दिन की तारीख़ के ह़िसाब से ✓ का निशान वरना 0 बना दीजिये (रिसाला उन के हाथ में दे कर कहिये :) उम्मीद है रोज़ाना फ़िक्रे मदीना ज़रूर करेंगें ...और जुमा'रात बा'द इ़शा होने वाले **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतो भरे इजतिमाअ़ में **फ़ैज़ाने मदीना** में भी ज़रूर तशरीफ़ लाइयेगा। (अगर उस को **फ़ैज़ाने मदीना** का पता मा'लूम न हो तो बता दीजिये), मुमकिन हो तो हाथों हाथ अ़त्तारी बनाने के लिये नाम भी ले सकते हैं।

अ़त्तारी बनाने के लिये नाम लेने का त़रीक़ा

जो भी शख़्सिय्यत हो गुफ़्त्गू के इख़्तिताम पर उन से इतना कह दीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं आप का नाम क़ादिरी सिल्सिले के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग अमीरे अहले सुन्नत से मुरीद होने के लिये दे दूंगा। येह मत कहियेगा कि आप इजाज़त दें तो दे दूं। आप ह़ैरान रह जाएंगे कि 99 फ़ीसद लोग आप को इजाज़त दे देंगे, फिर पूछिये, आप शादी शुदा हैं? वोह हां कहें तो फ़ौरन उन के बच्चों की अम्मी और बच्चों के नाम भी लिख लीजिये, मुकम्मल पता व **फ़ोन** नम्बर ज़रूर लीखिये और बा'द में उन को मकतूब भी रवाना करें।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान का आसान त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नीचे दिये गए बयान का आसान त़रीक़े में, **बयान शुरूअ़** करने और **ख़त्म** करने का त़रीक़ा, बत़ौरे नमूना नमाज़ और फ़िक्रे मदीना से मुतअ़ल्लिक़ दो बयानात, फ़िक्रे मदीना और इस पर **इस्तिक़ामत** का त़रीक़ा और आख़िर में **म-दनी क़ाफ़िले** की तरग़ीब पेश की गई है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस आसान त़रीक़े के ज़रीए़ हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन न सिर्फ़ **म-दनी इन्आ़मात** से मुतअ़ल्लिक़ 126 बल्कि दीगर कई मौज़ूआ़त पर 12 या 26 मिनट का या जितना चाहें त़वील बयान कर सकते हैं। (बयान का दौरानिया बढ़ाने के लिये जिस **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल की तरग़ीब या जिस मौज़ूअ़ पर बयान है इस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ाइल व रिवायात का मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमा दीजिये)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के बयान के तह़रीरी **गुलदस्ते "करामाते उ़समाने ग़नी"** में ब ह़वाला फ़िरदौसुल अख़्बार मन्क़ूल है कि सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है :

www.dawateislami.net

“ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे।”

(فردوس الاخبار باب الیاء ج۲، ص ۴۷۱ حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी**, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने हमें इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ बनाम **“म-दनी इन्आ़मात”** अ़त़ा फ़रमाए हैं : आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه मज़ीद फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों की **दुन्या व आख़िरत बेहतर** बनाने के लिये सुवाल नामे की सूरत में **इस्लामी भाइयों** के लिये 72, **इस्लामी बहनों** के लिये 63, **दीनी त़लबा** के लिये 92 और **दीनी त़ालिबात** के लिये 83 जब कि म-दनी मुन्नों और **म-दनी मुन्नियों** के लिये 40 और ख़ुसूसी (या'नी गूंगे और बहरे) इस्लामी भाइयों के लिये 27 **म-दनी इन्आ़मात** पेश किये गए हैं म-दनी इन्आ़मात का रिसाला **मक्तबतुल मदीना** से मिल सकता है, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ इस को पुर कर के **म-दनी माह की** 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाना होता है।

www.dawateislami.net

(इस्लामी भाइयों में बयान कर रहे हैं तो यूं कहिये)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है 72 का अ़दद सुन कर किसी को वस्वसा आए कि मैं तो बहुत मसरूफ़ हूं इतना वक़्त कहां जो **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर सकूं, इस वस्वसे के तह़त मुमकिन है कई इस्लामी भाई अब तक **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ह़ासिल करने की सआ़दत से मह़रूम रहे हों।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह शैत़ान का ख़त़रनाक वार है जिस के ज़रीए़ वोह दुन्या व आख़िरत की भलाइयों के ह़ुसूल में रुकावट डालने की कोशिश करता है, अगर आप इन वस्वसों पर तवज्जोह दिये बिग़ैर **म-दनी इन्आ़मात** पर ग़ौर फ़रमाएं तो शायद ह़ैरान रह जाएंगे कि जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना मुश्किल लग रहा था उन पर अ़मल करना तो बहुत आसान है, क्यूंकि हमें रोज़ाना 72 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल नहीं करना बल्कि रोज़ाना जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना है इस के तीन दरजे हैं पहला और दूसरा दरजा 17 और तीसरा सिर्फ़ 16 **म-दनी इन्आ़मात** पर मुश्तमिल हैं। 8 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन पर हफ़्ते में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है। 6 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन पर महीने में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है और 8 **म-दनी इन्आ़मात** ऐसे हैं जिन पर 12 माह में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को बख़ूबी अन्दाज़ा हो गया होगा कि शैत़ान जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना दुश्वार मह़सूस करवा रहा था इन पर अ़मल बहुत आसान है। फ़ी ज़माना एक मुसलमान के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल किस

www.dawateislami.net

क़दर ज़रूरी है, इस का अन्दाज़ा आप को उसी वक़्त हो सकता है जब आप **म-दनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं आप देखेंगे कि इन **म-दनी इन्आ़मात** में फ़राइज़ो वाजिबात, सुनन व **मुस्तह़ब्बात** पर अ़मल की तरग़ीब के साथ साथ कहीं अख़्लाक़िय्यात के हुसूल के **म-दनी फूल** ख़ुश्बू फैला रहे हैं तो कहीं गुनाहों से बचने और आसानी से नेकियां करने के त़रीक़े अपनी ब-रकतें लुटा रहे हैं। तरग़ीब व तह़रीस के लिये इन म-दनी इन्आ़मात में से दो के फ़ज़ाइल पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा, अगर मुकम्मल तवज्जोह के साथ शिर्कत रही तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का दिल **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने के लिये बे क़रार हो जाएगा।

नमाज़े बा जमाअ़त और तक्बीरे ऊला के फ़ज़ाइल

शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه म-दनी **इन्आ़म** नम्बर **2** में फ़रमाते हैं :

"क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाईं ? नीज़ हर बार किसी एक को अपने साथ मस्जिद ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه अपने रिसाले "नेक बनने का नुस्ख़ा" में फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ इस एक **म-दनी इन्आ़म** पर अगर कोई सह़ीह़ मा'नों में कारबन्द हो जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का बेड़ा पार हो जाए। नमाज़ के फ़ज़ाइल से कौन वाक़िफ़ नहीं ? चुनान्चे

www.dawateislami.net

साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो दो रकअ़त नमाज़ पढ़े उन में सह्व (ग़-लत़ी) न करे तो जो पेशतर गुनाह हुए हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमा देता है।" (यहां गुनाहे सग़ीरा मुराद है)

(المسند للامام احمد ،مسند الانصارحديث:٢١٧٤٩،ج٨،ص١٦٢)

देखा आप ने ! दो रकअ़त की जब येह फ़ज़ीलत हो तो पांचों नमाज़ों की कैसी ब-र-कतें होंगी ! इस **"म-दनी इन्आ़म"** में नमाज़ें **बा जमाअ़त** अदा करनी हैं, और जमाअ़त की फ़ज़ीलत के तो क्या कहने !

27 दरजे बढ़ कर

मुस्लिम शरीफ़ में सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत है, ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नमाज़े **बा जमाअ़त** तन्हा पढ़ने से **27** दरजे बढ़ कर है।"

(صحيح المسلم ،كتاب المساجد...الخ،باب فضل صلاة الجماعة...الخ، الحديث:٢٤٩ـ (٦٥٠)،ص٣٢٦)

मज़ीद इस "म-दनी इन्आ़म" में **तक्बीरे ऊला** का ज़िक्र है। इस की भी फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये,

जहन्नम से आज़ादी

इब्ने माजह की रिवायत में है, सरकारे मदीनए मुनव्वरह सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"जो मस्जिद में बा जमाअ़त **40** रातें नमाज़े इ़शा इस त़रह़ पढ़े कि पहली रकअ़त फ़ौत न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है।"

(سنن ابن ماجه، كتاب المساجد والجماعات، باب صلاة العشاء...الخ، الحديث: ۷۹۸، ج ۱، ص ۴۳۷)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! चालीस दिन जब इ़शा की नमाज़े बा जमाअ़त मअ़ **तक्बीरे ऊला** की येह फ़ज़ीलत है तो ज़िन्दा रह जाने की सूरत में बरसहा बरस तक पांचों नमाज़ें **तक्बीरे ऊला** के साथ बा जमाअ़त अदा करने का क्या मक़ाम होगा !

फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकलने वाला

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने खुश्बूदार है : जो त़हारत कर के अपने घर से फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकला उस का सवाब ऐसा है जैसा ह़ज करने वाले मोह़रिम (एह़राम बांधने वाले) का।

(سنن ابی داود، كتاب الصلاة، باب ماجاء فی فضل المشی...الخ، الحديث: ۵۵۸، ج ۱، ص ۲۳۱)

दरवाज़े पर नहर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "बताओ अगर किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो जिस में हर रोज़ **5** बार गुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ?" लोगों

www.dawateislami.net

ने अ़र्ज़ की : "उस के मैल में से कुछ बाक़ी न रहेगा," आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**पांचों** नमाज़ों की ऐसी ही मिसाल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के सबब ख़त़ाओं को मिटा देता है।"

(صحیح مسلم ،کتاب المساجد و مواضع الصلوۃ ،باب المشی الی الصلوۃ تمحی به الخطایا و ترفع به الدرجات ،ص ٣٣٦،الحدیث:٦٦٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस "**म-दनी इन्आ़म**" की रू से नमाज़ें भी **मस्जिद** ही में अदा करनी हैं और मस्जिद को जाना سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो सुब्ह़ या शाम को **मस्जिद** में आए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक ज़ियाफ़त तय्यार फ़रमाएगा।"

(صحیح مسلم،کتاب المساجد و مواضع الصلوۃ، باب المشی الی الصلوۃ تمحی به الخطایا و ترفع به الدرجات، ص ٣٣٦،الحدیث:٦٦٩)

पहली सफ़

पहली सफ़ भी "म-दनी इन्आ़म" में मौजूद है सरकारे मक्कतुल मुकर्रमा, सरदारे मदीनतुल मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "लोग अगर जानते कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है तो बिग़ैर क़ुरआ डाले न पाते लिहाज़ा इस के लिये क़ुरआ अन्दाज़ी करते।"

(صحیح المسلم ،کتاب الصلاۃ،باب تسویة الصفوف...الخ، الحدیث:١٢٩ - (٤٣٧)،ص ٢٣١)

www.dawateislami.net

एक और रिवायत में है, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर दुरूद (या'नी रह़मत) भेजते हैं।" सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : और दूसरी सफ़ पर ! फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद (या'नी रह़मत) भेजते हैं पहली सफ़ पर।" सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने फिर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और दूसरी पर भी ? फ़रमाया : दूसरी पर भी। मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "सफ़ों को बराबर करो और कन्धों को मुक़ाबिल (या'नी एक सीध में) करो, अपने भाइयों के हाथों में नर्म हो जाओ और कुशादगियों (या'नी सफ़ की ख़ाली जगहों) को बन्द करो कि शैत़ान भेड़ के बच्चे की त़रह तुम्हारे बीच में दाख़िल हो जाता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار،ج ۸، ص ۲۹٦، الحدیث:۲۲۳۲٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब एक म-दनी इन्आ़म की ऐसी बहारें हैं तो बक़िय्या **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने से कैसी ब-रकतें ह़ासिल होंगी। लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लीजिये कि आयन्दा ज़िन्दगी के शबो रोज़ **म-दनी इन्आ़मात** की ख़ुश्बूओं से मुअ़त्त़र रखने की कोशिश करेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

आ'माल का मुह़ासबा (फ़िक्रे मदीना)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़ाना बिला नाग़ा अपने आ'माल का मुह़ासबा (फ़िक्रे मदीना) करना बहुत बड़ी सआ़दत है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने म-दनी इन्आ़मात में इस की भी तरग़ीब दिलाई है चुनान्चे म-दनी इन्आ़म नम्बर 15

www.dawateislami.net

में फ़रमाते हैं : "क्या आप ने यक्सूई के साथ कम अज़् कम 12 मिनट **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने अ़मल का मुह़ासबा करते हुए) जिन जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी फ़रमाई ?"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे मदीना या'नी मुह़ासबा कैसे किया जाए ? इस की क्या ब-र-कतें हैं और हमारे अस्लाफ़ व बुज़ुर्गाने दीन के मुह़ासबे का क्या अन्दाज़ था नीज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुनफ़रिद व मोअस्सर अन्दाज़ में **फ़िक्रे मदीना** की तरग़ीब दिलाना आयन्दा सुतूर में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद** इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मैं सुधरना चाहता हूं**" में **दुरूद शरीफ़** के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम सख़ावी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर **एक बार दुरूदे पाक** भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस पर दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **सो** रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है

www.dawateislami.net

और जो मुझ पर **सो बार दुरूदे** पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **दोनों आंखों के दरमियान** लिख देता है कि **येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है** और **क़ियामत** के दिन उस को **शहीदों** के साथ रखेगा।" (القول البدیع،الباب الثانی،ص۲۳۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अनोखा हि़साब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्नुस्सिम्मा** رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने एक बार अपना मुह़ासबा करते हुए अपनी उ़म्र शुमार की तो वोह (तक़रीबन) साठ बरस बनी इन साठ बरसों को बारह से ज़र्ब देने पर **सात सो बीस महीने** बने, सात सो बीस को मज़ीद तीस से मज़रूब (या'नी मल्टीप्लाय) किया तो ह़ासिले ज़र्ब **इक्कीस हज़ार** छे सो आया जो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की मुबारक उ़म्र के अय्याम थे फिर अपने आप से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाने लगे : "अगर मुझ से रोज़ाना एक गुनाह भी सरज़द हुवा हो तो अब तक **इक्कीस हज़ार छे सो गुनाह हो चुके,** जब कि इस मुद्दत में ऐसे अय्याम भी शामिल होंगे जिन में योमिय्या **एक हज़ार** तक भी गुनाह हुए होंगे," येह कहना था कि ख़ौफ़े **ख़ुदा** से लरज़ने लगे ! फिर यकायक **एक चीख़** उन के मुंह से निकल कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه **ज़मीन पर तशरीफ़** ले आए, देखा गया तो त़ाइरे रूह़ **क़फ़से उ़न्सुरी** से परवाज़ कर चुका था। (کیمیائے سعادت، اصل ششم درمحاسبہ ومراقبہ، مقام سوم درمحاسبات، ج۲،ص۸۹۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*

www.dawateislami.net

मुह़ासबा किसे कहते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने साबिक़ा आ'माल का हिसाब करना मुह़ासबा कहलाता है। ग़ौर फ़रमाइये कि हमारे **बुज़ुर्गाने दीन** رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن किस त़रह़ अपना मुह़ासबा फ़रमाते, उन का अन्दाज़े **फ़िक्रे मदीना** कितना आ'ला था कि हरदम **नेकियों** में मसरूफ़ रहने के बा वुजूद ख़ुद को गुनहगार तसव्वुर करते ह़ालांकि उन की **शान** तो येह है कि वोह **मुस्तह़ब्बात** के तर्क को भी अपने लिये सय्यिआत (या'नी बुराइयों) में से जानते, **नफ़्ली इबादात** में कमी को भी **जुर्म** तसव्वुर करते और बचपन की **ख़त़ा** को भी **गुनाह** शुमार करते ह़ालांकि **ना बालिग़ी** के गुनाह **मह़सूब** (शुमार) नहीं किये जाते।

बचपन की ख़त़ा याद आ गई

चुनान्चे एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबतुल ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام एक मकान के पास से गुज़रे तो **कांपने** लगे और **पसीना** आ गया ! लोगों के **इस्तिफ़्सार** पर फ़रमाया : येह वोह जगह है जहां मैं ने छोटी उ़म्र में **गुनाह** किया था।

(تنبیہ المغترین،خوفھم مما للعباد علیھم،ص ۵۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

नेकी कर के भूल जाओ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्ल मन्द वोही है जो नेकियों के ह़ुसूल की **सआ़दत** पा कर इन्हें भूल जाए और **गुनाह** सादिर हो

www.dawateislami.net

जाएं तों इन्हें याद रखे और अपनी **इस्लाह़** के लिये इन पर सख़्ती से अपना **मुह़ासबा** करता रहे बल्कि **नेक आ'माल** में कमी पर भी ख़ुद को **सर ज़निश** (या'नी डांट डपट) करे और हर लम्ह़ा ख़ुद को **अल्लाह** वाहि़दे क़ह्हार के **क़हरो ग़ज़ब** से डराता रहे येही हमारे **बुज़ुर्गाने दीन** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का मा'मूल रहा है।

आज "क्या क्या" किया ?

चुनान्चे अमीरुल मोअमिनीन **ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रोज़ाना अपना एह़तिसाब फ़रमाया करते और जब रात आती तो अपने पाऊं पर दुर्रा मार कर फ़रमाते : बता ! आज तूने "क्या क्या" किया है ?

(احیاء علوم الدین، کتاب المراقبة والمحاسبة، المرابطة الرابعة فی معاقبة النفس علی تقصیرها، ج٥، ص١٤١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आ़जिज़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अ़-श-रए मुबश्शरा या'नी जिन दस **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को **ताजदारे रिसालत** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **जन्नत** की बिशारत सुनाई उन में शामिल और सय्यिदुना **सिद्दीक़े अकबर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बा'द सब से **अफ़ज़ल** होने के बा वुजूद बहुत **इनकिसारी** फ़रमाया करते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अनस बिन मालिक** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक बाग़ की दीवार के क़रीब देखा कि वोह अपने **नफ़्स** से फ़रमा रहे थे : "वाह ! लोग तुझे **अमीरुल मुअमिनीन**

www.dawateislami.net

कहते हैं (फिर बत़ौरे आ़जिज़ी फ़रमाने लगे) और तू (वोह है कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं **डरता** ! (याद रख !) अगर तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं रखा तो उस के **अ़ज़ाब** में **गिरिफ़्तार** हो जाएगा ।"

(کیمیائے سعادت،اصل ششم درمحاسبه و مراقبه،مقام سوم درمحاسبات،ج۲،ص۸۹۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का इस तरह अपने **नफ़्स** को मलामत करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिला कर इस का **मुह़ासबा** करना हमारी ता'लीम के लिये भी था ।

क़ियामत से पहले ह़िसाब

एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : **"ऐ लोगो** ! अपने आ'माल का इस से पहले मुह़ासबा कर लो कि **क़ियामत** आ जाए और इन का **ह़िसाब** लिया जाए ।"

(احیاء علوم الدین، کتاب المراقبة و المحاسبة، المقام الاوّل ... الخ، ج۵، ص۱۲۸)

चराग़ पर अंगूठा

बहुत बड़े **आ़लिम** और ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **अह़नफ़ बिन क़ैस** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ रात के वक़्त **चराग़** हाथ में उठा लेते और उस की लौ पर **अंगूठा रख** कर इस तरह फ़रमाते : **ऐ नफ़्स** ! तूने

www.dawateislami.net

फ़ुलां काम क्यूं किया ? और फ़ुलां चीज़ क्यूं खाई ? या'नी अपना मुह़ासबा करते कि अगर मेरे नफ़्स ने ग़-लत़ी की हो तो उस को तम्बीह हो कि येह चराग़ की लौ जो कि बहुत ही हल्की आग है फिर भी ना क़ाबिले बरदाश्त है तो भला जहन्नम की भयानक आग सहना क्यूं कर मुमकिन होगा। (کیمیائے سعادت،اصل ششم، مقام چہارم د رمعاقبت نفس،ج۲،ص۸۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उन **नुफ़ूसे क़ुदसिय्या** के ह़ालात हैं जो **परवर दगार** عَزَّوَجَلَّ के **परहेज़ गार** बन्दे हैं जिन के सरों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने विलायत के ताज सजाए हैं, मुलाह़ज़ा फ़रमाइये **कि बईं हमा शरफ़ व मर्तबत** (या'नी विलायत जैसा अ़ज़ीम मर्तबा ह़ासिल होने के बा वुजूद) किस त़रह़ नफ़्स का मुह़ासबा फ़रमाते और ख़ुद को आ़जिज़ व गुनहगार तसव्वुर करते। काश ! हम भी अपना मुह़ासबा कर पाते और जीते जी अपने **आ'माल का जाइज़ा** लेने में काम्याब हो जाते !

हमारा ह़ाल तो येह है कि हम सर ता पा गुनाहों में डूबे हैं, आख़िर कौन सा गुनाह ऐसा है जो हम नहीं करते ? नेकियां हम से नहीं हो पातीं और अगर हो भी जाएं तो **इख़्लास** का दूर दूर तक कोई पता नहीं होता, लोगों को अपने नेक आ'माल सुना कर **रियाकारी** की तबाहकारी का **शिकार** हो जाते हैं, हमारा नामए आ'माल **नेकियों** से **ख़ाली** और **गुनाहों** से पुर होता जा रहा है लेकिन **अफ़सोस** ! हमें इस के **बुरे नताइज** का कोई एह़सास नहीं और इस पर **तुर्रा येह** कि

www.dawateislami.net

हम ख़ुद को बहुत **अ़क्लमन्द** गुमान करते हैं ह़त्ता कि अगर कोई हमें बे वुक़ूफ़ या **कम अ़क्ल** कह दे तो उस के दुश्मन ही हो जाए, लेकिन अब आप ही बताइये कि अगर किसी **मफ़रूर** मुजरिम की फांसी का हुक्म नामा जारी हो चुका हो, **पूलिस** उस को तलाश कर रही हो और वोह **गिरिफ़्तारी** से बे ख़ौफ़, **राहे तह़फ़्फ़ुज़ व एह़तियात़** तर्क कर के आज़ादाना घूम रहा हो तो क्या उस को **अ़क्लमन्द** कहेंगे ? हरगिज़ नहीं ! ऐसे आदमी को लोग **बे वुक़ूफ़** ही कहेंगे।

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे बता दिया गया हो कि "जिस ने क़सदन नमाज़ छोड़ी **जहन्नम** के दरवाज़े पर उस का नाम लिख दिया जाता है।"

(حلیة الاولیاء،۳۸۹ مسعر بن کدام، الحدیث:۱۰۵۹۰،ج۷،ص۲۹۹)

और येह भी ख़बर दे दी गई हो कि "**जो** माहे र-मज़ान का एक रोज़ा भी बिला उ़ज़्रे शरई व मरज़ क़ज़ा कर देता है तो **ज़माने भर** के रोज़े उस की क़ज़ा नहीं हो सकते अगर्चे बा'द में रख भी ले।"

(سنن الترمذی،کتاب الصوم،باب ما جاء فی الافطار متعمداً،الحدیث:۷۲۳،ج۲،ص۱۷۵)

और येह भी ख़बर दे दी गई हो कि "जो शख़्स ह़ज के ज़ादे राह (अख़राजात) और सुवारी पर क़ादिर हुवा जो उसे **बैतुल्लाह** तक पहुंचा दे इस के **बा वुजूद ह़ज** न करे वोह चाहे **यहूदी हो कर मरे** या **ईसाई** हो कर।"

(سنن الترمذی،کتاب الحج، باب ما جاء من التغلیظ فی ترک الحج،الحدیث:۸۱۲،ج۲، ص۲۱۹)

www.dawateislami.net

अगर तुम ने **बद निगाही** की, किसी ना **मह़रम** औ़रत को देखा या अमरद को ब नज़रे शहवत देखा या T.V, V.C.R, इन्टरनेट और सीनेमा घर वग़ैरा पर फ़िल्में, डिरामे और बे ह़याई से पुर मनाज़िर देखे तो याद रखो ! मनक़ूल है : जिस ने अपनी आंख ह़राम से पुर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **बरोज़े क़ियामत** उस की आंख में आग भर देगा। (مکاشفۃ القلوب،الباب الاوّل فی بیان الخوف،ص ١٠)

और जिसे येह समझा दिया गया हो कि अ़न क़रीब तुम्हें मरना पड़ेगा क्यूंकि हर जान को मौत से हम कनार होना है जब **वक़्त पूरा** हो जाएगा तो फिर **मौत** एक पल आगे होगी न पीछे और येह भी इत्त़िलाअ़ दे दी गई हो कि मरने के बा'द उस **क़ब्र** में जाना है जो **मुजरिमों** पर तारीक और **वह़शत नाक** होती है, उन के लिये **कीड़े मकोड़े और सांप बिच्छू** भी होते हैं और उस में हज़ारों साल रहना होगा। आह ! क़ब्र हर एक को दबाएगी, नेकों को ऐसे दबाएगी जैसे मां बिछड़े हुए लाल को शफ़क़त के साथ सीने से चिमटा लेती है और जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है उन को ऐसे भींचेगी कि **पसलियां टूट फूट** कर एक दूसरे में इस त़रह़ पैवस्त हो जाएगी जिस त़रह़ दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में मिल जाती हैं, इसी पर इक्तिफ़ा नहीं बल्कि इस बात से भी **मुतनब्बेह** या'नी ख़बर दार कर दिया गया हो कि **क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा** और सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, ह़िसाब किताब का सिलसिला होगा, नेकों के लिये **जन्नत** की राह़तें और मुजरिमों के लिये **जहन्नम** की आफ़तें होंगी।

www.dawateislami.net

नादानी की इन्तिहा

इतना कुछ मा'लूम होने के बा वुजूद अगर कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कमा ह़क़्क़ुहू न डरे, मौत की सख़्तियों, क़ब्र की वह़शत नाकियों, **क़ियामत** की होलनाकियों और **जहन्नम** की सज़ाओं का सह़ीह़ मा'नों में ख़ौफ़ न रखे, ग़फ़लत की नींद सोता रहे, नमाज़ें न पढ़ें, **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े न रखे, फ़र्ज़ होने की सूरत में भी अपने माल की ज़कात न निकाले, फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ह़ज अदा न करे, **वा'दा ख़िलाफ़ी** इस का वतीरा रहे, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी वग़ैरा तर्क न करे, **फ़िल्में डिरामों** का शाइक़ रहे, गाने सुनना इस का बेहतरीन मश्ग़ला रहे, **वालिदैन की ना फ़रमानी** करे, गालियां बकने और त़रह़ त़रह़ की बे ह़याई की बातों में मगन रहे, अल ग़रज़ ख़ुद को बिलकुल भी **न सुधारे** मगर फिर भी अपने आप को **अ़क़्लमन्द** समझता रहे तो ऐसे शख़्स से बढ़ कर **बे वुक़ूफ़** और कौन होगा ? और **बे वुक़ूफ़ी** की इन्तिहा येह है कि जब सुधारने की ख़ात़िर समझाया जाए तो ला परवाही से कह दे कि बस जी कोई बात नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो **रह़ीमो करीम** है मेहरबानी करेगा, वोह करम फ़रमा देगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है

यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **रह़ीमो करीम** है और बिग़ैर सबब के मह़्ज़ अपनी **रह़मत** से बख़्श देने और **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाने पर क़ादिर है। मगर उस की **बे नियाज़ी** से डरना ज़रूरी है कि वोह चाहे तो किसी एक **गुनाह** पर **गिरिफ़्त** फ़रमा ले।

www.dawateislami.net

चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत्बूआ़ रिसाले "**ज़ुल्म का अन्जाम**" सफ़्हा 11 ता 13 पर ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی की किताब "**तम्बीहुल मुग़्तर्रीन**" के ह़वाले से नक़्ल किया गया है कि **मशहूर** ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक इसराईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ बन्दगी करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इबादत करता, न कोई उ़म्दा गिज़ा खाता, न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : ما فعل اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर एक लकड़ी जिस से मैं ने उस के **मालिक की इजाज़त के बिग़ैर दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआ़मला हुक़ूक़ुल इबाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था इस की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تنبیہ المغترین،ص ٥١)

सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहर ह़ाल उस की रह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिये और उस की बे **नियाज़ी से ग़ाफ़िल** भी नहीं रहना चाहिये। **आ़फ़िय्यत** इसी में है कि फ़ौरन अपने

www.dawateislami.net

साबिक़ा गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा कर लें बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौबा क़बूल करने वाला है और आयन्दा गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ासबा) कीजिये ! इस ज़िम्न में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **मुसलमानों** की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये **सुवाल नामे** की सूरत में **इस्लामी भाइयों** के लिये 72, **इस्लामी बहनों** के लिये 63, **दीनी त़-लबा** के लिये 92 और **दीनी त़ालिबात** के लिये 83, जब कि **म-दनी** मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** पेश किये गए हैं, **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला **मक्तबतुल मदीना** से मिल सकता है, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ इस को पुर कर के **म-दनी** माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाना होता है। **अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाइज़ा लेते हुए म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में **"फ़िक्रे मदीना"** करना कहते हैं।

आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये ! अगर फ़िल ह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, आ'ला ह़ज़रत, इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की **पच्चीसवीं शरीफ़** की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम 25 सेकन्ड्ज़ के लिये इस को देख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और

www.dawateislami.net

पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले को भरने का ज़ेहन बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़फ़िरत कर बे हि़साब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-रकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **म-दनी इन्आ़मात** ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इनक़िलाब** बर पा कर दिया है, इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो !

चुनान्चे न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हैं उन्हों ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे बड़े भाई जान को **म-दनी इन्आ़मात का एक रिसाला** तोह़्फ़े में दिया, वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ॉरमूला दे दिया गया है। **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला मिलने की ब-रकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को नमाज़ पढ़ने का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के नमाज़ी बन चुके हैं, दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला भी पुर करते हैं।

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू छड़ी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। **ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(مشکاۃالمصابیح، کتاب الایمان،باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ،الحدیث:۱۷۵،ج۱،ص۵۵)

लिहाज़ा **पानी पीने के म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

पेशकर्दा हर हर **म-दनी फूल** को सुन्नते रसूले मक़बूल علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इ़लावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيۡن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

पानी पीने के म-दनी फूल

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :

﴾1﴿ ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और **पीने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह** पढ़ो और फ़राग़त पर اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه कहा करो।

(سنن الترمذی، کتاب الاشربۃ،باب ما جاء فی التنفس فی الاناء،الحدیث:۱۸۹۲،ج۳،ص۳۵۲)

﴾2﴿ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या इस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ، باب فی النفخ فی الشراب...الخ، الحدیث:۳۷۲۸،ج۳،ص۴۷۴)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस **लेना** जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी **ज़हरीली** होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो, (या'नी सांस लेते वक़्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म **दूध या चाय** को फूंकों से ठन्डा न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे **ठन्डी** हो जाए फिर पियो। (मिरआतुल मनाजीह़, शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, पानियों का बयान जि. 6, स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी **पर दम करने** में ह़रज नहीं ﴾3﴿ पीने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ लीजिये ﴾4﴿ चूस कर छोटे छोटे घूंट से पीजिये, बड़े बड़े घूंट पीने से **जिगर की बीमारी** पैदा होती है ﴾5﴿ पानी तीन सांस में पीजिये ﴾6-7﴿ सीधे हाथ से और बैठ कर पानी नोश कीजिये ﴾8﴿ लोटे वग़ैरा से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी पीना 70 अमराज़ से शिफ़ा है कि येह आबे **ज़मज़म शरीफ़** की मुशाबहत रखता है, इन दो (या'नी वुज़ू के बचे हुए पानी और ज़मज़म शरीफ़) के इ़लावा कोई सा भी पानी खड़े खड़े पीना **मकरूह** है। (फ़तावा र-ज़विय्या, बाबुल इस्तिन्जा, जि. 4, स. 575, जि. 21, स. 669) येह दोनों पानी क़िब्ला रू हो कर खड़े खड़े पियें। ﴾9﴿ पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है। (اتحاف السادة المتقين،كتاب آداب الاكل،الباب الاول، ج٥،ص٥٩٤) ﴾10﴿ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये ﴾11﴿ **हुज्जतुल इस्लाम**

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर पीना शुरूअ़ करे **पहली सांस** के आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه **दूसरे के बा'द** اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِين और **तीसरे सांस** के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़े ।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب الاکل، الباب الاول،القسم الثانی ، ج۲،ص۸)

﴾12﴿ **गिलास** में बचे हुए मुसलमान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद **ख़्वाह म ख़्वाह** फेंकना न चाहिये । पी लेने के चन्द लम्ह़ों के बा'द **ख़ाली गिलास** को देखेंगे तो उस की दीवारों से बह कर **चन्द क़त़रे** पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये ।

फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत का आसान त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम येह ख़्वाहिश रखते हैं कि इस्तिक़ामत के साथ रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** की सआ़दत ह़ासिल हो तो इस के लिये आप एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लीजिये, मसलन आप की दुकान है या ऑफ़िस जाते हैं और रिज़्क़ में ब-रकत की निय्यत से वहां कुरआने पाक की तिलावत की सआ़दत के साथ अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ते और अगरबत्तियां वग़ैरा जलाते हैं तो इन मा'मूलात में **फ़िक्रे मदीना** जैसे बा ब-रकत काम को भी शामिल कर लीजिये اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ रिज़्क़ में ब-रकत के साथ **फ़िक्रे मदीना** करने में ऐसी इस्तिक़ामत ह़ासिल होगी कि आप हैरान रह जाएंगे (किसी भी नमाज़ के बा'द या सोने से क़ब्ल का वक़्त भी मुक़र्रर किया जा सकता है ।)

www.dawateislami.net

तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वक़्ते मुक़र्ररा पर पाबन्दी के साथ **फ़िक्रे मदीना** ज़रूर करेंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप येह भी चाहते हैं कि बिला नाग़ा फ़िक्रे मदीना की सआ़दत भी मिलती रहे और अ़मल में इस्तिक़ामत के साथ गुनाहों से नजात भी ह़ासिल हो जाए तो एक बहुत ही प्यारे **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल का मा'मूल बना लीजिये जिसे सारी दुन्या **म-दनी क़ाफ़िले** के नाम से पुकारती है। आप हर माह कम अज़् कम **3** दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की आ़दत बना कर देखिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की झोली **म-दनी इन्आ़मात** के ख़ुश्बूदार फूलों से भर कर महकने लगेगी। और दुन्या और आख़िरत की बे शुमार भलाइयों के हुसूल के साथ मुसीबतों और बीमारियों से नजात की हैरत अंगेज़ त़ौर पर राहें भी खुल जाएंगी। क़ाफ़िले की एक बहार भी सुन लीजिये।

एक वक़्त में दो जगह जल्वा नुमाई

पंजाब के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारा म-दनी क़ाफ़िला एक गाउं की मस्जिद में पहुंचा और नेकी की दा'वत आम करने के लिये मस्जिद में ठहरना चाहा तो इन्तिज़ामिया ने येह कह कर रुकने का मन्अ़ कर दिया कि इस मस्जिद में **जिन्नात** हैं, अगर आप अपनी जवाब दारी पर रुकते हैं तो ठीक है। इस ख़बर से हम कुछ ख़ौफ़ज़दा हो गए मगर नेकी की दा'वत आ़म करने के जज़्बे के तह़त उसी मस्जिद में ठहर गए ! रात को सब इस्लामी भाई सो रहे थे मगर मैं और एक दूसरे इस्लामी भाई जाग कर पहरा दे रहे

www.dawateislami.net

थे। दिल व दिमाग़ में त़रह़ त़रह़ के ख़यालात आ रहे थे, न जाने रात कैसे कटेगी ! कही कोई हादिसा पेश न आ जाए ! हम यूही ख़ौफ़ज़दा बैठे इधर उधर देख रहे थे कि अचानक मस्जिद का दरवाज़ा खुला हम फ़ौरन उस त़रफ़ मुतवज्जेह हुए मगर येह देख कर हमारी ख़ुशी की इन्तेहा न रही कि सामने शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه जल्वा फ़रमा थे हम बे इख़्तियार खड़े हो कर आगे बढ़े, आप ने हमें शफ़्क़त से सीने लगा लिया और फ़रमाया कि क्यूं घबरा रहे हो ? हम ने अ़र्ज़ की इस मस्जिद में **जिन्नात** हैं तो आप मुस्कुराते हुए फ़रमाने लगे **जिन्नात** हैं तो क्यूं घबराते हो वोह देखो सामने ! हम ने जैसे ही सामने नज़र की तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के बड़े शहज़ादे अबू उसैद अह़मद **उ़बैद रज़ा** अ़त्त़ारी अल म-दनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی को तशरीफ़ फ़रमा पाया, फिर **अमीरे अहले सुन्नत** ने मस्जिद के दूसरे कोने की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि उधर देखो ! तो वहां छोटे शहज़ादे ह़ाजी **बिलाल रज़ा** अ़त्त़ारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی तशरीफ़ फ़रमा थे, फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने मज़ीद मस्जिद में एक त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि वहां देखो तो वहां **निगराने शूरा** तशरीफ़ फ़रमा थे। ऐसा लगता था कि येह तमाम म-दनी क़ाफ़िले वालों की ह़िफ़ाज़त के लिये जल्वा फ़रमा हैं, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه की येह करामत देख कर ख़ुशी के मारे बे इख़्तियार हमारी आंखों से आंसू छलक पड़े, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه कुछ देर तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर वापस तशरीफ़ ले गए। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लें कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हम हर माह इस प्यारे प्यारे **म-दनी इन्आ़म** या'नी तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें दुन्या और आख़िरत की भलाइयां अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

बोहतान की ता'रीफ़

*किसी शख़्स की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी में उस पर झूट बांधना **बोहतान** कहलाता है।*

(اَلْحَدِیْقَۃُ النَّدِیَّۃ،ج۲،ص۲۰۰)

*इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समजिये कि बुराई न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रू ब रू वोह बुराई उस की त़रफ़ मन्सूब कर दी तो येह **बोहतान** हुवा मसलन पीछे या मुंह के सामने रियाकार कह दिया और वोह रिया कार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई सुबूत न हो क्यूंकि रियाकारी का तअ़ल्लुक़ बात़िनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस त़रह़ किसी को रियाकार कहना **बोहतान** हुवा।*

www.dawateislami.net

निगाहों की हिफ़ाज़त और फ़ुज़ूल गोई से बचने का म-दनी त़रीक़ा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि मुका-श-फ़तुल कुलूब में है “जिस ने अपनी आंख को ह़राम से पुर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की आंख को आग से भर देगा। (مکاشفة القلوب،الباب الاوّل فی بیان الخوف،ص۱۰)” (1) निगाहों की हि़फ़ाज़त की आ़दत बनाने के लिये कुफ़्ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल मुफ़ीद है इसे बनाने का त़रीक़ा येह है दोनों GLASSES के उपरी एक तिहाई (1/3) हि़स्से की ग्राइन्डर से घिसाई करवा ले या इतने हि़स्से पर टेप लगा लें। (2) इस की आ़दत बनाने का त़रीक़ा येह है कि इब्तिदाअन चार दिन सिर्फ़ 12 मिनट पहनें फिर रफ़्ता रफ़्ता वक़्त बढ़ाते जाएं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निगाहों की हि़फ़ाज़त के लिये इस त़रह़ के म-दनी अन्दाज़ इख़्तियार करने का तज़्किरा बुज़ुर्गाने दीन की सीरत में भी मिलता है चुनान्चे शैख़ शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने (निगाहों की हि़फ़ाज़त की आ़दत बनाने के लिये) 40 साल आंखों पर पट्टी बांध कर रखी।

(راحت القلوب مترجم ص ۵، ھشت بھشت ،ص ۱٦۷)

उस्तादे ज़मन, शहनशाहे सुख़न, बिरादरे आ'ला ह़ज़रत, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحمٰن ज़ौक़े ना'त में फ़रमाते हैं :

आंख उठती तो मैं झूंझला के पलक सी लेता
दिल बिगड़ता तो मैं घबरा के संभाला करता

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है। "जो चूप रहा उस ने नजात पाई।" (سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة...الخ،باب ۱۱۵،الحدیث:۲۵۰۹، ج۴،ص۲۲۵)

गुफ़्त्गू की चार क़िस्में

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के फ़रमाने वाला शान का खुलासा है : गुफ़्त्गू की **चार क़िस्में हैं :** (1) मुकम्मल नुक़्सान देह बात (2) मुकम्मल फ़ाइदे मन्द बात (3) ऐसी बात जो नुक़्सान देह भी हो और फ़ाएदे मन्द भी और (4) ऐसी बात जिस में न फ़ाएदा हो न नुक़्सान। पस **पहली** क़िस्म की बात जो कि मुकम्मल नुक़्सान देह है इस से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है। और इसी त़रह़ तीसरी क़िस्म वाली बात कि जिस में नुक़्सान और फ़ाएदा दोनों हैं, इस से भी बचना लाज़िम है और जो **चौथी क़िस्म** है वोह **फ़ुज़ूलियात** में शामिल है कि उस का न कोई फ़ाएदा है और न ही कोई नुक़्सान लिहाज़ा ऐसी बात में वक़्त ज़ाएअ़ करना भी एक त़रह़ का नुक़्सान ही है। अब सिर्फ़ **दूसरी** ही क़िस्म की बात रह जाती है जिस के करने में फ़ाएदा है तो बातों में से तीन चोथाई (या'नी 75%) तो क़ाबिले इस्ति'माल नहीं और सिर्फ़ एक चोथाई (या'नी 25%) बात जो कि फ़ाइदा मन्द है बस वोही क़ाबिले इस्ति'माल है मगर इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के अन्दर बारीक क़िस्म की रियाकारी, बनावट, ग़ीबत, झूटे मुबालग़े "मैं मैं करने की आफ़त" या'नी अपनी फ़ज़ीलत व पाकीज़गी बयान कर बैठने वग़ैरा वग़ैरा अन्देशे हैं नीज़ फ़ाइदे मन्द

www.dawateislami.net

गुफ़्तगू करते करते फ़ुज़ूल बातों में जा पड़ने फिर इस के ज़रीए मज़ीद आगे बढ़ते हुए इस में गुनाह का इरतिकाब हो जाने वग़ैरा वग़ैरा ख़दशात शामिल हैं और येह शुमूलिय्यत ऐसी बारीक है जिस का इल्म नहीं होता, लिहाज़ा इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के ज़रीए भी इन्सान ख़तरात में गिरा रहता है। (مُلَخَّص از اِحیاءُ الْعُلوم،ج۳،ص۱۳۸)

लिहाज़ा ख़ामोशी ही में आफ़िय्यत है, इस की आदत बनाने के लिये दो **म-दनी फूल** मुलाहज़ा फ़रमाइये : (1) ख़ामोश रहने के लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुंह में पथ्थर लिये रहते थे। (کیمیائے سعادت، ج ۲،ص ۵۶۳)- हो सके तो आप भी सुन्नते सिद्दीक़ी अदा करते हुए रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट मुंह में इतने हज्म (साइज़) का पथ्थर रखिये कि इसे बाहर निकाले बिग़ैर गुफ़्तगू करना मुमकिन न रहे। पथ्थर को रोज़ाना धो लिया करें, पथ्थर में मा'मूली सी भी शिकस्तगी (टूट फूट या दराड़) न हो वरना मैल जम्अ होगा और ऐसा पथ्थर मुंह में रखना मुज़िरे सिह्हत है। (2) मुमकिन है आप के लिये ख़ामोशी की आदत डालना कठिन साबित हो मगर हिम्मत न हारें। बारहा कोशिश करें, हो सकता है किसी एक दिन फ़ुज़ूल गोई से बचने में कामयाब हो जाएं मगर फिर कई रोज़ तक ख़ामोशी नसीब न हो मगर फिर कोशिश करें ... फिर कोशिश करें ... اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कभी तो कामयाबी हासिल हो ही जाएगी।

कुछ ऐसी तवज्जोह हो अ़ता पीर की या रब   कम बोलूं निगाहों को मेरी जो कि झुका दे

www.dawateislami.net

गुफ़्तगू का मुहासबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक मौक़अ़ पर शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक इस्लामी भाई को **गुफ़्तगू का मुहासबा** करने से मुतअ़ल्लिक़ एक पुर सोज़ तह़रीर इरसाल फ़रमाई जो कुछ इस त़रह़ थी :

बोलूं न फ़ुज़ूल और रहें नीची निगाहें
आंखों का ज़बां का दे ख़ुदा क़ुफ़्ले मदीना

अगर जन्नत दरकार हो तो .....

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रुहुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमते बा अ़-ज़मत में लोगों ने अ़र्ज़ किया : कोई ऐसा अ़मल बताइये कि जिस से **जन्नत** मिले। इरशाद फ़रमाया : "कभी बोलो मत" अ़र्ज़ की : येह तो नहीं हो सकता। फ़रमाया : "अच्छी बात के सिवा ज़बान से कुछ मत निकालो।" (اِحیاءُ الْعُلوم،ج۳،ص۱۳۶)

गुफ़्तगू लिख कर मुहासबा करने वाले ताबेई बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैसम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने बीस साल तक दुन्यवी बात ज़बान से नहीं की, जब सुब्ह़ होती तो क़लम दवात और काग़ज़ ले लेते और दिन भर जो बोलते उसे लिख लेते थे और शाम को (इस लिखे हुए के मुताबिक़) **अपना मुहासबा** फ़रमाते। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ص۱۳۷)

www.dawateislami.net

बात चीत के मुह़ासबे का त़रीक़ा

अपना "**मुह़ासबा**" करने से मुराद यहां येह है कि अपनी हर हर बात पर ग़ौर कर के अपने आप से बाज़ पुर्स करना मसलन फ़ुलां बात **क्यूं की** ? उस मक़ाम पर बोलने की क्या **ह़ाजत** थी ? फ़ुलां गुफ़्त्गू इतने अल्फ़ाज़ में भी निमटाई जा सकती थी मगर इस में फ़ुलां फ़ुलां लफ़्ज़ ज़ाइद क्यूं बोले ? फ़ुलां से जो जुम्ला तुम ने कहा वोह शरई इजाज़त से न था बल्कि दिल आज़ार **त़न्ज़** था, उस का दिल दुखा होगा अब चलो तौबा भी करो और उस से मुआ़फ़ी भी मांगो, उस बेठक में क्यूं गए जब कि मा'लूम है कि वहां **फ़ुज़ूल बातें** भी होती हैं और फ़ुलां फ़ुलां बात में तुम ने **हां में हां** क्यूं मिलाई थी ? वहां तुम्हें **ग़ीबत** भी सुननी पड़ गई थी बल्कि तुम ने ग़ीबत सुनने में **दिल चस्पी** भी ली थी **चलो पक्की तौबा** और ऐसी बेठकों से दूर रहने का भी अ़हद करो। इस त़रह़ समझदार आदमी अपनी गुफ़्त्गू बल्कि रोज़ मर्रा के जुम्ला मुआ़मलात का **मुह़ासबा** कर सकता है। यूं गुनाह, बे एह़्तियात़ियां, अपनी बहुत सारी कमज़ोरियां और ख़ामियां सामने आ सकतीं और इस्लाह़ का सामान हो सकता है।

दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** में मुह़ासबे को **फ़िक्रे मदीना** कहते हैं और **दा'वते इस्लामी** में रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना करने और इस दौरान **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने का ज़ेह्न दिया जाता है। والسّلام مع الاکرام

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

30, जमादिल उख़्रा,1432 हि.

www.dawateislami.net

लिख कर बात करने की आ़दत बनाने का त़रीक़ा[1]

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग में ज़बान पर क़ुफ़्ले मदीना का निफ़ाज़ नफ़्स के ख़िलाफ़ बेहतरीन हथियार है ।" **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में ज़बान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नारज़ी वाले कामों से बचाने और फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकालने के लिये ज़रूरी बातें भी कम लफ़्ज़ों में लिख कर या इशारों में करना और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में नादिम हो कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लेना, **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** कहलाता है । ज़बान की ह़िफ़ाज़त की म-दनी सोच रखने वाले आ़शिक़ाने रसूल की आसानी के लिये रोज़ाना बा'द नमाज़े **मग़रिब** या किसी भी वक़्ते मुक़र्ररा पर "**फ़िक्रे मदीना**" करने के बा'द नीचे पेश कर्दा 4 जुमले लिखने का मा'मूल बना लीजिये और आयन्दा नमाज़े **मग़रिब** तक मज़ीद लिख कर गुफ़्तगू की कोशिश जारी रखिये, اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़वाइद आप ख़ुद देखेंगे । मसलन सब से पहले तारीख़ और दिन लिखये (ह़ुसूले ब-रकत के लिये तारीख़ व सिन क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की विलादते मुबारक के दर्ज किये गए हैं)

26, र-मज़ानुल मुबारक, 1369 हि. 12 जूलाई, 1950 ई. बरोज़ बुध

﴾1﴿ क्या आज आप ने फ़िक्रे मदीना कर ली ? ﴾2﴿ क्या हर दूसरे दिन तह़रीरी गुफ़्तगू के लिये नई तारीख़ लिख लेते हैं ? ﴾3﴿ कम अज़ कम 4 बार लिख कर गुफ़्तगू की ? ﴾4﴿ अगर नहीं तो फ़ौरन तरकीब बना लीजिये । ﴾5﴿....

---

❶.....लिख कर गुफ़्तगू की आ़दत बनाने के लिये मक्तबतुल मदीना से "क़ुफ़्ले मदीना पेड" हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं ।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान और आंखों का कुफ़्ले मदीना लगाने में दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हैं लिहाज़ा आप भी हिम्मत बांधिये और **ज़बान और निगाहों की हिफ़ाज़त** के लिये **कुफ़्ले मदीना** लगाने की निय्यत कर लीजिये। आप की तरग़ीब के लिये चन्द म-दनी बहारें पेशे ख़िदमत हैं : चुनान्चे

ज़बान और निगाह की हिफ़ाज़त की ब-र-कतें

बाबुल इस्लाम सिन्ध के एक इस्लामी भाई ने सफ़रे चल मदीना के दौरान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को एक रुक़्आ़ पेश किया जिस में कुछ यूं तह़रीर था कि मैं आप की तरग़ीब पर **मक्कतुल मुकर्रमा** में 3 दिन से **कुफ़्ले मदीना** लगाने की कोशिश में मसरूफ़ हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ज़बान की हिफ़ाज़त की आ़दत बनाने के लिये इशारों में और लिख कर बात करने, सुन्नते सिद्दीक़ी की अदाएगी की निय्यत से **मुंह में पथ्थर रखने** और निगाहें नीची रखने की आ़दत बनाने के लिये **कुफ़्ले मदीना ऐनक** के इस्ति'माल का सिल्सिला है और अकसर अवक़ात आंखें भी बन्द रखता हूं, **इस की ब-रकत से** اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **मैं 3 बार सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की ज़ियारते बा ब-रकत से मुशर्रफ़ हुवा और तीनों बार मुझे मुसाफ़ह़ा करने की सआ़दत भी मिली।**

www.dawateislami.net

ख़्वाब था या ह़क़ीक़त

हैदराबाद लत़ीफ़ाबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई जो ह़लक़ा सत़ह़ पर **म-दनी इन्अ़ामात** के ज़िम्मेदार हैं, **निगाहें नीची रखने और लिख कर बात करने वाले म-दनी इन्अ़ामात** पर उन का सख़्ती से अ़मल है, तक़रीबन सारा दिन निगाहें नीची रखना, क़ुफ़्ले मदीना **ऐनक का** इस्ति'माल और कमोबेश रोज़ाना सेकड़ों बार लिख कर बात करने का मा'मूल है और पाबन्दी से **तसव्वुरे मुर्शिद** करने की सआ़दत भी पाते हैं। इन तमाम बा ब-रकत कामों की म-दनी बहारें बयान करते हुए उन का ह़लफ़िय्या कहना है ..... जिस का लुब्बे लुबाब पेशे ख़िदमत है।

एक रात तसव्वुरे मुर्शिद की सआ़दत पा कर जब सोया तो आ़लमे ख़्वाब में क्या देखता हूं कि मेरे प्यारे प्यारे मुर्शिद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जलवा फ़रमा हैं, आप बहुत ख़ुश नज़र आ रहे हैं, मुझ से फ़रमाया, **दीवाने क्या मांगते हो** ? मैं ने अ़र्ज़ की : **म-दनी इन्अ़ामात** के 1000 रसाइल अ़त़ा फ़रमा दीजिये। आप ने एक प्लास्टिक की थेली अ़त़ा फ़रमाई, मैं समझ गया कि इस में **म-दनी इन्अ़ामात** के रसाइल हैं, मैं ने ख़्वाब ही में **म-दनी इन्अ़ामात** के रसाइल की वोह थेली अलमारी में रख दी।

www.dawateislami.net

सुब्ह़ जब बेदार हुवा तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मौजूद थे न ही **म-दनी इन्आ़मात** के रसाइल, कुछ देर तो बैठा सोचता रहा फिर ख़याल आया कि ख़्वाब में म-दनी इन्आ़मात के रसाइल मैं ने अलमारी में रखे थे, बे इख़्तियार उठ कर जैसे ही अलमारी खोली तो मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने ख़्वाब में जो म-दनी इन्आ़मात के रसाइल अ़त़ा फ़रमाए थे, वोह अलमारी में रखे हुए थे।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मेरे नसीब यूं जागे

उन्ही इस्लामी भाई का बयान है : मेरा मा'मूल है कि बा'दे इ़शा तसव्वुरे मुर्शिद की सआ़दत ह़ासिल करता हूं जिस की ब-रकत से मुझे **बेदारी** में वलिय्ये कामिल, मुर्शिदी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत हुई, हुवा यूं कि एक बार मैं ने अपने कमरे में तसव्वुरे मुर्शिद के बा'द जैसे ही आंखें खोलीं तो मह़सूस हुवा कि मेरे पीछे **कोई खड़ा है**, मुड़ कर देखा तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **जलवा फ़रमा थे, निगाहें झुकी हुई थीं और लबों पर मख़्सूस अन्दाज़ की मुस्कुराहट मेरे दिल को तस्कीन दे रही थी,** कुछ लम्ह़े तो मैं सकते के आ़लम में जलवों के मज़े लूटता रहा फिर जैसे ही आगे बढ़ कर मिलना चाहा तो आप तशरीफ़ ले गए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुब्बे जाह की ता'रीफ़

लोगों में शोहरत और नामवरी चाहना हुब्बे जाह है। (احیاء العلوم ج۳ ص۳۳۹)

www.dawateislami.net

अज़ान

اَللّٰهُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ؕ اَشْهَدُ
अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है मैं गवाही देता
اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اَشْهَدُ
हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं गवाही देता हूं
اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ
कि ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)
اللّٰهِ ؕ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوةِ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوةِ حَیَّ عَلَی
अल्लाह के रसूल हैं नमाज़ पढ़ने के लिये आओ ! नमाज़ पढ़ने के लिये आओ ! नजात
الْفَلَاحِ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ؕ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ؕ
पाने के लिये आओ ! नजात पाने के लिये आओ ! **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है
لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ
अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं।

www.dawateislami.net

अज़ान के बा'द की दुआ

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ
ऐ अल्लाह ! इस दा'वते ताम्मा और सलाते
الْقَآئِمَةِ اٰتِ سَيِّدَنَا مُحَمَّدَا نِ الْوَسِيلَةَ
क़ाइमा के मालिक तू हमारे सरदार हज़रते मुहम्मद(صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को
وَالْفَضِيلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ
वसीला और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द दरजा अ़ता फ़रमा और इन को
مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا
मक़ामे महमूद में खड़ा कर जिस का तूने इन से वा'दा किया है और हमें
شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
क़ियामत के दिन इन की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं
الْمِيْعَادَ ط بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ
करता । हम पर अपनी रहमत फ़रमा ऐ सब से बढ़ कर रह़म करने वाले

www.dawateislami.net

इक़ामत

اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَشْھَدُ
अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है मैं गवाही देता
اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہ ط اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہ ط اَشْھَدُ
हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं गवाही देता हूं
اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ ط اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ
कि ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह के रसूल हैं मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)
اللّٰہِ ط حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ حَیَّ عَلَی
अल्लाह के रसूल हैं नमाज़ पढ़ने के लिये आओ ! नमाज़ पढ़ने के लिये आओ ! नजात
الْفَلَاحِ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ط قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ
पाने के लिये आओ ! नजात पाने के लिये आओ ! जमाअ़त खड़ी हो गई
قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط
जमाअ़त खड़ी हो गई अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है
لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہ ط
अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं

www.dawateislami.net

ركوعها ١ ﴿ سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ ٥ ﴾ ١ اٰياتها ٧

सूरए फ़ातिह़ा मक्की है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ۙ الرَّحْمٰنِ

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेहरबान रह़मत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْم

सूरए फ़ातिह़ा के अस्मा : इस सूरत के मुतअ़द्दद नाम हैं : फ़ातिह़ा, फ़ातिह़तुल किताब, उम्मुल क़ुरआन, सूरतुल कन्ज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सब्अ़ मसानी, नूर, रुक़्या, सूरतुल ह़म्द, सूरतुद्दुआ़, ता'लीमुल मस्अला, सूरतुलमुनाजात, सूरतुत्तफ़्वीज़, सूरतुस्सुवाल, उम्मुल किताब, फ़ातिह़तुल क़ुरआन, सूरतुस्सलात। इस सूरत में सात आयतें, सत्ताईस कलिमे, एक सो चालीस ह़र्फ़ हैं, कोई आयत नासिख़ या मन्सूख़ नहीं।

शाने नुज़ूल : येह सूरत मक्कए मुकर्रमा या मदीनए मुनव्वरा या दोनों में नाज़िल हुई। अ़म्र बिन शुरह़बील से मन्क़ूल है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه و اٰله وسلّم ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِىَ اللّٰه تعالٰى عنها से फ़रमाया : ''मैं एक निदा सुना करता हूं जिस में ''اِقْرَاْ'' कहा जाता है।'' व-रक़ह बिन नौफ़ल को ख़बर दी गई, अ़र्ज़ किया : जब येह निदा आए आप ब इत़्मिनान सुनें। इस के बा'द ह़ज़रते जिब्रील ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : फ़रमाइये ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ''। इस से मा'लूम होता है कि नुज़ूल में येह पेहली सूरत है मगर दूसरी रिवायात से मा'लूम होता है कि पहले ''सूरए इक़रा'' नाज़िल हुई। इस सूरत में ता'लीमन बन्दों की ज़बान में कलाम फ़रमाया गया है।

अह़काम : मस्अला : नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब है इमाम व मुनफ़रिद के लिये तो ह़क़ीक़तन अपनी ज़बान से और मुक़्तदी के लिये ब क़िराअते हुक्मिय्या या'नी इमाम की ज़बान से। सह़ीह़ ह़दीस में है : قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ इमाम का पढ़ना ही मुक़्तदी का पढ़ना है। क़ुरआने पाक में मुक़्तदी को ख़ामोश रहने और इमाम की क़िराअत सुनने का हुक्म दिया है : اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا (जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश हो जाओ) मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : ''اِذَا قَرَاَ فَاَنْصِتُوْا'' जब इमाम क़िराअत करे तुम ख़ामोश रहो। और बहुत अह़ादीस में येही मज़्मून है। मस्अला : नमाज़े जनाज़ा में दुआ़ याद न हो तो सूरए

www.dawateislami.net

الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ

वाला रोजे़ जज़ा का मालिक हम तुझी को पूजें

وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

और तुझी से मदद चाहें हम को सीधा रास्ता

फ़ातिहा ब निय्यते दुआ़ पढ़ना जाइज़ है, ब निय्यते क़िराअत जाइज़ नहीं। (आ़लमगीरी) सूरए फ़ातिहा के फ़ज़ाइल : अहादीस में इस सूरत की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं हुज़ूर ने फ़रमाया : तोरैत व इन्जील व ज़बूर में इस की मिस्ल सूरत ना नाज़िल हुई। (तिरमिज़ी) एक फ़िरिश्ते ने आसमान से नाज़िल हो कर हुज़ूर पर सलाम अ़र्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की बिशारत दी जो हुज़ूर से पहले किसी नबी को अ़ता न हुए : एक सूरए फ़ातिहा, दूसरे सूरए बक़रह की आख़री आयतें। (मुस्लिम शरीफ़) "सूरए फ़ातिहा" हर मर्ज़ के लिये शिफ़ा है। (दारमी) "सूरए फ़ातिहा" सो मरतबा पढ़ कर जो दुआ़ मांगे अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाता है। (दारमी)

इस्तिआ़ज़ा : मस्अला : तिलावत से पहले "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" पढ़ना सुन्नत है। (ख़ाज़िन) लेकिन शागिर्द उस्ताज़ से पढ़ता हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं। (शामी) मस्अला : नमाज में इमाम व मुनफ़रिद के लिय "سُبْحٰنَ" (सना) से फ़ारिग़ हो कर आहिस्ता "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" पढ़ना सुन्नत है। (शामी)

तस्मिय्या : मस्अला : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ क़ुरआने पाक की आयत है मगर सूरए फ़ातिहा या और किसी सूरत का जुज़ नहीं इसी लिये नमाज़ में जहर (बुलन्द आवाज़) के साथ न पढ़ी जाए, बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا नमाज़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" से शुरूअ़ फ़रमाते थे। **मस्अला :** तरावीह़ में जो ख़त्म किया जाता है उस में कहीं एक मरतबा "بِسْمِ اللّٰه" जहर के साथ ज़रूर पढ़ी जाए ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाए। **मस्अला :** क़ुरआने पाक की हर सूरत بِسْمِ اللّٰه से शुरूअ़ की जाए सिवाए सूरए बराअत के। **मस्अला :** सूरए नम्ल पढ़ी जाएगी ! नमाज़े जहरी में जहरन, सिर्री में सिर्रन। **मस्अला :** हर मुबाह़ काम بِسْمِ اللّٰه से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है। ना जाइज़ काम पर بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मम्नूअ़ है। **सूरए फ़ातिहा के मज़ामीन :** इस सूरत में अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना, रुबूबिय्यत, रह़मत, मिल्किय्यत, इस्तिह़क़ाक़े इबादत, तौफ़ीक़े ख़ैर, बन्दों की हिदायत, तवज्जोह इलल्लाह, इख़्तिसासे इबादत, इस्तिआ़नत, तलबे रुश्द, आदाबे दुआ़, सालिहीन के ह़ाल से मुवाफ़क़त, गुमराहों से इजतिनाब व नफ़रत, दुन्या की ज़िन्दगानी का ख़ातिमा, जज़ा और रोज़े जज़ा का मुसर्रह़ व मुफ़स्सल बयान है और जुम्ला मसाइल का इजमालन।

ह़म्द : मस्अला : हर काम की इब्तिदा में तस्मिय्या की तरह ह़म्दे इलाही बजा लाना चाहिये। **मस्अला :** कभी ह़म्द वाजिब होती है जैसे ख़ुत्बए जुमुआ़ में, कभी मुस्तह़ब जैसे ख़ुत्बए निकाह़ व दुआ़ व हर अम्रे ज़ीशान में और हर खाने पीने के बा'द, कभी सुन्नते मोअक्कदा जैसे छींक आने के बा'द। (तह़तावी)

www.dawateislami.net

اَلْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ

चला रास्ता उन का जिन पर तू ने एह़सान किया

"رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" में तमाम काइनात के ह़ादिस, मुमकिन, मोह़ताज होने और **अल्लाह** तआ़ला के वाजिब, क़दीम, अज़ली, अबदी, ह़य्य, क़य्यूम, क़ादिर, अ़लीम होने की त़रफ़ इशारा है जिन को "رَبِّ الْعَالَمِين" मुस्तलज़िम है, दो लफ़्ज़ों में इल्मे इलाहिय्यात के अहम मबाह़िस तै़ हो गए। "مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ" मिल्क के ज़ुहूरे ताम का बयान और येह दलील है कि **अल्लाह** के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं क्यूंकि सब उस के मम्लूक हैं और मम्लूक मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं हो सकता। इसी से मालूम हुवा कि दुन्या दारुल अ़मल है और इस के लिये एक आख़िर है, जहान के सिलसिले को अज़ली व क़दीम कहना बाति़ल है। इख़्तिताम़े दुन्या के बा'द एक जज़ा का दिन है, इस से तनासुख़ बाति़ल हो गया। "اِيَّاكَ نَعْبُدُ" ज़िक्रे ज़ात व सिफ़ात के बा'द येह फ़रमाना इशारा करता है कि एतिक़ाद अ़मल पर मुक़द्दम है और इ़बादत की मक़बूलिय्यत अ़क़ीदे की सिह़्ह़त पर मौक़ूफ़ है। **मस्अला :** "نَعْبُدُ" के सीग़ए जम्अ़ से अदा ब जमाअ़त भी मुस्तफ़ाद होती है औरयेह भी कि अ़वाम की इ़बादतें मह़बूबों और मक़बूलों की इ़बादतों के साथ दरजए क़बूल पाती हैं। **मस्अला :** इस में रद्दे शिर्क भी है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा इ़बादत किसी के लिये नहीं हो सकती। "وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ" में येह ता'लीम फ़रमाई कि इस्तिआ़नत ख़्वाह ब वास्ता़ हो या बे वास्ता़ हर त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास़ है ह़क़ीक़ी मुस्तआ़न (मददगार) वोही है, बाक़ी आलात व ख़ुद्दाम व अह़बाब वग़ैरा सब औ़ने इलाही के मज़हर हैं, बन्दे को चाहिये कि इस पर नज़र रखे और हर चीज़ में दस्ते क़ुदरत को कारकुन देखे। इस से येह समझना कि औलिया व अम्बिया से मदद चाहना शिर्क है अ़क़ीदए बाति़ला है क्यूंकि मुक़र्रबाने ह़क़ की इमदाद, इमदादे इलाही है इस्तिआ़नत बिलग़ैर नहीं। अगर इस आयत के वोह मा'ना होते जो वहाबिया ने समझे तो क़ुरआने पाक में "اَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ" (मेरी मदद त़ाक़त से करो) और "اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ" (सब्र और नमाज़ से मदद चाहो) क्यों वारिद होता, और अह़ादीस में अहलुल्लाह से इस्तिआ़नत की ता'लीम क्यों दी जाती। "اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ" मा'रिफ़त ज़ातो सिफ़ात के बा'द इ़बादत, इस के बा'द दुआ़ ता'लीम फ़रमाई, इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि बन्दे को इ़बादत के बा'द मश्ग़ूले दुआ़ होना चाहिये, ह़दीस शरीफ़ में भी नमाज़ के बा'द दुआ़ की ता'लीम फ़रमाई गई है। (الطبرانی فی الکبیر والبیہقی فی السنن) "सिराते़ मुस्तक़ीम" से मुराद इस्लाम या क़ुरआन, या ख़ुल्क़े नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या ह़ुज़ूर या ह़ुज़ूर के आल व अस्ह़ाब हैं। इस से साबित होता है कि सिराते़ मुस्तक़ीम त़रीक़े एहले सुन्नत है जो एहले बैत व अस्ह़ाब और सुन्नत व क़ुरआन व सवादे आ'ज़म सब को मानते हैं। "صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ" जुम्लए ऊला की तफ़्सीर है कि सिराते़ मुस्तक़ीम से त़रीक़े मुस्लिमीन मुराद है। इस से बहुत से मसाइल ह़ल होते हैं कि जिन उमूर पर बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल रहा हो वोह सिराते़ मुस्तक़ीम मेंदाख़िल है।

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِمۡ ۙ۬ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ

न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा

وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ۧ

और न बहके हुवों का

"غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ" इस में हिदायत है कि **मस्अला :** ता़लिबे ह़क़ को दुश्मनाने ख़ुदा से इजतिनाब और उन के राह व रस्म व वज़्अ़ व अत़्वार से परहेज़ लाज़िम है। तिरमिज़ी की रिवायत है कि مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ से यहूद, और ضَآلِّيۡن से नसारा मुराद हैं। **मस्अला :** "ضاد" और "ظاء" में मबाइनत ज़ाती है बाज़ सिफ़ात का इश्तिराक इन्हें मुत्तह़िद नहीं कर सकता लिहाज़ा غَيۡرِالۡمَغۡظُوۡب , "بَظا" पढ़ना अगर ब क़स्द हो तो तह़रीफ़े क़ुरआन व कुफ़्र है, वरना ना जाइज़। **मस्अला :** जो शख़्स ضاد की जगह ظاء पढ़े उस की इमामत जाइज़ नहीं। (मुह़ीते़ बुरहानी) "**आमीन**" इस के मा'ना हैं : ऐसा ही कर, या क़बूल फ़रमा।

मस्अला : येह कलिमए क़ुरआन नहीं।

मस्अला : सूरए फ़ातिह़ा के ख़त्म पर **आमीन** कहना सुन्नत है। नमाज़ के अन्दर भी और नमाज़ के बाहर भी।

मस्अला : ह़ज़रते इमामे आ'ज़म का मज़हब येह है कि नमाज़ में "**आमीन**" इख़्फ़ा के साथ या'नी आहिस्ता कही जाए। तमाम अह़ादीस पर नज़र और तन्क़ीद से येही नतीजा निकलता है कि जहर की रिवायतों में सिर्फ़ वाइल की रिवायत सह़ीह़ है इस में "مَدَّ بِهَا" का लफ़्ज़ है जिस की दलालत जहर पर क़त़ई नहीं जैसा जहर का एह़तिमाल है वैसा ही बल्कि इस से क़वी मद्दे हमज़ह का एह़तिमाल है इस लिये येह रिवायत जहर के लिये ह़ुज्जत नहीं हो सकती। दूसरी रिवायतें जिन में जहर व रफ़अ़ के अल्फ़ाज़ हैं उन की इस्नाद में कलाम है, इलावा बरीं वोह रिवायत बिल मा'ना हैं और फ़ह्मे रावी ह़दीस नहीं लिहाज़ा "**आमीन**" का आहिस्ता ही पढ़ना सह़ीह़ तर है।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला [1.]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۟ؕ اَلَمْ

ऐ मह़बूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या ह़ाल किया [2.] क्या

يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۟ۙ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ

उन का दाऊं तबाही में न डाला और उन पर परन्दों की

1. सूरतुल फ़ील मक्किय्या है इस में एक रुकूअ़ पांच आयतें बीस कलिमे छियानवे ह़र्फ़ हैं।
2. हाथी वालों से मुराद अब्रहा और उस का लश्कर है। अब्रहा यमन और ह़ब्शा का बादशाह था, उस ने सनआ़ में एक कनीसा (यहूदो नसारा का इ़बदात ख़ाना) बनाया था और चाहता था कि ह़ज करने वाले बजाए मक्कए मुकर्रमा के यहीं आएं और इसी कनीसा का त़वाफ़ करें, अ़रब के लोगों को येह बात बहुत शाक़ थी, क़बीलए बनी किनाना के एक शख़्स ने मौक़अ़ पा कर उस कनीसा में क़ज़ाए ह़ाजत की और उस को नजासत से आलूदा कर दिया, इस पर अब्रहा को बहुत त़ैश आया और उस ने का'बा को ढाने की क़सम खाई और इस इरादे से अपना लश्कर ले कर जिस में बहुत से हाथी थे और उन का "**पेशरव**" एक बड़ा अ़ज़ीमुल जुस्सा (बहुत बड़े जिस्म वाला) कोह पैकर हाथी था जिस का नाम मह़मूद था। अब्रहा ने मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर एहले मक्का के जानवर क़ैद कर लिये उन में दो सो ऊंट अ़ब्दुल मुत्त़लिब के भी थे। अ़ब्दुल मुत्त़लिब अब्रहा के पास आए थे, बहुत जसीम व बा शकूह (शानो शौकत वाले), अब्रहा ने उन की ता'ज़ीम की और अपने पास बिठाया और मत़लब दर्याफ़्त किया। आप ने फ़रमाया : मेरा मत़लब येह है कि मेरे ऊंट वापस किये जाएं। अब्रहा ने कहा : मुझे बहुत तअ़ज्जुब होता है कि मैं ख़ानए का'बा को ढाने के लिये आया हूं और वोह तुम्हारा, तुम्हारे बाप दादा का मुअ़ज़्ज़म व मुह़तरम मक़ाम है तुम उस के लिये तो कुछ नहीं कहते अपने ऊंटों के लिये कहते हो ! आप ने फ़रमाया : मैं ऊंटों ही का मालिक हूं उन्हीं के लिये कहता हूं और का'बा का जो मालिक है वोह ख़ुद उस की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। अब्रहा ने आप के ऊंट वापस कर दिये। अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने क़ुरैश को ह़ाल सुनाया और उन्हें मश्वरा दिया कि वोह पहाड़ों की घाटियों और चोटियों में पनाह गुज़ीन हों। चुनान्चे क़ुरैश ने ऐसा ही किया और अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने दरवाज़ए का'बा पर पहुंच कर बारगाहे इलाही में का'बा की हिफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर आप अपनी क़ौम की त़रफ़ चले गए। अब्रहा ने सुब्ह़ तड़के अपने लश्करों को तय्यारी का हुक्म दिया और हाथियों

www.dawateislami.net

طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ﴿۳﴾ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ﴿۴﴾

टुकड़ियां (फ़ौजें भेजीं) 3. कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से मारते 4.

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿۵﴾

तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा) 5.

اٰیاتها ۴ | ۱۰۶ سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ ۲۹ | رکوعها ۱

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला 1.

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ﴿۲﴾

इस लिये कि क़ुरैश को मैल दिलाया उन के जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मैल दिलाया (रग़्बत दिलाई) 2.

को तय्यार किया लेकिन मह़मूद हाथी न उठा और का'बा की त़रफ़ न चला, जिस त़रफ़ चलाते थे चलता था, जब का'बे की त़रफ़ उस का रुख़ करते थे बैठ जाता था। अल्लाह तआ़ला ने छोटे छोटे परन्द उन पर भेजे जो छोटे छोटे संगरेज़े गिराते थे जिन से वोह हलाक हो जाते थे। **3.** जो समुन्दर की जानिब से फ़ौज फ़ौज आईं हर एक के पास तीन कंकरियां थीं दो दोनों पाऊं में एक मिन्क़ार (चोंच) में। **4.** जिस पर वोह परन्द संगरेज़ा छोड़ते वोह संगरेज़ा उस के ख़ौद (जंग में पहनी जाने वाली लोहे की टोपी) को तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीर कर हाथी में से गुज़र कर ज़मीन पर पहुंचता हर संगरेज़े पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस संगरेज़े से हलाक किया गया। **5.** जिस साल येह वाक़िआ़ हुवा उसी साल इस वाक़िए़ से पचास रोज़ के बा'द सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत हुई। **1. सूरतुल क़ुरैश** बक़ौले असह़ह़ मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार आयतें, सत्तरह कलिमे, तहत्तर ह़र्फ़ हैं। **2.** या'नी अल्लाह तआ़ला की ने'मतें बे शुमार हैं उन में से एक ने'मते ज़ाहिरा येह है कि उस ने क़ुरैश को हर साल में दो सफ़रों की त़रफ़ रग़्बत दिलाई इन की मह़ब्बत उन में डाली, जाड़े के मौसिम में यमन का सफ़र और गर्मी के मौसिम में शाम का, कि क़ुरैश तिजारत के लिये इन मौसिमों में येह सफ़र करते थे और हर जगह के लोग उन्हें एहले ह़रम कहते थे और उन की इ़ज़्ज़त व ह़ुर्मत करते थे येह अम्न के साथ

www.dawateislami.net

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ﴿۳﴾ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ

तो उन्हें चाहिये इस घर के [3.] रब की बन्दगी करें जिस ने उन्हें भूक में [4.] खाना

جُوْعٍ ۙ۬ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿۴﴾

दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा [5.]

اٰيَاتُهَا ٧ | ١٠٧ سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ ١٧ | رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला [1.]

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ﴿۱﴾ فَذٰلِكَ الَّذِيْ

भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है [2.] फिर वोह वोह है जो यतीम को

तिजारतें करते और फ़ाइदे उठाते और मक्कए मुकर्रमा में इक़ामत करने के लिये सरमाया बहम पहुंचाते जहां न खेती है न और असबाबे मआ़श, अल्लाह तआ़ला की येह ने'मत ज़ाहिर है और इस से फ़ाइदा उठाते हैं। **3.** या'नी का'बए शरीफ़ा के **4.** जिस में इन सफ़रों से पहले अपने वत़न में खेती न होने के बाईस मुब्तला थे इन सफ़रों के ज़रीए से **5.** ब सबब ह़रम शरीफ़ के और ब सबबे एहले मक्का होने के कि कोई उन से तअ़र्रूज़ (लड़ाई) नहीं करता बा वुजूद येह कि अत़राफ़ व ह़वाली (गिर्दो पेश के अ़लाक़ों) में क़त्लो ग़ारत होते रहते हैं, क़ाफ़िले लुटते हैं, मुसाफ़िर मारे जाते हैं, या येह मा'ना हैं कि उन्हें जुज़ाम से अम्न दी कि उन के शहर में उन्हें कभी जुज़ाम न होगा या येह मुराद कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से उन्हें ख़ोफ़े अ़ज़ीम से अमान अ़त़ा फ़रमाई।

1. सूरतुल माऊ़न मक्किय्या है और येह भी कहा गया है कि निस्फ़ मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई आ़स बिन वाइल के बारे में और निस्फ़ मदीना त़य्यिबा में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में। इस में एक रुकूअ़ सात आयतें पच्चीस कलिमे एक सो पच्चीस ह़र्फ़ हैं। **2.** या'नी ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है बा वुजूद दलाइल वाज़ेह़ होने के। शाने नुज़ूल : येह आयतें आ़स बिन वाइल सहमी या वलीद बिन मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुईं।

www.dawateislami.net

يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۙ﴿۲﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿۳﴾

धक्के देता है 3. और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता 4.

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ

तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे

سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ وَيَمْنَعُوْنَ

हैं 5. वोह जो दिखावा करते हैं 6. और बरतने की चीज़ 7.

الْمَاعُوْنَ ﴿۷﴾ ع

मांगे नहीं देते 8.

اٰیاتها ۳ | ۱۰۸ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ ۱۵ | رکوعها ۱

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला 1.

3. और इस पर शिद्दत व सख़्ती करता है और उस का ह़क़ नहीं देता। **4.** या'नी न ख़ुद देता है न दूसरे से दिलाता है इन्तिहा दरजे का बख़ील है। **5.** मुराद इस से मुनाफ़िक़ीन हैं जो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्यूंकि उस के मो'तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आप को नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिये उठ बैठ लेते हैं और ह़क़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। **6.** इबादतों में। आगे उन के बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है। **7.** मिस्ले सूई व हान्डी व प्याले के **8.** मस्अला : उ़-लमा ने फ़रमाया कि मुस्तह़ब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी ह़ाजत से ज़ियादा रखे जिन की हमसायों को ह़ाजत होती है और उन्हें आ़रियतन दिया करे। **1. सूरतुल कौसर** जमहूर के नज़्दीक मदनिय्या है, इस में एक रुकूअ़ तीन आयतें दस कलिमे बयालिस ह़ुरूफ़ हैं।

www.dawateislami.net

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢

ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं 2. तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो 3. और क़ुरबानी करो 4.

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣

बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वोही हर ख़ैर से महरूम है 5.

ايـاتها ٦ | ١٠٩ سُورَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ ١٨ | ركوعها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला 1.

2. और फ़ज़ाइले कसीरा इनायत कर के तमाम ख़ल्क़ पर अफ़ज़ल किया। हुस्ने ज़ाहिर भी दिया हुस्ने बातिन भी, नसबे आ़ली भी, नुबुव्वत भी, किताब भी, हिकमत भी, इ़ल्म भी, शफ़ाअ़त भी, हौज़े कौसर भी, मक़ामे महमूद भी, कसरते उम्मत भी, आ'दाए दीन पर ग़-लबा भी, कसरते फ़ुतूह भी और बेशुमार ने'मतें और फ़ज़ीलतें जिन की निहायत नहीं। **3.** जिस ने तुम्हें इ़ज़्ज़त व शराफ़त दी **4.** इस के लिये उस के नाम पर ब ख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं। इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल येह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ई़द मुराद है। **5.** न आप। क्यूंकि आप का सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा आप की औलाद में भी कसरत होगी और आप के मुत्तबिई़न (पैरवी करने वालों) से दुन्या भर जाएगी आप का ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा क़ियामत तक पैदा होने वाले आ़लिम और वाइ़ज़ **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के साथ आप का ज़िक्र करते रहेंगे। बे नाम व निशान और हर भलाई से महरूम तो आप के दुश्मन हैं।

शाने नज़ूल : जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते क़ासिम का विसाल हुवा तो कुफ़्फ़ार ने आप को "अबतर" या'नी मुन-क़-त़उन्नस्ल कहा और येह कहा कि अब उन की नस्ल नहीं रही उन के बा'द अब उन का ज़िक्र भी न रहेगा येह सब चर्चा ख़त्म हो जाएगा, उस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तकज़ीब की और उन का बालिग़ रद्द फ़रमाया।

1. सूरतुल काफ़िरून मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़ छे आयतें छब्बीस कलिमे चोरानवे हुरूफ़ हैं।

शाने नज़ूल : क़ुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि आप हमारे दीन का इत्तिबाअ़ कीजिये हम आप के दीन का इत्तिबाअ़ करेंगे एक साल आप हमारे मा'बूदों की इ़बादत करें एक साल हम आप के मा'बूद की इ़बादत करेंगे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** की पनाह कि मैं उस के साथ ग़ैर को शरीक करूं। कहने लगे तो आप हमारे किसी मा'बूद को हाथ ही लगा दीजिये हम आप की तसदीक़ कर देंगे और आप के मा'बूद की इ़बादत करेंगे। इस पर येह सूरए शरीफ़ा नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़

www.dawateislami.net

قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَۙ(۱) لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَۙ(۲)

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो [2] न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो

وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُۚ(۳) وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ

और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा

مَّا عَبَدْتُّمْۙ(۴) وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُؕ(۵)

जो तुम ने पूजा और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूं

لَكُمْ دِیْنُكُمْ وَلِیَ دِیْنِ۠(۶)

तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन [3]

رکوعها ۱ | ۱۱۰ سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِیَّةٌ ۱۱۴ | اٰیاتها ۳

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला [1]

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُۙ(۱) وَ رَاَیْتَ النَّاسَ

जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह़ आए [2] और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह

ले गए वहां क़ुरैश की वोह जमाअ़त मौजूद थी ह़ुज़ूर ने येह सूरत उन्हें पढ़ कर सुनाई तो वोह मायूस हो गए और ह़ुज़ूर के और ह़ुज़ूर के अस्ह़ाब के दर पै ईज़ा हुए। **2.** मुख़ात़ब यहां मख़्सूस काफ़िर हैं जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं। **3.** या'नी तुम्हारे लिये तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिये मेरी तौह़ीद और मेरा इख़्लास और मक़्सूद इस से तहदीद (तमबीह) है। "وَهٰذِهِ الْاٰیَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰیَةِ الْقِتَالِ" (और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है)

1. **सूरए नस्र** मदनिय्या है इस में एक रुकूअ़ तीन आयतें सतरह कलिमे सत्तर ह़र्फ़ हैं।

2. नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दुश्मनों के मुक़ाबले में। इस से या आ़म फ़ुतूह़ाते इस्लाम मुराद हैं या ख़ास फ़त्ह़े मक्का।

www.dawateislami.net

يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ

के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं 3. तो अपने रब की सना करते हुए

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो 4. बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है 5.

اٰیاتها ۵ | سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ ۱۱۱ ۶ | رکوعها ۱

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला 1.

3. जैसा कि बादे फ़त्ह़े मक्का हुवा कि लोग अक़्त़ारे अर्ज़ (दुन्या के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों) से शौक़े गुलामी में चले आते थे और शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ होते थे। **4.** उम्मत के लिये। **5.** इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ने "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ" की बहुत कसरत फ़रमाई। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि येह सूरत ह़ज्जतुल वदाअ़ में ब मक़ाम मिना नाज़िल हुई, इस के बा'द आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ"(پ۶،المائدۃ:۳) नाज़िल हुई इस के नाज़िल होने के बा'द अस्सी रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ने दुन्या में तशरीफ़ रखी फिर आयत "الْكَلٰلَةِ"(پ۶،النساء:۱۷۶) नाज़िल हुई, इस के बा'द हुज़ूर पचास रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर आयत "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ"(پ۳،البقرۃ:۲۸۱) नाज़िल हुई, उस के बा'द हुज़ूर इक्कीस रोज़ या सात रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे। इस सूरते मुबारका के नाज़िल होने के बा'द सह़ाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم दुन्या में ज़ियादा तशरीफ़ न रखेंगे चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह सूरत सुन कर इसी ख़याल से रोए, इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि एक बन्दे को **अल्लाह** तआ़ला ने इख़्तियार दिया, चाहे दुन्या में रहे, चाहे उस की लिक़ा क़बूल फ़रमाए। उस बन्दे ने लिक़ाए इलाही इख़्तियार की। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे आबा, हमारी औलादें सब क़ुर्बान।

1. सूरए अबी लहब मक्किय्या है इस में एक रुकूअ़ पांच आयतें बीस कलिमे सतत्तर हुरूफ़ हैं। शाने नज़ूल : जब नबिये करीम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ने कोहे सफ़ा पर अ़रब के लोगों को दा'वत दी हर त़रफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उन से अपने सिदक़ो अमानत की शहादतें

www.dawateislami.net

تَبَّتۡ یَدَاۤ اَبِیۡ لَہَبٍ وَّ تَبَّ ؕ﴿۱﴾ مَاۤ اَغۡنٰی عَنۡہُ مَالُہٗ وَ مَا

तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया 2. उसे कुछ काम न आया उस का माल और न जो

کَسَبَ ؕ﴿۲﴾ سَیَصۡلٰی نَارًا ذَاتَ لَہَبٍ ۚ﴿ۖ۳﴾ وَّ امۡرَاَتُہٗ ؕ

कमाया 3. अब धंसता है लपट मारती आग में वोह और उस की जोरू 4.

حَمَّالَۃَ الۡحَطَبِ ۚ﴿۴﴾ فِیۡ جِیۡدِہَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ﴿۵﴾

लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए उस के गले में खजूर की छाल का रस्सा 5.

लेने के बा'द फ़रमाया "اِنِّیْ لَکُمْ نَذِیْرٌبَیْنَ یَدَیْ عَذَابٍ شَدِیْدٍ" (मैं तुम्हें क़ियामत के सख़्त अ़ज़ाब से डराता हूं) इस पर अबू लहब ने हुज़ूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुम ने हमें इस लिये जम्अ़ किया था। इस पर येह सूरत शरीफ़ नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से जवाब दिया **2.** अबू लहब का नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा है। येह अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चचा था, बहुत गोरा ख़ूब सूरत आदमी था, इसी लिये इस की कुन्यत अबू लहब है और इसी कुन्यत से वोह मश्हूर था। दोनों हाथों से मुराद उस की ज़ात है। **3.** या'नी उस की औलाद। मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये अपने माल व औलाद को फ़िदया कर दूंगा इस आयत में इस का रद फ़रमाया गया कि येह ख़याल ग़लत़ है उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं। **4.** उम्मे जमील बिन्ते ह़र्ब बिन उमय्या अबू सुफ़्यान की बहन जो रसूले करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निहायत इनाद व अ़दावत रखती थी और बा वुजूद येह कि बहुत दौलतमन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़दावत में इन्तिहा को पहुंची थी कि ख़ुद अपने सर पर कांटों का गठ्ठा ला कर रसूले करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रास्ते में डालती ताकि हुज़ूर को और हुज़ूर के अस्ह़ाब को ईज़ा व तकलीफ़ हो और हुज़ूर की ईज़ा रसानी उस को इतनी प्यारी थी कि वोह इस काम में किसी दूसरे से मदद लेना भी गवारा न करती थी। **5.** जिस से कांटों का गठ्ठा बांधती थी एक रोज़ येह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पथ्थर पर बैठ गई एक फ़िरिश्ते ने ब हुक्मे इलाही उस के पीछे से उस के गठ्ठे को खींचा वोह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वोह मर गई।

www.dawateislami.net

رکوعها ۱ | ۱۱۲ سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ ۲۲ | اٰياتها ۴

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान रह़्म वाला [1.]

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَ

तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है [2.] अल्लाह बे नियाज़ है [3.] न उस की कोई औलाद [4.]

لَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾ ع

और न वोह किसी से पैदा हुवा [5.] और न उस के जोड़ का कोई [6.]

1. सूरए इख़्लास मक्किय्या व बक़ौले (एक क़ौल के मुत़ाबिक़) मदनिय्या है इस में एक रुकूअ़ चार या पांच आयतें पंदरह कलिमे सैंतालीस ह़र्फ़ हैं। अह़ादीस में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं इस को तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया या'नी तीन मरतबा इस को पढ़ा जाए तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले, एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मह़ब्बत है फ़रमाया इस की मह़ब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी। (तिरमिज़ी) **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ के सुवाल किये कोई कहता था कि अल्लाह का नसब क्या है कोई कहता था कि वोह सोने का है या चांदी का है या लोहे का है या लकड़ी का है किस चीज़ का है? किसी ने कहा वोह क्या खाता है? क्या पीता है? रबूबिय्यत उस ने किस से विरसे में पाई और उस का कौन वारिस होगा? उन के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ात व सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मा'रिफ़त की राह वाज़ेह़ की और जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरफ़्तार थे अपनी ज़ातो सिफ़ात के अन्वार के बयान से मुज़्महल (ज़ाइल) कर दिया। **2.** रबूबिय्यत व उलूहिय्यत में सिफ़ाते अ़ज़्मत व कमाल के साथ मौसूफ़ है, मिस्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है, उस का कोई शरीक नहीं। **3.** हर चीज़ से, न खाए, न पिये, हमेशा से है हमेशा रहे। **4.** क्यूंकि कोई उस का मुजानस नहीं। **5.** क्यूंकि वोह क़दीम (या'नी हमेशा से) है और पैदा होना ह़ादिस की शान है। **6.** या'नी कोई उस का हम्ता व अ़दील (बराबरी करने वाला) नहीं। इस सूरत की चन्द आयतों में इ़ल्मे इलाहिय्यात के नफ़ीस व आ'ला मत़ालिब बयान फ़रमा दिये गए हैं जिन की तफ़्सीलात से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने लबरेज़ हो जाएं।

www.dawateislami.net

رکوعھا ١ ۔ ١١٣ سُوْرَۃُ الْفَلَقِ مَکِّیَّۃٌ ٢٠ ۔ اٰیاتھا ٥

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला [1.]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾

तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है [2.] उस की सब मख़्लूक़ के शर से [3.]

1. सूरए फ़लक़ मदनिय्या है और एक क़ौल येह है कि मक्किय्या है "وَالْاَوَّلُ اَصَحُّ" (और पहला क़ौल ज़ियादा सह़ीह़ है) इस सूरत में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तेईस कलिमे, चोहत्तर ह़र्फ़ हैं।

शाने नज़ूल : येह सूरत और सूरतुन्नास जो इस के बा'द है उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि लबीद बिन आ'सम यहूदी और उस की बेटियों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और आज़ाए ज़ाहिरा पर उस का असर हुवा क़ल्ब व अ़क़्ल व ए'तिक़ाद पर कुछ असर न हुवा चन्द रोज़ के बा'द जिब्रील आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वोह फुलां कूएं में एक पथ्थर के नीचे दाब दिया है, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ को भेजा उन्हों ने कूएं का पानी निकालने के बा'द पथ्थर उठाया उस के नीचे से खजूर के गाभे (दरख़्त का अन्दरूनी नर्म हिस्सा) की थेली बर आमद हुई उस में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم के मूए शरीफ़ जो कंघी से बर आमद हुए थे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم की कंघी के चन्द दन्दाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला (कमान की तांत, तार) जिस में ग्यारह गिरहें लगी थीं और एक मोम का पुतला जिस में ग्यारह सूइयां चुभीं थीं येह सब सामान पथ्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया गया अल्लाह तआ़ला ने येह दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं पांच सूरए फ़लक़ में, हर एक आयत के पढ़ने के साथ एक एक गिरह खुलती जाती थी यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم बिलकुल तन्दुरस्त हो गए।

मस्अला : ता'वीज़ और अ़मल जिस में कोई कलिमए कुफ़्र या शिर्क का न हो जाइज़ है ख़ास कर वोह अ़मल जो आयाते क़ुरआनिय्या से किये जाएं या अह़ादीस में वारिद हुए हों। ह़दीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते उ़मैस ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم जा'फ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र होती है क्या मुझे इजाज़त है कि उन के लिये अ़मल करूं? हुज़ूर ने इजाज़त दी। (तिरमिज़ी)

2. तअ़व्वुज़ में अल्लाह तआ़ला का इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र इस लिये है कि अल्लाह तआ़ला सुब्ह़ पैदा कर के शब की तारिकी दूर फ़रमाता है तो वोह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन ह़ालात से ख़ौफ़ है उन को दूर फ़रमाए नीज़ जिस त़रह़ शबे तार में आदमी तुलूए सुब्ह़ का इन्तिज़ार करता है ऐसा ही ख़ाइफ़ अम्न व राह़त का मुन्तज़िर रहता है इलावा बरीं सुब्ह़ अहले इज़्तिरार व इज़्तिराब की दुआ़ओं का और उन के क़बूल होने का वक़्त है तो मुराद येह हुई कि जिस वक़्त अरबाबे कर्बो ग़म (ग़मगीन व मुसीबत ज़दों) को कशाइश (आसानी) दी जाती है और दुआ़एं क़बूल की जाती हैं मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूं, एक क़ौल येह भी है कि फ़लक़ जहन्नम में एक वादी है। **3.** जानदार हो या बे जान मुकल्लफ़ हो या ग़ैरे मुकल्लफ़।

www.dawateislami.net

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

और अंधेरी डालने वाले के शर से जब वोह डूबे 4. और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों

فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ ع

में फूंकती हैं 5. और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले 6.

اٰیاتها ٦ | سُوْرَۃُ النَّاسِ ۱۱۴ مَکِّیَّۃٌ ۲۱ | رکوعها ۱

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला 1.

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾

तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब 2. सब लोगों का बादशाह 3. सब लोगों का ख़ुदा 4

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मख़्लूक़ से मुराद यहां ख़ास इब्लीस है जिस से बदतर मख़्लूक़ में कोई नहीं और जादू के अ़मल उस की और उस के आ'वान (मुआ़वनत करने वालों) व लश्करों की मदद से पूरे होते हैं। **4.** ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चांद की त़रफ़ नज़र कर के उन से फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! अल्लाह की पनाह लो उस के शर से येह अंधेरी डालने वाला है जब डूबे। (तिरमिज़ी) या'नी आख़िर माह में जब चांद छुप जाए तो जादू के वोह अ़मल जो बीमार करने के लिये हैं इसी वक़्त में किये जाते हैं। **5.** या'नी जादूगर औ़रतें जो डोरों में गिरह लगा लगा कर उन में जादू के मंतर पढ़ पढ़ कर फूंकती हैं जैसे कि लबीद की लड़कियां। **मस्अला :** गंडे बनाना और उन पर गिरह लगाना, आयाते क़ुरआन या अस्माए इलाहिय्या दम करना जाइज़ है जम्हूर सह़ाबा व ताबेई़न इसी पर हैं और ह़दीसे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا में है कि जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहल में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर मुअ़व्वज़ात (सूरए फ़लक़ और नास) पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते। **6.** ह़सद वाला वोह है जो दूसरे के ज़वाले ने'मत की तमन्ना करे। यहां ह़ासिद से यहूद मुराद हैं जो नबिये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़सद करते थे या ख़ास लबीद बिन आ'सम यहूदी। ह़सद बदतरीन सिफ़्त है और येही सब से पहला गुनाह है जो आसमान में इब्लीस से सरज़द हुवा और ज़मीन में क़ाबील से। **1.** सूरतुन्नास बक़ौले असह़्ह़ (ज़ियादा सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़) मदनिय्या है इस में एक रुकूअ़ छे आयतें बीस कलिमे उनासी हुरूफ़ हैं। **2.** सब का ख़ालिक़ व मालिक। ज़िक्र में इन्सानों की तख़्सीस उन की तशरीफ़ (इ़ज़्ज़त) के लिये है कि उन्हें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात किया। **3.** उन के कामों की तदबीर फ़रमाने वाला **4.** कि इलाह और मा'बूद होना उसी के साथ ख़ास है।

www.dawateislami.net

مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ

उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले **5.** और दुबक रहे **6.** वोह जो लोगों के दिलों में

صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ٪﴿۶﴾

वस्वसे डालते हैं जिन्न और आदमी **7.**

5. मुराद इस से शैत़ान है। **6.** येह उस की आ़दत ही है कि इन्सान जब ग़ाफ़िल होता है तो उस के दिल में वस्वसे डालता है और जब इन्सान **अल्लाह** का ज़िक्र करता है तो शैत़ान दबक रहता है और हट जाता है। **7.** येह बयान है वस्वसे डालने वाले शैत़ान का कि वोह जिन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी जैसा शयात़ीने जिन्न इन्सानों को वस्वसे में डालते हैं ऐसे ही शयात़ीने इन्स भी नासेह़ बन कर आदमी के दिल में वस्वसे डालते हैं फिर अगर आदमी इन वस्वसों को मानता है तो उस का सिल्सिला बढ़ जाता है और ख़ूब गुमराह करते हैं और अगर उस से मुतनफ़्फ़िर होता है तो हट जाते हैं और दबक रहते हैं। आदमी को चाहिये कि शयात़ीने जिन्न के शर से भी पनाह मांगे और शयात़ीने इन्स के शर से भी। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शब को जब बिस्तर मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों दस्ते मुबारक जम्अ़ फ़रमा कर उन में दम करते और सूरह "قُلْ ھُوَاللّٰہُ اَحَد व قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس" पढ़ कर अपने मुबारक हाथों को सरे मुबारक से ले कर तमाम जिस्मे अक़्दस पर फैरते जहां तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते, येह अ़मल तीन मरतबा फ़रमाते।

"وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ بِمُرَادِہٖ وَاَسْرَارِ کِتَابِہٖ وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَاَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَاَزْکَی السَّلَامِ عَلٰی حَبِیْبِہٖ وَسَیِّدِ اَنْبِیَآئِہٖ وَرُسُلِہٖ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ۔"

www.dawateislami.net

दुआए कुनूत

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُکَ وَ نَسْتَغْفِرُکَ وَ نُؤْمِنُ

ऐ अल्लाह हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं

بِکَ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْکَ وَنُثْنِیْ عَلَیْکَ الْخَیْرَ

और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं

وَ نَشْکُرُکَ وَ لَا نَکْفُرُکَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُکُ

और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी ना शुक्री नहीं करते और अलग करते और छोड़ते हैं उस

مَنْ یَّفْجُرُکَ ط اَللّٰھُمَّ اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَ لَکَ نُصَلِّیْ

शख़्स को जो तेरी ना फ़रमानी करे ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते और तेरे ही लिये नमाज़

وَنَسْجُدُ وَ اِلَیْکَ نَسْعٰی وَ نَحْفِدُ وَ نَرْجُوْا رَحْمَتَکَ

पढ़ते और सजदा करते हैं और तेरी ही त़रफ़ दौड़ते और ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर होते हैं और तेरी

وَنَخْشٰی عَذَابَکَ اِنَّ عَذَابَکَ بِالْکُفَّارِ مُلْحِقٌ.

रह़मत के उम्मीद वार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है ।

तशह्हुद

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَ الصَّلَوٰتُ وَ الطَّیِّبٰتُ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ

तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इबादतें अल्लाह ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर

www.dawateislami.net

اَیُّھَا النَّبِیُّ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی

ऐ नबी और **अल्लाह** की रहमतें और ब-र-कतें, सलाम हो हम पर और **अल्लाह** के

عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ ط اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اَشْھَدُ

नेक बन्दों पर मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं

اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ ط

मुहम्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं।

दुरूदे इब्राहीम

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا

ऐ **अल्लाह** दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुहम्मद पर और उन की आल पर जिस तरह तूने

صَلَّیْتَ عَلٰٓی اِبْرٰھِیْمَ وَ عَلٰٓی اٰلِ اِبْرٰھِیْمَ اِنَّکَ

दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम पर और उन की आल पर, बेशक तू

حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ط اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ

सराहा हुवा बुज़ुर्ग है। ऐ **अल्लाह** ब-रकत नाज़िल कर (हमारे सरदार) मुहम्मद पर और

عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰٓی اِبْرٰھِیْمَ

उन की आल पर जिस तरह तूने ब-रकत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम

وَ عَلٰٓی اٰلِ اِبْرٰھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

और उन की आल पर बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

www.dawateislami.net

दुआए मासूरा

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ

ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में

حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

छे कलिमे

छे कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल और ईमाने मुजमल येह सब तर्जमे के साथ ज़बानी याद करें ।

अव्वल कलिमा त़य्यिब

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ

मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं

وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ

और मैं गवाही देता हूं कि बेशक मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं।

www.dawateislami.net

तीसरा कलिमा तमजीद

سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ

अल्लाह पाक है और सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह सब से

اَکۡبَرُ وَلَاحَوۡلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الۡعَلِیِّ الۡعَظِیۡمِ

बड़ा है, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर अल्लाह ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तौह़ीद

لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ لَہُ الۡمُلۡکُ

अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही

وَلَہُ الۡحَمۡدُ یُحۡیٖ وَ یُمِیۡتُ وَھُوَحَیٌّ لَّا یَمُوۡتُ اَبَدًا

और उसी के लिये ह़म्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं

اَبَدًا ؕ ذُوالۡجَلَالِ وَ الۡاِکۡرَامِ ؕ بِیَدِہِ الۡخَیۡرُ ؕ وَ

आएगी। बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है। उस के हाथ में भलाई है और

ھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ

वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

www.dawateislami.net

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّی مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ

मैं अल्लाह से मुआ़फ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बुझ कर किया या

خَطَأً سِرًّا اَوْ عَلَانِیَةً وَّ اَتُوْبُ اِلَیْهِ مِنَ الذَّنْبِ

भूल कर, छूप कर किया या ज़ाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से

الَّذِیْٓ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّکَ

जिस को मैं जानता हूं और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता, (ऐ अल्लाह !) बेशक

اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ وَ سَتَّارُ الْعُیُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ

तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐ़बों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ

और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की कुव्वत अल्लाह ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है।

छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ اَنْ اُشْرِکَ بِکَ شَیْئًا

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं

وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَ اَسْتَغْفِرُکَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ

जान बूझ कर और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस

www.dawateislami.net

عَنْهُ وَ تَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَ

से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और

الْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ

ग़ीबत से और बिदअ़त से और चुग़ली से और बे ह़याइयों से और बोहतान से

وَالْمَعَاصِىْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ لَآاِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ

और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत

الْاٰخِرِ وَ الْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَ شَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى

के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है

وَ الْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

और मौत के बा'द उठाए जाने पर।

www.dawateislami.net

ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ کَمَا ھُوَ بِاَسْمَآئِہٖ وَ صِفَاتِہٖ وَ قَبِلْتُ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने

جَمِیْعَ اَحْکَامِہٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِیْقٌ بِالْقَلْبِ

उस के तमाम अह़काम क़बूल किये ज़बान से इक़रार करते हुए और दिल से तसदीक़ करते हुए।

बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَ مَیِّتِنَا وَ شَاھِدِنَا وَ غَآئِبِنَا وَ

इलाही बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और

صَغِیْرِنَا وَ کَبِیْرِنَا وَ ذَکَرِنَا وَ اُنْثَانَا ط اَللّٰھُمَّ مَنْ

हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को, इलाही

اَحْیَیْتَہٗ مِنَّا فَاَحْیِہٖ عَلَی الْاِسْلَامِ وَ مَنْ تَوَفَّیْتَہٗ

तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे

مِنَّا فَتَوَفَّہٗ عَلَی الْاِیْمَانِ

तो उस को ईमान पर मौत दे।

www.dawateislami.net

ना बालिग़ लड़के की दुआ

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْہُ لَنَآ اَجْرًا

इलाही इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मुजिब)

وَّ ذُخْرًا وَّ اجْعَلْہُ لَنَا شَافِعًا وَّ مُشَفَّعًا

और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

ना बालिग़ लड़की की दुआ

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْھَا لَنَآ اَجْرًا

इलाही इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब)

وَّ ذُخْرًا وَّ اجْعَلْھَا لَنَا شَافِعَةً وَّ مُشَفَّعَةً

और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

तलबिय्यह (लब्बैक)

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ

मैं ह़ाजिर हूं, या **अल्लाह** मैं ह़ाज़िर हूं, मैं ह़ाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक

لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَ النِّعْمَةَ لَکَ

नहीं, मैं ह़ाज़िर हूं तमाम ख़ूबियां और ने'मतें तेरे लिये हैं

وَ الْمُلْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ

और तेरा ही मुल्क भी, तेरा कोई शरीक नहीं।

www.dawateislami.net

बहारे शरीअ़त

के

मुन्तख़ब अबवाब

www.dawateislami.net

मुर्तद का बयान (1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾ (2)

(پ ۲، البقرة:۲۱۷)

तुम में से जो कोई अपने दीन से मुर्तद हो जाए और कुफ़्र की हालत में मरे उस के तमाम आ'माल दुन्या और आख़िरत में राइगां हैं और वोह लोग जहन्नमी हैं, उस में हमेशा रहेंगे।

और फ़रमाता है :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ (3)

(پ ٦، المائدة:٥٤)

ऐ ईमान वालो ! तुम में से जो कोई अपने दीन से मुर्तद हो जाए तो अ़न क़रीब **अल्लाह** एक ऐसी क़ौम लाएगा जो **अल्लाह** को महबूब होगी और वोह **अल्लाह** को महबूब रखेगी मुसलमानों के सामने ज़लील और काफ़िरों पर सख़्त होगी वोह लोग **अल्लाह** की राह में जिहाद करेंगे किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है देता है और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है।

---

(1).....बहारे शरीअ़त हिस्सा 9, जि. 2, स. 453

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें इस में हमेशा रहना।

(3).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह**

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰیٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِیْمَانِكُمْ ؕ

तुम फ़रमा दो ! क्या अल्लाह और उस की आयतों और उस के रसूल के साथ तुम मस्ख़रापन करते थे, बहाने न बनाओ, तुम ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए ।(1)

(پ ۱۰، التوبۃ:٦٥،٦٦)

अह़ादीस

ह़दीस 1 : इमाम बुख़ारी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दा कभी अल्लाह तआ़ला की ख़ुश्नूदी की बात कहता है और उस की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करता [या'नी अपने नज़दीक एक मा'मूली बात कहता है] अल्लाह तआ़ला उस की वजह से उस के बहुत दरजे बुलन्द करता है और कभी अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की नाराज़ी की बात करता है और उस का ख़याल भी नहीं करता इस की वजह से जहन्नम में गिरता है ।" और एक रिवायत में है कि "मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान में जो फ़ासिला है, उस से भी फ़ासिले पर जहन्नम में गिरता है ।"

(صحیح البخاري، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، الحدیث: ٦٤٧٧،٦٤٧٨، ج٤، ص٢٤١

و صحیح مسلم، کتاب الزھد... إلخ، باب التکلم بالکلمة یھوی...إلخ، الحدیث:٢٩٨٨، ص١٥٩٥)

ह़दीस 2-3 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है ।

(1)..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसते हो बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान हो कर ।*

www.dawateislami.net

"जो मुसलमान अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की वह्दानिय्यत और मेरी रिसालत की शहादत देता है उस का ख़ून ह़लाल नहीं, मगर तीन वजह से, वोह किसी को क़त्ल करे और सय्यिब ज़ानी और दीन से निकल जाने वाला जो जमाअ़ते मुस्लिमीन को छोड़ देता है।" और तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजा ने इसी की मिस्ल ह़ज़रते उ़समान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की।

(صحیح البخاري، کتاب الدیات، باب قول اللّٰه تعالی ﴿ان النفس بالنفس﴾... إلخ، الحدیث:٦٨٧٨، ج٤، ص٣٦١)

ह़दीस 4 : सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में इकरिमा से मरवी, कहते हैं कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ज़िन्दीक़ पेश किये गए (ज़िन्दीक़ : वोह शख़्स जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह्दानिय्यत का क़ाइल न हो) उन्हों ने उन को जला दिया। जब येह ख़बर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को पहुंची तो येह फ़रमाया कि मैं होता तो नहीं जलाता क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ किया, फ़रमाया कि "अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के अ़ज़ाब के साथ तुम अ़ज़ाब मत दो।" और मैं उन्हें क़त्ल करता, इस लिये कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया है : "जो शख़्स अपने दीन को बदल दे, उसे क़त्ल कर डालो।" (صحیح البخاري، کتاب استتابة المرتدین...إلخ، الحدیث:٦٩٢٢، ج٤، ص٣٧٨)

मस्अला 1 : कुफ़्र व शिर्क से बदतर कोई गुनाह नहीं और वोह भी इर्तिदाद कि येह कुफ़्रे अस्ली से भी ब ए'तिबार अह़काम सख़्त तर है जैसा कि इस के अह़काम से मा'लूम होगा। मुसलमान को चाहिये कि इस से पनाह मांगता रहे कि शैत़ान हर वक़्त ईमान की घात (ताक) में है और ह़दीस में फ़रमाया कि शैत़ान इन्सान के बदन में ख़ून की त़रह़ तैरता है। (سنن الترمذي، کتاب الرضاع، باب ماجاء کراهیة...إلخ، الحدیث:١١٧٥، ج٢، ص٣٩١) आदमी को कभी अपने ऊपर या अपनी त़ाअ़तो आ'माल पर भरोसा न चाहिये हर वक़्त ख़ुदा पर ए'तिमाद करे और उसी से

www.dawateislami.net

बक़ाए ईमान की दुआ़ चाहे कि उसी के हाथ में क़ल्ब है और क़ल्ब को क़ल्ब इसी वजह से कहते हैं कि लोट पोट होता रहता है (या'नी बदलता रहता है), ईमान पर साबित रहना उसी की तौफ़ीक़ से है जिस के दस्ते क़ुदरत में क़ल्ब है और ह़दीस में फ़रमाया कि "शिर्क से बचो कि वोह च्यूंटी की चाल से ज़ियादा मख़्फ़ी है।"

(المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند الكوفيين،حديث أبي موسى الأشعرى، الحديث:١٩٦٢٥،ج٧،ص١٤٦)

और उस से बचने की ह़दीस में एक दुआ़ इरशाद फ़रमाई उसे हर रोज़ तीन मरतबा पढ़ लिया करो, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि शिर्क से मह़फ़ूज़ रहोगे। वोह दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ اَنۡ اُشۡرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعۡلَمُ وَاَسۡتَغۡفِرُكَ لِمَا لَا اَعۡلَمُ اِنَّكَ اَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ.

*[**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** : मैं तेरी पनाह मांगता हूं कि जान बूझ कर तेरे साथ किसी को शरीक बनाऊं और तुझ से बख़्शिश मांगता हुं (उस शिर्क से) जिसे मैं नहीं जानता बेशक तू दानाए ग़ुयूब है।]*

(الدرالمختار و ردالمحتار" كتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب:في حكم من شتم...إلخ، ج٦، ص٣٥٤)

मुर्तद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो ज़रूरियाते दीन से हो या'नी ज़बान से कलिमए कुफ़्र बके जिस में तावीले सह़ीह़ की गुन्जाइश न हो। यूंही बा'ज़ अफ़्आ़ल भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है मसलन बुत को सजदा करना। मुस्ह़फ़ शरीफ़ को नजासत की जगह फैंक देना।

("الدرالمختار" كتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦،ص٣٤٤)

मस्अला 2 : जो बत़ौरे तमस्ख़ुर और ठठ्ठे (बत़ौरे मज़ाक़) के कुफ़्र करेगा वोह भी मुर्तद है अगर्चे कहता है कि ऐसा ए'तिक़ाद नहीं रखता। ("الدرالمختار" كتاب الجهاد،باب المرتد، ج٦،ص٣٤٣)

मस्अला 3 : किसी कलाम में चन्द मा'ने बनते हैं बा'ज़ कुफ़्र की त़रफ़ जाते हैं बा'ज़ इस्लाम की त़रफ़ तो उस शख़्स की तकफ़ीर नहीं की

www.dawateislami.net

जाएगी। (या'नी उस को काफ़िर क़रार नहीं दिया जाएगा) हां अगर मा'लूम हो कि क़ाइल ने मा'नए कुफ़्र का इरादा किया मसलन वोह ख़ुद कहता है कि मेरी मुराद येही है तो कलाम का मोहूतमल होना (या'नी कलाम में दूसरे मा'नों का पाया जाना अब) नफ़्अ़ न देगा। यहां से मा'लूम हुवा कि कलिमा के कुफ़्र होने से क़ाइल का काफ़िर होना ज़रूरी नहीं।

("ردالمحتار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب: فی حکم من شتم دین مسلم، ج٦، ص٣٥٤ وغیرہ)

आज कल बा'ज़ लोगों ने येह ख़याल कर लिया है कि किसी शख़्स में एक बात भी इस्लाम की हो तो उसे काफ़िर न कहेंगे येह बिल्कुल ग़लत़ है क्या यहूदो नसारा में इस्लाम की कोई बात नहीं पाई जाती ह़ालांकि कुरआने अ़ज़ीम में उन्हें काफ़िर फ़रमाया गया बल्कि बात येह है कि उ़-लमा ने फ़रमाया येह था कि अगर किसी मुसलमान ने ऐसी बात कही जिस के बा'ज़ मा'ना इस्लाम के मुत़ाबिक़ हैं तो काफ़िर न कहेंगे इस को उन लोगों ने येह बना लिया। एक येह वबा भी फैली हुई है कहते हैं कि "हम तो काफ़िर को भी काफ़िर न कहेंगे कि हमें क्या मा'लूम कि उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर होगा" येह भी ग़लत़ है कुरआने अ़ज़ीम ने काफ़िर को काफ़िर कहा और काफ़िर कहने का हुक्म दिया(1) "قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَۙ" और अगर ऐसा है तो मुसलमान को भी मुसलमान न कहो तुम्हें क्या मा'लूम कि इस्लाम पर मरेगा।

ख़ातिमे का ह़ाल तो ख़ुदा जाने मगर शरीअ़त ने काफ़िर व मुस्लिम में इम्तियाज़ रखा है अगर काफ़िर को काफ़िर न जाना जाए तो क्या उस के साथ वोही मुआ़मलात करोगे जो मुस्लिम के साथ होते हैं ह़ालांकि बहुत से उमूर ऐसे हैं जिन में कुफ़्फ़ार के अह़काम मुसलमानों से बिल्कुल जुदा हैं मसलन उन के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ना, उन के लिये इस्तिग़फ़ार न करना, उन को मुसलमानों की त़रह़ दफ़्न न करना, उन को अपनी लड़कियां न देना, उन पर जिहाद

(1) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो*

www.dawateislami.net

करना, उन से जिज़्या लेना इस से इन्कार करें तो क़त्ल करना वग़ैरा वग़ैरा। बा'ज़ जाहिल येह कहते हैं कि "हम किसी को काफ़िर नहीं कहते, अ़ालिम लोग जानें वोह काफ़िर कहें" मगर क्या येह लोग नहीं जानते कि अ़वाम के तो वोही अ़क़ाइद होंगे जो क़ुरआन व ह़दीस वग़ैरहुमा से उ़-लमा ने उन्हें बताए या अ़वाम के लिये कोई शरीअ़त जुदागाना है, जब ऐसा नहीं तो फिर अ़ालिमे दीन के बताए पर क्यूं नहीं चलते नीज़ येह कि ज़रूरियात का इन्कार कोई ऐसा अम्र नहीं जो उ़-लमा ही जाने अ़वाम जो उ़-लमा की सोह़बत से मुशर्रफ़ होते रहते हैं वोह भी इन से बे ख़बर नहीं होते फिर ऐसे मुआ़मले में पहलूतही (कनाराकशी) और ए'राज़ (रूगर्दानी) के क्या मा'ना।

मस्अला 4 : कहना कुछ चाहता था और ज़बान से कुफ़्र की बात निकल गई तो काफ़िर न हुवा या'नी जब कि इस अम्र से इज़्हारे नफ़रत करे कि सुनने वालों को भी मा'लूम हो जाए कि ग़लत़ी से येह लफ़्ज़ निकला है और अगर बात की पच की (अपनी कही हुई बात पर अड़ा रहा) तो अब काफ़िर हो गया कि कुफ़्र की ताईद करता है।

("ردالمحتار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب: الإسلام یکون بالفصل..إلخ، ج٦، ص٣٥٣)

मस्अला 5 : कुफ़्री बात का दिल में ख़याल पैदा हुवा और ज़बान से बोलना बुरा जानता है तो येह कुफ़्र नहीं बल्कि ख़ास ईमान की अ़लामत है कि दिल में ईमान न होता तो इसे बुरा क्यूं जानता।

("الفتاوی الهندية"، کتاب السير، الباب التاسع فی احکام المرتدين، ج٢، ص٢٨٣)

मस्अला 6 : मुर्तद होने की चन्द शर्तें हैं : (1) **अ़क़्ल :** ना समझ बच्चा और पागल से ऐसी बात निकली तो हुक्मे कुफ़्र नहीं (2) **होश :** अगर नशे में बका तो काफ़िर न हुवा (3) **इख़्तियार :** मजबूरी और इकराह की सूरत में हुक्मे कुफ़्र नहीं। मजबूरी के येह मा'ना हैं कि जान जाने या उ़ज़्व कटने या ज़र्बे शदीद (सख़्त मार) का सह़ीह़ अन्देशा हो। इस

www.dawateislami.net

सूरत में सिर्फ़ ज़बान से इस कलिमे के कहने की इजाज़त है बशर्त़ येह कि दिल में वोही इत़्मीनाने ईमानी हो [1] "اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَىٕنٌّۢ بِالْاِیْمَانِ"

("الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فى احكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٣_٢٧٦)

मस्अला 7 : जो शख़्स مَعَاذَاللہ मुर्तद हो गया तो मुस्तह़ब है कि ह़ाकिमे इस्लाम उस पर इस्लाम पेश करे और अगर वोह कुछ शुबा बयान करे तो इस का जवाब दे और अगर मोहलत मांगे तो तीन दिन क़ैद में रखे और हर रोज़ इस्लाम की तल्क़ीन करे। यूंहीं अगर उस ने मोहलत न मांगी मगर उम्मीद है कि इस्लाम क़बूल कर लेगा जब भी तीन दिन क़ैद में रखा जाए फिर अगर मुसलमान हो जाए फ़बिहा वरना क़त्ल कर दिया जाए बिग़ैर इस्लाम पेश किये उसे क़त्ल कर डालना मकरूह है। ("الدرالمختار"،كتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٤٦،٣٤٨)

मुर्तद को क़ैद करना और इस्लाम न क़बूल करने पर क़त्ल कर डालना बादशाहे इस्लाम का काम है और इस से मक़्सूद येह है कि ऐसा शख़्स अगर ज़िन्दा रहा और उस से तअर्रुज़ न किया गया (मुज़ाह़मत न की गई) तो मुल्क में त़रह़ त़रह़ के फ़साद पैदा होंगे और फ़ित्ने का सिलसिला रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी पज़ीर होगा जिस की वजह से अम्ने आ़म्मा में ख़लल पड़ेगा लिहाज़ा ऐसे शख़्स को ख़त्म कर देना ही मुक़्तज़ाए ह़िक्मत (दानिश मन्दी का तक़ाज़ा) था। अब चूंकि हुकूमते इस्लाम हिन्दुस्तान में बाक़ी नहीं कोई रोक थाम करने वाला बाक़ी न रहा हर शख़्स जो चाहता है बकता है और आए दिन मुसलमानों में फ़साद पैदा होता है नए नए मज़हब पैदा होते रहते हैं। एक ख़ानदान बल्कि बा'ज़ जगह एक घर में कई मज़हब हैं और बात बात पर लड़ाई झगड़े हैं इन तमाम ख़राबियों का बाइ़स येही नया मज़हब है ऐसी

(1)......***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *सिवा उस के जो मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान पर जमा हुवा हो* (پ١٤،النحل١٠٦)

www.dawateislami.net

सूरत में सब से बेहतर तरकीब वोह है जो ऐसे वक़्त के लिये कुरआनो ह़दीस में इरशाद हुई अगर मुसलमान इस पर अ़मल करें तमाम क़िस्सों से नजात पाएं, दुन्या व आख़िरत की भलाई हाथ आए। वोह येह है कि ऐसे लोगों से बिल्कुल मेल जोल छोड़ दें, सलाम कलाम तर्क कर दें, उन के पास उठना बैठना, उन के साथ खाना पीना, उन के यहां शादी बियाह करना, ग़रज़ हर क़िस्म के तअ़ल्लुक़ात उन से क़त्अ़ कर दें गोया समझें कि वोह अब रहा ही नहीं। واللّٰہ الموفق

मस्अला 8 : किसी दीने बात़िल को इख़्तियार किया मसलन यहूदी या नसरानी हो गया ऐसा शख़्स मुसलमान उस वक़्त होगा कि उस दीने बात़िल से बेज़ारी व नफ़रत ज़ाहिर करे और दीने इस्लाम क़बूल करे। और अगर ज़रूरियाते दीन में से किसी बात का इन्कार किया हो तो जब तक उस का इक़रार न करे जिस से इन्कार किया है मह़्ज़ कलिमए शहादत पढ़ने पर उस के इस्लाम का हुक्म न दिया जाएगा कलिमए शहादत का उस ने ब ज़ाहिर इन्कार न किया था मसलन नमाज़ या रोज़ा की फ़र्ज़िय्यत से इन्कार करे या शराब और सुवर की हुर्मत न माने तो उस के इस्लाम के लिये येह शर्त़ है कि जब तक ख़ास इस अम्र का इक़रार न करे उस का इस्लाम क़बूल नहीं या **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में गुस्ताख़ी करने से काफ़िर हुवा तो जब तक इस से तौबा न करे मुसलमान नहीं हो सकता। ("الدر المختار وردالمحتار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب: فی ان الکفار خمسة اصناف...إلخ، ج٦، ص٣٤٩)

मस्अला 9 : औ़रत या ना बालिग़ समझवाल बच्चा मुर्तद हो जाए तो क़त्ल न करेंगे बल्कि क़ैद करेंगे यहां तक कि तौबा करे और मुसलमान हो जाए। ("الفتاوی الهندية"، کتاب السير، الباب التاسع فی احکام المرتدين، ج٢، ص٢٥٤)

मस्अला 10 : मुर्तद अगर इर्तिदाद (इस्लाम से फिर जाने) से तौबा करे तो उस की तौबा मक़्बूल है मगर बा'ज़ मुर्तद्दीन मसलन किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करने वाला कि उस की तौबा मक़्बूल नहीं।

www.dawateislami.net

तौबा क़बूल करने से मुराद येह है कि तौबा करने के बा'द बादशाहे इस्लाम उसे क़त्ल न करेगा। ("الدرالمختار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٥٦)

मस्अला 11 : मुर्तद अगर अपने इर्तिदाद से इन्कार करे तो येह इन्कार बमन्ज़िला तौबा है अगर्चे गवाहाने आ़दिल से उस का इर्तिदाद साबित हो या'नी इस सूरत में येह क़रार दिया जाएगा कि इर्तिदाद तो किया मगर अब तौबा कर ली लिहाज़ा क़त्ल न किया जाएगा और इर्तिदाद के बाक़ी अह़काम जारी होंगे मसलन उस की औ़रत निकाह़ से निकल जाएगी, जो कुछ आ'माल किये थे सब अकारत (ज़ाएअ़) हो जाएंगे, ह़ज की इस्तिताअ़त रखता है तो अब फिर ह़ज फ़र्ज़ है कि पहला ह़ज जो कर चुका था बेकार हो गया।

("الدرالمختار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٧٦ و"البحرالرائق"، کتاب السير، باب احکام المرتدين، ج٦، ص٢١٣)

अगर इस क़ौल से इन्कार नहीं करता मगर ला या'नी (फ़ुज़ूल, जिस का कोई मक़सद न हो) तक़रीरों से इस अम्र को सह़ीह़ बताता है जैसा ज़मानए ह़ाल के मुर्तद्दीन का शैवा है तो येह न इन्कार है न तौबा मसलन क़ादयानी कि नबुव्वत का दा'वा करता है और ख़ातमुन्नबिय्यीन के ग़लत़ मा'ने बयान कर के अपनी नबुव्वत को बर क़रार रखना चाहता है या ह़ज़रते सय्यिदुना मसीह़ ईसा عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالثَّنَاء की शाने पाक में सख़्त सख़्त ह़म्ले करता है फिर ह़ीले गढ़ता है या बा'ज़ अ़माइदे वहाबिय्या (वहाबियों के पेशवा) कि हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने रफ़ीअ़ में कलिमाते दुश्नाम (नाज़ेबा कलिमात) इस्ति'माल करते और तावीले ग़ैर मक़बूल (ऐसी तावील जो ना क़ाबिले क़बूल हो) कर के अपने ऊपर से कुफ़्र उठाना चाहते हैं ऐसी बातों से कुफ़्र नहीं हट सकता कुफ़्र उठाने का जो निहायत आसान त़रीक़ा है काश ! उसे बरतते तो इन ज़ह़मतों में न पड़ते और अ़ज़ाबे आख़िरत से भी اِنْ شَآءَ اللّٰه रिहाई की सूरत निकलती। वोह सिर्फ़ तौबा है कि कुफ़्र व शिर्क सब को मिटा देती है मगर इस में वोह अपनी ज़िल्लत समझते

www.dawateislami.net

हैं ह़ालांकि येह ख़ुदा को मह़बूब, उस के मह़बूबों को पसन्द, तमाम उ़क़ला के नज़्दीक इस में इ़ज़्ज़त।

मस्अला 12 : ज़मानए इस्लाम में कुछ इ़बादात क़ज़ा हो गई और अदा करने से पहले मुर्तद हो गया फिर मुसलमान हुवा तो इन इ़बादात की क़ज़ा करे और जो अदा कर चुका था अगर्चे इर्तिदाद से बात़िल हो गई मगर उस की क़ज़ा नहीं अलबत्ता अगर साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो ह़ज दोबारा फ़र्ज़ होगा।

("الدرالمختار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٨٣۔٣٨٥)

मस्अला 13 : अगर कुफ़्रे क़त़ई (यक़ीनी) हो तो औ़रत निकाह़ से निकल जाएगी फिर इस्लाम लाने के बा'द अगर औ़रत राज़ी हो तो दोबारा उस से निकाह़ हो सकता है वरना जहां पसन्द करे निकाह़ कर सकती है उस का कोई ह़क़ नहीं कि औ़रत को दूसरे के साथ निकाह़ करने से रोक दे और अगर इस्लाम लाने के बा'द औ़रत को बदस्तूर रख लिया दोबारा निकाह़ न किया तो क़ुर्बत (या'नी हमबिस्तरी, मुजामअ़त) ज़िना होगी और बच्चे वलदुज़्ज़िना और अगर कुफ़्रे क़त़ई न हो या'नी बा'ज़ उ़-लमा काफ़िर बताते हों और बा'ज़ नहीं या'नी फ़ुक़हा के नज़्दीक काफ़िर हो और मुतकल्लिमीन (इ़ल्मे कलाम के माहिरीन) के नज़्दीक नहीं तो इस सूरत में भी तजदीदे इस्लाम व तजदीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा। ("الدرالمختار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٧٧)

मस्अला 14 : औ़रत को ख़बर मिली कि उस का शोहर मुर्तद हो गया तो इ़द्दत गुज़ार कर निकाह़ कर सकती है ख़बर देने वाले दो मर्द हों या एक मर्द और दो औ़रतें बल्कि एक आ़दिल की ख़बर काफ़ी है।

("الدرالمختاروردالمحتار"،کتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب: لوتاب المرتد...إلخ، ج٦، ص٣٨٦)

मस्अला 15 : औ़रत मुर्तद हो गई फिर इस्लाम लाई तो शोहरे अव्वल से निकाह़ करने पर मजबूर की जाएगी येह नहीं हो सकता है कि दूसरे से निकाह़ करे इसी पर फ़तवा है। ("الدرالمختار"، کتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٨٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 16 : मुर्तद का निकाह बिल इत्तिफ़ाक़ बातिल है वोह किसी औरत से निकाह नहीं कर सकता न मुस्लिमा से न काफ़िरा से न मुर्तदा से न हुर्रा (आज़ाद औरत जो लौन्डी न हो) से न कनीज़ (लौन्डी) से।

("الفتاوی الهندية"،كتاب السير، الباب التاسع فی أحكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٥)

मस्अला 17 : मुर्तद का ज़बीहा मुर्दार है अगर्चे بِسۡمِ اللّٰه कह के ज़ब्ह करे। यूंहीं कुत्ते या बाज़ या तीर से जो शिकार किया है वोह भी मुर्दार है, अगर्चे छोड़ने के वक़्त بِسۡمِ اللّٰه कह ली हो।

("الفتاوی الهندية"،كتاب السير، الباب التاسع فی أحكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٥)

मस्अला 18 : मुर्तद किसी मुआमले में गवाही नहीं दे सकता और किसी का वारिस नहीं हो सकता और ज़मानए इर्तिदाद में जो कुछ कमाया है उस में मुर्तद का कोई वारिस नहीं।

("الدرالمختار و ردالمحتار"، كتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب: جملة من لايقتل...إلخ، ج٦، ص٣٨١)

मस्अला 19 : इर्तिदाद से मिल्क जाती रहती है या'नी जो कुछ इस के अम्लाक व अम्वाल (माल व जाइदाद) थे सब उस की मिल्क से ख़ारिज हो गए मगर जब कि फिर इस्लाम लाए और कुफ्र से तौबा करे तो ब दस्तूर मालिक हो जाएगा और अगर कुफ्र ही पर मर गया या दारुल हर्ब को चला गया तो ज़मानए इस्लाम के जो कुछ अम्वाल हैं उन से अव्वलन इन दुयून (क़र्ज़ों) को अदा करेंगे जो ज़मानए इस्लाम में इस के ज़िम्मे थे उस से जो बचे वोह मुसलमान वरसा को मिलेगा और ज़मानए इर्तिदाद में जो कुछ कमाया है उस से ज़मानए इर्तिदाद के दुयून अदा करेंगे इस के बा'द जो बचे वोह फ़ए (या'नी बयतुल माल में जम्अ करवा दिया जाए) ("الهداية"، كتاب السير، باب احكام المرتدين، الجزء الثاني، ص٤٠٧ وغيرها)

मस्अला 20 : औरत को तलाक़ दी थी वोह अभी इद्दत ही में थी कि शोहर मुर्तद हो कर दारुल हर्ब को चला गया या हालते इर्तिदाद में क़त्ल किया गया तो वोह औरत वारिस होगी। ("تبيين الحقائق"، كتاب السير، باب المرتدين، ج٤، ص١٧٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 21 : मुर्तद दारुल ह़र्ब को चला गया या क़ाज़ी ने लिह़ाक़ या'नी दारुल ह़र्ब में चले जाने का हुक्म दे दिया तो उस के मुदब्बर (या'नी वोह गुलाम जिस की निस्बत मौला ने कहा कि तू मेरे मरने के बा'द आज़ाद है या ऐसे अल्फ़ाज़ कहे हों जिन से मौला के मरने के बा'द उस का आज़ाद होना साबित होता हो) और उम्मे वलद (वोह लौन्डी जिस के हां बच्चा पैदा हुवा और मौला ने इक़रार किया कि येह मेरा बच्चा है) आज़ाद हो गए और जितने दुयून मीआ़दी (वोह क़र्ज़े जिन की अदाएगी का वक़्त मुक़र्रर हो) थे उन की मीआ़द पूरी हो गई या'नी अगर्चे अभी मीआ़द पूरी होने में कुछ ज़माना बाक़ी हो मगर उसी वक़्त वोह दैन वाजिबुल अदा हो गए और ज़मानए इस्लाम में जो कुछ वसिय्यत की थी वोह सब बाति़ल है। ("فتح القدير"، كتاب السير، باب احكام المرتدين، ج٥، ص٣١٦)

मस्अला 22 : मुर्तद हिबा क़बूल कर सकता है। कनीज़ (बांदी) को उम्मे वलद कर सकता है, या'नी उस की लौन्डी को ह़म्ल था और ज़मानए इर्तिदाद में बच्चा पैदा हुवा तो उस बच्चे के नसब का दा'वा कर सकता है, कह सकता है कि येह मेरा बच्चा है, लिहाज़ा येह बच्चा उस का वारिस होगा और उस की मां उम्मे वलद हो जाएगी।

("الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فى احكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٥)

मस्अला 23 : मुर्तद दारुल ह़र्ब को चला गया फिर मुसलमान हो कर वापस आया तो अगर क़ाज़ी ने अभी तक दारुल ह़र्ब जाने का हुक्म नहीं दिया था तो तमाम अम्वाल उस को मिलेंगे और अगर क़ाज़ी हुक्म दे चुका था तो जो कुछ वरसा के पास मौजूद है वोह मिलेगा और वरसा जो कुछ ख़र्च कर चुके या बैअ़ वग़ैरा कर के इन्तिक़ाले मिल्क कर चुके (या'नी दूसरों की मिल्किय्यत में दे चुके) उस में से कुछ नहीं मिलेगा। ("الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فى احكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٥)

तम्बीह : ज़मानए ह़ाल में जो लोग बा वुजूद इद्दिआ़ए इस्लाम (इस्लाम का दा'वा करने वाले, या'नी मुसलमान होने का दा'वा करने के बा वुजूद) कलिमाते कुफ़्र बकते हैं या कुफ़्री अ़क़ाइद

www.dawateislami.net

रखते हैं उन के अक़्वाल व अफ़्आ़ल का बयान हि़स्सा अव्वल में गुज़रा । यहां चन्द दीगर कलिमाते कुफ़्र जो लोगों से सादिर होते हैं (या'नी बोलते हैं) बयान किये जाते हैं ताकि उन का भी इ़ल्म ह़ासिल हो और ऐसी बातों से तौबा की जाए और इस्लामी हु़दूद की मुह़ाफ़ज़त की जाए ।

मस्अला 24 : जिस शख़्स को अपने ईमान में शक हो या'नी कहता है कि मुझे अपने मोमिन होने का यक़ीन नहीं या कहता है मा'लूम नहीं मैं मोमिन हूं या काफ़िर वोह काफ़िर है । हां अगर उस का मत़लब येह हो कि मा'लूम नहीं मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं तो काफ़िर नहीं । जो शख़्स ईमान व कुफ़्र को एक समझे या'नी कहता है कि सब ठीक है ख़ुदा को सब पसन्द है वोह काफ़िर है । यूहीं (यूंही) जो शख़्स ईमान पर राज़ी नहीं या कुफ़्र पर राज़ी है वोह भी काफ़िर है ।

("الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فى احكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٧)

मस्अला 25 : एक शख़्स गुनाह करता है लोगों ने उसे मन्अ़ किया तो कहने लगा इस्लाम का काम इसी त़रह़ करना चाहिये या'नी जो गुनाह व मा'सिय्यत (ना फ़रमानी) को इस्लाम कहता है वोह काफ़िर है । यूहीं किसी ने दूसरे से कहा मैं मुसलमान हूं उस ने जवाब में कहा तुझ पर भी ला'नत और तेरे इस्लाम पर भी ला'नत, ऐसा कहने वाला काफ़िर है । ("الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فى احكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٧)

मस्अला 26 : अगर येह कहा ख़ुदा मुझे इस काम के लिये हुक्म देता जब भी न करता तो काफ़िर है । यूहीं एक ने दूसरे से कहा : मैं और तुम ख़ुदा के हुक्म के मुवाफ़िक़ काम करें, दूसरे ने कहा मैं ख़ुदा का हुक्म नहीं जानता या कहा यहां किसी का हुक्म नहीं चलता ।

("الفتاوى الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فى احكام المرتدين، ج٢، ص٢٥٨)

मस्अला 27 : कोई शख़्स बीमार नहीं होता या बहुत बूढ़ा है मरता नहीं उस के लिये येह कहना कि उसे अल्लाह मियां भूल गए हैं या

www.dawateislami.net

किसी ज़बान दराज़ आदमी (गुस्ताख़, बहुत ज़ियादा बकवास करने वाला) से येह कहना कि ख़ुदा तुम्हारी ज़बान का मुक़ाबला कर ही नहीं सकता मैं किस त़रह़ करूं येह कुफ़्र है। ("خلاصة الفتاوی"، كتاب الفاظ الكفر، ج٤، ص٣٨٤)

यूहीं एक ने दूसरे से कहा : अपनी औ़रत को क़ाबू में नहीं रखता, उस ने कहा : औ़रतों पर ख़ुदा को क़ुदरत है नहीं मुझ को कहां से होगी।

मस्अला 28 : ख़ुदा के लिये मकान साबित करना कुफ़्र है कि वोह मकान से पाक है। येह कहना कि ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम येह कलिमए कुफ़्र है। ("الفتاوی الخانية"، كتاب السير، باب ما يكون كفر...إلخ، ج٢، ص٤٧٠)

मस्अला 29 : किसी से कहा गुनाह न करो वरना ख़ुदा तुझे जहन्नम में डालेगा उस ने कहा मैं जहन्नम से नहीं डरता या कहा ख़ुदा के अ़ज़ाब की कुछ परवाह नहीं। या एक ने दूसरे से कहा तू ख़ुदा से नहीं डरता उस ने गुस्से में कहा नहीं, या कहा ख़ुदा क्या कर सकता है इस के सिवा क्या कर सकता है कि दोज़ख़ में डाल दे। या कहा ख़ुदा से डर उस ने कहा ख़ुदा कहां है। येह सब कुफ़्र के कलिमात हैं।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فی احكام المرتدين، ج٢، ص٢٦٠، ٢٦٢)

मस्अला 30 : किसी से कहा اِنْ شَآءَ اللّٰه तुम इस काम को करोगे उस ने कहा मैं बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰه करूंगा या एक ने दूसरे पर ज़ुल्म किया मज़्लूम ने कहा ख़ुदा ने येही मुक़द्दर किया था ज़ालिम ने कहा मैं बिग़ैर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मुक़द्दर किये करता हूं, येह कुफ़्र है।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فی احكام المرتدين، ج٢، ص٢٦١)

मस्अला 31 : किसी मिस्कीन ने अपनी मोह़ताजी को देख कर येह कहा ऐ ख़ुदा फ़ुलां भी तेरा बन्दा है उस को तूने कितनी ने'मतें दे रखी

www.dawateislami.net

हैं और मैं भी तेरा बन्दा हूं मुझे किस क़दर रन्ज व तकलीफ़ देता है आख़िर येह क्या इन्साफ़ है। ऐसा कहना कुफ़्र है।

("الفتاوی الھندیة"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج٢،ص٢٦٢)

ह़दीस में ऐसे ही के लिये फ़रमाया : "كَادَ الْفَقْرُ اَنْ يَّكُوْنَ كُفْرًا" (شعب الإيمان، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، الحديث:٦٦١٢، ج٥، ص٢٦٧) मोह़ताजी कुफ़्र के क़रीब है कि जब मोह़ताजी के सबब ऐसे ना मुलाइम कलिमात सादिर हों जो कुफ़्र हैं तो गोया ख़ुद मोह़ताजी क़रीब ब कुफ़्र है।

मस्अला 32 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की तसग़ीर करना (या'नी बिगाड़ना) कुफ़्र है। जैसे किसी का नाम अ़ब्दुल्लाह या अ़ब्दुल ख़ालिक़ या अ़ब्दुर्रह़मान हो उसे पुकारने में आख़िर में अलिफ़ वग़ैरा ऐसे हुरूफ़ मिला दें जिस से तसग़ीर समझी जाती है।

("البحرالرائق"، کتاب السیر، باب أحکام المرتدین، ج٥، ص٢٠٣)

मस्अला 33 : एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है उस का लड़का बाप को तलाश कर रहा था और रोता था किसी ने कहा चुप रह तेरा बाप **अल्लाह अल्लाह** करता है येह कहना कुफ़्र नहीं क्यूंकि उस के मा'ना येह हैं कि ख़ुदा की याद करता है। ("الفتاوی الھندیة"، کتاب السیر، الباب التاسع فی أحکام المرتدین، ج٢، ص٢٦٣)

और बा'ज़ जाहिल येह कहते हैं कि **لَااِلٰہ** पढ़ता है येह बहुत क़बीह़ (बुरा) है कि येह नफ़ी मह़ज़ है जिस का मत़लब येह हुवा कि **कोई ख़ुदा नहीं** और येह मा'ना कुफ़्र हैं।

मस्अला 34 : अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तौहीन करना, उन की जनाब में गुस्ताख़ी करना या उन को फ़वाह़िश (शर्मनाक बातों) व बे हयाई की त़रफ़ मन्सूब करना कुफ़्र है, मसलन مَعَاذَاللّٰه यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ज़िना की त़रफ़ निस्बत करना।

("الفتاوی الھندیة"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج٢، ص٢٦٣)

www.dawateislami.net

मस्अला 35 : जो शख़्स हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बिया में आख़िर नबी न जाने या हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की किसी चीज़ की तौहीन करे या ऐब लगाए, आप के मूए मुबारक (मुक़द्दस बाल) को तह्क़ीर (बे अदबी, तौहीन, ह़क़ारत) से याद करे, आप के लिबास मुबारक को गन्दा और मैला बताए, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के नाख़ुन बड़े बड़े कहे येह सब कुफ़्र है। बल्कि अगर किसी के इस कहने पर कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को कद्दू पसन्द था कोई येह कहे मुझे पसन्द नहीं तो बा'ज़ उ़-लमा के नज़दीक काफ़िर है और ह़क़ीक़त येह कि अगर इस हैसिय्यत से उसे ना पसन्द है कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को पसन्द था तो काफ़िर है। यूहीं किसी ने येह कहा कि हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم खाना तनावुल फ़रमाने के बा'द तीन बार अंगुश्तहाए मुबारक चाट लिया करते थे, इस पर किसी ने कहा : येह अदब के ख़िलाफ़ है या किसी सुन्नत की तह्क़ीर करे, मसलन दाढ़ी बढ़ाना, मूंछें कम करना, इमामा बांधना शिम्ला लटकाना, इन की इहानत (तौहीन करना) कुफ़्र है जब कि सुन्नत की तौहीन मक़्सूद हो।

("الفتاوی الھندیۃ"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲، ص۲۶۳)

मस्अला 36 : अब जो अपने को कहे मैं पयग़म्बर हूं और इस का मत़लब येह बताए कि मैं पैग़ाम पहुंचाता हूं वोह काफ़िर है या'नी येह तावील मस्मूअ़ नहीं कि उ़र्फ़ (या'नी आ़म बोल चाल) में येह लफ़्ज़ रसूल व नबी के मा'ने में है। ("الفتاوی الھندیۃ"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲، ص۲۶۳)

मस्अला 37 : ह़ज़राते शैख़ेन (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की शाने पाक में सब व शत्म (ला'न ता़'न) करना, तबर्रा कहना (या'नी इज़्हारे बेज़ारी करना) या ह़ज़रते सिद्दीक़े

www.dawateislami.net

अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की सोह़बत या इमामत व ख़िलाफ़त से इन्कार करना कुफ़्र है। ("الفتاوی الھندیۃ"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲، ص۲٦٤وغیرہ) ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا की शाने पाक में क़ज़्फ़ जैसी नापाक तोहमत लगाना यक़ीनन क़त़्अ़न कुफ़्र है।

मस्अला 38 : दुश्मन व मबग़ूज़ (ना पसन्दीदा शख़्स, जिस से बुग़्ज़ हो) को देख कर येह कहना मलकुल मौत (मौत का फ़िरिश्ता इज़्राईल عَلَیْہِ السَّلام) आ गए या कहा उसे वैसा ही दुश्मन जानता हूं जैसा मलकुल मौत को इस में अगर मलकुल मौत को बुरा कहना है तो कुफ़्र है और मौत की ना पसन्दीदगी की बिना पर है तो कुफ़्र नहीं। यूहीं जिब्रईल या मीकाईल या किसी फ़िरिश्ते को जो शख़्स ऐ़ब लगाए या तौहीन करे काफ़िर है। ("الفتاوی الھندیۃ"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲، ص۲٦٦)

मस्अला 39 : क़ुरआन की किसी आयत को ऐ़ब लगाना या उस की तौहीन करना या उस के साथ मस्ख़रापन (हंसी मज़ाक़) करना कुफ़्र है मसलन दाढ़ी मुन्डवाने से मन्अ़ करने पर अकसर दाढ़ी मूंडे कह देते हैं : كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ जिस का येह मत़लब बयान करते हैं कि कल्ला साफ़ करो। येह क़ुरआने मजीद की तह़रीफ़ व तब्दील (अस्ल लफ़्ज़ या मा'ना में जान बूझ कर तब्दीली करना) भी है और उस के साथ मज़ाक़ और दिल लगी भी और येह दोनों बातें कुफ़्र, इसी त़रह़ अकसर बातों में क़ुरआने मजीद की आयतें बे मौक़अ़ पढ़ दिया करते हैं और मक़्सूद (क़स्द व इरादा) हंसी करना होता है जैसे किसी को नमाज़े बा जमाअ़त के लिये बुलाया, वोह कहने लगा मैं जमाअ़त से नहीं बल्कि तन्हा पढूंगा, क्यूंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی

("الفتاوی الھندیۃ"، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲، ص۲٦٦)

www.dawateislami.net

मस्अला 40 : मज़ामीर (गाने बाजे का हर साज़, बाजा, बांसरी वग़ैरा) के साथ क़ुरआन पढ़ना कुफ़्र है। ग्रामोफ़ोन में क़ुरआन सुनना मन्अ़ है अगर्चे येह बाजा नहीं बल्कि रिकार्ड में जिस क़िस्म की आवाज़ भरी होती है वोही उस से निकलती है अगर बाजे की आवाज़ भरी जाए तो बाजे की आवाज़ सुनने में आएगी और नहीं तो नहीं मगर ग्रामोफ़ोन उ़मूमन लह्व व लअ़ब (ऐ़श व नशात़, खेल कूद वग़ैरा) की मजालिस में बजाया जाता है और ऐसी जगह क़ुरआने मजीद पढ़ना सख़्त ममनूअ़ है। ("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع في احكام المرتدين، ج٢، ص٢٦٧)

मस्अला 41 : किसी से नमाज़ पढ़ने को कहा उस ने जवाब दिया नमाज़ पढ़ता तो हूं मगर उस का कुछ नतीजा नहीं या कहा तुम ने नमाज़ पढ़ी क्या फ़ाइदा हुवा या कहा नमाज़ पढ़ के क्या करूं किस के लिये पढ़ूं मां बाप तो मर गए या कहा बहुत पढ़ ली अब दिल घबरा गया या कहा पढ़ना न पढ़ना दोनों बराबर है ग़रज़ इसी क़िस्म की बात करना जिस से फ़र्ज़िय्यत का इन्कार समझा जाता हो या नमाज़ की तह़क़ीर होती हो येह सब कुफ़्र है।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع في احكام المرتدين، ج٢، ص٢٦٨)

मस्अला 42 : कोई शख़्स सिर्फ़ र-मज़ान में नमाज़ पढ़ता है बा'द में नहीं पढ़ता और कहता येह है कि येही बहुत है या जितनी पढ़ी येही ज़ियादा है क्यूंकि र-मज़ान में एक नमाज़ सत्तर नमाज़ के बराबर है ऐसा कहना कुफ़्र है इस लिये कि इस से नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार मा'लूम होता है।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع في احكام المرتدين، ج٢، ص٢٦٨).

मस्अला 43 : अज़ान की आवाज़ सुन कर येह कहना क्या शोर मचा रखा है अगर येह क़ौल बर वजहे इन्कार हो कुफ़्र है।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع في احكام المرتدين، ج٢، ص٢٦٩).

www.dawateislami.net

मस्अला 44 : रोज़ए र-मज़ान नहीं रखता और कहता येह है कि रोज़ा वोह रखे जिसे खाना न मिले या कहता है जब ख़ुदा ने खाने को दिया है तो भूके क्यूं मरें या इसी क़िस्म की और बातें जिन से रोज़ा की हत्क व तह़क़ीर (बे हुरमती) हो कहना कुफ़्र है।

मस्अला 45 : इ़ल्मे दीन और उ़-लमा की तौहीन बे सबब या'नी मह़ज़ इस वजह से कि आ़लिमे इ़ल्मे दीन है कुफ़्र है। यूहीं आ़लिमे दीन की नक़्ल करना मसलन किसी को मिम्बर वग़ैरा किसी ऊंची जगह पर बिठाएं और उस से मसाइल बत़ौरे इस्तिहज़ा दर्याफ़्त करें (हंसी मज़ाक़ के त़ौर पर मसाइल पूछें) फिर उसे तक्या वग़ैरा से मारे और मज़ाक़ बनाएं येह कुफ़्र है।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فی احكام المرتدين، ج۲، ص ۲۷۰)

यूहीं शर्अ़ की तौहीन करना मसलन कहे मैं शर्अ़ वर्अ़ नहीं जानता या आ़लिमे दीन मोह़तात़ का फ़तवा पेश किया गया उस ने कहा मैं फ़तवा नहीं मानता या फ़तवा को ज़मीन पर पटक दिया।

मस्अला 46 : किसी शख़्स को शरीअ़त का हुक्म बताया कि इस मुआ़मले में येह हुक्म है उस ने कहा हम शरीअ़त पर अ़मल नहीं करेंगे हम तो रस्म की पाबन्दी करेंगे ऐसा कहना बा'ज़ मशाइख़ के नज़्दीक कुफ़्र है। ("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فی احكام المرتدين، ج۲، ص ۲۷۲)

मस्अला 47 : शराब पीते वक़्त या ज़िना करते वक़्त या जूआ खेलते वक़्त या चोरी करते वक़्त بِسْمِ اللّٰه कहना कुफ़्र है। दो शख़्स झगड़ रहे थे एक ने कहा لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه दूसरे ने कहा لَاحَوْل का क्या काम है या لَاحَوْل को मैं क्या करूं या لَاحَوْل रोटी की जगह काम न देगा। यूहीं سُبْحَانَ اللّٰه और لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के मुतअ़ल्लिक़ इसी क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहना कुफ़्र है। ("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فی احكام المرتدين،ج۲،ص۲۷۳)

मस्अला 48 : बीमारी में घबरा कर कहने लगा तुझे इख़्तियार है चाहे काफ़िर मार या मुसलमान मार। येह कुफ़्र है। यूहीं मसाइब (मुसीबतों,

परेशानियों) में मुब्तला हो कर कहने लगा तूने मेरा माल लिया और अवलाद ले ली और येह लिया वोह लिया अब क्या करेगा और क्या बाक़ी है जो तूने न किया। इस त़रह़ बकना कुफ़्र है।

("الفتاوی الهندية"، كتاب السير، الباب التاسع فی احكام المرتدين، ج٢، ص٢٧٥)

मस्अला 49 : मुसलमान को कलिमाते कुफ़्र की ता'लीम व तल्क़ीन करना कुफ़्र है अगर्चे खेल और मज़ाक़ में ऐसा करे। यूहीं किसी की औ़रत को कुफ़्र की ता'लीम की और येह कहा तू काफ़िर हो जा, ताकि शोहर से पीछा छूटे तो औ़रत कुफ़्र करे या न करे, येह कहने वाला काफ़िर हो गया। ("الفتاوى الخانية"، كتاب السير، باب ما يكون كفراً...إلخ، ج٢، ص٤٦٦)

मस्अला 50 : होली (मौसिमे बहार में मनाया जाने वाला हिन्दूओं का तेहवार) और दीवाली (हिन्दुओं का तेहवार जिस में एक बुत की पूजा और ख़ूब रोशनी करते हैं) पूजना कुफ़्र है कि येह इ़बादते ग़ैरुल्लाह है। कुफ़्फ़ार के मेलों तेहवारों में शरीक होकर उन के मेले और जुलूसे मज़हबी की शान व शौकत बढ़ाना कुफ़्र है जैसे राम-लीला और जनमाष्टमी और राम नवमी वग़ैरा के मेलों में शरीक होना। यूंही उन के तेहवारों के दिन मह़ज़ इस वजह से चीज़ें ख़रीदना कि कुफ़्फ़ार का तेहवार है येह भी कुफ़्र है जैसे दीवाली में खिलोने और मिठाइयां ख़रीदी जाती हैं कि आज ख़रीदना दीवाली मनाने के सिवा कुछ नहीं। यूहीं कोई चीज़ ख़रीद कर इस रोज़ मुश्रिकीन के पास हदिया करना जब कि मक़्सूद इस दिन की ता'ज़ीम हो तो कुफ़्र है।

("البحرالرائق"، كتاب السير، باب أحكام المرتدين، ج٥، ص٢٠٨)

मुसलमानों पर अपने दीन व मज़हब का तह़फ़्फ़ुज़ लाज़िम है, दीनी ह़मिय्यत (दीनी जोश व जज़्बा) और दीनी ग़ैरत से काम

www.dawateislami.net

लेना चाहिये, काफ़िरों के कुफ़्री कामों से अलग रहें, मगर अफ़सोस कि मुश्रिकीन तो मुसलमानों से इजतिनाब करें और मुसलमान हैं कि उन से इख़्तिलात़ (मेल-जोल) रखते हैं, इस में सरासर मुसलमानों का नुक़्सान है। इस्लाम ख़ुदा की बड़ी ने'मत है इस की क़द्र करो और जिस बात में ईमान का नुक़्सान है, उस से दूर भागो ! वरना शैत़ान गुमराह कर देगा और येह दौलत तुम्हारे हाथ से जाती रहेगी फिर कफ़े अफ़सोस मलने (या'नी अफ़सोस करने) के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तू हमें सिरात़े मुस्तक़ीम पर क़ाइम रख और अपनी नाराज़ी के कामों से बचा और जिस बात में तू राज़ी है उस की तौफ़ीक़ दे। तू हर दुश्वारी को दूर करने वाला है और हर सख़्ती को आसान करने वाला।

وصلی اللّٰہ تعالٰی علی خیر خلقہ محمد و آلہ واصحابہ اجمعین والحمد للّٰہ رب العالمین

दय्यूस की ता'रीफ़

*जो शख़्स अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए (वोह "**दय्यूस**" है) (دُرِّمُختار، ج٦،ص١١٣) बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों, बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना मह़रम रिश्तेदारों, ग़ैर मह़रम मुलाज़िमों, चोकिदारों और ड्राईवरों से बे तकल्लुफ़ी और बेपर्दगी से मन्अ़ न करने वाले **दय्यूस** जन्नत से मह़रूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं।*

www.dawateislami.net

नजासतों का बयान (1)

हदीस 1 : सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी कि एक औरत ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हम में जब किसी के कपड़े को हैज़ का ख़ून लग जाए तो क्या करे ? फ़रमाया : "जब तुम में किसी का कपड़ा हैज़ के ख़ून से आलूदा हो जाए तो उसे खुरचे, फिर पानी से धोए तब उस में नमाज़ पढ़े ।" ("صحيح البخاري"، كتاب الحيض، باب غسل دم المحيض، الحديث:٣٠٧، ج١، ص١٢٥)

हदीस 2 : सहीहैन में है उम्मुल मोअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कपड़े से मनी को मैं धोती फिर हुज़ूर नमाज़ को तशरीफ़ ले जाते और धोने का निशान उस में होता । ("صحيح البخاري"، كتاب الوضوء، باب غسل المني..إلخ، الحديث:٢٣٠، ج١، ص٩٩)

हदीस 3 : सहीह मुस्लिम में है फ़रमाती हैं कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कपड़े से मनी को मल डालती, फिर हुज़ूर उस में नमाज़ पढ़ते । ("صحيح مسلم"، كتاب الطهارة، باب حكم المني، الحديث:٢٨٨، ص١٦٦)

हदीस 4 : सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "चमड़ा जब पका लिया जाएं पाक हो जाएगा ।"

("صحيح مسلم"، كتاب الحيض، باب طهارة جلود الميتة بالدباغ، الحديث:٣٦٦، ص١٩٤)

हदीस 5 : इमाम मालिक उम्मुल मोअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि मुर्दार की खालें जब पकाली जाएं तो उन्हें काम में लाया जाए ।

(الموطأ للإمام مالك، كتاب الصيد، باب ماجاء في جلود الميتة، الحديث:١١٠٧، ج٢، ص٥٤)

---

(1) .....बहारे शरीअत, हिस्सा 2, जि. 1 स. 388

www.dawateislami.net

ह़दीस 6 : इमाम अह़मद व अबू दावूद व नसाई ने रिवायत की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरिन्दों की खाल से मन्अ़ फ़रमाया।

("سنن أبي داود"، كتاب اللباس، باب في جلود النمور والسباع، الحديث:٤١٣٢، ج٤، ص٩٣)

ह़दीस 7 : दूसरी रिवायत में है उन के पहनने और उन पर बैठने से मन्अ़ फ़रमाया। ("سنن أبي داود"، كتاب اللباس، باب في جلود النمور والسباع، الحديث:٤١٣٢، ج٤، ص٩٣)

नजासतों के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम

नजासत दो क़िस्म है, एक वोह जिस का हुक्म सख़्त है उस को ग़लीज़ा कहते हैं, दूसरी वोह जिस का हुक्म हल्का है उस को ख़फ़ीफ़ा कहते हैं।

मस्अला 1 : नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन में एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है, बे पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं और क़स्दन पढ़ी तो गुनाह भी हुवा और अगर ब निय्यते इस्तिख़फ़ाफ़ है (या'नी हल्का जाना) तो कुफ़्र हुवा और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक करना वाजिब है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो मक्रूहे तह़रीमी हुई या'नी ऐसी नमाज़ का इआ़दा वाजिब है और क़स्दन पढ़ी तो गुनहगार भी हुवा और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है कि बे पाक किये नमाज़ हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई और इस का इआ़दा बेहतर है।

मस्अला 2 : अगर नजासत गाढ़ी है जैसे पाख़ाना, लीद, गोबर तो दिरहम के बराबर, या कम, या ज़ियादा के मा'ना येह हैं कि वज़्न में उस के बराबर या कम या ज़ियादा हो और दिरहम का वज़्न शरीअ़त

www.dawateislami.net

में इस जगह साढ़े चार माशे और ज़कात में तीन माशा $1\frac{1}{5}$ रती है और अगर पतली हो, जैसे आदमी का पेशाब और शराब तो दिरहम से मुराद उस की लंबाई (लम्बाई) चौड़ाई है और शरीअ़त ने उस की मिक़्दार हथेली की गेहराई के बराबर बताई या'नी हथेली ख़ूब फैला कर हमवार रखें और उस पर आहिस्ता से इतना पानी डालें कि उस से ज़ियादा पानी न रुक सके, अब पानी का जितना फैलाव है उतना बड़ा दिरहम समझा जाए और उस की मिक़्दार तक़रीबन यहां के रूपिये के बराबर है।

मस्अला 3 : नजिस तेल कपड़े पर गिरा और उस वक़्त दिरहम के बराबर न था, फिर फैल कर दिरहम के बराबर हो गया तो इस में उ़-लमा को बहुत इख़्तिलाफ़ है और राजेह़ येह है कि अब पाक करना वाजिब हो गया। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧،وغيره)

मस्अला 4 : नजासते ख़फ़ीफ़ा का येह हुक्म है कि कपड़े के हि़स्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है, अगर उस की चौथाई से कम है [मसलन दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम, आस्तीन में उस की चौथाई से कम। यूहीं हाथ में हाथ की चोथाई से कम है] तो मुआ़फ़ है कि इस से नमाज़ हो जाएगी और अगर पूरी चौथाई में हो तो बे धोए नमाज़ न होगी। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦

و الدر المختار وردالمحتار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، مبحث في بول الفأرة..إلخ، ج١، ص٥٧٨)

मस्अला 5 : नजासते ख़फ़ीफ़ा और ग़लीज़ा के जो अलग अलग अह़काम बताए गए, येह उसी वक़्त हैं कि बदन या कपड़े में लगे और अगर किसी पतली चीज़ जैसे पानी या सिरका में गिरे तो चाहे ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा, कुल नापाक हो जाएगी अगर्चे एक क़त़रा गिरे जब तक वोह पतली चीज़ ह़द्दे कसरत पर या'नी दह दर दह न हो।

(الدرالمختاروردالمحتار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، مبحث في بول الفأرة..إلخ، ج١، ص٥٧٩،وغيره)

www.dawateislami.net

मस्अला 6 : इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि उस से गुस्ल या वुज़ू वाजिब हो नजासते ग़लीज़ा है, जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता ख़ून, पीप, भर मुंह क़ै, हैज़ व निफ़ास व इस्तिह़ाज़ा का ख़ून, मनी, मज़ी, वदी। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

मस्अला 7 : शहीदे फ़िक़्ही(1) का ख़ून जब तक उस के बदन से जुदा न हो पाक है। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

मस्अला 8 : दुखती आंख से जो पानी निकले नजासते ग़लीज़ा है। यूहीं नाफ़ या पिस्तान से दर्द के साथ पानी निकले नजासते ग़लीज़ा है।

(الفتاوى الرضوية، ج١، ص٢٦٩، ٢٧٠)

मस्अला 9 : बल्ग़मी रतूबत नाक या मूंह (मुंह) से निकले नजिस नहीं अगर्चे पेट से चढ़े अगर्चे बीमारी के सबब हो।

(الفتاوى الرضوية، ج١، ص٢٦٣)

मस्अला 10 : दूध पीते लड़के और लड़की का पेशाब नजासते ग़लीज़ा है। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

येह जो अकसर अ़वाम में मश्हूर है कि दूध पीते बच्चों का पेशाब पाक है मह़ज़ ग़लत़ है।

मस्अला 11 : शीर ख़्वार बच्चे ने दूध डाल दिया अगर भर मुंह है नजासते ग़लीज़ा है। (ردالمحتار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٦١)

मस्अला 12 : ख़ुश्की के हर जानवर का बेहता ख़ून, मुर्दार का गोश्त और चरबी [या'नी वोह जानवर जिस में बेहता हुवा ख़ून होता है अगर बिग़ैर ज़ब्हे शरई के मर जाए मुर्दार है अगर्चे ज़ब्ह किया गया हो जैसे मजूसी या बुत परस्त या मुर्तद का ज़बीह़ा अगर्चे उस ने ह़लाल जानवर

---

(1).....या'नी वोह जिसे गुस्ल नहीं दिया जाता उस का बयान किताबुल जनाइज़ बाबुश्शहीद में आएगा। 12 मिन्हु (सदरुश्शरीआ़)
शहीद के बारे में तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त, किताबुल जनाइज़, शहीद का बयान, हिस्सा. 4, जि.1, स.857 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। (अल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

मसलन बकरी वग़ैरा को ज़ब्ह़ किया हो, उस का गोश्त पोस्त सब नापाक हो गया और अगर ह़राम जानवर ज़ब्ह़े शरई से ज़ब्ह़ कर लिया गया तो उस का गोश्त पाक हो गया अगर्चे खाना ह़राम है सिवाए ख़िन्ज़ीर के कि वोह नजिसुल ऐन है किसी त़रह़ पाक नहीं हो सकता] ह़राम चोपाए जैसे कुत्ता, शेर, लोमड़ी, बिल्ली, चूहा, गधा, ख़च्चर, हाथी, सुवर का पाख़ाना, पेशाब और घोड़े की लीद और हर ह़लाल चोपाये का पाख़ाना जैसे गाय भेंस का गोबर, बकरी-ऊंट की मेंगनी और जो परन्द कि ऊंचा न उड़े उस की बीट, जैसे मुर्ग़ी और बत़ छोटी हो ख़्वाह बड़ी और हर क़िस्म की शराब और नशा लाने वाली ताड़ी और सीन्धी और सांप का पाख़ाना पेशाब और उस जंगली सांप और मेन्डक का गोश्त जिन में बेहता ख़ून होता है अगर्चे ज़ब्ह़ किये गए हों। यूहीं उन की खाल अगर्चे पका ली गई हो और सुवर का गोश्त और हड्डी और बाल अगर्चे ज़ब्ह़ किया गया हो येह सब नजासते ग़लीज़ा है।

मस्अला 13 : छिपकली या गिरगिट का ख़ून नजासते ग़लीज़ा है।

मस्अला 14 : अंगूर का शीरा कपड़े पर पड़ा तो अगर्चे कई दिन गुज़र जाएं कपड़ा पाक है।

मस्अला 15 : हाथी के सूंड की रुत़ूबत और शेर, कुत्ते, चीते और दूसरे दरिन्दे चोपायों का लुआ़ब नजासते ग़लीज़ा है।

(الفتاوى القاضى خان، كتاب الطهارة، فصل فى النجاسة، ج١، ص١١، وغيره)

मस्अला 16 : जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है [जैसे गाय, बैल, भेंस, बकरी, ऊंट वग़ैरहा] इन का पेशाब नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परन्द का गोश्त ह़राम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं, [जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़, बहरी] इस की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٨ و نور الإيضاح و مراقي الفلاح، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ص٣٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 17 : चमकादड़ की बीट और पेशाब दोनों पाक हैं।

(الدرالمختار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٧٤)

मस्अला 18 : जो परिन्द ह़लाल ऊंचे उड़ते हैं जैसे कबूतर, मैना, मुर्ग़ाबी, क़ाज़, इन की बीट पाक है। (الدرالمختار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٧٧)

मस्अला 19 : हर चोपाए की जुगाली का वोही हुक्म है जो उस के पाख़ाने का। (البحر الرائق، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٣٩٩،وغيره)

मस्अला 20 : हर जानवर के पित्ते का वोही हुक्म है जो उस के पेशाब का, ह़राम जानवरों का पित्ता नजासते ग़लीज़ा और ह़लाल का नजासते ख़फ़ीफ़ा है। (الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، فصل الاستنجاء، ج١، ص٦٢٠)

मस्अला 21 : नजासते ग़लीज़ा ख़फ़ीफ़ा में मिल जाए तो कुल ग़लीज़ा है। (الدرالمختار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، مبحث في بول الفأرة..إلخ، ج١، ص٥٧٧)

मस्अला 22 : मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और ख़च्चर और गधे का लुआ़ब और पसीना पाक है। (الدرالمختاروردالمحتار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، مبحث في بول الفأرة..إلخ، ج١، ص٥٧٩،وغيره)

मस्अला 23 : पेशाब की निहायत बारीक छींटें सूई की नोक बराबर की बदन या कपड़े पर पड़ जाएं तो कपड़ा और बदन पाक रहेगा।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

मस्अला 24 : जिस कपड़े पर पेशाब की ऐसी ही बारीक छींटें पड़ गई, अगर वोह कपड़ा पानी में पड़ गया तो पानी नापाक न होगा।

मस्अला 25 : जो ख़ून ज़ख़्म से बहा न हो पाक है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि.1 स. 280)

www.dawateislami.net

मस्अला 26 : गोश्त, तिल्ली, कलेजी में जो ख़ून बाक़ी रह गया पाक है और अगर येह चीज़ें बहते ख़ून में सन जाएं तो नापाक हैं बिग़ैर धोए पाक न होंगी ।

("الفتاوی الهندية"، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

मस्अला 27 : जो बच्चा मुर्दा पैदा हुवा उस को गोद में ले कर नमाज़ पढ़ी, अगर्चे उस को ग़ुस्ल दे लिया हो नमाज़ न होगी और अगर ज़िन्दा पैदा हो कर मर गया और बे नहलाए गोद में ले कर नमाज़ पढ़ी जब भी न होगी, हां अगर उस को ग़ुस्ल दे कर गोद में लिया था तो हो जाएगी मगर ख़िलाफ़े मुस्तह़ब है । येह अह़काम उस वक़्त हैं कि मुसलमान का बच्चा हो और काफ़िर का मुर्दा बच्चा है, तो किसी ह़ाल में नमाज़ न होगी ग़ुस्ल दिया हो या नहीं ।

(الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الطهارة، فصل في البئر، ج١، ص٤٠٨)

मस्अला 28 : अगर नमाज़ पढ़ी और जेब वग़ैरा में शीशी है और उस में पेशाब या ख़ून या शराब है तो नमाज़ न होगी और जेब में अन्डा है और उस की ज़र्दी ख़ून हो चुकी है तो नमाज़ हो जाएगी ।

(غنية المتملي، فصل في الآسار، ص١٩٧)

मस्अला 29 : रूई का कपड़ा उधेड़ा गया और उस के अन्दर चूहा सूखा हुवा मिला, तो अगर उस में सूराख़ है तो तीन दिन तीन रातों की नमाज़ों का इआ़दा कर ले और सूराख़ न हो तो जितनी नमाज़ें उस से पढ़ी हैं सब का इआ़दा करे ।

(الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الطهارة، فصل في البئر، ج١، ص٤٢١)

मस्अला 30 : किसी कपड़े या बदन पर चन्द जगह नजासते ग़लीज़ा लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं मगर मज्मूआ़ दिरहम के बराबर है, तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद, नजासते ख़फ़ीफ़ा में भी मज्मूआ़ ही पर हुक्म दिया जाएगा ।

(الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الطهارة، مطلب: إذا صرح...إلخ، ج١، ص٥٨٢)

www.dawateislami.net

मस्अला 31 : ह़राम जानवरों का दूध नजिस है, अलबत्ता घोड़ी का दूध पाक है मगर खाना जाइज़ नहीं।

("الفتاوى الهندية"، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

मस्अला 32 : चूहे की मेंगनी गेहूं में मिल कर पिस गई या तेल में पड़ गई तो आटा और तेल पाक है, हां अगर मज़े में फ़र्क़ आ जाए तो नजिस है और अगर रोटी के अन्दर मिली तो उस के आस पास से थोड़ी सी अलग कर दें बाक़ी में कुछ ह़रज नहीं।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦،٤٨)

मस्अला 33 : रेशम के कीड़े की बीट और उस का पानी पाक है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٦)

मस्अला 34 : नापाक कपड़े में पाक कपड़ा या पाक में नापाक कपड़ा लपेटा और उस नापाक कपड़े से येह पाक कपड़ा नम हो गया तो नापाक न होगा बशर्त़ येह कि नजासत का रंग या बू इस पाक कपड़े में ज़ाहिर न हो, वरना नम हो जाने से भी नापाक हो जाएगा, हां अगर भीग जाए तो नापाक हो जाएगा और येह इसी सूरत में है कि वोह नापाक कपड़ा पानी से तर हुवा हो और अगर पेशाब या शराब की तरी उस में है तो वोह पाक कपड़ा नम हो जाने से भी नजिस हो जाएगा और अगर नापाक कपड़ा सूखा था और पाक तर था और इस पाक की तरी से वोह नापाक तर हो गया और उस नापाक को इतनी तरी पहुंची कि उस से छूट कर इस पाक को लगी तो येह नापाक हो गया वरना नहीं। (الدرالمختارو ردالمحتار، كتاب الطهارة،مطلب في الفرق بين الاستبراء..إلخ، ج١، ص٦١٧)

मस्अला 35 : भीगे हुए पाऊं नजिस ज़मीन या बिछोने पर रखे तो नापाक न होंगे। अगर्चे पाऊं की तरी का उस पर धब्बा मह़सूस हो, हां अगर उस ज़मीन या बिछोने को इतनी तरी पहुंची कि उस की तरी पाऊं को लगी तो पाऊं नजिस हो जाएंगे।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 36 : भीगी हुई नापाक ज़मीन या नजिस बिछोने पर सूखे हुए पाऊं रखे और पाऊं में तरी आ गई तो नजिस हो गए और सील है तो नहीं । (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 37 : जिस जगह को गोबर से लीसा और वोह सूख गई भीगा कपड़ा उस पर रखने से नजिस न होगा, जब तक कपड़े की तरी उसे इतनी न पहुंचे कि उस से छूट कर कपड़े को लगे ।

(الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 38 : नजिस कपड़ा पहन कर या नजिस बिछोने पर सोया और पसीना आया, अगर पसीने से वोह नापाक जगह भीग गई फिर उस से बदन तर हो गया तो नापाक हो गया वरना नहीं ।

(الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 39 : नापाक चीज़ पर हवा हो कर गुज़री और बदन या कपड़े को लगी तो नापाक न होगा ।

(الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 40 : मियानी तर थी और हवा निकली तो कपड़ा नजिस न होगा । (الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 41 : नापाक चीज़ का धुवां कपड़े या बदन को लगे तो नापाक नहीं । यूहीं नापाक चीज़ के जलाने से जो बुख़ारात उठें उन से भी नजिस न होगा अगर्चे उन से पूरा कपड़ा भीग जाए, हां अगर नजासत का असर उस में ज़ाहिर हो तो नजिस हो जाएगा ।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 42 : उपले का धुवां रोटी में लगा तो रोटी नापाक न हुई।

मस्अला 43 : कोई नजिस चीज़ दह दर दह पानी में फैंकी और उस फैंकने की वजह से पानी की छींटें कपड़े पर पड़ीं तो कपड़ा नजिस न होगा, हां अगर मा'लूम हो कि येह छींटें उस नजिस शै कि हैं तो इस सूरत में नजिस हो जाएगा।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 44 : पाख़ाना पर से मख्खियां उड़ कर कपड़े पर बैठीं कपड़ा नजिस न होगा। (المحيط البرهاني، كتاب الطهارات، الفصل السابع في النجاسات وأحكامها، ج١، ص٢١٦
و الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الثاني، ج١، ص٤٧)

मस्अला 45 : रास्ते की कीचड़ पाक है जब तक उस का नजिस होना मा'लूम न हो, तो अगर पाऊं या कपड़े में लगी और बे धोए नमाज़ पढ़ ली हो गई मगर धो लेना बेहतर है।

(الدر المختار و رد المحتار، كتاب الطهارة، مطلب في العفو عن طين الشارع، ج١، ص٥٨٣)

मस्अला 46 : सड़क पर पानी छिड़का जा रहा था, ज़मीन से छींटें उड़ कर कपड़े पर पड़े, कपड़ा नजिस न हुवा मगर धो लेना बेहतर है।

मस्अला 47 : आदमी की खाल अगर्चे नाखुन बराबर थोड़े पानी [या'नी दह दर दह से कम] में पड़ जाए, वोह पानी नापाक हो गया और खुद नाखुन गिर जाए तो नापाक नहीं। (منية المصلي، بيان النجاسة، ص١٠٨)

मस्अला 48 : बा'दे पाख़ाना व पेशाब के ढेलों से इस्तिन्जा कर लिया, फिर उस जगह से पसीना निकल कर कपड़े या बदन में लगा तो बदन और कपड़े नापाक न होंगे।

(الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة،الباب السابع في النجاسة وأحكامها،الفصل الثالث،ج١،ص٤٨)

www.dawateislami.net

मस्अला 49 : पाक मिट्टी में नापाक पानी मिलाया तो नजिस हो गई।

(الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها،الفصل الثانى،ج١،ص٤٧)

मस्अला 50 : मिट्टी में नापाक भुस मिलाया, अगर थोड़ा हो तो मुत़्लक़न पाक है और जो ज़ियादा हो तो जब तक ख़ुश्क न हो, नापाक है। (الفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها،الفصل الثانى،ج١،ص٤٧)

मस्अला 51 : कुत्ता बदन या कपड़े से छू जाए, तो अगर्चे उस का जिस्म तर हो बदन और कपड़ा पाक है, हां अगर उस के बदन पर नजासत लगी हो तो और बात है या उस का लुआ़ब लगे तो नापाक कर देगा।

(الفتاوى الرضوية، ج٤، ص٤٠١ والفتاوى الهندية،كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها،ج١،ص٤٨)

मस्अला 52 : कुत्ते वग़ैरा किसी ऐसे जानवर ने जिस का लुआ़ब नापाक है आटे में मुंह डाला, तो अगर गुन्धा हुवा था तो जहां उस का मुंह पड़ा, उस को अ़लाह़िदा कर दे बाक़ी पाक है और सूखा था तो जितना तर हो गया वोह फैंक दे।

मस्अला 53 : आबे मुस्ता'मल(1) पाक है, नोशादिर पाक है।

(نور الإيضاح، كتاب الطهارة، ص٣ وردالمحتار،كتاب الطهارة، باب الأنجاس،مطلب في العرقيّ الذى يستقطر،ج١، ص٥٨٤)

मस्अला 54 : सिवाए सुवर के तमाम जानवरों की वोह हड्डी जिस पर मुर्दार की चिकनाई न लगी हो और बाल और दांत पाक हैं।

(الدرالمختارو ردالمحتار، كتاب الطهارة، باب المياه، ج١، ص٣٩٨ والفتاوى الرضوية، ج٤، ص٤٧١)

---

(1)..... अगर बे वुज़ू शख़्स का हाथ या उंगली या पोरा या नाख़ुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुज़ू में धोया जाता हो ब क़स्द या बिला क़स्द दह दर दह से कम पानी में बे धोए हुए पड़ जाए तो वोह पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के लाइक़ न रहा, ऐसे पानी को आबे मुस्ता'मल कहते हैं।

www.dawateislami.net

मस्अला 55 : औ़रत के पेशाब के मक़ाम से जो रुत़ूबत निकले पाक है। कपड़े या बदन में लगे तो धोना कुछ ज़रूर नहीं हां बेहतर है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٦٦)

मस्अला 56 : जो गोश्त सड़ गया, बदबू ले आया उस का खाना ह़राम है अगर्चे नजिस नहीं

(الدر المختارو ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الأنجاس، مطلب في الفرق بين الاستبراء..إلخ، ج١، ص٦٢٠)

नजिस चीज़ों के पाक करने का त़रीक़ा

जो चीज़ें ऐसी हैं कि वोह ख़ुद नजिस हैं [जिन को नापाकी और नजासत कहते हैं] जैसे शराब या ग़लीज़, ऐसी चीज़ें जब तक अपनी अस्ल को छोड़ कर कुछ और न हो जाएं पाक नहीं हो सकतीं, शराब जब तक शराब है नजिस ही रहेगी और सिर्का हो जाए तो अब पाक है।

मस्अला 1 : जिस बरतन में शराब थी और सिर्का हो गई वोह बरतन भी अन्दर से इतना पाक हो गया जहां तक उस वक़्त सिर्का है, अगर ऊपर शराब की छींटें पड़ी थीं, तो वोह शराब के सिर्का होने से पाक न होगी। यूहीं अगर शराब मसलन मुंह तक भरी थी, फिर कुछ गिर गई कि बरतन थोड़ा ख़ाली हो गया उस के बा'द सिर्का हुई तो येह ऊपर का ह़िस्सा जो पहले नापाक हो चुका था पाक न होगा। अगर सिर्का उस से उंडेला जाएगा तो वोह सिर्का भी नापाक हो जाएगा, हां अगर पल्ली (या'नी **टेढ़ा चमचा**, तेल या घी निकालने का आला) वग़ैरा से निकाल लिया जाए तो पाक है और प्याज़, लहसन शराब में पड़ गए थे सिर्का होने के बा'द पाक हो गए।

मस्अला 2 : शराब में चूहा गिर कर फूल फट गया तो सिर्का होने के बा'द भी पाक न होगा और अगर फूला फटा नहीं था तो अगर सिर्का

www.dawateislami.net

होने से पहले निकाल कर फैंक दिया उस के बा'द सिर्का हुई तो पाक है और अगर सिर्का होने के बा'द निकाल कर फैंका तो सिर्का भी नापाक है।

मस्अला 3 : शराब में पेशाब का क़त्रा गिर गया या कुत्ते ने मुंह डाल दिया या नापाक सिर्का मिला दिया तो सिर्का होने के बा'द भी ह़राम व नजिस है। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع في النجاسۃ و أحکامھا، الفصل الأول،ج۱،ص٤٥)

मस्अला 4 : शराब को ख़रीदना या मंगाना या उठाना या रखना ह़राम है अगर्चे सिर्का करने की निय्यत से हो।

मस्अला 5 : नजिस जानवर नमक की कान में गिर कर नमक हो गया तो वोह नमक पाक व ह़लाल है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع في النجاسۃ و أحکامھا، الفصل الأول،ج۱،ص٤٥)

मस्अला 6 : उपले की राख पाक है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع في النجاسۃ و أحکامھا، الفصل الأول، ج ۱، ص ۴۴)

और अगर राख होने से क़ब्ल बुझ गया तो नापाक।

मस्अला 7 : जो चीज़ें बि ज़ातिही नजिस नहीं बल्कि किसी नजासत के लगने से नापाक हुईं, उन के पाक करने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े हैं पानी और हर रक़ीक़ बेहने वाली चीज़ से [जिस से नजासत दूर हो जाए] धो कर नजिस चीज़ को पाक कर सकते हैं, मसलन सिर्का और गुलाब कि उन से नजासत को दूर कर सकते हैं तो बदन या कपड़ा उन से धो कर पाक कर सकते हैं।

फ़ाइदह : बिग़ैर ज़रूरत गुलाब और सिर्का वग़ैरा से पाक करना नाजाइज़ है कि फ़ुज़ूल ख़र्ची है।

मस्अला 8 : मुस्ता'मल पानी और चाए से धोएं पाक हो जाएगा।

मस्अला 9 : थूक से अगर नजासत दूर हो जाए तो पाक हो जाएगा, जैसे बच्चे ने दूध पी कर पिस्तान पर क़ै की, फिर कई बार दूध

www.dawateislami.net

पिया यहां तक कि उस का असर जाता रहा पाक हो गई (الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٥) और शराबी के मुंह का मस्अला ऊपर गुज़रा।

मस्अला 10 : दूध और शोरबा और तेल से धोने से पाक न होगा कि इन से नजासत दूर न होगी। (تبيين الحقائق، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص١٩٤)

मस्अला 11 : नजासत अगर दलदार हो [जैसे पाख़ाना, गोबर, ख़ून वग़ैरा] तो धोने में गिनती की कोई शर्त़ नहीं बल्कि उस को दूर करना ज़रूरी है, अगर एक बार धोने से दूर हो जाए तो एक ही मरतबा धोने से पाक हो जाएगा और अगर चार पांच मरतबा धोने से दूर हो तो चार पांच मरतबा धोना पड़ेगा। (الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤١) हां अगर तीन मरतबा से कम में नजासत दूर हो जाए तो तीन बार पूरा कर लेना मुस्तह़ब है।

मस्अला 12 : अगर नजासत दूर हो गई मगर उस का कुछ असर रंग या बू बाक़ी है तो उसे भी ज़ाइल करना लाज़िम है, हां अगर उस का असर बदिक़्क़त जाए तो असर दूर करने की ज़रूरत नहीं तीन मरतबा धो लिया पाक हो गया, साबून या खटाई या गर्म पानी से धोने की ह़ाजत नहीं। (الفتاوی الهندیة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٢)

मस्अला 13 : कपड़े या हाथ में नजिस रंग लगा, या नापाक मेहंदी लगाई तो इतनी मरतबा धोएं कि साफ़ पानी गिरने लगे, पाक हो जाएगा अगर्चे कपड़े या हाथ पर रंग बाक़ी हो।

(فتح القدير، كتاب الطهارات، باب الأنجاس و تطهيرها، ج١، ص١٨٤)

मस्अला 14 : ज़ा'फ़रान या रंग, कपड़ा रंगने के लिये घोला था उस में किसी बच्चे ने पेशाब कर दिया या और कोई नजासत पड़ गई उस से अगर कपड़ा रंग लिया तो तीन बार धो डालें पाक हो जाएगा।

www.dawateislami.net

मस्अला 15 : गूदना कि सूई चुभो कर उस जगह सुरमा भर देते हैं, तो अगर ख़ून इतना निकला कि बेहने के क़ाबिल हो तो ज़ाहिर है कि वोह ख़ून नापाक है और सुरमा कि उस पर डाला गया वोह भी नापाक हो गया, फिर उस जगह को धो डालें पाक हो जाएगी अगर्चे नापाक सुरमे का रंग भी बाक़ी रहे। यूहीं ज़ख़्म में राख भर दी, फिर धो लिया पाक हो गया अगर्चे रंग बाक़ी हो।

मस्अला 16 : कपड़े या बदन में नापाक तेल लगा था, तीन मरतबा धो लेने से पाक हो जाएगा।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الأنجاس، مطلب في حكم الصبغ..إلخ، ج١، ص٥٩١)

अगर्चे तेल की चिकनाई मौजूद हो, इस तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं कि साबून या गर्म पानी से धोए लेकिन अगर मुर्दार की चरबी लगी थी, तो जब तक उस की चिकनाई न जाए पाक न होगा।

मस्अला 17 : अगर नजासत रक़ीक़ हो तो तीन मरतबा धोने और तीनों मरतबा ब कुव्वत निचोड़ने से पाक होगा और कुव्वत के साथ निचोड़ने के येह मा'ना हैं कि वोह शख़्स अपनी ताक़त भर इस तरह निचोड़े कि अगर फिर निचोड़े तो उस से कोई क़तरा न टपके, अगर कपड़े का ख़याल कर के अच्छी तरह नहीं निचोड़ा तो पाक न होगा।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٢)

मस्अला 18 : अगर धोने वाले ने अच्छी तरह निचोड़ लिया मगर अभी ऐसा है कि अगर कोई दूसरा शख़्स जो ताक़त में इस से ज़ियादा है निचोड़े तो दो एक बूंद टपक सकती है, तो इस के हक़ में पाक और दूसरे के हक़ में नापाक है। इस दूसरे की ताक़त का ए'तेबार नहीं, हां अगर येह धोता और इसी क़दर निचोड़ता तो पाक न होता।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٩٤)

www.dawateislami.net

मस्अला 19 : पहली और दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द हाथ पाक कर लेना बेहतर है और तीसरी बार निचोड़ने से कपड़ा भी पाक हो गया और हाथ भी और जो कपड़े में इतनी तरी रह गई हो कि निचोड़ने से एक आध बूंद टपकेगी तो कपड़ा और हाथ दोनों नापाक हैं । (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٢)

मस्अला 20 : पहली या दूसरी बार हाथ पाक नहीं किया और इस की तरी से कपड़े का पाक हि़स्सा भीग गया तो येह भी नापाक हो गया, फिर अगर पहली बार के निचोड़ने के बा'द भीगा है तो इसे दो मरतबा धोना चाहिये और दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द हाथ की तरी से भीगा है तो एक मरतबा धोया जाए । यूहीं अगर इस कपड़े से जो एक मरतबा धोकर निचोड़ लिया गया है, कोई पाक कपड़ा भीग जाए तो येह दो बार धोया जाए और अगर दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द इस से वोह कपड़ा भीगा तो एक बार धोने से पाक हो जाएगा ।

मस्अला 21 : कपड़े को तीन मरतबा धो कर हर मरतबा ख़ूब निचोड़ लिया है कि अब निचोड़ने से न टपकेगा, फिर इस को लटका दिया और इस से पानी टपका तो येह पानी पाक है और अगर ख़ूब नहीं निचोड़ा था तो येह पानी नापाक है ।

मस्अला 22 : दुध पीते लड़के और लड़की का एक ही हुक्म है कि इन का पेशाब कपड़े या बदन में लगा है, तो तीन बार धोना और निचोड़ना पड़ेगा ।

मस्अला 23 : जो चीज़ निचोड़ने के क़ाबिल नहीं है [जैसे चटाई, बरतन, जूता वग़ैरा] इस को धो कर छोड़ दें कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए, यूहीं दो मरतबा और धोएं तीसरी मरतबा जब पानी टपकना बन्द हो गया वोह चीज़ पाक हो गई इसे हर मरतबा के बा'द सूखाना ज़रूरी नहीं । यूहीं जो कपड़ा अपनी नाज़ुकी के सबब निचोड़ने के क़ाबिल नहीं इसे भी यूहीं पाक किया जाए ।

(البحر الرائق، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٤١٣)

www.dawateislami.net

मस्अला 24 : अगर ऐसी चीज़ हो कि इस में नजासत जज़्ब न हुई, जैसे चीनी के बरतन, या मिट्टी का पुराना इस्ति'माली चिकना बरतन या लोहे, तांबे, पीतल वग़ैरा धातूं की चीज़े तो इसे फ़क़त़ तीन बार धो लेना काफ़ी है, इस की भी ज़रूरत नहीं कि इसे इतनी देर तक छोड़दें कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए।

(البحر الرائق، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٤١٤)

मस्अला 25 : नापाक बरतन को मिट्टी से मांझ लेना बेहतर है।

मस्अला 26 : पकाया हुवा चमड़ा नापाक हो गया, तो अगर इसे निचोड़ सकते है तो निचोड़ें वरना तीन मरतबा धोएं और हर मरतबा इतनी देर तक छोड़ दें कि पानी टपना मौक़ूफ़ हो जाए।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة،الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول،ج١، ص٤٣)

मस्अला 27 : दरी या टाट या कोई नापाक कपड़ा बहते पानी में रात भर पड़ा रहने दें पाक हो जाएगा और अस्ल येह है कि जितनी देर में येह ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया पाक हो गया कि बहते पानी से पाक करने में निचोड़ना शर्त़ नहीं।

मस्अला 28 : कपड़े का कोई ह़िस्सा नापाक हो गया और येह याद नहीं कि वोह कौन सी जगह है, तो बेहतर येही है कि पूरा ही धो डालें। [या'नी जब बिलकुल न मा'लूम हो कि किस ह़िस्से में नापाकी लगी है और अगर मा'लूम है कि मसलन आस्तीन या कली नजिस हो गई मगर येह नहीं मा'लूम कि आस्तीन या कली का कौन सा ह़िस्सा है तो आस्तीन या कली का धोना ही पूरे कपड़े का धोना है] और अगर अन्दाज़ से सोच कर इस का कोई ह़िस्सा धो ले जब भी पाक हो जाएगा और जो बिला सोचे हुए कोई टुकड़ा धो लिया जब भी पाक है मगर इस सूरत में अगर चन्द नमाज़े पढ़ने के बा'द मा'लूम हो कि नजिस ह़िस्सा नहीं धोया गया तो फिर धोए और नमाज़ो का इआ़दा करे और जो सोच

www.dawateislami.net

कर धो लिया था और बा'द को ग़लती मा'लूम हुई तो अब धो ले और नमाज़ों के इआ़दा की हाजत नहीं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٣،وغيره)

मस्अला 29 : येह ज़रूरी नहीं कि एक दम तीनों बार धोएं, बल्कि अगर मुख़्तलिफ़ वक्तों बल्कि मुख़्तलिफ़ दिनों में येह ता'दाद पूरी की जब भी पाक हो जाएगा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٣،وغيره)

मस्अला 30 : लोहे की चीज़ जैसे छुरी, चाक़ू, तल्वार वगै़रा जिस में न ज़ंग हो न नक़्श व निगार, नजिस हो जाए तो अच्छी त़रह़ पौछ डालने से पाक हो जाएगी और इस सूरत में नजासत के दलदार या पतली होने में कुछ फ़र्क़ नहीं। यूहीं चांदी, सोने, पीतल, गिलेट और हर क़िस्म की धात की चीज़ें पोंछने से पाक हो जाती है बशर्त़ येह कि नक़्शी न हों और अगर नक़्शी हों या लोहे में ज़ंग हो तो धोना ज़रूरी है पोंछने से पाक न होंगी।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٣،وغيره)

मस्अला 31 : आईना और शीशे की तमाम चीज़ें और चीनी के बरतन या मिट्टी के रोग़नी बरतन या पालिश की हुई लकड़ी ग़रज़ वोह तमाम चीज़ें जिन में मसाम न हों कपड़े या पत्ते से इस क़दर पोंछ ली जाएं कि असर बिलकुल जाता रहे पाक हो जाती हैं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٣،وغيره)

मस्अला 32 : मनी कपड़े में लग कर ख़ुश्क हो गई तो फ़क़त मल कर झाड़ने और साफ़ करने से कपड़ा पाक हो जाएगा अगर्चे बा'द मलने के कुछ इस का असर कपड़े में बाक़ी रह जाए।

(الفتاوی الهندية،كتاب الطهارة،الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول،ج١،ص ٤٤)

www.dawateislami.net

मस्अला 33 : इस मस्अले में औरत व मर्द और इन्सान व हैवान व तन्दुरुस्त व मरीज़े जिरयान सब की मनी का एक हुक्म है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٦٧)

मस्अला 34 : बदन में अगर मनी लग जाए तो भी इसी त़रह़ पाक हो जाएगा। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول، ج١، ص ٤٤)

मस्अला 35 : पेशाब कर के त़हारत न की, पानी से न ढेले से और मनी इस जगह पर गुज़री जहां पैशाब लगा हुवा है, तो येह मलने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है और अगर त़हारत कर चुका था या मनी जस्त कर के निकली कि इस मोज़ए नजासत पर न गुज़री तो मलने से पाक हो जाएगी। (الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٦٥، وغيرهما)

मस्अला 36 : जिस कपड़े को मल कर पाक कर लिया, अगर वोह पानी से भीग जाए तो नापाक न होगा।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول، ج١، ص ٤٤)

मस्अला 37 : अगर मनी कपड़े में लगी है और अब तक तर है, तो धोने से पाक होगा मलना काफ़ी नहीं।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول، ج١، ص ٤٤)

मस्अला 38 : मोज़े या जूते में दलदार नजासत लगी, जैसे पा ख़ाना, गोबर, मनी तो अगर्चे वोह नजासत तर हो खुरचने और रगड़ने से पाक हो जाएंगे। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول، ج١، ص ٤٤)

मस्अला 39 : और अगर मिस्ले पेशाब के कोई पतली नजासत लगी हो और इस पर मिट्टी या राख या रेता वग़ैरा डाल कर रगड़ डालें जब भी पाक हो जाएंगे और अगर ऐसा न किया यहां तक कि वोह नजासत सुख गई तो अब बे धोए पाक न होंगे।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص٥٦٢)

www.dawateislami.net

मस्अला 40 : नापाक ज़मीन अगर खुश्क हो जाए और नजासत का असर या'नी रंग व बू जाता रहे पाक हो गई, ख़्वाह वोह हवा से सूखी हो या धूप या आग से मगर इस से तयम्मुम करना जाइज़ नहीं नमाज़ इस पर पढ़ सकते हैं।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

मस्अला 41 : जिस कुंवें में नापाक पानी हो फिर वोह कुंवां सुख जाए तो पाक हो गया।

मस्अला 42 : दरख़्त और घास और दीवार और ऐसी ईंट जो ज़मीन में जड़ी हो, येह सब खुश्क हो जाने से पाक हो गए और अगर ईंट जड़ी हुई न हो तो खुश्क होने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है। यूहीं दरख़्त या घास सुखने के पेशतर काट लें तो तृहारत के लिये धोना ज़रूरी है। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤

و الفتاوى الخانية، كتاب الطهارة، فصل في النجاسة التي تصيب الثوب..إلخ، ج١، ص١٢)

मस्अला 43 : अगर पथ्थर ऐसा हो जो ज़मीन से जुदा न हो सके तो खुश्क होने से पाक है वरना धोने की ज़रूरत है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

मस्अला 44 : चक्की का पथ्थर खुश्क होने से पाक हो जाएगा।

(النهر الفائق، كتاب الطهارة، باب الأنجاس، ج١، ص١٤٤)

मस्अला 45 : कंकरी जो ज़मीन के ऊपर है खुश्क होने से पाक न होगी और जो ज़मीन में वस्ल है ज़मीन के हुक्म में है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

www.dawateislami.net

मस्अला 46: जो चीज़ ज़मीन से मुत्तसिल थी और नजिस हो गई, फिर खुश्क होने के बा'द अलग की गई तो अब भी पाक ही है।

मस्अला 47 : नापाक मिट्टी से बरतन बनाए तो जब तक कच्चे हैं नापाक हैं, बा'द पुख़्ता करने के पाक हो गए।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

मस्अला 48 : तन्नूर या तवे पर नापाक पानी का छिंटा डाला और आंच से इस की तरी जाती रही अब जो रोटी लगाई गई पाक है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

मस्अला 49 : उपले जला कर खाना पकाना जाइज़ है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

मस्अला 50 : जो चीज़ सूखने या रगड़ने वग़ैरा से पाक हो गई, इस के बा'द भीग गई तो नापाक न होगी।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة و أحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٤)

मस्अला 51 : सुवर के सिवा हर जानवर ह़लाल हो या ह़राम जब कि ज़ब्ह़ के क़ाबिल हो और بِسۡمِ اللہ कह कर ज़ब्ह़ किया गया, तो इस का गोश्त और खाल पाक है कि नमाज़ी के पास अगर वोह गोश्त है या इस की खाल पर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ हो जाएगी मगर ह़राम जानवर ज़ब्ह़ से ह़लाल न होगा ह़राम ही रहेगा।

मस्अला 52 : सुवर के सिवा हर मुर्दार जानवर की खाल सुखाने से पाक हो जाती है, ख़्वाह इस को खारी नमक वग़ैरा किसी दवा से पकाया हो या फ़क़त़ धूप या हवा में सुखा लिया हो और इस की

www.dawateislami.net

तमाम रुतूबत फ़ना हो कर बदबू जाती रही हो कि दोनों सूरतों में पाक हो जाएगी इस पर नमाज़ दुरुस्त है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، باب المياه ،مطلب في أحكام الدباغة ،ج١،ص٣٩٣_٣٩٥،وغيره)

मस्अला 53 : दरिन्दे की खाल अगर्चे पका ली गई हो न इस पर बैठना चाहिये, न नमाज़ पढ़नी चाहिये कि मिज़ाज में सख़्ती और तकब्बुर पैदा होता है, बकरी और मेंढ़े की खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नर्मी और इन्किसार पैदा होता है, कुत्ते की खाल अगर्चे पका ली गई हो या ज़ब्ह् कर लिया गया हो इस्ति'माल में न लाना चाहिये कि अइम्मा के इख़्तिलाफ़ और अ़वाम की नफ़्रत से बचना मुनासिब है।

मस्अला 54 : रूई का अगर इतना ह़िस्सा नजिस है जिस क़दर धुनने से उड़ जाने का गुमाने सह़ीह़ हो तो धुनने से पाक हो जाएगी वरना बिग़ैर धोए पाक न होगी, हां अगर मा'लूम न हो की कितनी नजिस है तो भी धुनने से पाक हो जाएगी।

मस्अला 55 : ग़ल्ला जब पैर (या'नी अनाज साफ़ करने की जगह) में हो और इस की मालिश के वक़्त बेलूं ने इस पर पेशाब किया, तो अगर चन्द शरीकों में तक़सीम हुवा या इस में से मज़्दूरी दी गई या ख़ैरात की गई तो सब पाक हो गया और अगर कुल बिजिन्सिही मौजूद है तो नापाक है, अगर इस में से इस क़दर जिस में एह्तेमाल हो सके कि इस से ज़ियादा नजिस न होगा धो कर पाक कर लें तो सब पाक हो जाएगा।

www.dawateislami.net

मस्अला 56 : रांग, सीसा पिगलाने से पाक हो जाता है।

मस्अला 57 : जमे हुए घी में चूहा गिर कर मर गया तो चूहे के आस पास से निकाल डालें, बाक़ी पाक है खा सकते हैं और अगर पतला है तो सब नापाक हो गया इस का खाना जाइज़ नहीं, अलबत्ता इस काम में ला सकते हैं जिस में इस्ति'माले नजासत ममनूअ़ न हो, तेल का भी यही हुक्म है। (الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة، الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول، ج١، ص٤٥)

मस्अला 58 : शहद नापाक हो जाए तो इस के पाक करने का त़रीक़ा येह है कि इस से ज़ियादा इस में पानी डाल कर इतना जोश दें कि जितना था उतना ही हो जाए, तीन मरतबा यूहीं करें पाक हो जाएगा।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطهارة،الباب السابع في النجاسة وأحكامها، الفصل الأول، ج ١، ص ٤٢)

मस्अला 59 : नापाक तेल के पाक करने का त़रीक़ा येह है कि इतना ही पानी इस में डाल कर ख़ूब हिलाएं, फिर ऊपर से तेल निकाल लें और पानी फैंक दें, यूहीं तीन बार करें या इस बरतन में नीचे सूराख़ कर दें कि पानी बह जाए और तेल रह जाए, यूं भी तीन मरतबा में पाक हो जाएगा या यूं करें कि इतना ही पानी डाल कर इस तेल को पकाएं यहां तक की पानी जल जाए और तेल रह जाए ऐसा ही तीन दफ़्अ़ा में पाक हो जाएगा और यूं भी कि पाक तेल या पानी दूसरे बरतन में रख कर इस नापाक और इस पाक दोनों की धार मिला कर ऊपर से गिराएं मगर इस में येह ज़रूर ख़याल रखें कि नापाक की धार इस की धार से किसी वक़्त जुदा न हो, न इस बरतन में कोई क़त़रा नापाक का पहले से पहुंचा हो न बा'द को वरना फिर नापाक हो जाएगा, बहती हुई आ़म चीज़े, घी वग़ैरा के पाक करने के भी येही

www.dawateislami.net

त़रीक़े हैं और अगर घी जमा हो, इसे पिघला कर इन्हीं त़रीक़ों में से किसी त़रीक़े पर पाक करें और एक त़रीक़ा इन चीज़ों के पाक करने का येह भी है कि परनाले के नीचे कोई बरतन रखें और छत पर से इसी जिन्स की पाक चीज़ या पानी के साथ इस त़रह़ मिला कर बहाएं कि परनाले से दोनों धारें एक हो कर गिरें सब पाक हो जाएगा या इसी जिन्स या पानी से उबाल लें पाक हो जाएगा।

(फ़तावा रज़विय्या, जि.4 स. 378 - 380)

मस्अला 60 : जा नमाज़ में हाथ, पाऊं, पेशानी और नाक रखने की जगह का नमाज़ पढ़ने में पाक होना ज़रूरी है, बाक़ी जगह अगर नजासत हो नमाज़ में ह़रज नहीं, हां नमाज़ में नजासत के क़ुर्ब से बचना चाहिये।

मस्अला 61 : किसी कपड़े में नजासत लगी और वोह नजासत इसी त़रफ़ रह गई, दूसरी जानिब इस ने असर नहीं किया तो इस को लौट कर दूसरी त़रफ़ जिधर नजासत नहीं लगी है नमाज़ नहीं पढ़ सकते अगर्चे कितना ही मोटा हो मगर जब कि वोह नजासत मवाज़िए़ सुजूद से अलग हो। (غنية المتملي، شرائط الصلاة، الشرط الثاني،ص٢٠٢)

मस्अला 62 : जो कपड़ा दो तेह का हो अगर एक तेह इस की नजिस हो जाए तो अगर दोनों मिला कर सी लिये गए हों, तो दूसरी तेह पर नमाज़ जाइज़ नहीं और अगर सिले न हों तो जाइज़ है।

(الدر المختار وردالمحتار، كتاب الصلوة، باب مايفسد الصلوة ومايكره فيها، مطلب في التشبه بأهل الكتاب، ج٢، ص٤٦٧)

मस्अला 63 : लकड़ी का तख़्ता एक रुख़ से नजिस हो गया तो अगर इतना मोटा है कि मोटाई में चिर सके, तो लौट कर इस पर नमाज़ पढ़ सकते हैं वरना नहीं। (غنية المتملي، شرائط الصلاة، الشرط الثاني، ص٢٠٢)

www.dawateislami.net

मस्अला 64 : जो ज़मीन गोबर से लीसी गई अगर्चे सुख गई हो इस पर नमाज़ जाइज़ नहीं, हां अगर वोह सुख गई और इस पर कोई मोटा कपड़ा बिछा लिया, तो इस कपड़े पर नमाज़ पढ़ सकते हैं अगर्चे कपड़े में तरी हो मगर इतनी तरी न हो कि ज़मीन भीग कर इस को तर कर दे कि इस सूरत में येह कपड़ा नजिस हो जाएगा और नमाज़ न होगी।

मस्अला 65 : आंखों में नापाक सुरमा या काजल लगाया और फैल गया तो धोना वाजिब है और अगर आखों के अन्दर ही हो बाहर न लगा हो तो मुआ़फ़ है।

मस्अला 66 : किसी दूसरे मुसलमान के कपड़े में नजासत लगी देखी और ग़ालिब गुमान है कि इस को ख़बर करेगा तो पाक कर लेगा तो ख़बर करना वाजिब है।

(الدرالمختار، كتاب الطهارة، باب الأنجاس،فصل الاستنجاء، ج١،ص٦٢٢)

मस्अला 67 : फ़ासिक़ो के इस्ति'माली कपड़े जिन का नजिस होना मा'लूम न हो पाक समझे जाएंगे मगर बे नमाज़ी के पाजामे वग़ैरा में एह़तियात़ येही है कि रूमाली पाक कर ली जाए कि अकसर बे नमाज़ी पेशाब कर के वैसे ही पाजामा बांध लेते हैं और कुफ़्फ़ार के इन कपड़ो के पाक कर लेने में तो बहुत ख़याल करना चाहिये।

शिक्वा की ता'रीफ़

मुसीबत के वक़्त वावेला करने और सब्र का दामन हाथ से छोड़ देने को शिकवा कहते हैं।

(الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية،ج٢،ص٩٨)

www.dawateislami.net

झूट का बयान(1)

झूट ऐसी बुरी चीज़ है कि हर मज़हब वाले इस की बुराई करते हैं तमाम अदयान में येह ह़राम है इस्लाम ने इस से बचने की बहुत ताकीद की, कु़रआने मजीद में बहुत मवाके़अ़ पर इस की मज़म्मत फ़रमाई और झूट बोलने वालों पर ख़ुदा की ला'नत आई। ह़दीसों में भी इस की बुराई ज़िक्र की गई, इस के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ अह़ादीस ज़िक्र की जाती है।

ह़दीस 1 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "सिद्क़ को लाज़िम कर लो" क्यूंकि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच बोलने की कोशिश करता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूंकि झूट फुजूर की त़रफ़ ले जाता है और फुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता है और झूट बोलने की कोशिश करता है, यहां तक कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।

(صحیح مسلم، کتاب البر...إلخ، باب قبح الکذب...إلخ، الحدیث:۲۶۰۷، ص۱٤۰۵)

ह़दीस 2 : तिरमिज़ी ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स झूट बोलना छोड़ दे और वोह बात़िल है [या'नी झूट छोड़ने ही की चीज़ है] इस के लिये जन्नत के किनारे में मकान बनाया जाएगा और जिस ने झगड़ा करना छोड़ा और वोह ह़क़ पर है या'नी बा वुजूद ह़क़ पर होने

(1)...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा.16, जि. 3 स. 515

www.dawateislami.net

के झगड़ा नहीं करता, उस के लिये वस्त़े जन्नत में मकान बनाया जाएगा और जिस ने अपने अख़्लाक़ अच्छे किये, उस के लिये जन्नत के आ'ला दर्जे में मकान बनाया जाएगा।"

(جامع الترمذي، ابواب البر والصلة، باب ماجاء في المراء، الحديث: ٢٠٠٠، ج٣، ص ٤٠٠)

ह़दीस 3 : तिरमिज़ी ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब बन्दा झूट बोलता है, इस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।"

(جامع الترمذي، ابواب البر و الصلة، باب ماجاء في الصدق و الكذب، الحديث: ١٩٧٩، ج٣، ص ٣٩٢)

ह़दीस 4 : अबू दावूद ने सुफ़्यान बिन असीद (1) ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कहते हैं मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि "बड़ी ख़ियानत की येह बात है कि तू अपने भाई से कोई बात कहे और वोह तुझे इस बात में **सच्चा जान रहा है** और तू उस से **झूट बोल रहा है**।"

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في المعاريض، الحديث: ٤٩٧١، ج٤، ص ٣٨١)

ह़दीस 5 : इमाम अह़मद व बयहक़ी ने अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मोमिन की त़ब्अ़ में तमाम ख़स्लतें हो सकती है मगर ख़ियानत और झूट।" (المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي امامة الباهلي، الحديث: ٢٢٢٣٢، ج٨، ص ٢٧٦) या'नी येह दोनों चीज़ें ईमान के ख़िलाफ़ हैं मोमिन को इन से दूर रहने की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है।

ह़दीस 6 : इमाम मालिक व बयहक़ी ने सफ़्वान बिन सुलैम से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया, क्या मोमिन बुज़दिल होता है ? फ़रमाया : हां ! फिर अ़र्ज़ की गई, क्या

---

(1)..... बहारे शरीअ़त में इस मक़ाम पर "सुफ़्यान बिन असअ़द" (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) लिखा हुवा है जब कि "सुनने अबी दावूद" में सुफ़्यान बिन असीद (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) मज़्कूर है, लिहाज़ा मतन में तसह़ीह़ कर दी गई है।

www.dawateislami.net

मोमिन बख़ील होता है ? फ़रमाया : हां फिर कहा गया, क्या मोमिन कज़्ज़ाब (झूटा) होता है ? फ़रमाया : नहीं ।

(الموطأ، كتاب الكلام، باب ماجاء في الصدق و الكذب، الحديث: ١٩١٣،ج٢، ص٤٦٨)

ह़दीस 7 : इमाम अह़मद ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "झूट से बचो, क्यूंकि झूट ईमान से मुख़ालिफ़ है ।"

(المسند للإمام أحمد بن حنبل،مسند أبي بكر الصديق، الحديث:١٦، ج١،ص ٢٢ والسنن الكبرىٰ لبيهقي، كتاب الشهادات،باب من كان منكشف الكذب مظهره،الحديث:٢٠٨٢٦، ج١٠،ص٣٣٢)

ह़दीस 8 : इमाम अह़मद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बन्दा पूरा मोमिन नहीं होता जब तक मज़ाक़ में भी झूट को न छोड़ दे और झगड़ा करना न छोड़ दे, अगर्चे सच्चा हो ।"

(المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٨٦٣٨،ج٣،ص٢٦٨)

ह़दीस 9 : इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व अबू दावूद व दारिमी ने ब रिवायत बहज़ बिन ह़कीम अ़न अबीह अ़न जद्दा रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हलाकत है उस के लिये जो बात करता है और लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलता है, उस के लिये हलाकत है, उस के लिये हलाकत है ।"

(جامع الترمذي، ابواب الزهد، باب ماجاء من تكلم بالكلمة ليضحك الناس، الحديث: ٢٣٢٢،ج٤،ص١٤٢)

ह़दीस 10 : बयहक़ी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बन्दा बात करता है और मह़ज़ इस लिये करता है कि लोगों को हंसाए इस की वजह से

www.dawateislami.net

जहन्नम की इतनी गहराई में गिरता है जो आस्मान व ज़मीन के दरमियान के फ़ासिले से ज़ियादा है और ज़बान की वजह से जितनी लग़्ज़िश होती है, वोह इस से कहीं ज़ियादा है जितनी क़दम से लग़्ज़िश होती है।" (شعب الإيمان، باب في حفظ اللسان، الحديث: ٤٨٣٢، ج٤، ص٢١٣

ومشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان..إلخ، الفصل الثانى،الحديث: ٤٨٣٦، ج٣، ص٤١)

ह़दीस 11 : अबू दावूद व बयहक़ी ने अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कहते है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरी मां ने मुझे बुलाया कि आओ तुम्हें दूंगी। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : क्या चीज़ देने का इरादा है? उन्हों ने कहा, खजूर दूंगी। इरशाद फ़रमाया : "अगर तू कुछ नहीं देती तो येह तेरे ज़िम्मे झूट लिखा जाता।"

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب التشديد في الكذب، الحديث: ٤٩٩١، ج٤، ص٣٨٧)

ह़दीस 12 : बयहक़ी ने अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "झूट से मुंह काला होता है और चुग़ली से क़ब्र का अ़ज़ाब है"

(شعب الإيمان، باب في حفظ اللسان، الحديث: ٤٨١٣، ج٤، ص٢٠٨)

ह़दीस 13 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह शख़्स झूटा नहीं है जो लोगों के दरमियान में इस्लाह़ करता है, अच्छी बात कहता है और अच्छी बात पहुंचाता है।"

("صحيح مسلم"، كتاب البر...إلخ، باب تحريم الكذب...إلخ، الحديث: ٢٦٠٥، ص١٤٠٤)

या'नी एक की त़रफ़ से दूसरे के पास अच्छी बात कहता है जो बात इस ने नहीं कही है वोह कहता है, मसलन इस ने तुम्हें सलाम कहा है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था।

www.dawateislami.net

हृदीस 14 : तिरमिज़ी ने अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "झूट कहीं ठीक नहीं मगर तीन जगहों में, मर्द अपनी औ़रत को राज़ी करने के लिये बात करे और लड़ाई में झूट बोलना और लोगों के दरमियान में सुल्ह़ कराने के लिये झूट बोलना ।" (جامع الترمذي، ابواب البر والصلة، باب ماجاء في اصلاح ذات البين،الحديث:١٩٤٥،ج٣،ص٣٧٧)

मस्अला 1 : तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है या'नी इस में गुनाह नहीं ।

एक : जंग की सूरत में, कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, इसी त़रह़ जब ज़ालिम ज़ुल्म करना चाहता हो इस के ज़ुल्म से बचने के लिये भी जाइज़ है ।

दूसरी सूरत : येह कि दो मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ है और येह उन दोनों में सुल्ह़ कराना चाहता है, मसलन एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था या इस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए ।

तीसरी सूरत : येह है कि बीबी को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे । (الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب السابع عشر في الغناء، ج٥، ص٣٥٢)

मस्अला 2 : तोरिया या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर इस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं, ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है । तोरिया की मिसाल येह है कि तुम ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है : मैं ने खाना खा लिया । इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है । (الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب السابع عشر في الغناء، ج٥، ص٣٥٢)

www.dawateislami.net

मस्अला 3: एह़याए ह़क़ के लिये तोरिया जाइज़ है मसलन शफ़ीअ़ को रात में जाइदादे मशफ़ूआ़ की बैअ़ का इल्म हुवा और उस वक़्त लोगों को गवाह न बना सकता हो तो सुब्ह़ को गवाहों के सामने येह कह सकता है कि मुझे बैअ़ का इस वक़्त इल्म हुवा। दूसरी मिसाल येह है कि लड़की को रात को ह़ैज़ आया और उस ने ख़यारे बुलूग़ के त़ौर पर अपने नफ़्स को इख़्तियार किया मगर गवाह कोई नहीं है तो सुब्ह़ को लोगों के सामने येह कह सकती है कि मैं ने इस वक़्त ख़ून देखा।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٧٠٤)

मस्अला 4 : जिस अच्छे मक़सद को सच बोल कर भी ह़ासिल किया जा सकता हो और झूट बोल कर भी ह़ासिल कर सकता हो उस के ह़ासिल करने के लिये झूट बोलना ह़राम है और अगर झूट से ह़ासिल कर सकता हो, सच बोलने में ह़ासिल न हो सकता हो तो बा'ज़ सूरतों में किज़्ब भी मुबाह़ है बल्कि बा'ज़ सूरतों में वाजिब है, जैसे किसी बे गुनाह को ज़ालिम शख़्स क़त्ल करना चाहता है या ईज़ा देना चाहता है वोह डर से छुपा हुवा है, ज़ालिम ने किसी से दरयाफ़्त किया कि वोह कहां है? येह कह सकता है मुझे मा'लूम नहीं अगर्चे जानता हो या किसी की अमानत इस के पास है कोई इसे छीनना चाहता है पूछता है कि अमानत कहां है? येह इन्कार कर सकता है, कह सकता है कि मेरे पास इस की अमानत नहीं। (ردالمحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٧٠٥)

मस्अला 5 : किसी ने छुप कर बे ह़याई का काम किया है, इस से दरयाफ़्त किया गया कि तूने येह काम किया? वोह इन्कार कर सकता है क्यूंकि ऐसे काम को लोगों के सामने ज़ाहिर कर देना येह दूसरा गुनाह होगा। इसी त़रह़ अगर अपने मुस्लिम भाई के भेद पर मुत्त़लअ़ हो तो इस के बयान करने से भी इन्कार कर सकता है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٧٠٥)

www.dawateislami.net

मस्अला 6 : अगर सच बोलने में फ़साद पैदा होता हो तो इस सूरत में भी झूट बोलना जाइज़ है और अगर झूट बोलने में फ़साद होता हो तो ह़राम है और अगर शक हो मा'लूम नहीं कि सच बोलने में फ़साद होगा या झूट बोलने में, जब भी झूट बोलना ह़राम है।

(ردالمحتار، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج۹، ص ۷۰۵)

मस्अला 7 : जिस क़िस्म के मुबालग़े का आ़दतन रवाज है लोग इसे मुबालग़े ही पर मह़मूल करते हैं इस के ह़क़ीक़ी मा'ना मुराद नहीं लेते वोह झूट में दाख़िल नहीं, मसलन येह कहा कि मैं तुम्हारे पास हज़ार मरतबा आया या हज़ार मरतबा मैं ने तुम से येह कहा। यहां हज़ार का अ़दद मुराद नहीं बल्कि कई मरतबा आना और कहना मुराद है, येह लफ़्ज़ ऐसे मौक़अ़ पर नहीं बोला जाएगा कि एक ही मरतबा आया हो या एक ही मरतबा कहा हो और अगर एक मरतबा आया और येह कह दिया कि हज़ार मरतबा आया तो झूटा है।

(ردالمحتار، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج۹، ص ۷۰۵)

मस्अला 8 : ता'रीज़[1] की बा'ज़ सूरतें जिन में लोगों का दिल ख़ुश करना और मिज़ाह़ मक़्सूद हो जाइज़ है। जैसा कि ह़दीस में फ़रमाया कि "जन्नत में बुढ़िया नहीं जाएगी।"

(جامع الترمذي، ابواب الشمائل، باب ماجاء في صفة...إلخ، الحديث:۲۳۹، ج۵، ص۵٤۵)

या "मैं तुझे ऊंटनी के बच्चे पर सुवार करूंगा।"

(جامع الترمذي، ابواب البر والصلة، باب ماجاء في المزاح، الحديث:۱۹۹۱، ج۳، ص۳۹۹ و ردالمحتار، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج۹، ص۷۰٦)

---

(1) ता'रीज़ : ऐसा कलाम करना जिस की मुराद सुनने वाला बिग़ैर सराह़त न समझ सके। (التعريفات للجرجانی)

www.dawateislami.net

ग़ीबत और चुग़ली (1)

ह़दीस 34 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब से ज़ियादा बुरा क़ियामत के दिन उस को पाओगे, जो ज़ुल वजहैन हो।"

("صحيح البخاري"، كتاب الأدب، باب ماقيل في ذى الوجهين، الحديث: ٦٠٥٨، ج٤، ص١١٥)

या'नी दो रुख़ा आदमी कि इन के पास एक मुंह से आता है और उन के पास दूसरे मुंह से आता है या'नी मुनाफ़िक़ों की त़रह़ कहीं कुछ कहता है और कहीं कुछ कहता है, येह नहीं कि एक त़रह़ की बात सब जगह कहे।

ह़दीस 35 : दारिमी ने अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स दुन्या में दो रुख़ा होगा, क़ियामत के दिन आग की ज़बान उस के लिये होगी।" (سنن الدارمي، كتاب الرقائق،باب ما قيل في ذى الوجهين،الحديث: ٢٧٦٤، ج٢، ص٤٠٥)' अबू दावूद की रिवायत में है कि "उस के लिये दो ज़बानें आग की होंगी"।

("سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في ذى الوجهين،الحديث:٤٨٧٣، ج٤، ص٣٥٢)

ह़दीस 36 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मैं ने येह फ़रमाते सुना कि "जन्नत में चुग़ुल ख़ोर नहीं जाएगा।"

("صحيح مسلم"، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم النميمة،الحديث:١٠٥، ص٦٧)

---

(1) ...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा.16, जि. 3, स. 525

www.dawateislami.net

ह़दीस 37 : बयहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम व अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रिवायत की, कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नेक बन्दे वोह हैं कि इन के देखने से ख़ुदा याद आए और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ली खाते हैं, दोस्तों में जुदाई डालते हैं और जो शख़्स जुर्म से बरी है, इस पर तक्लीफ़ डालना चाहते हैं।''

(شعب الإيمان، باب في الاصلاح بين الناس.. إلخ، الحديث: ١١١٠٨، ج٧، ص٤٩٤

و مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان..إلخ، الحديث: ٤٨٧١، ج٣، ص٤٦)

ह़दीस 38 : सह़ीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम्हें मा'लूम है ग़ीबत क्या है ? लोगों ने अ़र्ज़ की **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ख़ूब जानते हैं। इरशाद फ़रमाया : ग़ीबत येह है कि तू अपने भाई का उस चीज़ के साथ ज़िक्र करे जो उसे बुरी लगे। किसी ने अ़र्ज़ की, अगर मेरे भाई में वोह मौजूद हो जो मैं कहता हूं (जब तो ग़ीबत नहीं होगी) फ़रमाया : ''जो कुछ तुम कहते हो, अगर उस में मौजूद है जब ही तो ग़ीबत है और जब तुम ऐसी बात कहो जो उस में हो नहीं, येह बोहतान है।''

(صحيح مسلم كتاب البر والصلة..إلخ، باب تحريم الغيبة،الحديث:٧٠ـ(٢٥٨٩)،ص١٣٩٧)

ह़दीस 39 : इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व अबू दावूद ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا से रिवायत कि, कहती हैं मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा, सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا के लिये येह काफ़ी है कि वोह ऐसी हैं ऐसी हैं या'नी पस्ता क़द हैं, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया कि ''तुम ने ऐसा कलिमा कहा कि अगर समुन्दर में मिलाया जाए तो इस पर ग़ालिब आ जाए।'' (سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في الغيبة، الحديث:٤٨٧٥، ج٤، ص٣٥٣)

www.dawateislami.net

या'नी किसी पस्ता क़द को नाटा, ठिगना कहना भी ग़ीबत में दाख़िल है, जब कि बिला ज़रूरत हो।

ह़दीस 40 : बयहक़ी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما से रिवायत की, दो शख़्सों ने ज़ोहर या अ़स्र की नमाज़ पढ़ी और वोह दोनों रोज़ादार थे, जब नमाज़ पढ़ चुके नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : "तुम दोनों वुज़ू करो और नमाज़ का इआ़दा करो और रोज़ा पूरा करो और दूसरे दिन इस रोज़े की क़ज़ा करना। उन्हों ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم येह हुक्म किस लिये ? इरशाद फ़रमाया : "तुम ने फ़ुलां शख़्स की ग़ीबत की है।"

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في الغيبة، الحديث:٤٨٧٥،ج٤،ص٣٠٣)

ह़दीस 41 : तिरमिज़ी ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنھا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : "मैं इस को पसन्द नहीं करता कि किसी की नक़्ल करूं, अगर्चे मेरे लिये इतना इतना हो।" (جامع الترمذي، ابواب صفة القيامة..إلخ، باب:١١٦،الحديث: ٢٥١٠،ج٤،ص٢٢٦) या'नी नक़्ल करना दुन्या की किसी चीज़ के मुक़ाबिल में दुरुस्त नहीं हो सकता।

ह़दीस 42 : बयहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में अबू सईद व जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنھُما से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : ग़ीबत ज़िना से भी ज़ियादा सख़्त चीज़ है। लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم) ज़िना से ज़ियादा सख़्त ग़ीबत क्यूं कर है ? फ़रमाया कि "मर्द ज़िना करता है फिर तौबा करता है, अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है और ग़ीबत करने वाले की मग़फ़िरत न होगी, जब तक वोह न मुआ़फ़ कर दे जिस की ग़ीबत की है।" (شعب الإيمان، باب في تحريم اعراض الناس، الحديث: ٦٧٤١، ج٥، ص٣٠٦)

www.dawateislami.net

और अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत में है कि "ज़िना करने वाला तौबा करता है और ग़ीबत करने वाले की तौबा नहीं है।"

(شعب الإيمان، باب في تحريم اعراض الناس، الحديث: ٦٧٤٢، ج٥، ص٣٠٦)

ह़दीस 43 : बयहक़ी ने दा'वते कबीर में अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ग़ीबत के कफ़्फ़ारे में येह है कि जिस की ग़ीबत की है, उस के लिये इस्तिग़फ़ार करे, येह कहे : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَہٗ.

(مشكاة المصابيح،كتاب الآداب،باب حفظ اللسان..إلخ،الفصل الثالث،الحديث:٤٨٧٧، ج٣، ص٤٧)

"इलाही हमें और इसे बख़्श दे।"

ह़दीस 44 : अबू दावूद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि माइज़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब रजम किया गया था, दो शख़्स आपस में बातें करने लगे, एक ने दूसरे से कहा, इसे तो देखो कि अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने इस की पर्दा पोशी की थी मगर इस के नफ़्स ने न छोड़ा, कुत्ते की त़रह़ रजम किया गया। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने सुन कर सुकूत फ़रमाया। कुछ देर तक चलते रहे, रास्ते में मरा हुवा गधा मिला जो पाऊं फैलाए हुए था।

हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने उन दोनों शख़्सों से फ़रमाया : "जाओ इस मुर्दार गधे का गोश्त खाओ।" उन्हों ने अ़र्ज़ की, या नबियल्लाह इसे कौन खाएगा ? इरशाद फ़रमाया : "वोह जो तुम ने अपने भाई की आबरूरेज़ी की, वोह इस गधे के खाने से भी ज़ियादा सख़्त है। क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है वोह (माइज़) इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है।"

(سنن أبي داود، كتاب الحدود، باب رجم ما عز بن مالك، الحديث:٤٤٢٨،ج٤،ص١٩٧)

www.dawateislami.net

ह़दीस 45 : इमाम अह़मद व नसाई व इब्ने माजा व ह़ाकिम ने उसामा बिन शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने ह़रज उठा लिया, मगर जो शख़्स किसी मर्दे मुस्लिम की बत़ौरे ज़ुल्म आबरूरेज़ी करे, वोह ह़रज में है और हलाक हुवा।" (كنزالعمال،كتاب الاخلاق،قسم الاخلاق،الغيبة، الحديث:٨٠١٤، ج٣، ص٢٣٤)

ह़दीस 46 : इमाम अह़मद व अबू दावूद व ह़ाकिम ने मुस्तवरिद बिन शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस शख़्स को किसी मर्दे मुस्लिम की बुराई करने की वजह से खाने को मिला, **अल्लाह** तआ़ला उस को उतना ही जहन्नम से खिलाएगा और जिस को मर्दे मुस्लिम की बुराई की वजह से कपड़ा पहनने को मिला, **अल्लाह** तआ़ला उस को जहन्नम का उतना ही कपड़ा पहनाएगा।"

("سنن أبي داود"،كتاب الأدب، باب في الغيبة،الحديث:٤٨٨١،ج٤،ص٣٥٤)

ह़दीस 47 : इमाम अह़मद व अबू दावूद ने अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ वोह लोग जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा मुसलमानों की ग़ीबत न करो और इन की छुपी हुई बातों की टटोल न करो, इस लिये कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की छुपी हुई चीज़ की टटोल करेगा, **अल्लाह** तआ़ला उस की पोशीदा चीज़ की टटोल करेगा और जिस की **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) टटोल करेगा उस को रुसवा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो।"

(سنن أبي داود، كتاب الأدب، باب في الغيبة الحديث: ٤٨٨٠،ج٤،ص٣٥٤)

www.dawateislami.net

ह़दीस 48 : इमाम अह़मद व अबू दावूद ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब मुझे मे'राज हुई, एक क़ौम पर गुज़रा जिन के नाख़ुन तांबे के थे, वोह अपने मुंह और सीने को नोचते थे। मैं ने कहा : जिब्रील येह कौन लोग हैं? जिब्रील ने कहा, "येह वोह हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे और उन की आबरूरेज़ी करते थे।"

(سنن أبي داود، كتاب الأدب، باب في الغيبة، الحديث:٤٨٧٨، ج٤،ص٣٥٣)

ह़दीस 49 : अबू दावूद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : " मुसलमान की सब चीज़ें मुसलमान पर ह़राम हैं इस का माल और इस की आबरू और इस का ख़ून, आदमी को बुराई से इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को ह़क़ीर जाने।

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في الغيبة، الحديث:٤٨٨٢، ج٤،ص٣٥٤)

ह़दीस 50 : अबू दावूद ने मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुसलमान पर कोई बात कहे इस से मक़्सद ऐ़ब लगाना हो, अल्लाह तआ़ला उस को पुल सिरात़ पर रोकेगा जब तक उस चीज़ से न निकले जो उस ने कही।"

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب من رد عن مسلم غيبة،الحديث:٤٨٨٣،ج٤،ص٣٥٥)

ह़दीस 51 : अबू दावूद ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और अबू त़ल्ह़ा बिन सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जहां मर्दे मुस्लिम की हतके ह़ुरमत की जाती हो और उस की आबरूरेज़ी की जाती हो ऐसी जगह जिस ने उस की मदद न की, या'नी येह ख़ामोश सुनता रहा और उन

www.dawateislami.net

को मन्अ़ न किया तो अल्लाह तआ़ला उस की मदद नहीं करेगा जहां इसे पसन्द हो कि मदद की जाए और जो शख़्स मर्दे मुस्लिम की मदद करेगा ऐसे मौक़अ़ पर जहां उस की हतके हुरमत और आबरूरेज़ी की जा रही हो, अल्लाह तआ़ला उस की मदद फ़रमाएगा ऐसे मौक़अ़ पर जहां उसे मह़बूब है कि मदद की जाए।"

(سنن أبي داود،کتاب الادب،باب من رد عن مسلم غيبة،الحديث:٤٨٨٤،ج٤،ص٣٥٥)

ह़दीस 52 : शर्हे सुन्ना में अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस के सामने उस के मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाए और वोह इस की मदद पर क़ादिर हो और मदद की, अल्लाह तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उस की मदद करेगा और अगर बा वुजूदे क़ुदरत इस की मदद नहीं की तो अल्लाह तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उसे पकड़ेगा।

(مشكاة المصابيح،کتاب الآداب، باب الشفقة و الرحمة على الخلق،الحديث:٤٩٨٠،ج٣،ص٦٩)

ह़दीस 53 : बयहक़ी ने अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स अपने भाई के गोश्त से उस की ग़ैबत में रोके या'नी मुसलमान की ग़ीबत की जा रही थी, इस ने रोका तो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) पर ह़क़ है कि उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे।"

(شعب الإيمان، باب في التعاون على البر و التقوى،الحديث:٧٦٤٣،ج٦،ص١١٣)

ह़दीस 54 : शर्हे सुन्ना में अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसलमान अपने भाई की आबरू से रोके या'नी किसी मुस्लिम की आबरूरेज़ी होती थी इस ने मन्अ़ किया तो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) पर ह़क़ है कि

www.dawateislami.net

क़ियामत के दिन इस को जहन्नम की आग से बचाए। इस के बा'द इस आयत की तिलावत की। (1) وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

(شرح السنة، كتاب البر والصلة، باب الذب عن المسلمين، الحديث: ٣٤٢٢، ج٦، ص٤٩٤ـ پ٢١، الروم: ٤٧)

"मुसलमानों की मदद करना हम पर ह़क़ है।"

ह़दीस 55 : तिरमिज़ी व अबू दावूद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना है और मोमिन मोमिन का भाई है, इस की चीज़ों को हलाक होने से बचाए और ग़ैबत में इस की ह़िफ़ाज़त करे।" (سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في النصيحة و الحياطة، الحديث: ٤٩١٨، ج٤، ص٣٦٥)

ह़दीस 56 : इमाम अह़मद व तिरमिज़ी ने उ़क़बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स ऐसी चीज़ देखे जिस को छुपाना चाहिये और उस ने पर्दा डाल दिया या'नी छुपा दी तो ऐसा है जैसे मौऊदा (या'नी ज़िन्दा दरगोर) को ज़िन्दा किया।"

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في الستر على المسلم، الحديث: ٤٨٩١، ج٤، ص٣٥٧)

ह़दीस 57 : अबू नुऐ़म ने मा'रिफ़ा में शबीब बिन सा'द बलवी से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बन्दे को क़ियामत के दिन उस का दफ़्तर खुला हुवा मिलेगा, वोह उस में ऐसी नेकियां भी देखेगा जिन को किया नहीं है, अ़र्ज़ करेगा ऐ रब !

---

(1) ..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।* (پ٢١، الروم: ٤٧)

www.dawateislami.net

येह मेरे लिये कहां से आईं ? मैं ने तो इन्हें किया नहीं। उस से कहा जाएगा" कि येह वोह हैं जो तेरी ला इल्मी में लोगों ने तेरी ग़ीबत की थी। (كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاخلاق، الغيبة، رقم: ٨٠٤٣، ج٣، ص٢٣٦)

ह़दीस 58 : तिरमिज़ी ने मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "जिस ने अपने भाई को ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाया जिस से वोह तौबा कर चुका है, तो मरने से पहले वोह ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला हो जाएगा।"

(جامع الترمذي، كتاب صفة القيامة...إلخ، باب:١١٨، الحديث:٢٥١٣، ج٤، ص٢٢٦)

ह़दीस 59 : तिरमिज़ी ने वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "अपने भाई की शुमातत न कर या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मसर्रत न कर कि अल्लाह तआ़ला उस पर रह़्म करेगा और तुझे इस में मुब्तला कर देगा।"

(جامع الترمذي، كتاب صفة القيامة..إلخ، باب:١١٩، الحديث:٢٥١٤، ج٤، ص٢٢٧)

ह़दीस 60 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी सारी उम्मत आ़फ़िय्यत में है मगर मुजाहिरीन या'नी जो लोग खुल्लम खुल्ला गुनाह करते हैं येह आ़फ़िय्यत में नहीं उन की ग़ीबत और बुराई की जाएगी और आदमी की बे बाकी से येह है कि रात में इस ने कोई काम किया या'नी गुनाह का काम और ख़ुदा ने उस को छुपाया और येह सुब्ह़ को ख़ुद कहता है, कि आज रात में मैं ने येह किया, ख़ुदा ने उस पर पर्दा डाला था और येह शख़्स पर्दए इलाही को हटा देता है।"

(صحيح البخاري، كتاب الادب، باب ستر المؤمن على نفسه، الحديث:٦٠٦٩، ج٤، ص١١٨
و صحيح مسلم، كتاب الزهد، باب النهي عن هتك الانسان ستر نفسه، الحديث:٥٢ـ(٢٩٩٠)، ص١٥٩٥)

ह़दीस 61: त़बरानी व बयहक़ी ने ब रिवायते बहज़ बिन ह़कीम अ़न अबीहि अ़न जद्दिह रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या फ़ाजिर के ज़िक्र से बचते हो उस को लोग कब

www.dawateislami.net

पहचानेंगे, फ़ाजिर का ज़िक्र उस चीज़ के साथ करो जो उस में है, ताकि लोग उस से बचें।"

(السنن الكبرى للبيهقى،كتاب الشهادات، باب الرجل من اهل الفقه...إلخ، الحديث: ٢٠٩١٤،ج١٠،ص٣٥٤)

ह़दीस 62 : बयहक़ी ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने ह़या की चादर डाल दी उस की ग़ीबत नहीं।"

(السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الشهادات باب الرجل من اهل الفقه..إلخ، الحديث: ٢٠٩١٥، ج١٠، ص٣٥٥)

या'नी ऐसों की बुराई बयान करना ग़ीबत में दाख़िल नहीं।

ह़दीस 63 : त़बरानी ने मुआ़विय्या बिन ह़ैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "फ़ासिक़ की ग़ीबत नहीं है।" (المعجم الكبير،الحديث: ١٠١١،ج١٩،ص٤١٨)

ह़दीस 64 : सह़ीह़ मुस्लिम में मिक़्दाद बिन असवद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुबालग़े के साथ मदह़ करने वालों को जब तुम देखो, तो उन के मुंह में ख़ाक डाल दो। (صحيح مسلم ، كتاب الزهد..إلخ، باب النهى عن المدح اذا كان فيه افراط..إلخ،الحديث:٣٠٠٢،ص١٥٩٩)

ह़दीस 65 : सह़ीह़ बुख़ारी में अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को सुना कि दूसरे की ता'रीफ़ करता है और ता'रीफ़ में मुबालग़ा करता है। इरशाद फ़रमाया : "तुम ने उसे हलाक कर दिया या उस की पीठ तोड़ दी।" (صحيح البخاري، كتاب الادب، باب ما يكره من التمادح، الحديث:٦٠٦٠،ج٤،ص١١٥)

ह़दीस 66 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कहते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक शख़्स ने एक शख़्स की ता'रीफ़ की, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : "तुझे हलाकत हो तू ने अपने भाई की गर्दन काट दी इस को तीन मरतबा फ़रमाया, जिस शख़्स को किसी की ता'रीफ़ करनी ज़रूरी ही हो तो येह कहे कि मेरे गुमान में फ़ुला ऐसा है अगर उस के इल्म में येह हो कि वोह ऐसा है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस को खूब जानता है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर किसी का तज़्किया न करे।" (صحیح مسلم، کتاب الزھد...إلخ، باب النھی عن المدح... إلخ، الحدیث:٣٠٠٠، ص١٥٩٩)

या'नी जज़्म और यक़ीन के साथ किसी की ता'रीफ़ न करे।

ह़दीस 67 : बयहक़ी ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब फ़ासिक़ की मदह़ की जाती है, रब तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाता है और अ़र्शे इलाही जुम्बिश करने लगता है।" (شعب الإیمان، باب في حفظ اللسان، الحدیث: ٤٨٨٦، ج٤، ص٢٣٠)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

ग़ीबत के येह मा'ना है कि किसी शख़्स के पोशीदा ऐ़ब को [जिस को वोह दूसरों के सामने ज़ाहिर होना पसन्द न करता हो] उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना और अगर उस में वोह बात ही न हो तो येह ग़ीबत नहीं बल्कि बोहतान है क़ुरआने मजीद में फ़रमाया :

لَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ (1) (پ٢٦،الحجرٰت:١٢)

तुम आपस में एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए इस को तो तुम बुरा समझते हो।

---

(1)...***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा।* (پ٢٦، الحجرٰت:١٢)

www.dawateislami.net

अह़ादीस में भी ग़ीबत की बहुत बुराई आई है, चन्द ह़दीसें ज़िक्र कर दी गईं इन्हें ग़ौर से पढ़ो, इस ह़राम से बचने की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है। आज कल मुसलमानों में येह बला बहुत फैली हुई है इस से बचने की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह नहीं करते, बहुत कम मजलिसें ऐसी होती हैं जो चुग़ली और ग़ीबत से मह़फ़ूज़ हों।

मस्अला 1 : एक शख़्स नमाज़ पढ़ता है और रोज़े रखता है मगर अपनी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमानों को ज़रर पहुंचाता है उस की इस ईज़ा रसानी को लोगों के सामने बयान करना ग़ीबत नहीं, क्यूंकि इस ज़िक्र का मक़सद येह है कि लोग उस की इस ह़रकत से वाक़िफ़ हो जाएं और इस से बचते रहें कहीं ऐसा न हो कि उस की नमाज़ और रोज़े से धोका खा जाएं और मुसीबत में मुब्तला हो जाएं। ह़दीस में इरशाद फ़रमाया कि "क्या तुम फ़ाजिर के ज़िक्र से डरते हो जो ख़राबी की बात उस में हैं बयान कर दो ताकि लोग उस से परहेज़ करें और बचें।" (الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج۹، ص٦٧٣، وشعب الإيمان، باب في الستر..إلخ، الحديث: ٩٦٦٦، ج٧، ص١٠٩)

मस्अला 2 : ऐसे शख़्स का ह़ाल जिस का ज़िक्र ऊपर गुज़रा अगर बादशाह या क़ाज़ी से कहा ताकि उसे सज़ा मिले और अपनी ह़रकत से बा'ज़ आ जाए येह चुग़ली और ग़ीबत में दाख़िल नहीं। (الدرالمختار، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج۹، ص٦٧٣) येह हुक्म फ़ासिक़ व फ़ाजिर का है जिस के शर से बचाने के लिये लोगों पर इस की बुराई खोल देना जाइज़ है और ग़ीबत नहीं। अब समझना चाहिये कि बद अ़क़ीदा लोगों का ज़रर फ़ासिक़ के ज़रर से बहुत ज़ाइद है फ़ासिक़ से जो ज़रर पहुंचेगा वोह इस से बहुत कम है, जो बद अ़क़ीदा लोगों से पहुंचता है फ़ासिक़ से अकसर दुन्या का ज़रर होता है और बद मज़हब से तो दीन व ईमान की बरबादी का ज़रर है और बद मज़हब अपनी बद मज़हबी फैलाने के लिये नमाज़ रोज़ा की ब ज़ाहिर ख़ूब पाबन्दी करते हैं, ताकि

www.dawateislami.net

उन का वक़ार लोगों में क़ाइम हो फिर जो गुमराही की बात करेंगे उन का पूरा असर होगा, लिहाज़ा ऐसों की बद मज़्हबी का इज़्हार फ़ासिक़ के फ़िस्क़ के इज़्हार से ज़ियादा अहम है इस के बयान करने में हरगिज़ दरेग़ न करें।

आज कल के बा'ज़ सूफ़ी अपना तक़द्दुस यू ज़ाहीर करते हैं कि हमें किसी की बुराई नहीं करनी चाहिये येह शैत़ानी धोका है मख़्लूक़े ख़ुदा को गुमराहों से बचाना येह कोई मा'मूली बात नहीं, बल्कि येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत है जिस को नाकारा तावीलात से छोड़ना चाहता है और इस का मक़्सूद येह होता है कि मैं हर दिल अ़ज़ीज़ बनूं, क्यूं किसी को अपना मुख़ालिफ़ करूं।

मस्अला 3 : येह मा'लूम है कि जिस में बुराई पाई जाती है अगर इस के वालिद को ख़बर हो जाएगी तो वोह इस ह़रकत से रोक देगा, तो उस के बाप को ख़बर कर दे ज़बानी कह सकता हो तो ज़बानी कहे या तह़रीर के ज़रीए मुत्तलअ़ कर दे और अगर मा'लूम है कि अपने बाप का कहा भी नहीं मानेगा और बाज़ नहीं आएगा तो न कहे कि बिला वजह अ़दावत पैदा होगी। इसी त़रह़ बीवी की शिकायत उस के शोहर से की जा सकती है और रिआ़या की बादशाह से की जा सकती है।

(الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٣)

मगर येह ज़रूर है कि ज़ाहिर करने से उस की बुराई करना मक़्सूद न हो बल्कि अस्ली मक़्सद येह हो कि वोह लोग इस बुराई का इन्सिदाद (या'नी बुराई की रोक थाम) करें और उस की येह आ़दत छूट जाए।

मस्अला 4 : किसी ने अपने मुसलमान भाई की बुराई अफ़सोस के तौ़र पर की, कि मुझे निहायत अफ़सोस है कि वोह ऐसे काम करता है येह ग़ीबत नहीं, क्यूंकि जिस की बुराई की अगर उसे ख़बर भी हो गई तो इस सूरत में वोह बुरा न मानेगा, बुरा उस वक़्त मानेगा जब उसे मा'लूम हो कि इस कहने वाले का मक़्सूद ही बुराई करना है,

www.dawateislami.net

मगर येह ज़रूर है कि इस चीज़ का इज़्हार उस ने ह़सरत व अफ़सोस ही की वजह से किया हो वरना येह ग़ीबत है बल्कि एक क़िस्म का निफ़ाक़ और रिया और अपनी मदह़ सराई है, क्यूंकि इस ने मुसलमान भाई की बुराई की और ज़ाहीर येह किया कि बुराई मक़्सूद नहीं येह निफ़ाक़ हुवा और लोगों पर येह ज़ाहिर किया कि येह काम में अपने लिये और दूसरों के लिये बुरा जानता हूं येह रिया है और चूंकि ग़ीबत को ग़ीबत के त़ौर पर नहीं किया, लिहाज़ा अपने को सुलह़ा में से होना बताया येह तज़्कियए नफ़्स और खुद सताई हुई।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البیع، ج۹، ص٦٧٣)

मस्अला 5 : किसी बस्ती या शहर वालों की बुराई की, मसलन येह कहा कि वहां के लोग ऐसे हैं, येह ग़ीबत नहीं क्यूंकि ऐसे कलाम का येह मक़्सद नहीं होता कि वहां के सब ही लोग ऐसे हैं बल्कि बा'ज़ लोग मुराद होते हैं और जिन बा'ज़ को कहा गया वोह मा'लूम नहीं, ग़ीबत इस सूरत में होती है जब मुअ़य्यन व मा'लूम अश्ख़ास की बुराई ज़िक्र की जाए और अगर उस का मक़्सूद वहां के तमाम लोगों की बुराई करना है तो येह ग़ीबत है।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البیع، ج۹، ص٦٧٤)

मस्अला 6 : फ़क़ीह अबुल्लैस ने फ़रमाया कि ग़ीबत चार क़िस्म की है :

एक कुफ़्र इस की सूरत येह है कि एक शख़्स ग़ीबत कर रहा है उस से कहा गया कि ग़ीबत न करो। कहने लगा : येह ग़ीबत नहीं मैं सच्चा हूं, उस शख़्स ने एक ह़रामे क़त़ई को ह़लाल बताया।

दूसरी सूरत निफ़ाक़ है कि एक शख़्स की बुराई करता है और उस का नाम नहीं लेता मगर जिस के सामने बुराई करता है, वोह उस को जानता पहचानता है, लिहाज़ा येह ग़ीबत करता है और अपने को परहेज़गार ज़ाहिर करता है, येह एक क़िस्म का निफ़ाक़ है।

www.dawateislami.net

तीसरी सूरत मा'सिय्यत है वोह येह कि ग़ीबत करता है और येह जानता है कि येह ह़राम काम है ऐसा शख़्स तौबा करे ।

चौथी सूरत मुबाह़ है वोह येह कि फ़ासिक़े मो'लिन या बद मज़्हब की बुराई बयान करे, बल्कि जब कि लोगों को इस के शर से बचाना मक़्सूद हो तो सवाब मिलने की उम्मीद है ।

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٤)

मस्अला 7 : जो शख़्स अ़लानिया बुरा काम करता है और उस को इस की कोई परवाह नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे, उस की इस बुरी ह़रकत का बयान करना ग़ीबत नहीं, मगर इस की दूसरी बातें जो ज़ाहिर नहीं हैं उन का ज़िक्र करना ग़ीबत में दाख़िल है । ह़दीस में है कि "जिस ने ह़या का ह़िजाब अपने चहरे से हटा दिया, उस की ग़ीबत नहीं ।"

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٤ وشعب الإيمان، باب في الستر..إلخ، الحديث: ٩٦٦٤، ج٧، ص١٠٨)

मस्अला 8 : जिस से किसी बात का मश्वरा लिया गया वोह अगर उस शख़्स का ऐ़ब व बुराई ज़ाहिर करे जिस के मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा है येह ग़ीबत नहीं । ह़दीस में है, "जिस से मश्वरा लिया जाए वोह अमीन है ।" (سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی ان المستشار مؤتمن، الحدیث: ٢٨٣١، ج٤، ص٣٧٥)

लिहाज़ा उस की बुराई ज़ाहिर न करना ख़ियानत है, मसलन किसी के यहां अपना या अपनी अवलाद वग़ैरा का निकाह़ करना चाहता है दूसरे से इस के मुतअ़ल्लिक़ तज़्किरा किया कि मेरा इरादा ऐसा है तुम्हारी क्या राय है उस शख़्स को जो कुछ मा'लूमात हैं बयान कर देना ग़ीबत नहीं ।

इसी त़रह़ किसी के साथ तिजारत वग़ैरा में शिर्कत करना चाहता है या उस के पास कोई चीज़ अमानत रखना चाहता है या किसी के पड़ोस में सुकूनत करना चाहता है और उस के मुतअ़ल्लिक़ दूसरे से मश्वरा लेता है येह शख़्स उस की बुराई बयान करे ग़ीबत नहीं ।

(ردالمحتار، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٥)

www.dawateislami.net

मस्अला 9 : जो बद मज़्हब अपनी बद मज़्हबी छुपाए हुए है जैसा कि रवाफ़िज़ के यहां तक़िय्या है या आज कल के बहुत से वहाबी भी अपनी वहाबिय्यत छुपाते और ख़ुद को सुन्नी ज़ाहिर करते हैं और जब मौक़अ़ पाते हैं तो बद मज़्हबी की आहिस्ता आहिस्ता तब्लीग़ करते हैं। उन की बद मज़्हबी का इज़्हार ग़ीबत नहीं कि लोगों को उन के मक्र व शर से बचाना है और अगर अपनी बद मज़्हबी को छुपाता नहीं बल्कि अ़लानिय्या ज़ाहिर करता है, जब भी ग़ीबत नहीं कि वोह अ़लानिय्या बुराई करने वालों में दाख़िल है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٥)وغيره

मस्अला 10 : किसी के ज़ुल्म की शिकायत ह़ाकिम के पास करना भी ग़ीबत नहीं मसलन येह कि फ़ुलां शख़्स ने मुझ पर येह ज़ुल्म व ज़ियादती की है, ताकि ह़ाकिम उस का इन्साफ़ व दाद रसी करे। इसी त़रह़ मुफ़्ती के सामने इस्तिफ़्ता पेश करने में किसी की बुराई की, कि फ़ुलां शख़्स ने मेरे साथ येह किया है इस से बचने की क्या सूरत है? मगर इस सूरत में बेहतर येह है कि नाम न ले, बल्कि यूं कहे कि एक शख़्स ने एक शख़्स के साथ येह किया बल्कि ज़ैद व अ़म्र से ता'बीर करे जैसा कि इस ज़माने में इस्तिफ़्ता की उ़मूमन येही सूरत होती है फिर भी अगर नाम ले दिया जब भी जाइज़ है इस में भी क़बाह़त नहीं।

जैसा कि ह़दीसे सह़ीह़ में आया, कि हिन्दा ने अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के मुतअ़ल्लिक़ ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत में शिकायत की, कि वोह बख़ील हैं इतना नफ़क़ा नहीं देते जो मुझे और मेरे बच्चों को काफ़ी हो मगर जब कि मैं उन की ला इ़ल्मी में कुछ ले लूं, इरशाद फ़रमाया : "तुम इतना ले सकती हो जो मा'रूफ़ के साथ तुम्हारे और बच्चों के लिये काफ़ी हो।" (ردالمحتار کتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٥ و صحيح البخاري، كتاب النفقات، باب إذا لم ينفق الرجل...إلخ، الحديث:٥٣٦٤، ج٣،ص٥١٦)

www.dawateislami.net

मस्अला 11 : एक सूरत इस के जवाज़ की येह है कि इस से मक़सूद मबीअ़ का ऐ़ब बयान करना हो मसलन ग़ुलाम को बेचना चाहता है और इस ग़ुलाम में कोई ऐ़ब है चोर या ज़ानी है इस का ऐ़ब मुश्तरी के सामने बयान कर देना जाइज़ है। यूहीं किसी ने देखा कि मुश्तरी बाएअ़ को ख़राब रूपिया देता है इस से उस की ह़रकत को ज़ाहिर कर सकता है। (ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٥)

मस्अला 12 : एक सूरत जवाज़ की येह भी है की इस ऐ़ब के ज़िक्र से मक़सूद इस की बुराई नहीं है, बल्कि उस शख़्स की मा'रेफ़त व शनाख़्त मक़्सूद है मसलन जो शख़्स इन उ़यूब के साथ मुलक़्क़ब है तो मक़सूद मा'रेफ़त है न बयाने ऐ़ब। जैसे आ'मा, आ'मश, आ'रज, अह़वल, सह़ाबए किराम में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम नाबीना थे और रिवायतों में इन के नाम के साथ आ'मा आता है। मुह़द्दिसीन में बड़े ज़बरदस्त पाये के सुलैमान आ'मश है आ'मश के मा'ना चन्धे के हैं येह लफ़्ज़ उन के नाम के साथ ज़िक्र किया जाता है। इसी त़रह़ यहां भी बा'ज़ मरतबा मह़ज़ पहचानने के लिये किसी को अन्धा या काना या ठिंगना या लम्बा कहा जाता है, येह ग़ीबत में दाख़िल नहीं।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٥)

मस्अला 13 : ह़दीस के राविर्यों और मुक़द्दमे के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जरह़ करना और उन के उ़यूब बयान करना जाइज़ है अगर राविर्यों की ख़राबियां बयान न की जाएं तो ह़दीसे सह़ीह़ और ग़ैर सह़ीह़ में इम्तियाज़ न हो सकेगा। इसी त़रह़ मुसन्निफ़ीन के ह़ालात न बयान किये जाएं तो कुतुबे मुअ़तमदा वग़ैर मुअ़तमदा में फ़र्क़ न रहेगा। गवाहों पर जरह़ न की जाए तो ह़ुक़ूक़े मुस्लिमीन की निगेहदाश्त न हो सकेगी,

www.dawateislami.net

अव्वल से आख़िर तक ग्यारह सूरते वोह है, जो ब ज़ाहिर ग़ीबत हैं और ह़क़ीक़त में ग़ीबत नहीं और इन में उ़यूब का बयान करना जाइज़ है, बल्कि बा'ज़ सूरतों में वाजिब है।

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٥)

मस्अला 14 : ग़ीबत जिस त़रह़ ज़बान से होती है फ़े'ल से भी होती है। सराह़त के साथ बुराई की जाए या ता'रीज़ व किनाया के साथ हो सब सूरतें ह़राम हैं, बुराई को जिस नोइय्यत से समझाएगा सब ग़ीबत में दाख़िल है। ता'रीज़ की येह सूरत है कि किसी के ज़िक्र करते वक़्त येह कहा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मैं ऐसा नहीं जिस का येह मत़लब हुवा कि वोह ऐसा है। किसी की बुराई लिख दी येह भी ग़ीबत है। सर वग़ैरा की ह़रकत भी ग़ीबत हो सकती है मसलन किसी की ख़ूबियों का तज़किरा था उस ने सर के इशारे से येह बताना चाहा कि इस में जो कुछ बुराइयां हैं इन से तुम वाक़िफ़ नहीं। होंटों और आंखों और भवों और ज़बान या हाथ के इशारे से भी ग़ीबत हो सकती है । एक ह़दीस में है, ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं : एक औ़रत हमारे पास आई, जब वोह चली गई तो मैं ने हाथ के इशारे से बताया कि वोह ठिंगनी है। हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया कि "तुम ने इस की ग़ीबत की।"

(الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٦ وانظر: المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، الحديث: ٢٥١٠٣، ج٩، ص٤٦٣ و شعب الإيمان للبيهقي، باب في تحريم أعراض الناس، الحديث: ٦٧٦٧، ج٥، ص٣١٣)

मस्अला 15 : एक सूरत ग़ीबत की नक़्ल है मसलन किसी लंगड़े की नक़्ल करे और लंगड़ा कर चले या जिस चाल से कोई चलता है

www.dawateislami.net

उस की नक़्ल उतारी जाए येह भी ग़ीबत है, बल्कि ज़बान से कह देने से येह ज़ियादा बुरा है क्यूंकि नक़्ल करने में पूरी तस्वीर कशी और बात को समझाना पाया जाता है कि कहने में वोह बात नहीं होती।

(الدرالمختار،کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البیع، ج۹، ص٦٧٦)

मस्अला 16 : ग़ीबत की एक सूरत येह भी है कि येह कहा कि एक शख़्स हमारे पास इस क़िस्म का आया था या मैं एक शख़्स के पास गया जो ऐसा है और मुख़ात़ब को मा'लूम है कि फ़ुलां शख़्स का ज़िक्र करता है, अगर्चे मुतकल्लिम ने किसी का नाम नहीं लिया मगर जब मुख़ात़ब को इन लफ़्ज़ों से समझा दिया तो ग़ीबत हो गई क्यूंकि जब मुख़ात़ब को येह मा'लूम है कि इस के पास फ़ुलां आया था या येह फ़ुलां के पास गया था तो अब नाम लेना न लेना दोनों का एक हुक्म है, हां अगर मुख़ात़ब ने शख़्से मुअ़य्यन को नहीं समझा मसलन इस के पास बहुत से लोग आए या येह बहुतों के यहां गया था मुख़ात़ब को येह पता न चला कि येह किस के मुतअ़ल्लिक़ कह रहा है तो ग़ीबत नहीं। (الدرالمختار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البیع، ج۹، ص٦٧٦)

मस्अला 17 : जिस त़रह़ ज़िन्दा आदमी की ग़ीबत हो सकती है मरे हुए मुसलमान को बुराई के साथ याद करना भी ग़ीबत है, जब कि वोह सूरतें न हों जिन में उ़यूब का बयान करना ग़ीबत में दाख़िल नहीं। मुस्लिम की ग़ीबत जिस त़रह़ ह़राम है काफ़िर ज़िम्मी की भी ना जाइज़ है (ज़िम्मी उस काफ़िर को कहते हैं जिस के जान व माल की ह़िफ़ाज़त का बादशाहे इस्लाम ने जिज़्ये के बदले ज़िम्मा लिया हो) कि इन के ह़ुक़ूक़ भी मुस्लिम की त़रह़ है काफ़िर ह़रबी की बुराई करना ग़ीबत नहीं। (वोह काफ़िर जिस ने मुसलमानों से जिज़्ये के इ़वज़ अ़क़्दे ज़िम्मा (या'नी अपनी जान व माल की ह़िफ़ाज़त का अ़हद) न किया हो, ह़रबी कहलाता है)। (الدرالمختار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البیع، ج۹، ص٦٧٦)

www.dawateislami.net

मस्अला 18 : किसी की बुराई उस के सामने करना अगर ग़ीबत में दाख़िल न भी हो जब कि ग़ीबत में पीठ पीछे बुराई करना मो'तबर हो मगर येह इस से बढ़ कर ह़राम है क्यूंकि ग़ीबत में जो वजह है वोह येह है कि ईज़ाए मुस्लिम है वोह यहां ब द-र-जए औला पाई जाती है ग़ीबत में तो येह एह़तिमाल है कि उसे इत्तिलाअ़ मिले या न मिले अगर उसे इत्तेलाअ़ न हुई तो ईज़ा भी न हुई, मगर एह़तिमाले ईज़ा को यहां ईज़ा क़रार दे कर शरए मुत़ह्हर ने ह़राम किया और मुंह पर इस की मज़म्मत करना तो ह़क़ीक़तन ईज़ा है फिर येह क्यूं ह़राम न हो।
(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٦)

बा'ज़ लोगों से जब कहा जाता है कि तुम फुलां की ग़ीबत क्यूं करते हो, वोह निहायत दिलेरी के साथ येह कहते हैं मुझे इस का डर पड़ा है ! चलो मैं उस के मुंह पर येह बातें कह दूंगा। इन को येह मा'लूम होना चाहिये कि पीठ पीछे इस की बुराई करना ग़ीबत व ह़राम है और मुंह पर कहोगे तो येह दूसरा ह़राम होगा अगर तुम इस के सामने कहने की जुरअत रखते हो तो इस की वजह से ग़ीबत ह़लाल नहीं होगी।

मस्अला 19 : ग़ीबत के त़ौर पर जो ड़यूब बयान किये जाएं वोह कई क़िस्म के हैं, इस के बदन में एब हो मसलन अन्धा, काना, लंगड़ा, लूला, होंट कटा, नक चिपटा वग़ैरा या नसब के ए'तेबार से वोह एब समझा जाता हो मसलन इस के नसब में येह ख़राबी है इस की दादी, नानी चमारी थी, हिन्दूस्तान वालों ने पेशे को भी नसब ही का हुक्म दे रखा है, लिहाज़ा बत़ौरे ऐब किसी को "धुना"-"जूलाहा" कहना भी ग़ीबत व ह़राम है, अख़लाक़ व अफ़आ़ल की बुराई या इस की बातचीत में ख़राबी मसलन हकला या तोतला या दीनदारी में वोह ठीक न हो येह सब सूरतें ग़ीबत में दाख़िल हैं, यहां तक कि उस के कपड़े अच्छे न हों या मकान अच्छा न हो इन चीज़ों को भी इस त़रह ज़िक्र करना जो इसे बुरा मा'लूम हो, ना जाइज़ है। (ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٦)

www.dawateislami.net

मस्अला 20 : जिस के सामने किसी की ग़ीबत की जाए उसे लाज़िम है कि ज़बान से इन्कार कर दे मसलन कह दे कि मेरे सामने इस की बुराई न करो। अगर ज़बान से इन्कार करने में इस को ख़ौफ़ व अन्देशा है तो दिल से इसे बुरा जाने और अगर मुमकिन हो तो येह शख़्स जिस के सामने बुराई की जा रही है वहां से उठ जाए या इस बात को काट कर कोई दूसरी बात शुरूअ़ कर दे ऐसा न करने में सुनने वाला भी गुनहगार होगा, ग़ीबत का सुनने वाला भी ग़ीबत करने वाले के हुक्म में है। ह़दीस में है,"जिस ने अपने मुस्लिम भाई की आबरू ग़ीबत से बचाई, **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर येह है कि वोह उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे।" (ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧ ومجمع الزوائد، كتاب الأدب، باب فيمن ذب..إلخ، الحديث: ١٣١٥٠، ج٨، ص١٧٩)

मस्अला 21 : जिस की ग़ीबत की अगर उस को इस की ख़बर हो गई तो उस से मुआ़फ़ी मांगनी ज़रूरी है और येह भी ज़रूरी है कि उस के सामने येह कहे कि मैं ने तुम्हारी इस इस त़रह़ ग़ीबत या बुराई की, तुम मुआ़फ़ कर दो उस से मुआ़फ़ कराए और तौबा करे तब इस से बरियुज़्ज़िम्मा होगा और अगर उस को ख़बर न हुई हो तो **तौबा** और नदामत काफ़ी है। (الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧)

मस्अला 23 : जिस की ग़ीबत की है उसे ख़बर न हुई और उस ने तौबा कर ली इस के बा'द उसे ख़बर मिली कि फ़ुलां ने मेरी ग़ीबत की है आया उस की तौबा सह़ीह़ है या नहीं? इस में उ़-लमा के दो क़ौल हैं एक क़ौल येह है कि येह तौबा सह़ीह़ है **अल्लाह** तआ़ला दोनों की मग़फ़िरत फ़रमा देगा, जिस ने ग़ीबत की उस की मग़फ़िरत तौबा से हुई और जिस की ग़ीबत की गई उस को जो तक्लीफ़ पहुंची और उस ने दर गुज़र किया, इस वजह से इस की मग़फ़िरत हो जाएगी।

www.dawateislami.net

और बा'ज़ उ़-लमा येह फ़रमाते है कि इस की तौबा मुअ़ल्लक़ रहेगी अगर वोह शख़्स जिस की ग़ीबत हुई ख़बर पहुंचने से पहले ही मर गया तो तौबा सह़ीह़ है और तौबा के बा'द उसे ख़बर पहुंच गई तो सह़ीह़ नहीं, जब तक उस से मुआ़फ़ न कराए। बोहतान की सूरत में तौबा करना और मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने बोहतान बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूर है कि मैं ने झूट कहा था जो फ़ुला पर मैं ने बोहतान बांधा था।

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧)

मस्अला 23 : मुआ़फ़ी मांगने में येह ज़रूर है कि ग़ीबत के मुक़ाबिल में उस की सनाए ह़सन करे और उस के साथ इज़्हारे मह़ब्बत करे कि उस के दिल से येह बात जाती रहे और फ़र्ज़ करो इस ने ज़बान से मुआ़फ़ कर दिया मगर उस का दिल इस से ख़ुश न हुवा तो उस का मुआ़फ़ी मांगना और इज़्हारे मह़ब्बत करना ग़ीबत की बुराई के मुक़ाबिल हो जाएगा और आख़िरत में मुआख़ज़ा न होगा।

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧)

मस्अला 24 : इस ने मुआ़फ़ी मांगी और उस ने मुआ़फ़ कर दिया मगर इस ने सच्चाई और ख़ुलूसे दिल से मुआ़फ़ी नहीं मांगी थी मह़ज़ ज़ाहिरी और नुमाइशी येह मुआ़फ़ी थी तो हो सकता है कि आख़िरत में मुआख़ज़ा हो क्यूंकि उस ने येह समझ कर मुआ़फ़ किया था कि येह ख़ुलूस के साथ मुआ़फ़ी मांग रहा है।

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧)

मस्अला 25 : इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى येह फ़रमाते है कि जिस की ग़ीबत की वोह मर गया या कहीं ग़ाइब हो गया उस से क्यूं कर मुआ़फ़ी मांगे येह मुआ़मला बहुत दुश्वार हो गया, इस को चाहिये कि नेक काम की कसरत करे ताकि अगर इस की नेकियां ग़ीबत के बदले में उसे दे दी जाएं, जब भी इस के पास नेकियां बाक़ी रह जाएं।

(ردالمحتار، كتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 26 : अगर इस की एसी बुराइयां बयान की हैं जिन को वोह छुपाता था या'नी येह नहीं चाहता था कि लोग इन पर मुत्तलअ़ हों तो मुआ़फ़ी मांगने में इन उ़यूब की तफ़सील न करे, बल्कि मुबहम तौ़र पर येह कह दे कि मैं ने तुम्हारे उ़यूब लोगों के सामने ज़िक्र किये हैं तुम मुआ़फ़ कर दो और अगर ऐसे उ़यूब न हों तो तफ़सील के साथ बयान करे। इसी त़रह़ अगर वोह बातें ऐसी हों जिन के ज़ाहिर करने में फ़ितना पैदा होने का अन्देशा है तो ज़ाहिर न करे बा'ज़ उ़-लमा का येह क़ौल है कि हुक़ूक़े मजहूला को मुआ़फ़ कर देना भी सह़ीह़ है और इस त़रह़ भी मुआ़फ़ी हो सकती है, लिहाज़ा इस क़ौल पर बिना की जाए और ऐसी ख़ास सूरतों में तफ़सील न की जाए।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٧)

मस्अला 27 : दो शख़्सों में झगड़ा था दोनों ने मा'ज़िरत के साथ मुसाफ़ह़ा किया येह भी मुआ़फ़ी का एक त़रीक़ा है। जिस की ग़ीबत की है वोह मर गया तो वुरसा को येह ह़क़ नहीं कि मुआ़फ़ करें उन के मुआ़फ़ करने का ए'तेबार नहीं। (ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٧٨)

मस्अला 28 : किसी के मुंह पर उस की ता'रीफ़ करना मन्अ़ है और पीठ पीछे ता'रीफ़ की मगर येह जानता है कि मेरे इस ता'रीफ़ करने की ख़बर उस को पहुंच जाएगी येह भी मन्अ़ है, तीसरी सूरत येह है कि पसे पुश्त ता'रीफ़ करता है इस का ख़याल भी नहीं करता कि उसे ख़बर पहुंच जाएगी या न पहुंचेगी येह जाइज़ है, मगर येह ज़रूर है कि ता'रीफ़ में जो ख़ूबियां बयान करे वोह इस में हों, शुअ़रा की त़रह़ अन हुई बातों के साथ ता'रीफ़ न करे कि येह निहायत दरजा क़बीह़ है। (الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب الثالث والعشرون في الغيبة، ج٥، ص٣٦٣)

www.dawateislami.net

बुग्ज़ व ह़सद का बयान [1]

कुरआने मजीद में इरशाद हुवा :

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْــَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۳۲﴾ [2]

(پ ۵، النسآء : ۳۲)

और उस की आरज़ू मत करो जिस से अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी मर्दों के लिये उन की कमाई से ह़िस्सा है और औ़रतों के लिये उन की कमाई से ह़िस्सा और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो बेशक अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

और फ़रमाता है :

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ ع [3]

(پ ۳۰، الفلق: ۵)

तुम कहो मैं पनाह मागता हूं ह़ासिद के शर से, जब वोह ह़सद करता है।

ह़दीस 1 : इब्ने माजा ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खाती है और सदक़ा ख़त़ा को बुझाता है जिस त़रह़ पानी आग हो बुझाता है।" (سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد،الحديث: ۴۲۱۰، ج۴ص ۴۷۳) इसी की मिस्ल अबू दावूद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की।

---

(1) ...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा.16, जि. 3 स. 539

(2) ...... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और उस की आरज़ू न करो जिस से अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी मर्दों के लिये उन की कमाई से ह़िस्सा है और औ़रतों के लिये उन की कमाई से ह़िस्सा और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।*

(3) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले।*

www.dawateislami.net

ह़दीस 2 : दैलमी ने मुस्नदुल फ़िरदौस में मुआ़विया बिन हैदा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया कि : "ह़सद ईमान को ऐसा बिगाड़ता है जिस त़रह़ ऐलवा (एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को बिगाड़ता है।"

(الجامع الصغیر للسیوطي،حرف الحاء،الحدیث:٣٨١٩،ص٢٣٢)

ह़दीस 3 : इमाम अह़मद व तिरमिज़ी ने ज़ुबैर बिन अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : "अगली उम्मत की बीमारी तुम्हारी त़रफ़ भी आई वोह बीमारी ह़सद व बुग़्ज़ है, वोह मुन्डने वाला है, दीन को मुन्डता है, बालों को नहीं मुन्डता। क़सम है उस की जिस के हाथ में मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم की जान है जन्नत में नहीं जाओगे जब तक ईमान न लाओ और मोमिन नहीं होंगे जब तक आपस में मह़ब्बत न करो, मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूं कि जब उसे करोगे आपस में मह़ब्बत करने लगोगे, आपस में सलाम को फैलाओ।"

(المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند الزبیر بن العوام،الحدیث:١٤١٢،ج١،ص٣٤٨،

و جامع الترمذي،کتاب صفة القیامة...إلخ، باب: ١٢١،الحدیث:٢٥١٨،ج٤،ص٢٢٨

ह़दीस 4 : त़बरानी ने अ़ब्दुल्लाह बिन बुसुर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फरमाया कि "ह़सद और चुग़ली और कहानत ना मुझ से हैं और न मैं इन से हूं।" (مجمع الزوائد،کتاب الادب،باب ماجاء في الغیبة و النمیمة،الحدیث:١٣١٢٦، ج٨، ص١٧٢) या'नी मुसलमान को इन चीज़ों से बिल्कुल तअ़ल्लुक़ न होना चाहिये।

ह़दीस 5 : सह़ीह़ बुख़ारी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : "आपस में न ह़सद

www.dawateislami.net

करो, न बुग्ज़ करो, न पीठ पीछे बुराई करो और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दे भाई भाई हो कर रहो।"

(صحيح البخاري، كتاب الادب، باب يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ..إلخ،الحديث: ٦٠٦٦،ج٤، ص١١٧)

हदीस 6 : सहीह बुख़ारी में इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी, कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि "हसद नही है मगर दो पर, एक वोह शख़्स जिसे ख़ुदा ने किताब दी या'नी कुरआन का इल्म अता फ़रमाया वोह इस के साथ रात में कियाम करता है और दूसरा वोह कि ख़ुदा ने इसे माल दिया वोह दिन और रात के अवकात में सदका करता है।"

(صحيح البخاري، كتاب فضائل القرآن، باب اغتباط صاحب القرآن، الحديث: ٥٠٢٥،ج٣، ص٤١٠)

हदीस 7 : सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया " हसद नहीं है मगर दो शख़्सो पर। एक वोह शख़्स जिसे ख़ुदा ने कुरआन सिखाया वोह रात और दिन के अवकात में इस की तिलावत करता है, इस के पड़ोसी ने सुना तो कहने लगा, काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जो फुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी उस की तरह अमल करता। दूसरा वोह शख़्स कि ख़ुदा ने उसे माल दिया वोह हक़ में माल को ख़र्च करता है, किसी ने कहा, काश मुझे भी वैसा ही दिया जाता जैसा फुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी इसी की तरह अमल करता।"

(صحيح البخاري،كتاب فضائل القرآن، باب اغتباط صاحب القرآن، الحديث: ٥٠٢٦، ج٣، ص٤١٠)

इन दोनों हदीसों में हसद से मुराद गिब्ता है जिस को लोग रश्क कहते हैं, जिस के येह मा'ना हैं कि दूसरे को जो ने'मत मिली वैसी मुझे भी मिल जाए और येह आरज़ू न हो कि इसे न मिलती या

www.dawateislami.net

इस से जाती रहे और ह़सद में येह आरज़ू होती है, इसी वजह से ह़सद मज़्मूम है और गिब्त़ा मज़्मूम नहीं। इमाम बुख़ारी के तर्जमतुल लुबाब से भी येही मा'लूम होता है कि इन ह़दीसों में गिब्त़ा मुराद है, लिहाज़ा इन ह़दीसों के येह मा'ना हुए कि यही दो चीज़ें गिब्त़ा करने की हैं, कि येह दोनों ख़ुदा की बहुत बड़ी ने'मतें हैं गिब्त़ा इन पर करना चाहिये न कि दूसरी ने'मतों पर والله تعالى اعلم بالصواب

ह़दीस 8 : बयहक़ी ने ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنھا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अल्लाह तआ़ला शा'बान की पन्दरहवीं शब में अपने बन्दों पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है, जो इस्तग़्फ़ार करते हैं उन की मग़्फ़िरत करता है और जो रह़्म की दरख़्वास्त करते हैं उन पर रह़्म करता है और अ़दावत वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।

(شعب الإيمان، باب في الصيام، ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ٣٨٣٥، ج٣، ص٣٨٣)

ह़दीस 9 : इमाम अह़मद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''हर हफ़्ते में दो बार दो शम्बा और पन्ज शम्बा को लोगों के आ'माल नामे पेश होते हैं, हर बन्दे की मग़्फ़िरत होती है मगर वोह शख़्स कि उस के और उस के भाई के दरमियान अ़दावत हो उन के मुतअ़ल्लिक़ येह फ़रमाता है : ''इन्हें छोड़ दो उस वक़्त तक कि बाज़ आ जाएं।''

(كنز العمال، كتاب الاخلاق، باب الحقد و الشحناء، الحديث: ٧٤٤٩، ج٣، ص١٨٧)

ह़दीस 10 : त़बरानी ने उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُما से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दो शम्बा और पन्ज शम्बा को अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर लोगों के आ'माल

www.dawateislami.net

पेश होते हैं, सब की मग़फ़िरत फ़रमा देता है मगर जो दो शख़्स बाहम अ़दावत रखते हैं और वोह शख़्स जो क़त़ए़ रह़्म करता है।''

(المعجم الكبير، الحديث:٤٠٩، ج١، ص١٦٧)

ह़दीस 11 : इमाम अह़मद व अबू दावूद तिरमिज़ी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रावी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दो शम्बा और पन्ज शम्बा के दिन जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं, जिस बन्दे ने शिर्क नहीं किया है उस की मग़फ़िरत की जाती है, मगर जो शख़्स ऐसा है कि उस के और उस के भाई के दरमियान अ़दावत है, इन के मुतअ़ल्लिक़ कहा जाता है इन्हें मोहलत दो यहां तक कि येह दोनों सुल्ह़ कर लें।''

(سنن أبي داود، كتاب الأدب، باب فيمن يهجر أخاه المسلم،الحديث:٤٩١٦،ج٤،ص٣٦٤

و جامع الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في المتهاجرين،الحديث:٢٠٣٠،ج٣،ص٤١٢)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

ह़सद ह़राम है, अह़ादीस में इस की बहुत मज़म्मत वारिद हुई। ह़सद के येह मा'ना हैं कि किसी शख़्स में ख़ूबी देखी इस को अच्छी ह़ालत में पाया इस के दिल में येह आरज़ू है कि येह ने'मत इस से जाती रहे और मुझे मिल जाए और अगर येह तमन्ना है कि मैं भी वैसा हो जाऊं मुझे भी वोह ने'मत मिल जाए येह ह़सद नहीं इस को ग़िब्त़ा कहते हैं जिस को लोग रश्क से ता'बीर करते हैं।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب الثالث والعشرون في الغيبة، ج٥، ص٢٦٢ ـ ٣٦٣)

मस्अला 1 : येह आरज़ू कि जो ने'मत फुलां के पास है वोह बि ऐ़निहा (या'नी वोही) मुझे मिल जाए येह ह़सद है, क्यूंकि बि ऐ़निही वोही चीज़ इस को जब मिलेगी कि उस से जाती रहे और अगर येह आरज़ू है कि इस की मिस्ल मुझे मिले येह ग़िब्त़ा है क्यूंकि इस से ज़ाइल होने की आरज़ू नहीं पाई गई।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب الثالث والعشرون في الغيبة، ج٥، ص٣٦٣)

www.dawateislami.net

हृदीस में फ़रमाया है कि : "हृसद नहीं है मगर दो चीज़ों में, एक वोह शख़्स जिस को ख़ुदा ने माल दिया है और वोह राहे हक़ में सर्फ़ करता है, दूसरा वोह शख़्स जिस को ख़ुदा ने इल्म दिया है, वोह लोगों को सिखाता है और इल्म के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करता है।"

("صحيح البخاري"،كتاب العلم، باب الإغتباط في العلم و الحكمة،الحديث:٧٣،ج١،ص٤٣)

इस हृदीस से ब ज़ाहिर ऐसा मा'लूम होता है कि इन दो चीज़ों में हृसद जाइज़ है मगर बग़ौर देखने से येह मा'लूम होता है कि यहां भी हृसद ह़राम है, बा'ज़ उ़-लमा ने येह बताया कि इस हृदीस में हृसद ब मा'ना ग़िब्ता है। इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के तर्जमतुल लुबाब से भी यही पता चलता है।

और बा'ज़ ने कहा कि हृदीस का येह मत़लब है कि अगर हृसद जाइज़ होता तो इन में जाइज़ होता मगर इन में भी ना जाइज़ है। जैसा कि हृदीस, لَا شُؤْمَ اِلَّا فِى الدَّارِ (الحديث) में इसी क़िस्म की तावील की जाती है। ("صحيح مسلم"،كتاب الأدب، باب لاعدوىٰ ولاطيرة، الحديث:٢٢٢٥، ص١٢٢٢، بالفاظٍ مختلفة)

और बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि मआ़नए हृदीस येह हैं कि हृसद उन्हीं दोनों में हो सकता है और चीज़ें तो इस क़ाबिल ही नहीं कि इन में हृसद पाया जा सके कि हृसद के मा'ना येह हैं कि दूसरे में कोई ने'मत देखे और येह आरज़ू करे कि वोह मुझे मिल जाए और दुन्या की चीज़ें ने'मत नहीं कि जिन की तहसील की फ़िक्र हो दुन्या की चीज़ों का मआल **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी है और येह चीज़ें वोह हैं कि इन का मआल **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी व रिज़ा है, लिहाज़ा ने'मत जिस का नाम है वोह येही हैं इन में हृसद हो सकता है। (الفتاوىٰ الهندية، كتاب الكراهية، الباب الثالث والعشرون في الغيبة، ج٥، ص٣٦٢وغيره)

www.dawateislami.net

तकब्बुर का बयान[1]

ह़दीस 11 : मैं तुम को जन्नत वालों की ख़बर न दूं, वोह ज़ईफ़ हैं जिन को लोग ज़ईफ़ व ह़क़ीर जानते हैं [मगर है येह कि] अगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर क़सम खा बैठे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) इस को सच्चा कर दे और क्या जहन्नम वालों की ख़बर न दूं वोह सख़्त गो, सख़्त ख़ू, तकब्बुर करने वाले हैं।

(صحيح البخاري، كتاب التفسير، باب ﴿عُتُلٍّۭ بَعۡدَ ذٰلِكَ زَنِيۡمٍ ۙ﴾، الحديث:٤٩١٨، ج٣، ص٣٦٣)

ह़दीस 12 : जिस किसी के दिल में राई बराबर ईमान होगा वोह जहन्नम में नहीं जाएगा और जिस किसी के दिल में राई बराबर तकब्बुर होगा वोह जन्नत में नहीं जाएगा। (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر و بيانه، الحديث:٩١، ص٦١)

दोनों जुमलों की वोही तावील है जो इस मक़ाम में मशहूर है।

ह़दीस 13 : तीन शख़्स हैं जिन से क़ियामत के दिन न तो **अल्लाह** तआ़ला कलाम करेगा, न इन को पाक करेगा, न इन की त़रफ़ नज़र फ़रमाएगा और इन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है, (1) बूढ़ा ज़िनाकार (2) बादशाह कज़्ज़ाब और (3) मोह़ताज मुतकब्बिर।

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم اسبال الازار...إلخ، الحديث:١٠٧، ص٦٨)

ह़दीस 14 : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि "किब्रिया और अ़ज़मत मेरी सिफ़तें हैं, जो शख़्स इन में से किसी एक में मुझ से मुनाज़अ़त करेगा, उसे जहन्नम में डाल दूंगा।"

(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب الغضب و الكبر، الفصل الاول، الحديث: ٥١١٠، ج٣، ص٩٢

و سنن أبي داود، كتاب اللباس، باب ماجاء في الكبر، الحديث: ٤٠٩٠، ج٤، ص٨١)

ह़दीस 15 : आदमी अपने को [अपने मर्तबे से ऊंचे मर्तबे की त़रफ़] ले जाता रहता है यहां तक कि जब्बारीन में लिख दिया जाता है, फिर जो इन्हें पहुंचेगा उसे भी पहुंचेगा।

(جامع الترمذي، كتاب البر و الصلة، باب ماجاء في الكبر، الحديث:٢٠٠٧، ج٣، ص٤٠٣)

---

(1)....... बहारे शरीअ़त, हिस्सा.16, जि.3, स. 546

www.dawateislami.net

ह़दीस 16 : मुतकब्बिरीन का ह़श्र क़ियामत के दिन च्यूंटियों की बराबर जिस्मों में होगा और इन की सूरतें आदमियों की होंगी, हर त़रफ़ से इन पर ज़िल्लत छाए हुए होगी उन को खींच कर जहन्नम के क़ैद ख़ाने की त़रफ़ ले जाएंगे जिस का नाम बूलस है, इन के ऊपर आगों की आग होगी, जहन्नमियों का निचोड़ इन्हें पिलाया जाएगा जिस को त़ीनतुल ख़बाल कहते हैं ।

(جامع الترمذي، كتاب صفة القيامة...إلخ،باب:١١٢،الحديث:٢٥٠٠،ج٤،ص٢٢١)

ह़दीस 17 : जो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये तवाज़ोअ़ करता है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उस को बुलन्द करता है, वोह अपने नफ़्स में छोटा मगर लोगों की नज़रों में बड़ा है और जो बड़ाई करता है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) इस को पस्त करता है, वोह लोगों की नज़र में ज़लील है और अपने नफ़्स में बड़ा है, वोह लोगों के नज़दीक कुत्ते या सुवर से भी ज़ियादा ह़क़ीर है । (شعب الإيمان، باب في حسن الخلق، فصل في التواضع، الحديث:٨١٤٠، ج٦، ص٢٧٦)

ह़दीस 18 : तीन चीज़ें नजात देने वाली है और तीन हलाक करने वाली हैं :

नजात वाली चीजें येह हैं : (1) पोशीदा और ज़ाहिर में अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से तक़्वा, (2) ख़ुशी व नाख़ुशी में ह़क़ बात बोलना, (3) मालदारी और एह़तियाज की ह़ालत में दरमियानी चाल चलना ।

हलाक करने वाली येह हैं : (1) ख़्वाहिशे नफ़्सानी की पैरवी करना और (2) बुख़्ल की इत़ाअ़त और (3) अपने नफ़्स के साथ घमन्ड करना, येह सब में सख़्त है ।

(شعب الإيمان، باب في معالجة كل ذنب بالتوبة، فصل في الطبع على القلب، الحديث:٧٢٥٢، ج٥، ص٤٥٢)

www.dawateislami.net

वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान [1]

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ قُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ [2]

(پ ۱، البقرۃ: ۸۳)

और जब हम ने बनी इसराईल से अ़हद लिया कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा किसी को न पूजना और मां बाप और रिश्ते वालों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ भलाई करना और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो।

और फ़रमाता है :

قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَیْرٍ فَلِلْوَالِدَیْنِ وَ الْاَقْرَبِیْنَ وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۲۱۵﴾ [3]

(پ ۲، البقرۃ: ۲۱۵)

तुम फ़रमाओ जो कुछ नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्ते वालों और यतीमों और मिस्कीनों और राह गिर के लिये हो और जो कुछ भलाई करोगे, बेशक **अल्लाह** इस को जानता है।

---

(1)..... बहारे शरीअ़त, हि़स्सा.16, जि. 3, स. 548

(2)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब हम ने बनी इसराईल से अ़हद लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से और लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो।

(3)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो बेशक **अल्लाह** उसे जानता है।

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًاؕ ﴿۲۴﴾ (1)

(پ ۱۵، بنیۤ اسرآءیل: ۲۳ ـ ۲۴)

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से उफ़ न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से इ़ज़्ज़त की बात कहना और उन के लिये आ़जिज़ी का बा'ज़ू बिछा दे नर्म दिली से और येह कह कि ऐ मेरे परवर दगार उन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि उन्हों ने बचपन में मुझे पाला।

और फ़रमाता है :

وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ حُسْنًاؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَاؕ (2)

(پ ۲۰، العنکبوت: ۸)

और हम ने इन्सान को मां बाप के साथ भलाई करने की वसिय्यत की और अगर वोह तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहरा ऐसे को जिस का तुझे इ़ल्म नहीं तो उन का कहना न मान।

---

(1)..... **तर्जमए कन्जुल ईमान :** *और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से हूं न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना और उन के लिये आ़जिज़ी का बा'ज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ए मेरे रब तु उन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला।*

(2)..... **तर्जमए कन्जुल ईमान :** *और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की और अगर वोह तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इ़ल्म नहीं तो उन का कहा न मान।*

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ (1)

(پ۲۱، لقمٰن: ۱۴۔ ۱۵)

और हम ने इन्सान को इस के मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई, इस की मां ने इसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई और उस का दूध छूटना दो बरस में हैं येह कि शुक्र कर मेरा और अपने मां बाप का, मेरी ही त़रफ़ तुझे आना है और अगर वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहरा ऐसे को जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहना न मान और दुन्या में भलाई के साथ उन का साथ दे।

और फ़रमाता है :

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ (2)

(پ۲۶، الاحقاف: ۱۵)

और हम ने आदमी को मां बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया, इस की मां ने तक्लीफ़ के साथ इसे पेट में रखा और तक्लीफ़ के साथ इस को जना।

---

(1)..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और हम ने आदमी को इस के मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई इस की मां ने इसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई और उस का दूध छूटना दो बरस में है येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का आख़िर मुझी तक आना है। और अगर वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहना न मान और दुन्या में अच्छी त़रह़ उन का साथ दे।*

(2)..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और हम ने आदमी को हुक्म किया कि अपने मां बाप से भलाई करे इस की मां ने इसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी इस को तक्लीफ़ से।*

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ (1) (پ١٣، الرعد:١٩-٢٥)

नसीहत वोही मानते हैं जिन्हें अ़क्ल है वोह जो **अल्लाह** का अ़हद पूरा करते हैं और बात पुख़्ता कर के नहीं तोड़ते और जिस के जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है उसे जोड़ते हैं और ख़ुदा से डरते है और ह़िसाब की बुराई से डरते रहते हैं।

और फ़रमाता है :

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ (2) (پ١٣، الرعد: ٢٥)

और जो लोग **अल्लाह** के अ़हद को मज़बूती के बा'द तोड़ते हैं और **अल्लाह** ने जिस के जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे काटते हैं और ज़मीन में फ़साद करते हैं, उन के लिये ला'नत है और उन के लिये बुरा घर है।

और फ़रमाता है :

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ (3) (پ٤، النسآء: ١)

और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरो जिस से तुम सुवाल करते हो और रिश्ते से।

---

(1)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नसीहत वोही मानते हैं जिन्हें अ़क्ल है वोह जो **अल्लाह** का अ़हद पूरा करते हैं और क़ौल बांध कर (वा'दा कर के) फिरते नहीं और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का **अल्लाह** ने हुक्म दिया और अपने रब से डरते और ह़िसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं।

(2)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** का अ़हद उस के पक्के होने के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को **अल्लाह** ने फ़रमाया उसे क़त्अ़ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन का ह़िस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा घर।

(3)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो।

www.dawateislami.net

ह़दीस 1 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है, कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) सब से ज़ियादा हुस्ने सोह़बत या'नी एह़सान का मुस्तह़ीक़ कौन है ? इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी मां या'नी मां का ह़क़ सब से ज़ियादा है। इन्हों ने पूछा, फिर कौन ? हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फिर मां को बताया। उन्हों ने फिर पूछा कि फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा वालिद।"

(صحيح البخاري، كتاب الادب، باب من احق الناس بحسن الصحبة، الحديث: ٥٩٧١، ج٤ ص٩٣)

और एक रिवायत में है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "सब से ज़ियादा मां है, फिर मां, फिर मां, फिर बाप, फिर वोह जो ज़ियादा क़रीब, फिर वोह है जो ज़ियादा क़रीब है।"

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة..إلخ، باب بر الوالدين..إلخ، الحديث:٢٥٤٨، ص١٣٧٨،١٣٧٩)

या'नी एह़सान करने में मां का मर्तबा बाप से भी तीन दर्जा बुलन्द है।

ह़दीस 2 : अबू दावूद व तिरमिज़ी ब रिवायते बह्ज़ बिन ह़कीम अ़न अबीहि अ़न जद्दिह रावी, कहते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) किस के साथ एह़सान करूं ? फ़रमाया : "अपनी मां के साथ। मैं ने कहा : फिर किस के साथ ? फ़रमाया : अपनी मां के साथ। मैं ने कहा : फिर किस के साथ ? फरमाया : अपनी मां के साथ। मैं ने कहां : फिर किस के साथ ? फ़रमाया : अपने बाप के साथ। फिर उस के साथ जो ज़ियादा क़रीब हो, फिर इस के बा'द जो ज़ियादा क़रीब हो।"

(جامع الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في بر الوالدين، الحديث: ١٩٠٤، ج٣، ص٣٥٨)

www.dawateislami.net

ह़दीस 3 : सह़ीह़ मुस्लिम में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُمَا से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ज़ियादा एह़सान करने वाला वोह है जो अपने बाप के दोस्तों के साथ बाप के न होने की सूरत में एह़सान करे।"

(صحیح مسلم، کتاب البر و الصلة..إلخ، باب فضل صلة اصدقاء..إلخ، الحدیث:۲۵۵۲،ص ۱۳۸۲)

या'नी जब बाप मर गया या कहीं चला गया हो।

ह़दीस 4 : सह़ीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस की नाक ख़ाक में मिले। [इस को तीन मरतबा फ़रमाया] या'नी ज़लील हो। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) कौन ? या'नी येह किस के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद है। फ़रमाया : "जिस ने मां बाप दोनों या एक को बुढ़ापे के वक़्त पाया और जन्नत में दाख़िल न हुवा।"

(صحیح مسلم، کتاب البر..إلخ، باب رغم من ادرك ابویه..إلخ، الحدیث:۲۵۵۱،ص ۱۳۸۱)

या'नी उन की ख़िदमत न की, कि जन्नत में जाता।

ह़दीस 5 : सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُمَا से मरवी, कहती हैं : जिस ज़माने में क़ुरैश ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) से मुआ़हदा किया था मेरी मां जो मुशरिका थी मेरे पास आई, मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरी मां आई है और वोह इस्लाम की त़रफ़ राग़िब है या वोह इस्लाम से ए'राज़ किये हुए है, क्या मैं इस के साथ सुलूक करूं ? इरशाद फ़रमाया : "उस के साथ सुलूक करो।"

(صحیح البخاري، کتاب الجزیة و الموادعة، باب اثم من عاهد ثم غدر، الحدیث: ۳۱۸۳،ج۲،ص ۳۷۱

و صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل النفقة...إلخ، الحدیث:۱۰۰۳،ص ۵۰۲)

या'नी काफ़िरा मां के साथ भी सुलूक किया जाएगा।

www.dawateislami.net

ह़दीस 6: सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआ़ला ने येह चीजे़ं तुम पर ह़राम कर दी हैं : ﴾1﴿ मांओं की ना फ़रमानी करना और ﴾2﴿ लड़कियों को ज़िन्दा दरगोर करना और ﴾3﴿ दूसरों का जो अपने ऊपर आता हो उसे न देना और अपना मांगना कि लाओ। और येह बातें तुम्हारे लिये मकरूह कीं ﴾1﴿ क़ील व क़ाल या'नी फ़ुज़ूल बातें और ﴾2﴿ कसरते सुवाल और ﴾3﴿ इज़ाअ़ते माल।"

(صحیح البخاري، کتاب الاستقراض والدیون، باب ما ینھی عن اضاعۃ المال، الحدیث: ۲۴۰۸، ج۲، ص ۱۱۱)

ह़दीस 7 : सह़ीह़ मुस्लिम व बुख़ारी में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह बात कबीरा गुनाहों में है कि आदमी अपने वालिदैन को गाली दे। लोगों ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या कोई अपने वालिदैन को भी गाली देता है? फ़रमाया : "हां, इस की सूरत येह है कि येह दूसरे के बाप को गाली देता है, वोह इस के बाप को गाली देता है, और येह दूसरे की मां को गाली देता है, वोह इस की मां को गाली देता है।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر و اکبرھا، الحدیث: ۹۰، ص ۶۰)

सह़ाबए किराम जिन्हों ने अ़रब का ज़मानए जाहिलिय्यत देखा था, इन की समझ में येह नहीं आया कि अपने मां बाप को कोई क्यूंकर गाली देगा या'नी येह बात उन की समझ से बाहर थी। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने बताया कि मुराद दूसरे से गाली दिलवाना है और अब वोह ज़माना आया कि बा'ज़ लोग ख़ुद अपने मां बाप को गालियां देते हैं और कुछ लिह़ाज़ नहीं करते।

www.dawateislami.net

हदीस 8 : शर्हे सुन्ना में और बयहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं जन्नत में गया, इस में कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी, मैं ने पूछा येह कौन पढ़ता है? फ़िरिश्तो ने कहा, ह़ारिसा बिन नोअ़मान हैं। हुज़ूर (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "येही ह़ाल है एह़सान का, येही ह़ाल है एह़सान का, ह़ारिसा अपनी मां के साथ बहुत भलाई करते थे।" (شرح السنة، کتاب البر و الصلة، باب بر الوالدين، الحديث: ٣٣١٢، ٣٣١٣، ج٦، ص٤٢٦)

हदीस 9 : तिरमिज़ी ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "परवर दगार की खुशनूदी बाप की खुशनूदी में है और परवर दगार की नाखुशी बाप की नाराज़ी में है।" (جامع الترمذي، کتاب البر والصلة، باب ماجاء من الفضل في رضا الوالدين، الحديث: ١٩٠٧، ج٣، ص٣٠٧)

हदीस 10 : तिरमिज़ी व इब्ने माजा ने रिवायत की, कि एक शख़्स अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया और येह कहा कि मेरी मां मुझे येह हुक्म देती है कि मैं अपनी औ़रत को त़लाक़ दे दूं। अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "वालिद जन्नत के दरवाज़ों में बीच का दरवाज़ा है, अब तेरी खुशी है कि इस दरवाज़े की हिफ़ाज़त करे या ज़ाएअ़ कर दे।"

(جامع الترمذی ابواب البر و الصلة، باب ماجاء من الفضل في رضا الوالدين، الحديث: ١٩٠٦، ج٣، ص٣٥٩)

हदीस 11 : तिरमिज़ी व अबू दावूद ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत की, कहते हैं मैं अपनी बीबी से मह़ब्बत रखता था और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ उस औ़रत से कराहत करते थे। उन्हों ने

www.dawateislami.net

मुझ से फ़रमाया कि इसे त़लाक़ दे दो, मैं ने नहीं दी फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और येह वाक़िआ़ बयान किया, ह़ुज़ूर (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने मुझ से फ़रमाया कि "इसे त़लाक़ दे दो।"

(سنن أبي داود، كتاب الادب، باب في بر الوالدين، الحديث: ٥١٣٨، ج٤، ص٤٣٣)

उ़-लमा फ़रमाते है कि अगर वालिदैन ह़क़ पर हों जब तो त़लाक़ देना वाजिब ही है और अगर बीबी ह़क़ पर हो जब भी वालिदैन की रिज़ा मन्दी के लिये त़लाक़ देना जाइज़ है।

ह़दीस 12 : इब्ने माजा ने अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) वालिदैन का अवलाद पर क्या ह़क़ है? फ़रमाया कि "वोह दोनों तेरी जन्नत व दोज़ख़ है।" (سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب بر الوالدين، الحديث: ٣٦٦٢، ج٤، ص١٨٦)

या'नी इन को राज़ी रखने से जन्नत मिलेगी और नाराज़ रखने से दोज़ख़ के मुस्तह़िक़ होगे।

ह़दीस 13 : बयहक़ी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि अपने वालिदैन का फ़रमां बरदार है, उस के लिये सुब्ह़ ही को जन्नत के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और अगर वालिदैन में से एक ही हो तो एक दरवाज़ा खुलता है और जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि वालिदैन के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुदा की ना फ़रमानी करता है, उस के लिये सुब्ह़ से जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है। एक शख़्स ने कहा, अगर्चे मां बाप उस पर ज़ुल्म करें? फ़रमाया : "अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, ।"

(شعب الإيمان، باب في بر الوالدين، فصل في حفظ حق الوالدين بعد موتهما، الحديث: ٧٩١٦، ج٦، ص٢٠٦
و مشكاة المصابيح، كتاب الاداب، باب البر و الصلة، الفصل الثالث، ص٤٢١)

www.dawateislami.net

ह़दीस 14 : बयहक़ी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब अवलाद अपने वालिदैन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये हर नज़र के बदले ह़ज्जे मबरूर का सवाब लिखता है। लोगों ने कहा, अगर्चे दिन में सो100 मरतबा नज़र करें ? फ़रमाया : हां **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बड़ा है और अत़ीब है।" (شعب الإيمان، باب في برالوالدين، الحديث: ٧٨٥٦، ج٦، ص١٨٦) या'नी उसे सब कुछ कुदरत है, इस से पाक है कि उस को इस के देने से आ़जिज़ कहा जाए।

ह़दीस 15 : इमाम अह़मद व नसाई व बयहक़ी ने मुआ़विया बिन जाहिमा से रिवायत की, कि इन के वालिद जाहिमा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरा इरादा जिहाद में जाने का है हुज़ूर ! (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) से मश्वरा लेने को ह़ाज़िर हुवा हूं। इरशाद फ़रमाया : तेरी मां है ? अ़र्ज़ की, हां। फ़रमाया : "इस की ख़िदमत लाज़िम कर ले कि जन्नत इस के क़दम के पास है।"

(المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث معاوية بن جاهمة، الحديث: ١٥٥٣٨، ج٥، ص٢٩٠)

ह़दीस 16 : बयहक़ी ने अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "किसी के मां बाप दोनों या एक का इन्तिक़ाल हो गया और येह उन की ना फ़रमानी करता था, अब उन के लिये हमेशा इस्तग़्फ़ार करता रहता है, यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला इस को नेकूकार लिख देता है।

(شعب الإيمان، باب في برالوالدين، فصل في حفظ حق الوالدين بعد موتهما، الحديث: ٧٩٠٢، ج٦، ص٢٠٢)

www.dawateislami.net

ह़दीस 17 : नसाई व दारिमी ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मन्नान या'नी एह़सान जताने वाला और वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाला और शराब ख़्वारी की मुदावमत करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।" (سنن النسائي، كتاب الاشربة،باب الرواية في المدمنين في الخمر، الحديث:٥٦٨٢،ص٨٩٥)

ह़दीस 18 : तिरमिज़ी ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है की, कि एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं ने एक बड़ा गुनाह किया है, आया मेरी तौबा क़बूल होगी ? फ़रमाया : क्या तेरी मां ज़िन्दा है। अ़र्ज़ की नहीं, फ़रमाया : तेरी कोई ख़ाला है। अ़र्ज़ की : हां। फ़रमाया : "उस के साथ एह़सान कर।"

(جامع الترمذي، كتاب البر والصلة، باب في بر الخالة، الحديث:١٩١١،ج٣،ص٣٦٢)

ह़दीस 19 : अबू दावूद व इब्ने माजा ने अबी उसैद साइ़दी رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कहते हैं : हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि बनी सलमह में का एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरे वालिदैन मर चुके हैं अब भी उन के साथ एह़सान का कोई त़रीक़ा बाक़ी है ? फ़रमाया : "हां उन के लिये दुआ़ व इस्तग़फ़ार करना और जो उन्हों ने अ़हद किया है इस को पूरा करना और जिस रिश्ते वाले के साथ उन्हीं की वजह से सुलूक किया जा सकता हो उस के साथ सुलूक करना और उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करना।

(سنن أبي داود، كتاب الادب،باب في بر الوالدين، الحديث:٥١٤٢،ج٤،ص٤٣٤)

www.dawateislami.net

ह़दीस 20 : ह़ाकिम ने मुस्तदरक में का'ब बिन उ़जरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग मिम्बर के पास ह़ाज़िर हो जाओ। हम सब ह़ाज़िर हुए, जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم) मिम्बर के पहले दर्जे पर चढ़े, फ़रमाया : आमीन, जब दूसरे पर चढ़े, कहा : आमीन, जब तीसरे दर्जे पर चढ़े, कहा : आमीन, जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم) मिम्बर से उतरे हम ने अ़र्ज़ की, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم) से आज ऐसी बात सुनी कि कभी एसी नहीं सुना करते थे। फ़रमाया कि "जिब्रईल मेरे पास आए और येह कहा कि उसे रह़मते इलाही से दूरी हो, जिस ने रमज़ान का महीना पाया और उस की मग़फ़िरत न हुई, इस पर मैं ने आमीन कही। जब में दूसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्हों ने कहा, उस शख़्स के लिये रह़मते इलाही से दूरी हो, जिस के सामने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم) का ज़िक्र हुवा और वोह हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم) पर दुरूद न पढ़े, इस पर मैं ने कहा आमीन। जब मैं तीसरे ज़ीने पर चढ़ा उन्हों ने कहा, उस के लिये दूरी हो, जिस के मां बाप दोनों या एक को बुढ़ापा आया और इन्हों ने उसे जन्नत में दाख़िल न किया, मैं ने कहा आमीन।"

(المستدرك للحاكم، كتاب البر و الصلة، باب لعن اللّٰه العاق لو الديه...إلخ، الحديث:٧٣٣٨، ج٥، ص٢١٢)

www.dawateislami.net

महृरमात का बयान(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۲۲﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآىٕكُمْ وَرَبَآىٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ؗ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ؗ وَحَلَآىٕلُ اَبْنَآىٕكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

उन औ़रतों से निकाह़ न करो जिन से तुम्हारे बाप दादा ने निकाह़ किया हो मगर जो गुज़र चुका बेशक येह बे ह़याई और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह। तुम पर ह़राम हैं तुम्हारी माएं और बेटियां और बहनें और फूपियां और ख़ालाएं और भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी वोह माएं जिन्हों ने तुम्हें दुध पिलाया और दुध की बहनें और तुम्हारी औ़रतों की माएं और उन की बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं, उन बीबियों से जिन से तुम जिमाअ़ कर चुके हो और अगर तुम ने उन से जिमाअ़ न किया हो तो उन की बेटियों में गुनाह नहीं और तुम्हारे नस्ली बेटों की बीबियां और दो बहनों को इकठ्ठा करना मगर जो हो चुका बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बख़्शने वाला मेहरबान है और ह़राम हैं शोहर वाली औ़रतें मगर काफ़िरों की औ़रतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं

(1).....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा. 7, जि. 2, स. 20

www.dawateislami.net

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ (1)

(پ ٤، ٥ النساء: ٢٢ـ٢٤)

येह अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) का नविश्ता है और इन के सिवा जो रहें वोह तुम पर ह़लाल हैं कि अपने मालों के इवज़् तलाश करो पारसाई चाहते न ज़िना करते।

और फ़रमाता है :

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾

(2) (پ ٢، البقرة: ٢٢١)

मुशरिक औ़रतों से निकाह़ न करो जब तक ईमान न लाएं बेशक मुसलमान बांदी मुशरिका से बेहतर है अगर्चे तुम्हें येह भली मा'लूम होती हो और मुशरिकों से निकाह़ न करो जब तक ईमान न लाएं बेशक मुसलमान गुलाम मुशरिक से बेहतर है अगर्चे तुम्हें येह अच्छा मा'लूम होता हो, येह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं और अल्लाह बुलाता है जन्नत व मग़्फ़िरत की त़रफ़ अपने हुक्म से और लोगों के लिये अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमाता है ताकि लोग नसीह़त मानें।

---

(1).... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बाप दादा की मुन्कूह़ा से निकाह़ न करो मगर जो हो गुज़रा वोह बेशक बे ह़याई और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह। ह़राम हुईं तुम पर तुम्हारी माएं और बेटियां और बहनें और फूफियां और ख़ालाएं और भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी माएं जिन्हों ने दुध पिलाया और दूध की बहनें और औ़रतों की माएं और उन की बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं उन बीबियों से जिन से तुम सोह़बत कर चुके हो तो फिर अगर तुम ने उन से सोह़बत न की हो तो उन की बेटियों में ह़रज नहीं और तुम्हारी नस्ली बेटों की बीबियां और दो बहनें इकठ्ठी करना मगर जो हो गुज़रा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और ह़राम हैं शोहरदार औ़रतें मगर काफ़िरों की औ़रतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं येह अल्लाह का नविश्ता है तुम पर और उन के सिवा जो रहें वोह तुम्हें ह़लाल हैं कि अपने मालों के इवज़् तलाश करो क़ैद लाते न पानी गिराते।

(2) .... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और शिर्क वाली औ़रतों से निकाह़ न करो जब तक मुसलमान न हो जाएं और बेशक मुसलमान लोंडी मुशरिका से अच्छी अगर्चे वोह तुम्हें भाती हो और मुशरिकों के

www.dawateislami.net

ह़दीस 1: सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि "औ़रत और उस की फूफी को जम्अ़ न किया जाए और न औ़रत और उस की ख़ाला को।" (صحیح مسلم کتاب النکاح، باب تحریم الجمع بین المرأۃ..إلخ، الحدیث:۳۳۔(۱٤۰۸)،ص۷۳۱)

ह़दीस 2 : अबू दावूद व तिरमिज़ी व दारमी व नसाई की रिवायत उन्हीं से है, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इस से मन्अ़ फ़रमाया कि फूपी के निकाह़ में होते उस की भतीजी से निकाह़ किया जाए या भतीजी के होते उस की फूपी से या ख़ाला के होते उस की भांजी से या भांजी के होते उस की ख़ाला से।

(جامع الترمذی، کتاب النکاح، باب ماجاء لاتنکح المرأۃ علی عمتھا..إلخ، الحدیث: ۱۱۲۹، ج۲، ص۳٦۷)

ह़दीस 3 : इमाम बुख़ारी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो औ़रतें विलादत [नसब] से ह़राम हैं, वोह रज़ाअ़त से ह़राम हैं।"

(صحیح البخاري، کتاب النکاح، باب ما یحل من الدخول و النظر الی النساء في الرضاع، الحدیث: ۵۲۳۹، ج۳، ص٤٦٤)

ह़दीस 4 : सह़ीह़ मुस्लिम में मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक अल्लाह तआ़ला ने रज़ाअ़त से उन्हें ह़राम कर दिया जिन्हें नसब से ह़राम फ़रमाया।"

(صحیح مسلم کتاب الرضاع، باب تحریم ابنۃ الأخ من الرضاعۃ...إلخ، الحدیث:۱٤٤٦،ص۷٦۱
و مشکاۃ المصابیح، کتاب النکاح،باب المحرمات،الحدیث:۳۱٦۳، ج۲،ص۲۱۷)

निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न लाएं और बेशक मुसलमान ग़ुलाम मुशरिक से अच्छा है अगर्चे वोह तुम्हें भाता हो वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़ बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वोह नसीह़त मानें।

www.dawateislami.net

मसाइले फ़िक़्हिय्या

महृरमात वोह औ़रतें हैं जिन से निकाह़ ह़राम है और ह़राम होने के चन्द सबब हैं, लिहाज़ा इस बयान को नव क़िस्म पर मुन्क़सम (या'नी तक़्सीम) किया जाता है :

क़िस्म अव्वल, नसब : इस क़िस्म में सात (7) औ़रतें हैं :

(1) मां (2) बेटी (3) बहन (4) फूपी
(5) ख़ाला (6) भतीजी (7) भान्जी

मस्अला 1 : दादी, नानी, पर दादी, पर नानी, अगर्चे कितनी ही ऊपर की हों सब ह़राम हैं और येह सब मां में दाख़िल हैं कि येह बाप या मां या दादा, दादी, नाना, नानी की माएं हैं कि मां से मुराद वोह औ़रत है, जिस की अवलाद में येह है बिला वासित़ा या बिल वासित़ा।

मस्अला 2 : बेटी से मुराद वोह औ़रतें हैं जो इस की अवलाद हैं। लिहाज़ा पोती, पर पोती, नवासी, पर नवासी अगर्चे दरमियान में कितनी ही पुश्तों का फ़ासिला हो सब ह़राम हैं।

मस्अला 3 : बहन ख़्वाह ह़क़ीक़ी हो या'नी एक मां बाप से या सोतेली कि बाप दोनों का एक है और माएं दो या मां एक है और बाप दो सब ह़राम हैं।

मस्अला 4 : बाप, मां, दादा, दादी, नाना, नानी, वग़ैरहुम उसूल की फूफियां या ख़ालाएं अपनी फूफी और ख़ाला के हुक्म में हैं। ख़्वाह येह ह़क़ीक़ी हों यो सोतेली। यूहीं ह़क़ीक़ी या अ़ल्लाती फूफी की फूपी या ह़क़ीक़ी या अख़्याफ़ी ख़ाला की ख़ाला।

मस्अला 5 : भतीजी, भांजी से भाई, बहन की अवलादें मुराद हैं, इन की पोतियां, नवासियां भी इसी में शुमार हैं।

मस्अला 6 : ज़िना से बेटी, पोती, बहन, भतीजी, भान्जी भी महृरमात में हैं।

www.dawateislami.net

मस्अला 7 : जिस औ़रत से उस के शोहर ने लिआ़न किया अगर्चे इस की लड़की अपनी मां की त़रफ़ मनसूब होगी मगर फिर भी उस शख़्स पर वोह लड़की ह़राम हैं।

(ردالمحتار ، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص١٠٩)

क़िस्म दुवुम, मुसाहरत : ﴾1﴿ ज़ौजए मौत़ूआ (या'नी वोह औ़रत जिस से निकाह़ के बा'द सोह़बत की गई) की लड़कियां ﴾2﴿ ज़ौजा की मां, दादियां, नानियां ﴾3﴿ बाप, दादा वगै़रहुमा उसूल की बीबियां ﴾4﴿ बेटे पोते वगै़राहुमा फ़ुरूअ़ की बीबियां।

मस्अला 8 : जिस औ़रत से निकाह़ किया और वत़ी न की थी कि जुदाई हो गई उस की लड़की इस पर ह़राम नहीं, नीज़ हु़रमत इस सूरत में है कि वोह औ़रत मुश्तहात (या'नी नौ साला या इस से ज़ाइद उ़म्र की औ़रत) हो, इस लड़की का इस की परवरिश में होना ज़रूरी नहीं और ख़ल्वते सह़ीह़ा (या'नी मियां बीवी का इस त़रह़ तन्हा होना कि जिमाअ़ से कोई मानेअ़ शरई या त़बई या ह़िसी न हो। मानेअ़ ह़िसी से मुराद ज़ौजैन से कोई ऐसी बीमारी में हो कि सोह़बत नहीं कर सकता हो। मानेअ़ त़बई शोहर और औ़रत के दरमियान किसी तीसरे का होना। और मानेअ़ शरई की मिसाल औ़रत का हैज़ या निफ़ास की ह़ालत में होना या नमाजे़ फ़र्ज़ में होना। इस की तफ़सील आगे आ रही है।) भी वत़ी ही के हु़क्म में है या'नी अगर ख़लवते सह़ीह़ा औ़रत के साथ हो गई, उस की लड़की ह़राम हो गई अगर्चे वत़ी न की हो।

(ردالمحتار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص١١٠)

मस्अला 9 : निकाहे़ फ़ासिद से हु़रमते मुसाहरत साबित नहीं होती, जब तक वत़ी न हो। लिहाज़ा अगर किसी औ़रत से निकाह़ फ़ासिद किया तो औ़रत की मां इस पर ह़राम नहीं और जब वत़ी हुई तो हु़रमत साबित हो गई कि वत़ी से मुत़लक़न हु़रमत साबित हो जाती है।

www.dawateislami.net

ख़्वाह वत़ी ह़लाल हो या शुब्ह व ज़िना से, मसलन बैअ़ फ़ासिद से ख़रीदी हुई कनीज़ से या कनीज़े मुश्तरक (ऐसी कनीज़ जिस के मालिक दो या ज़ियादा हों) या मुकातबा (मुकातबा उस कनीज़ को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़हदा किया हुवा हो) या जिस औ़रत से ज़िहार किया या मजूसिया बांदी या अपनी ज़ौजा से, हैज़ व निफ़ास में या एह़राम व रोज़ा में ग़रज़ किसी त़ौर पर वत़ी हो, हुरमते मुसाहरत साबित हो गई लिहाज़ा जिस औ़रत से ज़िना किया, उस की मां और लड़कियां इस पर ह़राम हैं। यूहीं वोह औ़रते ज़ानिया इस शख़्स के बाप, दादा और बेटों पर ह़राम हो जाती है। (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في المحرمات، القسم الثاني، ج١، ص٢٧٤ و ردالمحتار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٣)

मस्अला 10 : हुरमते मुसाहरत जिस त़रह़ वत़ी से होती है, यूहीं ब शहवत (शहवत के साथ) छूने और बोसा लेने और फ़र्जे दाख़िल (औ़रत की शर्मगाह के अन्दरूनी ह़िस्से) की त़रफ़ नज़र करने और गले लगाने और दांत से कांटने और मुबाशरत, यहां तक कि सर पर जो बाल हों उन्हें छूने से भी हुरमत हो जाती है अगर्चे कोई कपड़ा भी ह़ाइल (आड़, रुकावट) हो मगर जब इतना मोटा कपड़ा ह़ाइल हो कि गरमी मह़सूस न हो। यूहीं बोसा लेने में भी अगर बारीक निक़ाब ह़ाइल हो तो हुरमत साबित हो जाएगी। ख़्वाह येह बातें जाइज़ त़ौर पर हों, मसलन मन्कूह़ा कनीज़ है, या ना जाइज़ त़ौर पर। जो बाल सर से लटक रहे हो उन्हें ब शहवत छुवा तो हुरमते मुसाहरत साबित न हुई। (الفتاوى الهندية ، كتاب النكاح، الباب الثالث في المحرمات ، القسم الثاني ، ج١، ص٢٧٤ و ردالمحتار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٤، وغيره)

मस्अला 11 : फ़र्जे दाख़िल की त़रफ़ नज़र करने की सूरत में अगर शीशा दरमियान में हो या औ़रत पानी में थी इस की नज़र वहां तक

www.dawateislami.net

पहोंची जब भी हु़रमत साबित हो गई, अलबत्ता आईना या पानी में अ़क्स दिखाई दिया तो हु़रमते मुसाहरत नहीं।

(الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص١١٤ و الفتاوی الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، القسم الثاني،ج١،ص٢٧٤)

मस्अला 12 : छूने और नज़र के वक़्त शहवत न थी बा'द को पैदा हुई या'नी जब हाथ लगाया उस वक़्त न थी, हाथ जुदा करने के बा'द हुई तो इस से हु़रमत नहीं साबित होती। इस मक़ाम पर शहवत के मा'ना येह हैं कि इस की वजह से इन्तिशारे आला हो जाए और अगर पहले से इन्तिशार मौजूद था तो अब ज़ियादा हो जाए येह जवान के लिये है। बुढ़े और औ़रत के लिये शहवत की ह़द येह है कि दिल में ह़रकत पैदा हो और पहले से हो तो ज़ियादा हो जाए, मह़ज़ मैलाने नफ़्स का नाम शहवत नहीं। (الدرالمختار ، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٥)

मस्अला 13 : नज़र और छूने में हु़रमत जब साबित होगी कि इन्ज़ाल (या'नी मनी का निकलना) न हो और इन्ज़ाल हो गया तो हु़रमते मुसाहरत न होगी। (الدرالمختار ، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٥)

मस्अला 14 : औ़रत ने शहवत के साथ मर्द (या'नी बारह साल या इस से ज़ाइद उ़म्र का मर्द हो) को छुवा या बोसा लिया या इस के आला की त़रफ़ नज़र की तो इस से भी हु़रमते मुसाहरत साबित हो गई।

(الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص١١٤ و الفتاوی الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، القسم الثاني،ج١،ص٢٧٤)

मस्अला 15: हु़रमते मुसाहरत के लिये शर्त़ येह है कि औ़रत मुश्तहात हो या'नी नौ बरस से कम उ़म्र की न हो, नीज़ येह कि ज़िन्दा हो तो अगर नौ बरस से कम उ़म्र की लड़की या मुर्दा औ़रत को ब शहवत छुवा या बोसा लिया तो हु़रमत साबित न हुई।

(الدرالمختار ،كتاب النكاح، فصل في المحرمات،ج٤،ص١١٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 16 : औ़रत से जिमाअ़ किया मगर दुख़ूल न हुवा तो हु़रमत साबित न हुई, हां अगर इस को ह़म्ल रह जाए तो हु़रमते मुसाहरत हो गई। (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، القسم الثاني، ج١، ص٢٧٤) बुढ़िया औ़रत के साथ येह अफ़्आ़ल वाक़ेअ़ हुए या उस ने किये तो मुसाहरत हो गई। इस की लड़की उस शख़्स पर ह़राम हो गई नीज़ वोह उस के बाप, दादा पर।

(الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٧)

मस्अला 17 : वत़ी से मुसाहरत में येह शर्त़ है कि आगे के मक़ाम में हो, अगर पीछे में हुई मुसाहरत न होगी।

(الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٧)

मस्अला 18 : इग़्लाम (या'नी औ़रत से पीछे के मक़ाम में वत़ी करने) से मुसाहरत नहीं साबित होती। (الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٧)

मस्अला 19 : मुराहिक़ या'नी वोह लड़का कि हनूज़ (अभी तक) बालिग़ न हुवा, मगर इस के हम उ़म्र बालिग़ हो गए हों, इस की मिक़्दार बारह बरस की उ़म्र है, इस ने अगर वत़ी की या शहवत के साथ छुवा या बोसा लिया तो मुसाहरत हो गई।

(الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٧)

मस्अला 20 : येह अफ़्आ़ल क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) हों या भूल कर या ग़लत़ी से या मजबूरन बहर हा़ल मुसाहरत साबित हो जाएगी, मसलन अन्धेरी रात में मर्द ने अपनी औ़रत को जिमाअ़ के लिये उठाना चाहा, ग़लत़ी से शहवत के साथ मुशतहात लड़की पर हाथ पड़ गया, इस की मां हमेशा के लिये उस पर ह़राम हो गई। यूहीं अगर औ़रत ने शोहर को उठाना चाहा और शहवत के साथ हाथ लड़के पर पड़ गया, जो मुराहिक़ था हमेशा को अपने इस शोहर पर ह़राम हो गई। (الدرالمختار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١١٨)

www.dawateislami.net

मस्अला 21: मुंह (या'नी लब) का बोसा लिया तो मुत़लक़न हुरमते मुसाहरत साबित हो जाएगी अगर्चे कहता हो कि शहवत से न था। यूहीं अगर इन्तिशारे आला था तो मुत़लक़न किसी जगह का बोसा लिया हुरमत हो जाएगी और अगर इन्तिशार न था और रुख़सार या थोड़ी या पेशानी या मुहं के इ़लावा किसी और जगह का बोसा लिया और कहता है कि शहवत न थी तो इस का क़ौल मान लिया जाएगा। यूहीं इन्तिशार की ह़ालत में गले लगाना भी हुरमत साबित करता है अगर्चे शहवत का इन्कार करे। (ردالمحتار، کتاب النکاح، فصل في المحرمات، ج۴،ص ۱۱۸)

मस्अला 22 : चुटकी लेने, दांत काटने का भी येही हुक्म है कि शहवत से हों तो हुरमत साबित हो जाएगी। औ़रत की शर्मगाह को छुवा या पिस्तान को और कहता है कि शहवत न थी तो इस का क़ौल मो'तबर नहीं। (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، القسم الثاني، ج١،ص٢٧٦ ،ص٢٧٦ و الدرالمختار ، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص١١٩ـ١٢١)

मस्अला 23 : नज़र से हुरमत साबित होने के लिये नज़र करने वाले में शहवत पाई जाना ज़रूर है और बोसा लेने, गले लगाने, छूने वग़ैरा में इन दोनों में से एक को शहवत हो जाना काफ़ी है अगर्चे दूसरे को न हो। (الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص ١٢٠)

मस्अला 24 : मजनून और नशा वाले से येह अफ़आल हुए या इन के साथ किये गए, जब भी वोही हुक्म है कि और शर्तें पाई जाएं तो हुरमत हो जाएगी। (الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤،ص ١٢٠)

मस्अला 25 : किसी से पूछा गया तूने अपनी सास के साथ क्या किया? उस ने कहा, जिमाअ़ किया। हुरमते मुसाहरत साबित हो गई, अब अगर कहे मैं ने झूट कह दिया था नहीं माना जाएगा बल्कि अगर्चे

www.dawateislami.net

मज़ाक़ में कह दिया हो जब भी येही हुक्म है।

(الفتاوی الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، القسم الثاني، ج١،ص٢٧٦، وغيره)

मस्अला 26 : हुरमते मुसाहरत मसलन शहवत से बोसा लेने या छूने या नज़र करने का इक़रार किया, तो हुरमत साबित हो गई और अगर येह कहे कि इस औ़रत के साथ निकाह़ से पहले इस की मां से जिमाअ़ किया था जब भी येही हुक्म रहेगा। मगर औ़रत का महर उस से बाति़ल न होगा वोह बदस्तूर वाजिब।

(ردالمحتار،كتاب النكاح، فصل في المحرمات،ج٤،ص١٢٢)

मस्अला 27 : किसी ने एक औ़रत से निकाह़ किया और उस के लड़के ने औ़रत की लड़की से किया, जो दूसरे शोहर से है तो ह़रज नहीं। यूहीं अगर लड़के ने औ़रत की मां से निकाह़ किया जब भी येही हुक्म है। (الفتاوی الهندية،كتاب النكاح،الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١،ص٢٧٧)

मस्अला 28 : औ़रत ने दा'वा किया कि मर्द ने उस के उसूल या फ़ुरूअ़ को ब शहवत छुवा या बोसा लिया या कोई और बात की है, जिस से हुरमत साबित होती है और मर्द ने इन्कार किया तो क़ौल मर्द का लिया जाएगा या'नी जब कि औ़रत गवाह न पेश कर सके।

(الدرالمختارو ردالمحتار،كتاب النكاح، فصل في المحرمات،ج٤،ص١٢١)

क़िस्म सिवुम : जिम्अ़ बैनुल महा़रिम।

मस्अला 29 : वोह दो औ़रतें कि उन में जिस एक को मर्द फ़र्ज़ करें, दूसरी उस के लिये ह़राम हो [मसलन दो बहनें कि एक को मर्द फ़र्ज़ करो तो भाई बहन का रिश्ता हुवा या फूफी भतीजी कि फूफी को मर्द फ़र्ज़ करो तो चचा भतीजी का रिश्ता हुवा और भतीजी को मर्द फ़र्ज करो तो फूफी भतीजे का रिश्ता हुवा या ख़ाला भांजी कि ख़ाला को मर्द फ़र्ज करो तो मामूं भांजी का रिश्ता हुवा और भांजी को मर्द फ़र्ज़ करो तो भान्जे ख़ाला का रिश्ता हुवा] ऐसी दो(2) औ़रतों को निकाह़ में जम्अ़ नहीं कर

www.dawateislami.net

सकता बल्कि अगर त़लाक़ दे दी हो अगर्चे तीन त़लाक़ें तो जब तक इद्दत न गुज़ार ले, दूसरी से निकाह़ नहीं कर सकता बल्कि अगर एक बांदी है और उस से वत़ी की तो दूसरी से निकाह़ नहीं कर सकता। यूहीं अगर दोनों बांदियां हैं और एक से वत़ी कर ली तो दूसरी से वत़ी नहीं कर सकता। (ردالمحتار، کتاب النکاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١٢٢)

मस्अला 30 : एसी दो औ़रतें जिन में इस क़िस्म का रिश्ता हो जो उपर मज़्कूर हुवा वोह नसब के साथ मख़्सूस नहीं बल्कि दूध के ऐसे रिश्ते हों जब भी दोनों का जम्अ़ करना ह़राम है, मसलन औ़रत और उस की रज़ाई बहन या ख़ाला या फूफी।

(الفتاوی الهندیة، کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات، ج١، ص٢٧٧)

मस्अला 31 : दो औ़रतों में अगर ऐसा रिश्ता पाया जाए कि एक को मर्द फ़र्ज़ करें तो दूसरी उस के लिये ह़राम हो और दूसरी को मर्द फ़र्ज़ करें तो पहली ह़राम न हो तो ऐसी दो(2) औ़रतों के जम्अ़ करने में ह़रज नहीं, मसलन औ़रत और इस के शोहर की लड़की कि इस लड़की को मर्द फ़र्ज़ करें तो वोह औ़रत उस पर ह़राम होगी, कि इस की सोतेली मां हुई और औ़रत को मर्द फ़र्ज़ करें तो लड़की से कोई रिश्ता पेदा न होगा यूहीं औ़रत और उस की बहू।

(الدرالمختار، کتاب النکاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١٢٤)

मस्अला 32 : बांदी से वत़ी की फिर उस की बहन से निकाह़ किया, तो येह निकाह़ सह़ीह़ हो गया मगर अब दोनों में से किसी से वत़ी नहीं कर सकता, जब तक एक को अपने ऊपर किसी ज़रीए़ से ह़राम न कर ले, मसलन मन्कूह़ा को त़लाक़ दे दे या वोह ख़ुल्अ़ करा ले और दोनों सूरतों में इद्दत गुज़र जाए या बांदी को बेच डाले या आज़ाद कर दे, ख़्वाह पूरी बेची या आज़ाद की या उस का कोई ह़िस्सा निस्फ़ वग़ैरा या इस को हिबा कर दे और क़ब्ज़ा भी दिला दे या उसे मुकातबा

www.dawateislami.net

कर दे (या'नी माल के बदले उस से आज़ादी का मुआ़हदा कर ले) या उस का किसी से निकाह़ सह़ीह़ कर दे और अगर निकाह़ फ़ासिद कर दिया तो उस की बहन या'नी मन्कूह़ा से वत़ी नहीं हो सकती मगर जब कि निकाहे़ फ़ासिद में उस के शोहर ने वत़ी भी कर ली तो चूंकि अब उस की इ़द्दत वाजिब होगी, लिहाज़ा मालिक के लिये ह़राम हो गई और मन्कूह़ा से वत़ी जाइज़ हो गई और बैअ़ (ख़रीदो फ़रोख़्त) वग़ैरा की सूरत में अगर वोह फिर उस की मिल्क में वापस आई, मसलन बैअ़ फ़स्ख़ हो गई या उस ने फिर ख़रीद ली तो अब फिर ब दस्तूर दोनों से वत़ी ह़राम हो जाएगी, जब तक फिर सबबे हु़रमत (ह़राम होने का सबब) न पाया जाए। बांदी के एह़राम व रोज़ा व हैज़ व निफ़ास व रह्न व इजारा से मन्कूह़ा ह़लाल न होगी और अगर बांदी से वत़ी न की हो तो इस मन्कूह़ा से मुत़लक़न वत़ी जाइज़ है।

(الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب النكاح، فصل في المحرمات،ج٤،ص١٢٥)

मस्अला 33 : मुक़द्दिमात वत़ी मसलन शहवत के साथ बोसा लिया या छुवा या इस बांदी ने अपने मौला को शहवत के साथ छुवा या बोसा लिया तो येह भी वत़ी के हुक्म में हैं, कि इन अफ़आ़ल के बा'द अगर उस की बहन से निकाह़ किया तो किसी से जिमाअ़ जाइज़ नहीं।

(الدرالمختار،كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١٢٦)

मस्अला 34 : ऐसी दो(2) औ़रतें जिन को जम्अ़ करना ह़राम है अगर दोनों से ब यक अ़क़्द (या'नी एक ही ईजाब व क़बूल के साथ) निकाह़ किया तो किसी से निकाह़ न हुवा, फ़र्ज़ है कि दोनों को फ़ौरन जुदा कर दे और दुख़ूल न हुवा हो तो महर भी वाजिब न हुवा और दुख़ूल हुवा हो तो महरे मिस्ल और बन्धे हुए महर में जो कम हो वोह दिया जाए, अगर दोनों के साथ दुख़ूल किया तो दोनों को दिया जाए और एक के साथ किया तो एक को। (الدرالمختار،كتاب النكاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١٢٦

والفتاوى الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، ج١، ص٢٧٧)

मस्अला 35: अगर दोनों से दो अ़क़्द के साथ निकाह़ किया तो

www.dawateislami.net

पहली से निकाह़ हुवा और दूसरी का निकाह़ बातिल़, लिहाज़ा पहली से वती़ जाइज़ है मगर जब कि दूसरी से वती़ कर ली तो अब जब तक इस की इ़द्दत न गुज़र जाए पहली से भी वती़ ह़राम है। फिर इस सूरत में अगर येह याद न रहा कि पहले किस से हुवा तो शोहर पर फ़र्ज़ है कि दोनों को जुदा कर दे और अगर वोह ख़ुद जुदा न करे तो क़ाज़ी पर फ़र्ज़ है कि तफ़रीक़ कर दे और येह तफ़रीक़ त़लाक़ शुमार की जाएगी फिर अगर दुख़ूल से पेशतर तफ़रीक़ (जुदाई) हुई तो निस्फ़ महर में दोनों बराबर बांट लें अगर दोनों का बराबर बराबर मुक़र्रर हुवा और अगर दोनों के महर बराबर न हों और मा'लूम है कि फ़ुलानी का इतना था और फ़ुलानी का इतना तो हर एक को इस के महर की चोथाई मिलेगी।

और अगर येह मा'लूम है कि एक का इतना है और एक का उतना मगर येह मा'लूम नहीं कि किस का इतना है और किस का उतना तो जो कम है, उस के निस्फ़ में दोनों बराबर बराबर तक़्सीम कर लें और अगर महर मुक़र्रर ही न हुवा था तो एक मुत्तआ़ (1) [इस के मा'ना महर के बयान में आएंगे। 12 मिंह] वाजिब होगा, जिस में दोनों बांट लें और अगर दुख़ूल के बा'द तफ़रीक़ हुई तो हर एक को उस का पूरा महर वाजिब होगा। यूहीं अगर एक से दुख़ूल हुवा तो

(1).... जिस औ़रत से महर के बिग़ैर निकाह़ किया हो और उस को वती़ से क़ब्ल त़लाक़ दे दी हो तो ऐसी औ़रत के लिये पूरा जोड़ा लिबास देना बत़ौरे मुत्तआ़ वाजिब है और वोह क़मीस दूपट्टा और बड़ी चादर है (अ़ल्लामा शामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं कि हर अ़लाके़ का रवाज वहां के लोगों में मो'तबर होगा या'नी जो लिबास औ़रत बाहर निकलते वक़्त पहनती हो वोह दिया जाएगा) और वोह जोड़ा क़ीमत में महरे मिसल के निस्फ़ से ज़ाइद न हो अगर ख़ावन्द अमीर हो और अगर वोह ग़रीब हो तो फिर कम अज़ कम पांच दिरहम से कम न हो और इस जोड़े में ख़ावन्द बीवी की हैसिय्यत का ए'तेबार होगा जैसा कि नफ़्क़ा में दोनों का लिहाज़ किया जाता है, फिर अगर दोनों अमीर हैं तो औ़रत को उस का आ'ला लिबास और अगर दोनों फ़क़ीर हों तो अदना लिबास, अगर दोनों की हैसिय्यत मुख़्तलिफ़ हो तो फिर दरमियाना लिबास दिया जाएगा। واللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

(ردالمحتار و الدرالمختار، کتاب النکاح، باب المھر، مطلب: فی الحکام المتعة، ج٤، ص ٢٣٤، ٢٣٥ ملخصاً)

www.dawateislami.net

उस का पूरा महर वाजिब होगा और दूसरी को चोथाई।

(الدرالمختاروردالمحتار، کتاب النکاح، فصل في المحرمات، ج٤، ص١٢٦۔١٣١)

मस्अला 36 : ऐसी दो[2] औ़रतों से एक अ़क़्द के साथ निकाह़ किया था फिर दुख़ूल से क़ब्ल तफ़रीक़ हो गई, अब अगर इन में से एक के साथ निकाह़ करना चाहे तो कर सकता है और दुख़ूल के बा'द तफ़रीक़ हुई तो जब तक इ़द्दत न गुज़र जाए निकाह़ नहीं कर सकता और अगर एक की इ़द्दत पूरी हो चुकी दूसरी की नहीं तो दूसरी से कर सकता है और पहली से नहीं कर सकता जब तक दूसरी की इ़द्दत न गुज़र ले और अगर एक से दुख़ूल किया है तो उस से निकाह़ कर सकता है और दूसरी से निकाह़ नहीं कर सकता जब तक मदख़ूला (ऐसी औ़रत जिस से सोह़बत की गई हो) की इ़द्दत न गुज़र ले और उस की इ़द्दत गुज़रने के बा'द जिस एक से चाहे निकाह़ कर ले।

(الفتاوی الھندیة،کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات،ج١، ص٢٧٨)

मस्अला 37 : ऐसी दो औ़रतों ने किसी शख़्स से एक साथ कहा, कि मैं ने तुझ से निकाह़ किया, उस ने एक का निकाह़ क़बूल किया तो उस का निकाह़ हो गया और अगर मर्द ने ऐसी दो औ़रतों से कहा कि मैं ने तुम दोनों से निकाह़ किया और एक ने क़बूल किया, दूसरी ने इन्कार किया, तो जिस ने क़बूल किया उस का निकाह़ भी न हुवा।

(الفتاوی الھندیة،کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات،ج١،ص٢٧٨۔٢٧٩)

मस्अला 38 : ऐसी दो औ़रतों से निकाह़ किया और उन में से एक इ़द्दत में थी तो जो ख़ाली है (या'नी इ़द्दत में नहीं है) उस का निकाह़ सह़ीह़ हो गया और अगर वोह इसी की इ़द्दत में थी तो दूसरी से भी सह़ीह़ न हुवा। (الفتاوی الھندیة،کتاب النکاح،الباب الثالث في بیان المحرمات،ج١،ص٢٧٩)

www.dawateislami.net

क़िस्म चहारुम : हुरमत बिल मिल्क।

मस्अला 39 : औरत अपने ग़ुलाम से निकाह़ नहीं कर सकती, ख़्वाह वोह तन्हा उसी की मिल्क में हो या कोई और भी इस में शरीक हो। (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، القسم الثامن في المحرمات بالملك، ج١،ص٢٨٢)

मस्अला 40 : मौला (मालिक) अपनी बांदी से निकाह़ नहीं कर सकता, अगर्चे वोह उम्मे वलद (वोह लोंडी जिस के हां बच्चा पैदा हुवा और मौला (मालिक) ने इक़रार किया कि येह मेरा बच्चा है) या मुकातबा (मुकातबा उस कनीज़ को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़हदा किया हुवा हो) या मुदब्बरा हो (ऐसी लोंड़ी जिसे मालिक ने येह कहा हो कि मेरे मरने के बा'द तू आज़ाद है या ऐसे अल्फ़ाज़ कहे हों जिन से मौला के मरने के बा'द उस का आज़ाद होना साबित होता हो) या उस में कोई दूसरा भी शरीक हो, मगर ब नज़रे एह़तियात़ मुतअख़्ख़िरीन ने बांदी से निकाह़ करना मुस्तह़सन बताया है। (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، القسم الثامن في المحرمات بالملك، ج١،ص٢٨٢)

मगर येह निकाह़ सिर्फ़ बर बनाए एह़तियात़ है कि अगर वाके़अ़ में कनीज़ नहीं जब भी जिमाअ़ जाइज़ है, व लिहाज़ा समराते निकाह़ उस निकाह़ पर मुतरत्तब नहीं, न महर वाजिब होगा, न त़लाक़ हो सकेगी, न दीगर अह़कामे निकाह़ जारी होंगे।

मस्अला 41 : अगर ज़न व शो (या'नी मियां बीवी) में से एक दूसरे का या उस के किसी जुज़ का मालिक हो गया तो निकाह़ बाति़ल हो जाएगा। (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، القسم الثامن في المحرمات بالملك، ج١،ص٢٨٢)

मस्अला 42 : माज़ून (या'नी वोह ग़ुलाम जिस के आक़ा ने इसे तिजारत वग़ैरा की आ़म इजाज़त दे दी हो) या मुदब्बर (या'नी वोह ग़ुलाम जिस की निस्बत मौला (मालिक) ने कहा कि तु मेरे मरने के बा'द आज़ाद है या ऐसे अल्फ़ाज़ कहे हों जिन से मौला के मरने के बा'द उस का आज़ाद होना साबित होता हो) या मुकातब (या'नी वोह ग़ुलाम जिस

www.dawateislami.net

ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआहदा किया हुवा हो) ने अपनी ज़ौजा को ख़रीदा तो निकाह़ फ़ासिद न हुवा। यूहीं अगर किसी ने अपनी ज़ौजा को ख़रीदा और बैअ़ में इख़्तियार रखा कि अगर चाहेगा तो वापस कर देगा तो निकाह़ फ़ासिद न होगा। यूहीं जिस गुलाम का कुछ हि़स्सा आज़ाद हो चुका है वोह अगर अपनी मन्कूह़ा को ख़रीदे तो निकाह़ फ़ासिद न हुवा।

(الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١،ص ١٨٢

ردالمحتار،كتاب النكاح، مطلب: مهم في وطء السراری...الخ، ج٤،ص ١٣١)

मस्अला 43 : मुकातब या माज़ून की कनीज़ से मौला निकाह़ नहीं कर सकता। (الفتاوی الهندية، كتاب النكاح، القسم الثامن في المحرمات بالملك، ج١،ص٢٨٢)

मस्अला 44 : मुकातब ने अपनी मालिका से निकाह़ किया फिर आज़ाद हो गया तो वोह निकाह़ अब भी सह़ीह़ न हुवा। हां अगर अब जदीद निकाह़ करे तो कर सकता है।

(الفتاوی الهندية، كتاب النكاح، القسم الثامن في المحرمات بالملك، ج١،ص٢٨٢)

मस्अला 45 : गुलाम ने अपने मौला की लड़की से उस की इजाज़त से निकाह़ किया, तो निकाह़ सह़ीह़ हो गया मगर मौला के मरने से येह निकाह़ जाता रहेगा और अगर मुकातब ने मौला की लड़की से निकाह़ किया था तो मौला के मरने से फ़ासिद न होगा। अगर बदले किताबत अदा कर देगा तो निकाह़ बर क़रार रहेगा और अगर अदा न कर सका और फिर गुलाम हो गया तो अब निकाह़ फ़ासिद हो गया।

(الفتاوی الهندية، كتاب النكاح، القسم الثامن في المحرمات بالملك، ج١،ص٢٨٢)

क़िस्म पन्जुम : हु़रमत बिश्शिर्क

मस्अला 46 : मुसलमान का निकाह़ मजूसिया (या'नी आग की पूजा करने वाली), बुत परस्त, आफ़्ताब परस्त (या'नी सूरज की पूजा करने वाली), सितारा परस्त औ़रत से नहीं हो सकता ख़्वाह येह औ़रतें हु़र्रा हों या बांदियां, ग़रज़ किताबिय्या के सिवा किसी काफ़िरा औ़रत से

www.dawateislami.net

निकाह़ नहीं हो सकता ।

(فتح القدير، كتاب النكاح، فصل في بيان المحرمات، ج٣، ص١٣٦-١٣٨، وغيره)

मस्अला 47: मुर्तद व मुर्तद्दा का निकाह़ किसी से नहीं हो सकता, अगर्चे मर्द व औ़रत दोनों एक ही मज़हब के हों ।

(الفتاوى الخانية، كتاب النكاح، باب في المحرمات، ج١، ص١٦٩، وغيره)

मस्अला 48 : यहूदिया और नसरानिया से मुसलमान का निकाह़ हो सकता है मगर चाहिये नहीं कि इस में बहुत से मफ़ासिद (या'नी ख़राबियां मसलन बच्चे पर अन्देशा है कि मां के ज़ेरे तरबिय्यत रह कर उस की आ़दतें सीखे वग़ैरा) का दरवाज़ा खुलता है । (الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، ج١، ص٢٨١، وغيره) मगर येह जवाज़ उसी वक़्त तक है जब कि अपने उसी मज़हबे यहूदिय्यत या नसरानिय्यत पर हों और अगर सिर्फ़ नाम की यहूदी नसरानी हों और ह़क़ीक़तन नेचरी और दहरिय्या मज़हब रखती हों, जैसे आज कल के ऊ़मूमन नसारा का कोई मज़हब ही नहीं तो उन से निकाह़ नहीं हो सकता न उन का ज़बीह़ा जाइज़ बल्कि उन के यहां तो ज़बीह़ा होता भी नहीं ।

मस्अला 49 : किताबिया से निकाह़ किया तो उसे गिरजा (ईसाइयों के इ़बादत ख़ाने) जाने और घर में शराब बनाने से रोक सकता है ।

(الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، ج١، ص٢٨١، وغيره)

मस्अला 50 : किताबिया से दारुल ह़र्ब में निकाह़ कर के दारुल इस्लाम में लाया, तो निकाह़ बाक़ी रहेगा और ख़ुद चला आया उसे वहीं छोड़ दिया तो निकाह़ टूट गया ।

(الفتاوى الهندية، كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات، ج١، ص٢٨١)

मस्अला 51 : मुसलमान ने किताबिया से निकाह़ किया था, फिर वोह मजूसिय्या हो गई तो निकाह़ फ़स्ख़ हो गया और मर्द पर ह़राम हो गई अगर यहूदिया थी अब नसरानिया हो गई या नसरानिया थी,

www.dawateislami.net

यहूदिया हो गई तो निकाह़ बाति़ल न हुवा ।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات،ج۱،ص۲۸۱)

मस्अला 52 : किताबी मर्द का निकाह़ मुर्तद्दा के सिवा हर काफ़िरा से हो सकता है और अवलाद किताबी के हुक्म में है । मुसलमान व किताबिय्या से अवलाद हुई तो अवलाद मुसलमान कहलाएगी ।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات،ج۱،ص۲۸۲،وغیرہ)

मस्अला 53 : मर्द व औ़रत काफ़िर थे दोनों मुसलमान हुए तो वोही निकाह़ साबिक़ (या'नी पहला निकाह़) बाक़ी है जदीद निकाह़ की ह़ाजत नहीं और अगर सिर्फ़ मर्द मुसलमान हुवा तो औ़रत पर इस्लाम पेश करें, अगर मुसलमान हो गई फ़बिहा (या'नी अगर वोह औ़रत मुसलमान हो गई तो वोही पहला निकाह़ बाक़ी रहेगा) वरना तफ़रीक़ कर दें । यूहीं अगर औ़रत पहले मुसलमान हुई तो मर्द पर इस्लाम पेश करें, अगर तीन ह़ैज़ आने से पहले मुसलमान हो गया तो निकाह़ बाक़ी है, वरना बा'द को जिस से चाहे निकाह़ कर ले कोई उसे मन्अ़ नहीं कर सकता ।

मस्अला 54 : मुसलमान औ़रत का निकाह़ मुसलमान मर्द के सिवा किसी मज़हब वाले से नहीं हो सकता और मुसलमान के निकाह़ में किताबिय्या है, उस के बा'द मुसलमान औ़रत से निकाह़ किया मुसलमान औ़रत निकाह़ में थी, उस के होते हुए किताबिय्या से निकाह़ सह़ीह़ है । (الفتاوی الھندیۃ،کتاب النکاح،الباب الثالث في بیان المحرمات،ج۱،ص۲۸۲)

क़िस्म शशुम : ह़ुर्रा (या'नी आज़ाद औ़रत जो किसी की लोंडी न हो) निकाह़ में होते हुए बांदी से निकाह़ करना ।

मस्अला 55 : आज़ाद औ़रत निकाह़ में है और बांदी से निकाह़ किया सह़ीह़ न हुवा । यूहीं एक अ़क़्द में दोनों से निकाह़ किया, ह़ुर्रा का सह़ीह़ हुवा, बांदी से न हुवा । (الفتاوی الھندیۃ، کتاب النکاح،الباب الثالث في بیان المحرمات،ج۱،ص۲۷۹)

मस्अला 56 : एक अ़क़्द में आज़ाद औ़रत और बांदी से निकाह़

www.dawateislami.net

किया और किसी वजह से आज़ाद औ़रत का निकाह़ सह़ीह़ न हुवा तो बांदी से निकाह़ हो जाएगा। (الفتاوی الهندية، كتاب النكاح،الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١،ص٢٧٩)

मस्अला 57 : पहले बांदी से निकाह़ किया फिर आज़ाद से तो दोनों निकाह़ हो गए और अगर बांदी से बिला इजाज़ते मालिक निकाह़ किया और दुख़ूल न किया था फिर आज़ाद औ़रत से निकाह़ किया,अब उस के मालिक ने इजाज़त दी तो निकाह़ सह़ीह़ न हुवा। यूहीं अगर ग़ुलाम ने बिग़ैर इजाज़ते मौला ह़ुर्रा से निकाह़ किया और दुख़ूल किया फिर बांदी से निकाह़ किया, अब मौला ने दोनों निकाह़ की इजाज़त दी तो बांदी से निकाह़ न हुवा। (الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١،ص٢٧٩۔٢٨٠

و ردالمحتار، كتاب النكاح، مطلب: مهم في وطء السراری اللاتی يوخذن غنيمة في زماننا،ج٤،ص١٣٦)

मस्अला 58 : आज़ाद औ़रत को त़लाक़ दे दी तो जब तक वोह इ़द्दत में है, बांदी से निकाह़ नहीं कर सकता अगर्चे तीन त़लाक़ें दे दी हों।

(الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، القسم الخامس الاماء المنكوحة على الحرة او معها، ج١، ص٢٧٩)

मस्अला 59 : अगर ह़ुर्रा निकाह़ में न हो तो बांदी से निकाह़ जाइज़ है अगर्चे इतनी इस्तित़ाअ़त है कि आज़ाद औ़रत से निकाह़ कर ले।

(الدرالمختار،كتاب النكاح،ج٤،ص١٣٥، وغيره)

मस्अला 60 : बांदी निकाह़ में थी उसे त़लाक़े रजई दे कर आज़ाद से निकाह़ किया, फिर रजअ़त कर ली तो वोह बांदी ब दस्तूर ज़ौजा हो गई। (الدرالمختار،كتاب النكاح،ج٤،ص١٣٧)

मस्अला 61 : अगर चार बांदियों और पांच आज़ाद औ़रतों से एक अ़क़्द में निकाह़ किया तो बांदियों का हो गया और आज़ाद औ़रतों का न हुवा और दोनों चार चार थीं तो आज़ाद औ़रतों का हुवा, बांदियों का न हुवा। (الدرالمختار،كتاب النكاح،ج٤،ص١٣٧)

www.dawateislami.net

क़िस्म हफ़्तुम : हुरमत ब वजहे तअ़ल्लुक़े हक़्क़े ग़ैर।

मस्अला 62 : दूसरे की मन्कूह़ा से निकाह़ नहीं हो सकता बल्कि अगर दूसरे की इद्दत में हो जब भी नहीं हो सकता। इद्दत त़लाक़ की हो या मौत की या शुबे निकाह़ या निक़ाह़ फ़ासिद में दुख़ूल की वजह से। (الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١، ص٢٨٠)

मस्अला 63 : दूसरे की मन्कूह़ा से निकाह़ किया और येह मा'लूम न था कि मन्कूह़ा है तो इद्दत बाजिब है और मा'लूम था तो इद्दत वाजिब नहीं। (الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١، ص٢٨٠)

मस्अला 64 : जिस औ़रत को ज़िना का ह़म्ल है उस से निकाह़ हो सकता है, फिर अगर उसी का वोह ह़म्ल है तो वत़ी भी कर सकता है और अगर दूसरे का है तो जब तक बच्चा न पैदा होले वत़ी जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الهندية،كتاب النكاح،الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١،ص٢٨٠ و الدرالمختار،كتاب النكاح،ج٤، ص١٣٨)

मस्अला 65 : जिस औ़रत का ह़म्ल साबितुन्नसब है उस से निकाह़ नहीं हो सकता। (الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١، ص٢٨٠)

मस्अला 66 : किसी ने अपनी उम्मुल वलद ह़ामिला का निकाह़ दूसरे से कर दिया तो सह़ीह़ न हुवा और ह़म्ल न था तो सह़ीह़ हो गया।

(الفتاوی الهندية،كتاب النكاح، الباب الثالث في بيان المحرمات،ج١، ص٢٨٠)

मस्अला 67 : जिस बांदी से वत़ी करता था उस का निकाह़ किसी से कर दिया निकाह़ हो गया मगर मालिक पर इस्तिबरा वाजिब है या'नी जब उस का निकाह़ करना चाहे तो वत़ी छोड़ दे यहां तक कि उसे एक ह़ैज़ आ जाए बा'दे ह़ैज़ निकाह़ कर दे और शोहर के ज़िम्मे

www.dawateislami.net

इस्तिबरा नहीं, लिहाज़ा अगर इस्तिबरा उसे पहले शोहर ने वत़ी कर ली तो जाइज़ है मगर न चाहिये और अगर मालिक बचना चाहता है तो इस्तिबरा मुस्तह़ब है वाजिब नहीं। ज़ानिय्या से निकाह़ किया तो इस्तिबरा की ह़ाजत नहीं। (الدرالمختار، کتاب النکاح،ج٤،ص١٤٠)

मस्अला 68 : बाप अपने बेटे की कनीज़े शरई से निकाह़ कर सकता है। (الفتاوی الھندیة،کتاب النکاح،الباب الثالث في بیان المحرمات،ج١،ص٢٨١)

क़िस्म हशतुम : मुतअ़ल्लिक़ बेह अ़दद।

मस्अला 69 : आज़ाद शख़्स को एक वक़्त में चार औ़रतों और गुलाम को दो से ज़ियादा निकाह़ करने की इजाज़त नहीं और आज़ाद मर्द को कनीज़ का इख़्तियार है इस के लिये कोई ह़द नहीं।

(الدرالمختار، کتاب النکاح، ج٤، ص١٣٧ والفتاوی الھندیة، کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات،ج١،ص٢٧٧)

मस्अला 70 : गुलाम को कनीज़ रखने की इजाज़त नहीं अगर्चे उस के मौला ने इजाज़त दे दी हो। (الدرالمختار، کتاب النکاح،ج٤،ص١٣٨)

मस्अला 71 : पांच औ़रतों से एक अ़क़्द के साथ निकाह़ किया, किसी से निकाह़ न हुवा और अगर हर एक से अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा अ़क़्द किया तो पांचवीं का निकाह़ बात़िल है, बाक़ियों का सह़ीह़। यूहीं गुलाम ने तीन औ़रतों से निकाह़ किया तो इस में भी वोही दो सूरतें हैं। (الفتاوی الھندیة، کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات، ج١، ص٢٧٧)

मस्अला 72 : काफ़िर ह़रबी ने पांच औ़रतों से निकाह़ किया, फिर सब मुसलमान हुवे अगर आगे पीछे निकाह़ हुवा तो चार पहली बाक़ी रखी जाएं और पांचवीं को जुदा कर दे और एक अ़क़्द था तो सब को अ़लाह़िदा कर दे। (الفتاوی الھندیة، کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات، ج١، ص٢٧٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 73 : दो औरतों से एक अक्द में निकाह किया और उन में एक ऐसी है जिस से निकाह नहीं हो सकता तो दूसरी का हो गया और जो महर मज़्कूर हुवा वोह सब उसी को मिलेगा।

(الدرالمختار، کتاب النکاح، ج٤، ص١٤٢)

मस्अला 74 : मुतआ[1] हराम है यूहीं अगर किसी ख़ास वक्त तक के लिये निकाह किया तो येह निकाह भी न हुवा अगर्चे दो सो बरस के लिये करे। (الدرالمختار، کتاب النکاح، ج٤،ص١٤٣)

मस्अला 75 : किसी औरत से निकाह किया कि इतने दिनों के बा'द तलाक़ दे देगा, तो येह निकाह सहीह है या अपने ज़ेहन में कोई मुद्दत ठेहराली हो कि इतने दिनों के लिये निकाह करता हूं मगर ज़बान से कुछ न कहा तो येह निकाह भी हो गया। (الدرالمختار، کتاب النکاح، ج٤،ص١٤٣)

मस्अला 76 : हालते एहराम में निकाह कर सकता है मगर न चाहिये। यूंही मुहरिम (या'नी जो हालते एहराम में हो) उस लड़की का भी निकाह कर सकता है जो उस की विलायत (सरपरस्ती) में है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب النکاح، الباب الثالث في بیان المحرمات، ج١، ص٢٨٣)

क़िस्म नहुम : रज़ाअत[2]

---

(1)....मुतआ से मुराद वोह निकाह है जो वक्ती तौर पर शहवत दूर करने के लिये कुछ रक़म दे कर किया जाए। फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि.11, स. 236, पर आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं "मुतआ की हुरमत सहीह हदीसों से साबित है, अमीरुल मोअमिनीन मौला अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के इरशादों से साबित है, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अक़वाले शरीफ़ा से साबित है और सब से बढ़ कर येह कि कुरआने अज़ीम से साबित है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ...الخ (پ١٨،المؤمنون:٥-٧)"

(2).... रिज़ाअत का तफ़्सीली बयान बहारे शरीअत (मतबूआ मक्तबतुल मदीना) जि. 2, सफ़्हा. 36 पर मुलाहज़ा फ़रमाइएं।

www.dawateislami.net

हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन [1]

आज कल आ़म शिकायत है कि ज़न व शौ (मियां बीवी) में ना इत्तेफ़ाक़ी है। मर्द को औ़रत की शिकायत है तो औ़रत को मर्द की, हर एक दूसरे के लिये बलाए जान (मुसीबत) है और जब इत्तेफ़ाक़ न हो तो ज़िन्दगी तल्ख़ (बद मज़ा) और नताइज निहायत ख़राब। आपस की ना इत्तेफ़ाक़ी इ़लावा दुन्या की ख़राबी के दीन भी बरबाद करने वाली होती है इस ना इत्तेफ़ाक़ी का असरे बद (बुरा असर) इन्हीं तक मह़दूद नहीं रहता बल्कि अवलाद पर भी असर पड़ता है अवलाद के दिल में न बाप का अदब रहता है न मां की इ़ज़्ज़त इस ना इत्तेफ़ाक़ी का बड़ा सबब येह है कि त़रफ़ैन (मियां बीवी) में हर एक दूसरे के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ नहीं रखते और बाहम रवादारी से काम नहीं लेते मर्द चाहता है कि औ़रत को बांदी से बदतर कर के रखे और औ़रत चाहती है कि मर्द मेरा ग़ुलाम रहे जो मैं चाहूं वोह हो, चाहे कुछ हो जाए मगर बात में फ़र्क़ न आए जब ऐसे ख़यालाते फ़ासिदा त़रफ़ैन (या'नी मियां बीवी) में पैदा होंगे तो क्यूं कर नभ सके। दिन रात की लड़ाई और हर एक के अख़्लाक़ व आ़दात में बुराई और घर की बरबादी उसी का नतीजा है। क़ुरआन मजीद में जिस त़रह़ येह हुक्म आया कि [2] اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَی النِّسَآءِ (پ٥، النساء:٣٤) जिस से मर्दों की बड़ाई ज़ाहिर होती है। इसी त़रह़ येह भी फ़रमाया कि [3] وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ (پ٤، النساء:١٩) जिस का साफ़ येह मत़लब है कि औ़रतों के साथ अच्छी मुआ़शरत करो।

---

(1).... बहारे शरीअ़त हिस्सा. 7, जि. 2, स. 99

(2).... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर।*

(3).... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और इन से अच्छा बरताव।*

www.dawateislami.net

इस मौक़अ़ पर हम बा'ज ह़दीसें ज़िक्र करें जिन से हर एक के हुक़ूक़ की मा'रेफ़त ह़ासिल हो मगर मर्द को येह देखना चाहिये कि इस के ज़िम्मे औ़रत के क्या हुक़ूक़ हैं उन्हें अदा करे और औ़रत शोहर के हुक़ूक़ देखे और पूरे करे, येह न हो कि हर एक अपने हुक़ूक़ का मुत़ालबा करे और दूसरे के हुक़ूक़ से सरोकार न रखे और येही फ़साद की जड़ है और येह बहुत ज़रूर है कि हर एक दूसरे की बेजा बातों का तह़म्मुल (बरदाशत) करे और अगर किसी मौक़अ़ पर दूसरी त़रफ़ से ज़ियादती हो तो आमादा ब फ़साद (या'नी लड़ाई झगड़े के लिये तय्यार) न हो कि ऐसी जगह ज़िद पैदा हो जाती है और **सुलझी** हुई बात उलझ जाती है।

ह़दीस 1 : ह़ाकिम ने उम्मुल मोअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत पर सब आदमियों से ज़ियादा ह़क़ उस के शोहर का है और मर्द पर उस की मां का।" (المستدرك للحاكم، كتاب البر و الصلة، باب اعظم الناس حقا...إلخ، الحديث: ٧٤١٨، ج٥، ص ٢٤٤

و كنز العمال، كتاب النكاح، رقم: ٤٤٧٦٤، ج١٦، ص ١٤١)

ह़दीस 2 ता 5 : नसाई अबू हुरैरा से और इमाम अह़मद मुआ़ज़ से और ह़ाकिम बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रावी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर मैं किसी शख़्स को किसी मख़्लूक़ के लिये सजदा करने का हुक्म देता तो औ़रत तो हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सजदा करे।" (المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلة، باب حق الزوجة، الحديث: ٧٤٠٦، ج٥، ص ٢٤٠)

इसी के मिस्ल अबू दावूद और ह़ाकिम की रिवायत क़ैस बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से है, इस में सजदे की वजह भी बयान फ़रमाई कि अल्लाह तआ़ला ने मर्दों का ह़क़ औ़रतों के ज़िम्मे कर दिया है।

(سنن أبي داود، كتاب النكاح، باب فى حق الزوج على المرأة، الحديث: ٢١٤٠، ج٢، ص٣٣٥)

www.dawateislami.net

ह़दीस 6 : इमाम अह़मद व इब्ने माजा व इब्ने ह़ब्बान अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अवफ़ा से रावी, कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "अगर मैं किसी को हुक्म करता कि ग़ैरे ख़ुदा के लिये सजदा करे तो हुक्म देता कि औ़रत अपने शोहर को सजदा करे, क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! औ़रत अपने परवर दगार का ह़क़ अदा न करेगी जब तक शोहर के कुल ह़क़ अदा न करे ।" (سنن ابن ماجه، کتاب النکاح،باب حق الزوج علی المرأة، الحدیث:١٨٥٣،ج٢، ص ٤١١)

ह़दीस 7 : इमाम अह़मद अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : अगर आदमी का आदमी के लिये सजदा करना दुरुस्त होता तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सजदा करे कि इस का इस के ज़िम्मे बहुत बड़ा ह़क़ है क़सम है उस की जिस के क़बज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच लहू बहता हो फिर औ़रत इसे चाटे तो ह़क़्क़े शोहर अदा न किया ।

(المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند انس بن مالك، الحدیث: ١٢٦١٤،ج٤،ص٣١٧)

ह़दीस 8 : सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "शोहर ने औ़रत को बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और ग़ुस्से में इस ने रात गुज़ारी तो सुब्ह़ तक उस औ़रत पर फ़िरिश्ते ला'नत भेजते रहते हैं ।" (صحیح البخاري، کتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدكم آمین..إلخ، الحدیث: ٣٢٣٧،ج٢، ص٣٨٨) और दूसरी रिवायत में है कि "जब तक शोहर उस से राज़ी न हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से नाराज़ रहता है ।" (صحیح مسلم،کتاب النکاح،باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، الحدیث:١٤٣٦، ص٧٥٣)

ह़दीस 9 : इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने माजा मुआ़ज़

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रावी, कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब औ़रत अपने शोहर को दुन्या में ईज़ा देती है तो हूरे ऐ़न कहती हैं खुदा तुझे क़त्ल करे, इसे ईज़ा न दे येह तो तेरे पास मेहमान है, अ़न क़रीब तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आएगा।"

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، ۱۹باب ، الحدیث: ۱۱۷۷، ج۲، ص۳۹۲)

ह़दीस 10 : त़बरानी मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रावी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत ईमान का मज़ा न पाएगी जब तक ह़क़्क़े शोहर अदा न करे।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۹۰،ج۲۰،ص۵۲)

ह़दीस 11 : त़बरानी मैमूना رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھَا से रावी कि फ़रमाया : "जो औ़रत खुदा की इत़ाअ़त करे और शोहर का ह़क़ अदा करे और उसे नेक काम की याद दिलाए और अपनी अ़स्मत और इस के माल में खि़यानत न करे तो इस के और शहीदों के दरमियान जन्नत में एक दर्जे का फ़र्क़ होगा, फिर उस का शोहर बा ईमान नेक खू है तो जन्नत में वोह उस की बीबी है, वरना शो-हदा में से कोई उस का शोहर होगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب النکاح،باب حق الزوج علی المرأۃ، الحدیث:۷۶۴۴،ج۴،ص۵۶۶)

ह़दीस 12 : अबू दावूद व त़यालिसी व इब्ने अ़साकिर इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُمَا से रावी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "शोहर का ह़क़ औ़रत पर येह है कि अपने नफ़्स को इस से न रोके और सिवा फ़र्ज़ के किसी दिन बिग़ैर उस की इजाज़त के रोज़ा न रखे अगर ऐसा किया या'नी बिग़ैर इजाज़त रोज़ा रख लिया तो गुनहगार हुई और बदूने इजाज़त (बिग़ैर इजाज़त) उस का कोई अ़मल मक़्बूल नहीं अगर औ़रत ने कर लिया तो शोहर को सवाब है और औ़रत पर गुनाह और बिग़ैर इजाज़त उस के घर से न जाए, अगर ऐसा किया तो जब तक तौबा न करे अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और फ़िरिश्ते

www.dawateislami.net

उस पर ला'नत करते हैं । अ़र्ज़ की गई अगर्चे शोहर ज़ालिम हो । फ़रमाया : अगर्चे ज़ालिम हो ।" (كنزالعمال، كتاب النكاح، رقم:٤٤٨٠١،ج١٦،ص١٤٤)

ह़दीस 13 : त़बरानी तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत पर शोहर का ह़क़ येह है कि उस के बिछोने को न छोड़े और उस की क़सम को सच्चा करे और बिग़ैर उस की इजाज़त के बाहर न जाए और ऐसे शख़्स को मकान में आने न दे जिस का आना शोहर को पसन्द न हो ।"

(المعجم الکبیر، باب التاء، الحدیث: ١٢٥٨، ج٢، ص٥٢)

ह़दीस 14 : अबू नोऐ़म अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि फ़रमाया : "ऐ औ़रतो ! ख़ुदा से डरो और शोहर की रज़ा मन्दी की तलाश में रहो, इस लिये कि औ़रत को अगर मा'लूम होता कि शोहर का क्या ह़क़ है तो जब तक उस के पास खाना ह़ाज़िर रहता येह खड़ी रहती ।"

(كنزالعمال، كتاب النكاح، رقم: ٤٤٨٠٩،ج١٦،ص١٤٥)

ह़दीस 15 : अबू नोऐ़म ह़िल्या में अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत जब पांचो नमाज़ें पढ़े और माहे र-मज़ान के रोज़े रखे और अपनी इफ़्फ़त की मुह़ाफ़ज़त करे और शोहर की इत़ाअ़त करे तो जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो ।" (حلية الاولياء، رقم: ٨٨٣٠، ج٦، ص٣٣٦)

ह़दीस 16 : तिरमिज़ी उम्मुल मोअमिनीन उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रावी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो औ़रत इस ह़ाल में मरी कि शोहर राज़ी था, वोह जन्नत में दाख़िल होगी ।" (جامع الترمذی، كتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق الزوج علی المرأة،الحدیث:١١٦٤،ج٢،ص٣٨٦)

www.dawateislami.net

ह़दीस 17: बयहक़ी शुअ़बुल ईमान में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तीन शख़्स हैं जिन की नमाज़ क़बूल नहीं होती और उन की कोई नेकी बुलन्द नहीं होती (1) भागा हुवा ग़ुलाम जब तक अपने आक़ाओं के पास लौट न आए और अपने को उन के क़ाबू में न दे दे। और (2) वोह औ़रत जिस का शोहर उस पर नाराज़ है और (3) नशा वाला जब तक होश में न आए।"

(شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد والأھلین،الحدیث:۸۷۲۷،ج۶،ص۴۱۷)

येह चन्द ह़दीसें हुक़ूक़े शोहर की ज़िक्र की गईं औ़रतों पर लाज़िम है कि हुक़ूक़े शोहर का तह़फ़्फ़ुज़ करें और शोहर को नाराज़ कर के **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी का वबाल अपने सर न लें कि इस में दुन्या व आख़िरत दोनों की बरबादी है न दुन्या में चैन न आख़िरत में राह़त।

अब बा'ज़ वोह अह़ादीस ज़िक्र की जाती हैं कि मर्दों को औ़रतों के साथ किस त़रह़ पेश आना चाहिये, मर्दों पर ज़रूर है कि इन का लिह़ाज़ करें और इन इरशादाते आ़लिय्या की पाबन्दी करें।

ह़दीस 18 : बुख़ारी व मुस्लिम अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रतों के बारे में भलाई करने की वसिय्यत फ़रमाता हूं तुम मेरी इस वसिय्यत को क़बूल करो। वोह पस्ली से पैदा की गईं और पस्लियों में सब से ज़ियादा टेढ़ी ऊपर वाली है अगर तू इसे सीधा करने चले तो तोड़ देगा और अगर वैसी ही रहने दे तो टेढ़ी बाक़ी रहेगी।"

(صحیح البخاري،کتاب النکاح، باب الوصاۃ بالنساء، الحدیث:۵۱۸۶،ج۳،ص۴۵۷)

और मुस्लिम शरीफ़ की दूसरी रिवायत में है कि "औ़रत पस्ली से पैदा की गई, वोह तेरे लिये कभी सीधी नहीं हो सकती अगर तू इसे बरतना चाहे तो इसी ह़ालत में बरत सकता है और सीधा

www.dawateislami.net

करना चाहे तो तोड़ देगा और तोड़ना त़लाक़ देना है।"

(صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصية بالنساء، الحديث: ٦١ـ(١٤٦٨)، ص٧٧٥)

ह़दीस 19 : सह़ीह़ मुस्लिम में इन्हीं से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसलमान मर्द औ़रतें मोमिना को मबग़ूज़ न रखे अगर इस की एक आ़दत बुरी मा'लूम होती है दूसरी पसन्द होगी।"(صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصية بالنساء، الحديث:٦٣ـ(١٤٦٩)،ص٧٧٥)

या'नी तमाम आ़दतें ख़राब नहीं होंगी जब कि अच्छी बूरी हर क़िस्म की बातें होंगी तो मर्द को येह न चाहिये कि ख़राब ही आ़दत को देखता रहे बल्कि बुरी आ़दत से चश्म पोशी करे और अच्छी आ़दत की त़रफ़ नज़र करे।

ह़दीस 20 : हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में अच्छे वोह लोग हैं जो औ़रतों से अच्छी त़रह़ पेश आएं।"

(سنن ابن ماجه، کتاب النكاح، باب حسن معاشرة النساء، الحديث:١٩٧٨، ج٢، ص٤٧٨)

ह़दीस 21 : सह़ीह़ैन में अ़ब्दुल्लाह बिन ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कोई शख़्स अपनी औ़रत को न मारे जैसे गुलाम को मारता है फिर दूसरे वक़्त इस से मुजामअ़त करेगा।" (صحيح البخاري، کتاب النكاح، باب مايكره من ضرب النساء،الحديث:٥٢٠٤، ج٣، ص٤٦٥)

"दूसरी रिवायत में है, औ़रत को गुलाम की त़रह़ मारने का क़स्द करता है [या'नी ऐसा न करे] कि शायद दूसरे वक़्त इसे अपना हम ख़्वाब करे।"(صحيح البخاري، کتاب التفسير،سورة(والشمس وضحها)، الحديث: ٤٩٤٢، ج٣، ص٣٧٨)

या'नी ज़ौजिय्यत के तअ़ल्लुक़ात इस क़िस्म के हैं कि हर एक को दूसरे की ह़ाजत और बाहम ऐसे मरासिम कि इन को छोड़ना दुश्वार लिहाज़ा जो इन बातों का ख़याल करेगा मारने का हरगिज़ क़स्द न करेगा।

www.dawateislami.net

बच्चे की परवरिश का बयान (1)

ह़दीस 1 : इमाम अह़मद व अबू दावूद व अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से रावी, कि एक औ़रत ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) से अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरा येह लड़का है मेरा पेट इस के लिये ज़र्फ़ था और मेरे पिस्तान इस के लिये मश्क और मेरी गोद इस की मुह़ाफ़िज़ थी और इस के बाप ने मुझे त़लाक़ दे दी और अब इस को मुझ से छीनना चाहता है। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : "तू ज़ियादा ह़क़दार है, जब तक तू निकाह़ न करे।"

(سنن أبي داود، كتاب الطلاق، باب من احق بالولد، الحديث:٢٢٧٦، ج٢، ص٤١٣)

ह़दीस 2 : सह़ीह़ैन में बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी, कि सुल्ह़े हुदैबिय्या के बा'द दूसरे साल में जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उ़म्रए क़ज़ा से फ़ारिग़ हो कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से रवाना हुए तो ह़ज़रते ह़मज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ की साह़िब ज़ादी चचा चचा कहती पीछे हो लीं। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन्हें ले लिया और हाथ पकड़ लिया फिर ह़ज़रते अ़ली व ज़ैद बिन ह़ारिसा व जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ में हर एक ने अपने पास रखना चाहा। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा, मैं ने ही इसे लिया और मेरे चचा की लड़की है और ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा, मेरे चचा की लड़की है और इस की ख़ाला मेरी बीबी है और ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा : मेरे (रज़ाई) भाई की लड़की है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने लड़की ख़ाला को दिलवाई और फ़रमाया : "ख़ाला ब मन्ज़िला मां के है" और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ) से

---

(1).... बहारे शरीअ़त हिस्सा. 8, जि. 2, स. 252

www.dawateislami.net

फ़रमाया कि : "तुम मुझ से हो और मैं तुम से" और ह़ज़रते जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ) से फ़रमाया कि "तुम मेरी सूरत और सीरत में मुशाबे हो" और ह़ज़रते ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ) से फ़रमाया कि "तुम हमारे भाई और हमारे मौला हो" (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب عمرۃ القضاء، الحدیث:٤٢٥١،ج٣، ص٩٤)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

मस्अला 1: बच्चे की परवरिश का ह़क़ मां के लिये है ख़्वाह वोह निकाह़ में हो या निकाह़ से बाहर हो गई हो हां अगर वोह मुर्तदा हो गई तो परवरिश नहीं कर सकती या किसी फ़िस्क़ में मुब्तला है जिस की वजह से बच्चे की तरबिय्यत में फ़र्क़ आए मसलन ज़ानिया या चोर या नौह़ा करने वाली है तो उस की परवरिश में न दिया जाए बल्कि बा'ज़ फ़ुक़हा ने फ़रमाया अगर वोह नमाज़ की पाबन्द नहीं तो उस की परवरिश में भी न दिया जाए मगर **असह़** येह है कि उस की परवरिश में उस वक़्त रहेगा कि ना समझ हो जब कुछ समझने लगे तो अ़लाह़िदा कर लें कि बच्चा मां को देख कर वोही आ़दत इख़्तियार करेगा जो उस की है। यूहीं मां की परवरिश में उस वक़्त भी न दिया जाए जब कि ब कसरत बच्चे को छोड़ कर इधर उधर चली जाती हो अगर्चे उस का जाना किसी गुनाह के लिये न हो मसलन वोह औ़रत मुर्दे नहलाती है या जनाई है या और कोई ऐसा काम करती है जिस की वजह से उसे अकसर घर से बाहर जाना पड़ता है या वोह औ़रत कनीज़ या उम्मे वलद या मुदब्बरा हो या मुकातबा हो जिस से क़ब्ल अ़क़्दे किताबत बच्चा पैदा हुवा जब कि वोह बच्चा आज़ाद हो और अगर आज़ाद न हो तो ह़क़्क़े परवरिश मौला के लिये है कि उस की मिल्क है मगर अपनी मां से जुदा न किया जाए।

(الدرالمختار وردالمحتار،کتاب الطلاق، باب الحضانۃ، ج٥،ص ٢٥٩-٦١

و الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطلاق، الباب السادس عشر في الحضانۃ،ج١، ص ٥٤١، وغیرھا)

www.dawateislami.net

मस्अला 2 : अगर बच्चे की मां ने बच्चे के ग़ैर **मह़रम** से निकाह़ कर लिया तो इसे परवरिश का ह़क़ न रहा और इस के मह़रम से निकाह़ किया तो ह़क़्क़े परवरिश बात़िल न हुवा। ग़ैर **मह़रम** से मुराद वोह शख़्स है कि नसब की जहत से बच्चे के लिये **मह़रम** न हो अगर्चे रज़ाअ़ की जहत से **मह़रम** हो जैसे उस की मां ने उस के रज़ाई चचा से शादी कर ली तो अब मां की परवरिश में न रहेगा कि अगर्चे रज़ाअ़ के लिह़ाज़ से बच्चे का चचा है मगर नसबन अजनबी है और नसबी चचा से निकाह़ किया तो बात़िल नहीं।

(الدرالمختاروردالمحتار، کتاب الطلاق،مطلب:شروط الحاضنة، ج٥، ص ٢٦١)

मस्अला 3 : मां अगर मुफ़्त परवरिश करना नहीं चाहती और बाप उजरत दे सकता है तो उजरत दे और तंग दस्त है तो मां के बा'द जिन को ह़क़्क़े परवरिश है अगर उन में कोई मुफ़्त परवरिश करे तो उस की परवरिश में दिया जाए बशर्ते़ कि बच्चे के ग़ैर **मह़रम** से उस ने निकाह़ न किया हो और मां से कह दिया जाए कि या मुफ़्त परवरिश कर या बच्चा फ़ुला को दे दे मगर मां अगर बच्चे को देखना चाहे या उस की देख भाल करना चाहे तो मन्अ़ नहीं कर सकते और अगर कोई दूसरी औ़रत ऐसी न हो जिस को ह़क़्क़े परवरिश है मगर कोई अजनबी शख़्स या रिश्तेदार मर्द मुफ़्त परवरिश करना चाहता है तो मां ही को देंगे अगर्चे उस ने अजनबी से निकाह़ किया हो अगर्चे उजरत मांगती हो। (الدرالمختاروردالمحتار، کتاب الطلاق،مطلب:شروط الحاضنة، ج٥، ص ٢٦١)

मस्अला 4 : जिस के लिये ह़क़्क़े परवरिश है अगर वोह इन्कार करे और कोई दूसरी न हो जो परवरिश करे तो परवरिश करने पर मजबूर की जाएगी। यूहीं अगर बच्चे की मां दूध पिलाने से इन्कार करे और बच्चा दूसरी औ़रत का दूध न लेता हो या मुफ़्त कोई दूध नहीं

www.dawateislami.net

पिलाती और बच्चा या उस के बाप के पास माल नहीं तो मां दूध पिलाने पर मजबूर की जाएगी। (ردالمحتار، کتاب الطلاق، مطلب: شروط الحاضنة، ج٥،ص٢٦٥)

मस्अला 5 : मां की परवरिश में बच्चा हो और वोह उस के बाप के निकाह़ या इद्दत में हो तो परवरिश का मुआ़वज़ा नहीं पाएगी वरना इस का भी ह़क़ ले सकती है और दूध पिलाने की उजरत और बच्चे का नफ़क़ा भी और अगर उस के पास रहने का मकान न हो तो येह भी और बच्चे को ख़ादिम की ज़रूरत हो तो येह भी और येह सब अख़राजात अगर बच्चे का माल हो तो उस से दिये जाएं वरना जिस पर बच्चे का नफ़क़ा है उसी के ज़िम्मे येह सब भी हैं।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق، باب الحضانة، ج٥، ص٢٦٦۔٢٦٨)

मस्अला 6 : मां ने अगर परवरिश से इन्कार कर दिया फिर येह चाहती है कि परवरिश करे तो रुजूअ़ कर सकती है।

(ردالمحتار، کتاب الطلاق، باب الحضانة، مطلب: فی لزوم اجرة مسکن الحضانة، ج٥، ص٢٦٤)

मस्अला 7 : मां अगर न हो या परवरिश की अहल न हो या इन्कार कर दिया या अजनबी से निकाह़ किया तो अब ह़क़्क़े परवरिश नानी के लिये है येह भी न हो तो नानी की मां उस के बा'द दादी परदादी ब शराइत़ मज़्कूरए बाला फिर ह़क़ीक़ी बहन फिर अख़्याफ़ी बहन फिर सोतेली बहन फिर ह़क़ीक़ी बहन की बेटी फिर अख़्याफ़ी बहन की बेटी फिर ख़ाला या'नी मां की ह़क़ीक़ी बहन फिर अख़्याफ़ी फिर सोतैली फिर सोतेली बहन की बेटी फिर ह़क़ीक़ी भतीजी फिर अख़्याफ़ी भाई की बेटी फिर सोतेले भाई की बेटी फिर उसी तरतीब से फूफियां फिर मां की ख़ाला फिर बाप की ख़ाला फिर मां की फूफियां फिर बाप की फूफियां और इन सब में वोही तरतीब मल्ह़ूज़ है कि ह़क़ीक़ी फिर अख़्याफ़ी फिर सोतेली। और अगर कोई औ़रत परवरिश करने वाली

www.dawateislami.net

न हो या हो मगर इस का ह़क़ साक़ित़ हो तो इ़स्बात बह तरतीबे इर्स या'नी बाप फिर दादा फिर ह़क़ीक़ी भाई फिर सोतेला फिर भतीजे फिर चचा फिर इस के बेटे मगर लड़की को चचाज़ाद भाई की परवरिश में न दें ख़ुसूसन जब कि मुश्तहात हो और अगर अ़स्बात भी न हों तो ज़विल अरह़ाम की परवरिश में दें मसलन अख़्याफ़ी भाई फिर उस का बेटा फिर मां का चचा फिर ह़क़ीक़ी मामूं। चचा और फूफी और मामूं और ख़ाला की बेटियों को लड़के की परवरिश का ह़क़ नहीं।

(الد رالمختار و رد المحتار،کتاب الطلاق، مطلب: فی لزوم اجرة مسکن الحضانة ،ج٥، ص٢٦٩۔٢٧١)

मस्अला 8 : अगर चन्द शख़्स एक दर्जे के हों तो उन में जो ज़ियादा बेहतर हो फिर वोह कि ज़ियादा परहेज़गार हो फिर वोह कि उन में बड़ा हो ह़क़दार है। (الد رالمختار،کتاب الطلاق،ج٥،ص٢٧١)

मस्अला 9 : बच्चे की मां अगर ऐसे मकान में रहती है कि घर वाले बच्चे से बुग़्ज़ रखते हैं तो बाप अपने बच्चे को उस से ले लेगा या औ़रत वोह मकान छोड़ दे और अगर मां ने बच्चे के किसी रिश्तेदार से निकाह़ किया मगर वोह **मह़रम** नहीं जब भी ह़क़ साक़ित़ हो जाएगा मसलन उस के चचाज़ाद भाई से। हां अगर मां के बा'द उसी चचा के लड़के का ह़क़ है या बच्चा लड़का है तो साक़ित़ न होगा।

(ردالمحتار،کتاب الطلاق، مطلب: فی لزوم اجرة مسکن الحضانة ، ج٥، ص٢٧٢)

मस्अला 10 : अजनबी के साथ निकाह़ करने से ह़क़्क़े परवरिश साक़ित़ हो गया था फिर उस ने त़लाक़े बाइन दे दी या रजई दी मगर इ़द्दत पूरी हो गई तो ह़क़्क़े परवरिश औ़द कर आएगा (या'नी दोबारा परवरिश का ह़क़ ह़ासिल हो जाएगा)। (الهداية،کتاب الطلاق،باب الولد من أحق به، ج٢، ص٢٨٤، وغيرها)

मस्अला 11 : पागल और बोहरे को ह़क़्क़े परवरिश ह़ासिल नहीं और अच्छे हो गए तो ह़क़ ह़ासिल हो जाएगा। यूहीं मुर्तद था, अब मुसलमान हो गया तो परवरिश का ह़क़ इसे मिलेगा।

(ردالمحتار،کتاب الطلاق،مطلب:لو کانت الاخوة..إلخ،ج٥،ص٢٧٣)

www.dawateislami.net

मस्अला 12 : बच्चा नानी या दादी के पास है और वोह ख़ियानत करती है तो फूफी को इख़्तियार है कि उस से ले ले ।

(الفتاوی الهندية،كتاب الطلاق، الباب السادس عشر، ج١،ص٥٤١)

मस्अला 13 : बच्चे का बाप कहता है कि उस की मां ने किसी से निकाह़ कर लिया और मां इन्कार करती है तो मां का क़ौल मो'तबर है और अगर येह कहती है कि निकाह़ तो किया था मगर उस ने त़लाक़ दे दी और मेरा ह़क़ औ़द कर आया तो अगर इतना ही कहा और येह न बताया कि किस से निकाह़ किया जब भी मां का क़ौल मो'तबर है और अगर येह भी बताया कि फ़ुलां से निकाह़ किया था तो अब जब तक वोह शख़्स त़लाक़ का इक़रार न करे मह़ज़ उस औ़रत का कहना काफ़ी नहीं । (الفتاوی الخانية،كتاب النكاح، فصل في الحضانة،ج١،ص١٩٤)

मस्अला 14 : जिस औ़रत के लिये ह़क़्क़े परवरिश है उस के पास लड़के को उस वक़्त तक रहने दें कि अब इसे उस की ह़ाजत न रहे या'नी अपने आप खाता पीता, पहनता, इस्तिन्जा कर लेता हो, इस की मिक़्दार सात बरस की उ़म्र है और अगर उ़म्र में इख़्तिलाफ़ हो तो अगर येह सब काम खुद कर लेता हो तो उस के पास से अ़लाह़िदा कर लिया जाए वरना नहीं और अगर बाप लेने से इन्कार करे तो जबरन उस के ह़वाले किया जाए और लड़की उस वक़्त तक औ़रत की परवरिश में रहेगी कि ह़द्दे शहवत को पहुंच जाए उस की मिक़्दार नव बरस की उ़म्र है और अगर इस उ़म्र से कम में लड़की का निकाह़ कर दिया गया जब भी उसी की परवरिश में रहेगी जिस की परवरिश में है निकाह़ कर देने से ह़क़्क़े परवरिश बात़िल न होगा, जब तक मर्द के क़ाबिल न हो ।

(الدرالمختار، كتاب الطلاق، باب الحضانة، ج٥،ص٢٧٣ والبحرالرائق،كتاب الطلاق،باب الحضانة، ج٤،ص٢٨٧،وغيرهما)

www.dawateislami.net

मस्अला 15 : सात बरस की उ़म्र से बुलूग़ तक लड़का अपने बाप या दादा या किसी और वली के पास रहेगा फिर जब बालिग़ हो गया और समझवाल है कि फ़ितना या बदनामी का अन्देशा न हो और तादीब (इस्लाह़, तरबिय्यत) की ज़रूरत न हो तो जहां चाहे वहां रहे और अगर इन बातों का अन्देशा हो और तादीब की ज़रूरत हो तो बाप दादा वग़ैरा के पास रहेगा ख़ुद मुख़्तार न होगा मगर बालिग़ होने के बा'द बाप पर नफ़्क़ा वाजिब नहीं अब अगर अख़राजात का मुतकफ़्फ़िल हो तो तबर्रुअ़ व एह़सान है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب السادس عشر في الحضانة، ج١، ص٥٤٢ والدرالمختار، كتاب الطلاق، باب الحضانة، ج٥، ص٢٧٧.)

येह हुक्म फ़िक़ही है मगर नज़र बह़ाले ज़माना ख़ुद मुख़्तार न रखा जाए, जब तक चाल चलन अच्छी त़रह़ दुरुस्त न हो लें और पूरा वुसूक़ न होले कि अब इस की वजह से फ़ितना व आ़र न होगा कि आज कल अकसर सोह़बतें मुख़र्रिबे अख़लाक़ (अख़लाक़ को बिगाड़ने वाली) होती हैं और नौ उ़मरी में फ़साद बहुत जल्द सरायत करता है।

मस्अला 16 : लड़की नव बरस के बा'द से जब तक कंवारी है बाप दादा भाई वग़ैरहुम के यहां रहेगी मगर जब कि उ़म्र रसीदा हो जाए और फ़ितने का अन्देशा न हो तो उसे इख़्तियार है जहां चाहे रहे और लड़की सय्यिब है मसलन बेवा है और फ़ितने का अन्देशा न हो तो उसे इख़्तियार है वरना बाप दादा वग़ैरा के यहां रहे और येह हम पहले बयान कर चुके कि चचा के बेटे को लड़की के लिये ह़क़्क़े परवरिश नहीं येही हुक्म अब भी है कि वोह **मह़रम** नहीं बल्कि ज़रूर है कि **मह़रम** के पास रहे और **मह़रम** न हो तो किसी सिक़ा अमानत दार औ़रत के पास रहे जो उस की इ़फ़्फ़त की ह़िफ़ाज़त कर सके और अगर लड़की ऐसी हो कि फ़साद का अन्देशा न हो तो इख़्तियार है।

(الدرالمختار و ردالمحتار، كتاب الطلاق، مطلب: لو كانت الاخوة...الخ،
..الخ، ج٥، ص٢٧٧ و الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب السادس عشر في الحضانة، ج١، ص٤٢)

www.dawateislami.net

मस्अला 17 : लड़का बालिग़ न हुवा मगर काम के क़ाबिल हो गया है तो बाप उसे किसी काम में लगा दे जो काम सिखाना चाहे उस के जानने वालों के पास भेज दे कि उन से काम सीखे नोकरी या मज़्दूरी के क़ाबिल हो और बाप उस से नोकरी या मज़्दूरी कराना चाहे तो नोकरी या मज़्दूरी कराए और जो कमाए उस पर सर्फ़ करे और बच रहे तो उस के लिये जम्अ़ करता रहे और अगर बाप जानता है कि मेरे पास ख़र्च हो जाएगा तो किसी और के पास अमानत रख दे । (الد رالمختار، کتاب الطلاق، باب الحضانة،ج٥،ص٢٧٨) मगर सब से मुक़द्दम येह है कि बच्चों को क़ुरआने मजीद पढ़ाएं और दीन की ज़रूरी बातें सिखाई जाएं रोज़ा व नमाज़ व त़हारत और बैअ़ व इजारा व दीगर मुआ़मलात के मसाइल जिन की रोज़ मर्रा ह़ाजत पड़ती है और ना वाक़िफ़ी से ख़िलाफ़े शरअ़ अ़मल करने के जुर्म में मुब्तला होते हैं उन की ता'लीम हो अगर देखें कि बच्चे को इ़ल्म की त़रफ़ रुजह़ान है और समझदार है तो इ़ल्मे दीन की ख़िदमत से बढ़ कर क्या काम है और अगर इस्तित़ाअ़त न हो तो तस्ह़ीह़ व ता'लीमे अ़क़ाइद और ज़रूरी मसाइल की ता'लीम के बा'द जिस जाइज़ काम में लगाएं इख़्तियार है।

मस्अला 18 : लड़की को भी अ़क़ाइद व ज़रूरी मसाइल सिखाने के बा'द किसी औ़रत से सिलाई और नक़्शो निगार वग़ैरा ऐसे काम सिखाएं जिन की औ़रतों को अकसर ज़रूरत पड़ती है और खाना पकाने और दीगर उमूरे खाना दारी में उस को सलीक़ा होने की कोशिश करें कि सलीक़ा वाली औ़रत जिस ख़ूबी से ज़िन्दगी बसर कर सकती है बद सलीक़ा नहीं कर सकती। (ردالمحتار، کتاب الطلاق،مطلب:لو کانت...الخ،ج٥،ص٢٧٩)

मस्अला 19 : लड़की को नोकर न रखाएं कि जिस के पास नोकर रहेगी कभी ऐसा भी होगा कि मर्द के पास तन्हा रहे और येह बड़े ऐ़ब की बात है। (ردالمحتار، کتاب الطلاق،مطلب:لو کانت الاخوة..إلخ،ج٥،ص٢٧٩)

मस्अला 20 : ज़मानए परवरिश में बाप येह चाहता है कि औ़रत से बच्चे ले कर कहीं दूसरी जगह चला जाए तो उस को येह इख़्तियार

www.dawateislami.net

ह़ासिल नहीं और अगर औ़रत चाहती है कि बच्चे को ले कर दूसरे शहर को चली जाए और दोनों शहरों में इतना फ़ासिला है कि बाप अगर बच्चे को देखना चाहे तो देख कर रात आने से पहले वापस आ सकता है तो ले जा सकती है और इस से ज़ियादा फ़ासिला है तो खुद भी नहीं जा सकती। येही हुक्म एक गाउं से दूसरे गाउं या गाउं से शहर में जाने का है कि क़रीब है तो जाइज़ है वरना नहीं। और शहर से गांव में बिग़ैर इजाज़त नहीं ले जा सकती, हां अगर जहां जाना चाहती है वहां उस का मैका है और वहीं उस का निकाह़ हुवा है तो ले जा सकती है और अगर उस का मैका है मगर वहां निकाह़ नहीं हुवा बल्कि निकाह़ कहीं और हुवा है तो न मैके ले जा सकती है, न वहां जहां निकाह़ हुवा, मां के इ़लावा कोई और परवरिश करने वाली ले जाना चाहती हो तो बाप की इजाज़त से ले जा सकती है। मुसलमान या ज़िम्मी औ़रत बच्चे को दारुल ह़र्ब में मुत़लक़न नहीं ले जा सकती, अगर्चे वहीं निकाह़ हुवा हो।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطلاق،مطلب: لو کانت الاخوۃ ..إلخ، ج٥،ص٢٧٩، وغیرہ)

मस्अला 21 : औ़रत को त़लाक़ दे दी उस ने किसी अजनबी से निकाह़ कर लिया तो बाप बच्चे को उस से ले कर सफ़र में ले जा सकता है जब कि कोई और परवरिश का ह़क़दार न हो वरना नहीं।

(الد رالمختار، کتاب الطلاق،باب الحضانۃ، ج٥، ص ٢٨١)

मस्अला 22 : जब परवरिश का ज़माना पूरा हो चूका और बच्चा बाप के पास आ गया तो बाप पर येह वाजिब नहीं कि बच्चे को उस की मां के पास भेजे न परवरिश के ज़माने में मां पर बाप के पास भेजना लाज़िम था हां अगर एक के पास है और दूसरा उसे देखना चाहता है तो देखने से मन्अ़ नहीं किया जा सकता। (الدرالمختار، کتاب الطلاق، باب الحضانۃ، ج٥،ص٢٧٢)

मस्अला 23 : औ़रत बच्चे को गहवारे में लिटा कर बाहर चली गई, गहवारा गिरा और बच्चा मर गया तो औ़रत पर तावान नहीं कि उस ने खुद ज़ाएअ़ नहीं किया। (الفتاوی الخانیۃ، کتاب النکاح، فصل في الحضانۃ، ج١،ص١٩٤)

www.dawateislami.net

त़लाक़ का बयान (1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ (2)

(پ ۲، البقرة:۲۲۹)

त़लाक़ (जिस के बा'द रजअ़त हो सके) दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है या नकूई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना।

और फ़रमाता है :

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ ظَنَّاۤ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝۲۳۰

(3)
(پ ۲، البقرة : ۲۳۰)

फिर अगर तीसरी त़लाक़ दी तो उस के बा'द वोह औ़रत उसे ह़लाल न होगी जब तक दूसरे शोहर से निकाह़ न करे फिर अगर दूसरे शोहर ने त़लाक़ दे दी तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि दोनों आपस में निकाह़ कर लें अगर येह गुमान हो कि **अल्लाह** के ह़ुदूद को क़ाइम रखेंगे और येह **अल्लाह** की ह़दें है, उन लोगों के लिये बयान करता है जो समझदार हैं।

---

(1).... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा. 8, जि. 2, स. 107

(2).... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *येह त़लाक़ दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है या नकूई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना है।*

(3).... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *फिर अगर तीसरी त़लाक़ उसे दी तो अब वोह औ़रत इसे ह़लाल न होगी जब तक दूसरे ख़ावन्द के पास न रहे फिर वोह दूसरा अगर उसे त़लाक़ दे दे तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जाएं अगर समझते हों कि* ***अल्लाह*** *की ह़दें नबाहेंगे और येह* ***अल्लाह*** *की ह़दें हैं जिन्हें बयान करता है दानिश मन्दों के लिये।*

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّ لَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَ لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ مَاۤ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَ الْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۲۳۱﴾ (1)

(پ ۲، البقرۃ: ۲۳۱)

और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द पूरी होने लगे तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या ख़ूबी के साथ छोड़ दो और उन्हें ज़रर देने के लिये न रोको कि ह़द से गुज़र जाओ और जो ऐसा करेगा उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठा न बनाओ और **अल्लाह** की ने'मत जो तुम पर है उसे याद करो और वोह जो उस ने किताब व ह़िक्मत तुम पर उतारी तुम्हें नसीह़त देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान लो कि **अल्लाह** हर शै को जानता है।

और फ़रमाता है :

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ

और जब औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द पूरी हो जाए तो ऐ औ़रतों के वालियों ! उन्हें शोहरों से

---

(1).... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द आ लगे तो उस वक़्त तक या भलाई के साथ रोक लो या नकूई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ दो और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना न हो कि ह़द से बढ़ो और जो ऐसा करे वोह अपना ही नुक़्सान करता है और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठा न बना लो और याद करो **अल्लाह** का एह़सान जो तुम पर है और वोह जो तुम पर किताब व ह़िक्मत उतारी तुम्हें नसीह़त देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

www.dawateislami.net

يَّنۡكِحۡنَ اَزۡوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوۡا بَيۡنَهُمۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ؕ ذٰلِكَ يُوۡعَظُ بِهٖ مَنۡ كَانَ مِنۡكُمۡ يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمۡ اَزۡكٰى لَكُمۡ وَاَطۡهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۳۲﴾ (1) (پ۲،البقرة ۲۳۲)

निकाह़ करने से न रोको जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रिज़ा मन्द हो जाएं येह उस को नसीह़त की जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते

अह़ादीस

ह़दीस 1 : दारे कुत़नी मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रावी, हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! कोई चीज़ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्दीदा रूए ज़मीन पर पैदा नहीं की और कोई शै रूए ज़मीन पर त़लाक़ से ज़ियादा ना पसन्दीदा पैदा न की ।" (سنن الدار قطنی، کتاب الطلاق،الحدیث:۳۹۲۹،ج۴،ص۴۰)

ह़दीस 2 : अबू दावूद ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि "तमाम ह़लाल चीज़ों में खुदा के नज़्दीक ज़ियादा ना पसन्दीदा त़लाक़ है ।"

(سنن أبي داود، کتاب الطلاق، باب کراھیة الطلاق، الحدیث: ۲۱۷۸،ج۲،ص۳۷۰)

ह़दीस 3 : इमाम अह़मद जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रावी कि हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि इब्लीस अपना तख़्त पानी पर

---

(1).... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द पूरी हो जाए तो ऐ औ़रतों के वालियो उन्हें न रोको इस से कि अपने शोहरों से निकाह़ कर लें जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रिज़ामन्द हो जाएं येह नसीह़त उसे दी जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता हो येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।*

www.dawateislami.net

बिछाता है और अपने लश्कर को भेजता है और सब से ज़ियादा मर्तबे वाला उस के नज़दीक वोह है जिस का फ़ित्ना बड़ा होता है। उन में एक आ कर कहता है मैं ने येह किया, येह किया। इब्लीस कहता है तूने कुछ नहीं किया। दूसरा आता है और कहता है मैं ने मर्द और औ़रत में जुदाई डाल दी। उसे अपने क़रीब कर लेता है और कहता है, हां तू है। (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحديث:١٤٣٨٤، ج٥،ص٥٢)

ह़दीस 4 : तिरमिज़ी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि "हर त़लाक़ वाक़ेअ़ है मगर मो'तूह [या'नी बोहरे] की और उस की जिस की अ़क़्ल जाती रही या'नी मजनून की।"

(جامع الترمذي، كتاب الطلاق...إلخ، باب ماجاء في طلاق المعتوه، الحديث: ١١٩٥،ج٢،ص٤٠٤)

ह़दीस 5 : इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व अबू दावूद व इब्ने माजा व दारमी सोबान رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो औ़रत बिग़ैर किसी ह़रज के शोहर से त़लाक़ का सुवाल करे उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है।"

(جامع الترمذي، كتاب الطلاق...إلخ، باب ماجاء في المختلعات، الحديث: ١١٩٠،ج٢ ص٤٠٢)

ह़दीस 6 : बुख़ारी व मुस्लिम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने अपनी ज़ौजा को हैज़ की ह़ालत में त़लाक़ दे दी थी। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस वाक़िए़ को ज़िक्र किया हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इस पर ग़ज़ब फ़रमाया और येह इरशाद फ़रमाया कि उस से रजअ़त कर ले और रोके रखे यहां तक कि पाक हो जाए। फिर हैज़ आए और पाक हो जाए। इस के बा'द अगर त़लाक़ देना चाहे तो त़हारत की ह़ालत में जिमाअ़ से पहले त़लाक़ दे। (صحيح البخاري،كتاب التفسير،سورة الطلاق، الحديث:٤٩٠٨،ج٣،ص٣٥٧)

www.dawateislami.net

ह़दीस 7 : नसाई ने मह़मूद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۃُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह ख़बर पहुंची कि एक शख़्स ने अपनी ज़ौजा को तीन त़लाक़ें एक साथ दे दीं उस को सुन कर गुस्से में खड़े हो गए और येह फ़रमाया कि किताबुल्लाह से खेल करता है ह़ालांकि मैं तुम्हारे अन्दर अभी मौजूद हूं।

(سنن النسائي،كتاب الطلاق،الثلاث المجموعة ومافيه من التغليظ،الحديث:٣٣٩٨،ص٥٥٤)

ह़दीस 8 : इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۃُ मोअत़ा में रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कहा मैं ने अपनी औ़रत को सो 100 त़लाक़ें दे दीं आप क्या हुक्म देते हैं ? फ़रमाया कि तेरी औ़रत तीन त़लाक़ों से बाइन हो गई और सत्तानवे त़लाक़ के साथ तुने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की आयतों से ठठ्ठा किया।

(الموطأ لإمام مالك،كتاب الطلاق،باب ماجاء في البتة،الحديث:١١٩٢،ج٢،ص٩٨)

अह़कामे फ़िक़्हिय्या

निकाह़ से औ़रत शोहर की पाबन्द हो जाती है। इस पाबन्दी के उठा देने को त़लाक़ कहते हैं और इस के लिये कुछ अल्फ़ाज़ मुक़र्रर हैं जिन का बयान आगे आएगा। इस की दो सूरतें हैं एक येह कि उसी वक़्त से बाहर हो जाए इसे बाइन कहते हैं। दुवुम येह कि इ़द्दत गुज़रने पर बाहर होगी, इसे रजई कहते हैं।

मस्अला 1 : त़लाक़ देना जाइज़ है मगर बे वजहे शरई मम्नूअ़ है (या'नी जब तक कोई शरई उ़ज़्र न हो तो त़लाक़ देना मन्अ़ है) और वजहे शरई हो तो मुबाह़ (जाइज़) बल्कि बा'ज़ सूरतों में मुस्तह़ब मसलन औ़रत उस को या औरों को ईज़ा देती या नमाज़ नहीं पड़ती है। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۃُ फ़रमाते हैं कि बे नमाज़ी औ़रत

www.dawateislami.net

को त़लाक़ दे दों और उस का महर मेरे ज़िम्मे बाक़ी हो, इस ह़ालत के साथ दरबारे ख़ुदा में मेरी पेशी हो तो येह उस से बेहतर है कि उस के साथ ज़िन्दगी बसर करूं। और बा'ज़ सूरतों में त़लाक़ देना वाजिब है मसलन शोहर ना मर्द या हीजड़ा है या इस पर किसी ने जादू या अ़मल कर दिया है कि जिमाअ़ करने पर क़ादिर नहीं और इस के इज़ाले की भी कोई सूरत नज़र नहीं आती कि इन सूरतों में त़लाक़ न देना सख़्त तकलीफ़ पहुंचाना है। (الدر المختار، کتاب الطلاق، ج٤،ص٤١٤-٤١٧، وغیرہ)

मस्अला 2 : त़लाक़ की तीन क़िस्में हैं :

(1) ह़सन। (2) अह़सन। (2) बिदई।

जिस तुहर (पाकी की ह़ालत) में वत़ी न की हो उस में एक त़लाक़े रजई दे और छोड़े रहे यहां तक कि इद्दत गुज़र जाए, येह अह़सन है।

और ग़ैर मौत़ूआ को त़लाक़ दी अगर्चे हैज़ के दिनों में दी हो या मौत़ूआ (ऐसी औ़रत जिस से सोह़बत की गई हो उस) को तीन तुहर में तीन त़लाक़ें दें। बशर्ते कि न इन तुहरों में वत़ी की हो न हैज़ में या तीन महीने में तीन त़लाक़ें उस औ़रत को दीं जिसे हैज़ नहीं आता मसलन ना बालिग़ा या ह़म्ल वाली है या इयास की उ़म्र को पहुंच गई तो येह सब सूरतें त़लाक़े ह़सन की हैं। ह़म्ल वाली या सिने इयास वाली (ऐसी उ़म्र जिस में हैज़ आना बन्द हो जाए इस) को वत़ी के बा'द त़लाक़ देने में कराहत नहीं। यूहीं अगर उस की उ़म्र नौ साल से कम की हो तो कराहत नहीं और नौ बरस या ज़ियादा की उ़म्र है मगर अभी हैज़ नहीं आया है तो अफ़्ज़ल येह है कि वत़ी व त़लाक़ में एक महीने का फ़ासिला हो।

www.dawateislami.net

बदई येह कि एक तुहर में दो या तीन त़लाक़ दे दे, तीन दफ़्आ में या दो दफ़्आ या एक ही दफ़्आ में ख़्वा तीन बार लफ़्ज़ कहे या यूं कह दिया के तुझे तीन त़लाक़ें या एक ही त़लाक़ दी मगर उस तुहर में वत़ी कर चुका है या मौत़ूआ को ह़ैज़ में त़लाक़ दी या तुहर ही में त़लाक़ दी मगर इस से पहले जो ह़ैज़ आया था उस में वत़ी की थी या उस ह़ैज़ में त़लाक़ दी थी या येह सब बातें नहीं मगर तुहर में त़लाक़े बाइन दी। (الدرالمختار، کتاب الطلاق، ج٤، ص٤١٩۔ ٤٢٤، وغیره)

मस्अला 3 : ह़ैज़ में त़लाक़ दी तो रजअ़त (इ़द्दत के अन्दर रुजूअ़ करना) वाजिब है कि इस ह़ालत में त़लाक़ देना गुनाह था अगर त़लाक़ देना ही है तो उस ह़ैज़ के बा'द तुहर गुज़र जाए फिर ह़ैज़ आ कर पाक हो अब दे सकता है। येह उस वक़्त है कि जिमाअ़ से रजअ़त की हो और अगर क़ौल या बोसा लेने या छूने से रजअ़त की हो तो इस ह़ैज़ के बा'द जो तुहर है इस में भी त़लाक़ दे सकता है। इस के बा'द दूसरे तुहर के इन्तेज़ार की ह़ाजत नहीं। (الجوهرة النيرة، کتاب الطلاق، الجزء الثاني، ص٤١، وغیرها)

मस्अला 4 : मौत़ूआ से कहा तुझे सुन्नत के मुवाफ़िक़ दो या तीन त़लाक़ें। अगर उसे ह़ैज़ आता है तो हर तुहर में एक वाक़ेअ़ होगी पहली उस तुहर में पड़ेगी जिस में वत़ी न की हो और अगर येह कलाम उस वक़्त कहा कि पाक थी और इस तुहर में वत़ी भी नहीं की है तो एक फ़ौरन वाक़ेअ़ होगी। और अगर उस वक़्त उसे ह़ैज़ है या पाक है मगर उस तूहर में वत़ी कर चुका है तो अब ह़ैज़ के बा'द पाक होने पर पहली त़लाक़ वाक़ेअ़ होगी और ग़ैर मौत़ूआ है या उसे ह़ैज़ नहीं आता तो एक फ़ौरन वाक़ेअ़ होगी, अगर्चे ग़ैर मौत़ूआ को इस वक़्त ह़ैज़ हो फिर अगर ग़ैर मौत़ूआ है तो बाक़ी उस वक़्त वाक़ेअ़ होगी कि उस से निकाह़ करे क्यूंकि पहली ही त़लाक़ से बाइन हो गई और निकाह़ से निकल गई दूसरी के लिये मह़ल न रही और अगर मौत़ूआ है मगर ह़ैज़ नहीं आता तो दूसरे महीने में दूसरी और तीसरे महीने में

www.dawateislami.net

तीसरी वाक़ेअ़ होगी और अगर इस कलाम से येह निय्यत की, कि तीनों अभी पड़ जाएं या हर महीने के शुरूअ़ में एक वाक़ेअ़ हो तो येह निय्यत भी सह़ीह़ है। (الدرالمختار،کتاب الطلاق،ج٤،ص٤٢٦) मगर ग़ैर मौत़ूआ में येह निय्यत कि हर माह के शुरूअ़ में एक वाक़ेअ़ हो, बेकार है कि वोह पहली ही से बाइन हो जाएगी (या'नी निकाह़ से निकल जाएगी) और मह़ल न रहेगी (या'नी त़लाक़ का मह़ल न रहेगी)।

मस्अला 5 : त़लाक़ के लिये शर्त़ येह है कि शोहर आ़क़िल बालिग़ हो, ना बालिग़ या मजनून न ख़ुद त़लाक़ दे सकता है, न उस की त़रफ़ से उस का वली। मगर नशे वाले ने त़लाक़ दी तो वाक़ेअ़ हो जाएगी कि येह आ़क़िल के हुक्म में है और नशा ख़्वाह शराब पीने से हो या बंग वग़ैरा किसी और चीज़ से। अफ़्यून की पीनक में त़लाक़ दे दी जब भी वाक़ेअ़ हो जाएगी त़लाक़ में औ़रत की जानिब से कोई शर्त़ नहीं ना बालिग़ा हो या मजनूना, बहर ह़ाल त़लाक़ वाक़ेअ़ होगी।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق،ج٤، ص٤٢٧۔٤٣٨و الفتاوی الهندیة،کتاب الطلاق، الباب الاول، فصل فیمن یقع طلاقه،ج١،ص٣٥٣)

मस्अला 6 : किसी ने मजबूर कर के इसे नशा पीला दिया या ह़ालते इज़्त़िरार में पिया (मसलन प्यास से मर रहा था और पानी न था) और नशे में त़लाक़ दे दी तो सह़ीह़ येह है कि वाक़ेअ़ होगी।

(ردالمحتار،کتاب الطلاق، مطلب: في الحشيشة والأفيون والبنج،ج٤،ص٤٣٣)

मस्अला 7 : येह शर्त़ नहीं कि मर्द आज़ाद हो ग़ुलाम भी अपनी ज़ौजा को त़लाक़ दे सकता है और मौला उस की ज़ौजा को त़लाक़ नहीं दे सकता। और येह भी शर्त़ नहीं कि ख़ुशी से त़लाक़ दी जाए बल्कि इकराहे शरई (या'नी कोई शख़्स किसी को सह़ीह़ धमकी दे कि अगर तूने त़लाक़ न दी तो मैं तुझे मार डालूंगा या हाथ पाऊं तोड़ दूंगा या नाक, कान वग़ैरा कोई उ़ज़्व काट डालूंगा या सख़्त मार मारूंगा और येह समझता हो कि येह कहने वाला जो कुछ कहता है कर गुज़रेगा) की सूरत में भी त़लाक़ वाक़ेअ़ हो जाएगी। (الجوهرة النيرة،کتاب الطلاق،الجزء الثاني،ص٤١)

www.dawateislami.net

मस्अला 8 : अल्फ़ाज़े त़लाक़ बत़ौरे हज़्ल कहे या'नी उन से दूसरे मा'ना का इरादा किया जो नहीं बन सकते जब भी त़लाक़ हो गई। यूहीं ख़फ़ीफ़ुल अ़क़्ल (कम अ़क़्ल) की त़लाक़ भी वाक़ेअ़ है और बोहरा मजनून के हुक्म में है।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الطلاق، مطلب: في المسائل التی تصح مع الاکراہ، ج٤، ص ٤٣١-٤٣٨)

मस्अला 9 : गूंगे ने इशारे से त़लाक़ दी हो गई जब कि लिखना न जानता हो, और लिखना जानता हो तो इशारे से न होगी बल्कि लिखने से होगी। (فتح القدیر، کتاب الطلاق، فصل و یقع طلاق کل زوج ...إلخ، ج٣، ص٣٤٨)

मस्अला 10 : कोई और लफ़्ज़ कहना चाहता है, ज़बान से लफ़्ज़े त़लाक़ निकल गया या लफ़्ज़े त़लाक़ बोला मगर इस के मा'ना नहीं जानता या सहवन (भूल कर) या ग़फ़्लत में कहा इन सब सूरतों में त़लाक़ वाक़ेअ़ हो गई। (الدرالمختار، کتاب الطلاق، ج٤، ص٤٣٥)

मस्अला 11: मरीज़ जिस का मरज़ इस ह़द को न पहुंचा हो कि अ़क़्ल जाती रहे उस की त़लाक़ वाक़ेअ़ है। काफ़िर की त़लाक़ वाक़ेअ़ है या'नी जब कि मुसलमान के पास मुक़द्दमा पेश हो तो त़लाक़ का हुक्म देगा। (الدرالمختار، کتاب الطلاق، ج٤، ص٤٣٦)

मस्अला 12 : मजनून ने होश के ज़माने में किसी शर्त़ पर त़लाक़ मुअ़ल्लक़ की थी और वोह शर्त़ ज़मानए जुनून में पाई गई तो त़लाक़ हो गई। मसलन येह कहा था कि अगर मैं इस घर में जाऊं तो तुझे त़लाक़ है और अब जुनून की ह़ालत में उस घर में गया तो त़लाक़ हो गई। हां अगर होश के ज़माने में येह कहा था कि मैं मजनून हो जाऊं तो तुझे त़लाक़ है तो मजनून होने से त़लाक़ न होगी।

(الدرالمختاروردالمحتار، کتاب الطلاق، مطلب: في الحشيشة والأفيون والبنج، ج٤، ص٤٣٧)

www.dawateislami.net

मस्अला 13 : मजनून ना मर्द है या उस का उ़ज़्वे तनासुल कटा हुवा है या औ़रत मुसलमान हो गई और मजनून के वालिदैन इस्लाम से मुन्किर हैं तो इन सूरतों में क़ाज़ी तफ़रीक़ (जुदा) कर देगा और येह तफ़रीक़ त़लाक़ होगी । (الدر المختار،کتاب الطلاق،ج٤، ص٤٣٧)

मस्अला 14 : सरसाम (एक बीमारी जिस से दिमाग़ में वरम आ जाता है) व बरसाम (एक बीमारी जिस से फेफड़ों में वरम आ जाता है और सीने में दर्द होता है) या किसी और बीमारी में जिस में अ़क़्ल जाती रही ग़शी की ह़ालत में या सोते में त़लाक़ दे दी तो वाक़ेअ़ न होगी यूहीं अगर गुस्सा इस ह़द का हो कि अ़क़्ल जाती रहे तो वाक़ेअ़ न होगी । (الدر المختارورِدالمحتار،کتاب الطلاق،مطلب: في طلاق المدهوش،ج٤،ص٤٣٨)

आज कल अकसर लोग त़लाक़ दे बेठते हैं बा'द को अफ़्सोस करते और त़रह़ त़रह़ के ह़ीले से येह फ़तवा लिया चाहते हैं कि त़लाक़ वाक़ेअ़ न हो । एक उ़ज़्र अकसर येह भी होता है कि गुस्से में त़लाक़ दी थी । मुफ़्ती को चाहिये येह अम्र मल्ह़ूज़ रखे कि मुत़लक़न गुस्से का ए'तबार नहीं । मा'मूली गुस्से में त़लाक़ हो जाती है । वोह सूरत कि अ़क़्ल गुस्से से जाती रहे बहुत नादिर है, लिहाज़ा जब तक इस का सुबूत न हो मह़्ज़ साइल के कह देने पर ए'तिमाद न करे ।

मस्अला 15 : अ़ददे त़लाक़ में औ़रत का लिह़ाज़ किया जाएगा या'नी औ़रत आज़ाद हो तो तीन त़लाक़ें हो सकती हैं अगर्चे उस का शोहर गुलाम हो और बांदी हो तो उसे दो ही त़लाक़ें दी जा सकती हैं अगर्चे शोहर आज़ाद हो । (الفتاوی الهندية،کتاب الطلاق،الباب الاول،فصل فيمن يقع طلاقه...إلخ،ج١،ص٣٥٤)

मस्अला 16 : ना बालिग़ की औ़रत मुसलमान हो गई और शोहर पर क़ाज़ी ने इस्लाम पेश किया । अगर वोह समझदार है और इस्लाम से इन्कार करे तो त़लाक़ हो गई । (ردالمحتار،کتاب الطلاق،مطلب: في الحشيشة والأفيون والبنج،ج٤،ص٤٣٨)

www.dawateislami.net

मस्अला 17 : ज़बान से अल्फ़ाज़े त़लाक़ न कहे मगर किसी ऐसी चीज़ पर लिखा कि हुरूफ़ मुमताज़ न होते हों (या'नी समझ न आते हों) मसलन पानी या हवा पर तो त़लाक़ न होगी और अगर ऐसी चीज़ पर लिखे कि हुरूफ़ मुमताज़ होते हों मसलन काग़ज़ या तख़्ते वग़ैरा पर और त़लाक़ की निय्यत से लिखे तो हो जाएगी और अगर लिख कर भेजा या'नी इस त़रह़ लिखा जिस त़रह़ ख़ुत़ूत़ लिखे जाते हैं कि मा'मूली अल्क़ाब व आदाब के बा'द अपना मत़लब लिखते हैं जब भी हो गई बल्कि अगर न भी भेजे जब भी इस सूरत में हो जाएगी । और येह त़लाक़ लिखते वक़्त पड़ेगी और उसी वक़्त से इद्दत शुमार होगी । और अगर यूं लिखा कि मेरा येह ख़त़ जब तुझे पहुंचे तुझे त़लाक़ है तो औ़रत को जब तह़रीर पहुंचेगी उस वक़्त त़लाक़ होगी औ़रत चाहे पढ़े या न पढ़े और फ़र्ज़ कीजिये कि औ़रत को तह़रीर पहुंची ही नहीं मसलन उस ने भेजी या रास्ते में गुम हो गई तो त़लाक़ न होगी और अगर येह तह़रीर औ़रत के बाप को मिली उस ने चाक कर दी (फ़ाड़ दी) लड़की को न दी तो अगर लड़की के तमाम कामों में येह तसर्रुफ़ करता है और वोह तह़रीर उस शहर में उस को मिली जहां लड़की रहती है तो त़लाक़ हो गई वरना नहीं मगर जब कि तह़रीर आने की लड़की को ख़बर दी और वोह फटी हुई तह़रीर उसे दी और वोह पढ़ने में आती है तो वाक़ेअ़ हो जाएगी ।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق، ج٤، ص٤٤٢ والفتاوى الهندية، کتاب الطلاق، الباب الثاني، الفصل السادس في الطلاق بالکتابة، ج١، ص٣٧٨، وغيرهما)

मस्अला 18 : किसी पर्चे पर त़लाक़ लिखी और कहता है कि मैं ने मश्क़ के त़ौर पर लिखा है तो क़ज़ाअन इस का क़ौल मो'तबर नहीं ।

(ردالمحتار، کتاب الطلاق، مطلب: في الطلاق بالکتابة، ج٤، ص٤٤٢)

www.dawateislami.net

मस्अला 19 : दो पर्चों पर येह लिखा कि जब मेरी येह तह़रीर तुझे पहुंचे तुझे त़लाक़ है और औ़रत को दोनों पर्चे पहुंचे तो क़ाज़ी दो[2] त़लाक़ों का हुक्म देगा। (ردالمحتار،کتاب الطلاق، مطلب: في الطلاق بالكتابة،ج٤،ص٤٤٢)

मस्अला 20 : दूसरे से त़लाक़ लिखवा कर भेजी तो त़लाक़ हो जाएगी। लिखने वाले से कहा मेरी औ़रत को त़लाक़ लिख दे तो येह इक़रारे त़लाक़ है या'नी त़लाक़ हो जाएगी अगर्चे वोह न लिखे।

(ردالمحتار،کتاب الطلاق، مطلب: في الطلاق بالكتابة،ج٤،ص٤٤٣)

मस्अला 21 : औ़रत को ब ज़रीअ़ए तह़रीर त़लाक़े सुन्नत देना चाहता है तो अगर एक त़लाक़ देनी है। यूं लिखे कि जब मेरी येह तह़रीर तुझे पहुंचे इस के बा'द ह़ैज़ से पाक होने पर तुझे त़लाक़ है। और तीन देनी हों तो यू लिखे मेरी तह़रीर पहुंचने के बा'द जब तू ह़ैज़ से पाक हो तुझे त़लाक़ फिर जब ह़ैज़ से पाक हो तो त़लाक़ फिर जब ह़ैज़ से पाक हो तो त़लाक़ या यूं लिख दे मेरी तह़रीर पहुंचने पर तुझे सुन्नत के मुवाफ़िक़ तीन त़लाक़ें तो येह भी उसी तरतीब से वाक़ेअ़ होगी या'नी हर ह़ैज़ से पाक होने पर एक एक त़लाक़ पड़ेगी और अगर औ़रत को ह़ैज़ न आता हो तो लिख दे जब चांद हो जाए तुझे त़लाक़ फिर दूसरे महीने में त़लाक़ फिर तीसरे महीने में त़लाक़ या वोही लफ़्ज़ लिख दे कि सुन्नत के मुवाफ़िक़ तीन त़लाक़ें।

(الفتاوى الهندية،کتاب الطلاق، الباب الاول في تفسيره وركنه..إلخ، وامّا البدعى، ج١،ص٣٥٢)

मस्अला 22 : शोहर ने औ़रत को ख़त़ लिखा उस में ज़रूरत की जो बातें लिखनी थी लिखीं आख़िर में येह लिख दिया कि जब मेरा येह ख़त़ तुझे पहुंचे तुझे त़लाक़ फिर येह त़लाक़ का जुम्ला मिटा कर ख़त़ भेज दिया तो औ़रत को ख़त़ पहुंचते ही त़लाक़ हो गई और अगर ख़त़ का तमाम मज़्मून मिटा दिया और त़लाक़ का जुम्ला बाक़ी रखा और भेज दिया तो त़लाक़ न हुई और अगर पहले येह लिखा कि जब

www.dawateislami.net

मेरा येह ख़त़ पहुंचे तुझे त़लाक़ और इस के बा'द और मत़लब की बातें लिखीं तो हुक्म बिल अ़क्स है या'नी अलफ़ाज़े त़लाक़ मिटा दिये तो त़लाक़ न हुई और बाक़ी रखे तो हो गई।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب الثاني، الفصل السادس في الطلاق بالكتابة، ج١، ص٣٧٨)

मस्अला 23 : ख़त़ में त़लाक़ लिखी और उस के बा'द मुत्तसिलन (साथ मिला कर) اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالی लिखा तो त़लाक़ न हुई और अगर फ़स्ल के साथ (कुछ फ़ासिले के बा'द) लिखा तो हो गई।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب الثاني، الفصل السادس في الطلاق بالكتابة، ج١، ص٣٧٨)

मस्अला 24 : तह़रीर से त़लाक़ के सुबूत में येह ज़रूर है कि शोहर इक़रार करे कि मैं ने लिखी या लिखवाई या औ़रत इस पर गवाह पेश करे मह़ज़ उस के ख़त़ से मुशाबेह होना या उस के से दस्तख़त़ होना या उस की सी मुहर होना काफ़ी नहीं। हां अगर औ़रत को इत़्मीनान और ग़ालिब गुमान है कि येह तह़रीर उसी की है तो इस पर अ़मल करने की औ़रत को इजाज़त है मगर जब शोहर इन्कार करे तो बिग़ैर शहादत चारा नहीं।

(الفتاوی الخانية، كتاب الحظر والاباحة، باب مايكره من الثياب...الخ، ج٤، ص٣٧٦، وغيرها)

मस्अला 25 : किसी ने शोहर को त़लाक़ नामा लिखने पर मजबूर किया उस ने लिख दिया, मगर न दिल में इरादा है, न ज़बान से त़लाक़ का लफ़्ज़ कहा तो त़लाक़ न होगी। मजबूरी से मुराद शरई मजबूरी है मह़ज़ किसी के इसरार करने पर लिख देना या बड़ा है उस की बात कैसे टाली जाए, येह मजबूरी नहीं।

(ردالمحتار، كتاب الطلاق، مطلب: في الاكراه على التوكيل...إلخ، ج٤، ص٤٢٨)

मस्अला 26 : त़लाक़ दो[2] क़िस्म है सरीह़ व किनाया। सरीह़ वोह जिस से त़लाक़ मुराद होना ज़ाहिर हो, अकसर त़लाक़ में इस का इस्ति'माल हो, अगर्चे वोह किसी ज़बान का लफ़्ज़ हो।

(الجوهرة النيرة، كتاب الطلاق، الجزء الثاني، ص٤٢، وغيرها)

www.dawateislami.net

ज़िहार का बयान [1]

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ (1)

(پ ۲۸، المجادلة : ۲)

*जो लोग तुम में से अपनी औ़रतों से ज़िहार करते हैं (उन्हें मां की मिस्ल कह देते) वोह उन की माएं नहीं, उन की माएं तो वोही हैं जिन से पैदा हुए और वोह बेशक बुरी और निरी झूटी बात कहते हैं और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मुआ़फ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।*

मसाइले फ़िक़्हिय्या

मस्अला 1 : ज़िहार के येह मा'ना हैं कि अपनी ज़ौजा या उस के किसी जुज़्वे शाएअ़ या ऐसे जुज़् को जो कुल से ता'बीर किया जाता हो ऐसी औ़रत से तशबीह देना जो इस पर हमेशा के लिये ह़राम हो या उस के किसी ऐसे उ़ज़्व से तशबीह देना जिस की त़रफ़ देखना ह़राम हो मसलन कहा तू मुझ पर मेरी मां की मिस्ल है या तेरा सर या तेरी गर्दन या तेरा निस्फ़ मेरी मां की पीठ की मिस्ल है।

(الدر المختار ورد المحتار، كتاب الطلاق، باب الظهار، ج۵، ص۱۲۵، ۱۲۹، والفتاوى الهندية، كتاب الطلاق، الباب التاسع في الظهار، ج۱، ص۵۰۵)

---

(1).... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा.8, जि. 2 स. 205

(2).... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *वोह जो तुम में अपनी बीबियों को अपनी मां की जगह कह बेठते हैं वोह उन की माएं नहीं उन की माएं तो वोही है जिन से वोह पैदा हैं और वोह बेशक बुरी और निरी झूट बात कहते हैं और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मुआ़फ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।*

www.dawateislami.net

मस्अला 2 : ज़िहार के लिये इस्लाम व अ़क़्ल व बुलूग़ शर्त़ है काफ़िर ने अगर कहा तो ज़िहार न हुवा या'नी अगर कहने के बा'द मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवा तो उस पर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं । यूहीं ना बालिग़ व मजनून या बोहरे या मदहोश या सरसाम व बरसाम के बीमार ने या बेहोश या सोने वाले ने ज़िहार किया तो ज़िहार न हुवा और हंसी मज़ाक़ में या नशे में या मजबूर किया गया इस ह़ालत में या ज़बान से ग़लत़ी में ज़िहार का लफ़्ज़ निकल गया तो ज़िहार है ।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق،باب الظهار،ج٥، ص١٢٦ و الفتاوی الهندیة، کتاب الطلاق،الباب التاسع في الظهار،ج١،ص٥٠٨)

मस्अला 3 : ज़ौजा की जानिब से कोई शर्त़ नहीं, आज़ाद हो या बांदी, मदब्बरा या मकातिबा या उम्मे वलद, मदख़ूला हो या ग़ैर मदख़ूला, मुस्लिमा हो या किताबिय्या, ना बालिग़ा हो या बालिग़ा, बल्कि अगर औ़रत ग़ैर किताबिया है और उस का शोहर इस्लाम लाया मगर अभी औ़रत पर इस्लाम पेश नहीं किया गया था कि शोहर ने ज़िहार किया तो ज़िहार हो गया औ़रत मुसलमान हुई तो शोहर पर कफ़्फ़ारा देना होगा ।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطلاق،الباب التاسع في الظهار،ج١،ص٥٠٥ وردالمحتار، کتاب الطلاق، باب الظهار، ج٥،ص١٢٦)

मस्अला 4 : अपनी बांदी से ज़िहार नहीं हो सकता मौत़ूआ हो (जिस से वत़ी की गई हो) या ग़ैर मौत़ूआ, यूहीं अगर किसी औ़रत से बिग़ैर इज़्न लिये निकाह़ किया और ज़िहार किया फिर औ़रत ने निकाह़ को जाइज़ कर दिया तो ज़िहार न हुवा कि वक़्ते ज़िहार वोह ज़ौजा न थी । यूहीं जिस औ़रत को त़लाक़े बाइन दे चुका है या ज़िहार को किसी शर्त़ पर मुअ़ल्लक़ किया और वोह शर्त़ उस वक़्त पाई गई कि औ़रत को बाइन त़लाक़ दे दी तो इन सूरतों में ज़िहार नहीं ।

(رد المحتار، کتاب الطلاق،باب الظهار،ج٥،ص١٢٦)

www.dawateislami.net

मस्अला 5: जिस औ़रत से तशबीह दी अगर उस की हु़रमत आ़रज़ी है हमेशा के लिये नहीं तो ज़िहार नहीं मसलन ज़ौजा की बहन या जिस को तीन त़लाक़ें दी हैं या मजूसी या बुत परस्त औ़रत कि येह मुसलमान या किताबिया हो सकती हैं और उन की हु़रमत दाइमी न होना ज़ाहिर। (الدرالمختار، کتاب الطلاق،باب الظهار،ج٥،ص١٢٧)

मस्अला 6 : अजनबिया से कहा कि अगर तू मेरी औ़रत हो या मैं तुझ से निकाह़ करूं तो तू ऐसी है तो ज़िहार हो जाएगा कि मिल्क या सबबे मिल्क की त़रफ़ इज़ाफ़त हुई और येह काफ़ी है।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق،باب الظهار،ج٥،ص١٢٨)

मस्अला 7 : औ़रत मर्द से ज़िहार के अल्फ़ाज़ कहे तो ज़िहार नहीं बल्कि लग़्व हैं। (الجوهرة النيرة، کتاب الظهار،الجزء الثانی،ص٨٣)

मस्अला 8 : औ़रत के सर या चेहरा या गर्दन या शर्मगाह को मह़ारिम से तशबीह दी तो ज़िहार है और अगर औ़रत की पीठ या पेट या हाथ या पाऊं या रान को तशबीह दी तो नहीं। यूहीं अगर मह़ारिम के एसे उ़ज़्व से तशबीह दी जिस की त़रफ़ नज़र करना ह़राम न हो मसलन सर या चेहरा या हाथ या पाऊं या बाल तो ज़िहार नहीं और घुटने से तशबीह दी तो है। (الجوهرة النيرة، کتاب الظهار،الجزء الثانی،ص ٨٤ والفتاوی الخانية، کتاب الطلاق، باب الظهار، ج٢،ص٢٦٥،وغيرهما)

मस्अला 9 : मह़ारिम से मुराद आ़म है नसबी हों या रज़ाई या सुसराली रिश्ते से लिहाज़ा मां बहन फूफी लड़की और रज़ाई मां और बहन वग़ैराहुमा और ज़ौजा की मां और लड़की जब कि ज़ौजा मदख़ूला हो और मदख़ूला न हो तो उस की लड़की से तशबीह देने में ज़िहार नहीं कि वोह मह़ारिम में नहीं। यूहीं जिस औ़रत से उस के बाप या बेटे ने مَعاذَالله ज़िना किया है उस से तशबीह दी या जिस औ़रत से उस ने ज़िना किया है उस की मां या लड़की से तशबीह दी तो ज़िहार है।

(الفتاوی الهندية، کتاب الطلاق، الباب التاسع في الظهار، ج١،ص٥٠٥،٥٠٦)

www.dawateislami.net

मस्अला 10 : मह़ारिम की पीठ या पेट या रान से तशबीह दी या कहा मैं ने तुझ से ज़िहार किया तो येह अल्फ़ाज़ सरीह़ हैं इन में निय्यत की कुछ ह़ाजत नहीं कुछ भी निय्यत न हो या त़लाक़ की निय्यत हो या इकराम की निय्यत हो, हर ह़ालत में ज़िहार ही है और अगर येह कहता है कि मक़्सूद झूटी ख़बर देना था या ज़मानए गुज़शता की ख़बर देना है तो क़ज़ाअन तसदीक़ न करेंगे और औ़रत भी तसदीक़ नहीं कर सकती । (الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب التاسع في الظهار، ج١، ص٥٠٧)

मस्अला 11 : औ़रत को मां या बेटी या बहन कहा तो ज़िहार नहीं, मगर ऐसा कहना मकरूह है । (الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب التاسع في الظهار، ج١، ص٥٠٧)

मस्अला 12 : औ़रत से कहा तू मुझ पर मेरी मां की मिस्ल है तो निय्यत दरयाफ़्त की जाए अगर उस के ए'ज़ाज़ (इ़ज़्ज़त व एह़तिराम) के लिये कहा तो कुछ नहीं और त़लाक़ की निय्यत है तो बाइन त़लाक़ वाक़ेअ़ होगी और ज़िहार की निय्यत है तो ज़िहार है और तह़रीम (ह़राम करने) की निय्यत है तो ईला है और कुछ निय्यत न हो तो कुछ नहीं । (الجوهرة النيرة، كتاب الظهار، الجزء الثانی، ص٨٤)

मस्अला 13 : अपनी चन्द औ़रतों को एक मजलिस या मुतअ़द्दद मजालिस में मह़ारिम के साथ तशबीह दी तो सब से ज़िहार हो गया हर एक के लिये अलग अलग कफ़्फ़ारा देना होगा ।

(الجوهرة النيرة، كتاب الظهار، الجزء الثانی، ص٨٥)

मस्अला 14 : किसी ने अपनी औ़रत से ज़िहार किया था दूसरे ने अपनी औ़रत से कहा तू मुझ पर वैसी है जैसी फ़ुलां की औ़रत तो येह भी ज़िहार हो गया या एक औ़रत से ज़िहार किया था दूसरी से कहा

www.dawateislami.net

तू मुझ पर इस की मिस्ल है या कहा मैं ने तुझे उस के साथ शरीक कर दिया तो दूसरी से भी ज़िहार हो गया।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الطلاق،الباب التاسع في الظھار،ج۱، ص۵۰۹)

मस्अला 15 : ज़िहार की ता'लीक़ भी हो सकती है मसलन अगर फ़ुलां के घर गई तो ऐसी है तो ज़िहार हो जाएगा।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الطلاق،الباب التاسع في الظھار،ج۱، ص۵۰۹)

मस्अला 16 : ज़िहार का हुक्म येह है कि जब तक कफ़्फ़ारा न दे दे उस वक़्त तक उस औ़रत से जिमाअ़ करना या शहवत के साथ उस का बोसा लेना या उस को छूना या उस की शर्मगाह की त़रफ़ नज़र करना ह़राम है और बिग़ैर शहवत छूने या बोसा लेने में ह़रज नहीं मगर लब का बोसा बिग़ैर शहवत भी जाइज़ नहीं कफ़्फ़ारे से पहले जिमाअ़ कर लिया तो तौबा करे और उस के लिये कोई दूसरा कफ़्फ़ारा वाजिब न हुवा मगर ख़बर दार फिर ऐसा न करे और औ़रत को भी येह जाइज़ नहीं कि शोहर को कुरबत करने दे।

(الجوھرة النیرة،کتاب الظھار،الجزء الثانی،ص۸۲ و الدرالمختار،کتاب الطلاق، باب الظھار،ج۵،ص۱۳۰)

मस्अला 17 : ज़िहार के बा'द औ़रत को त़लाक़ दी फिर उस से निकाह़ किया तो अब भी वोह चीज़ें ह़राम हैं अगर्चे दूसरे शोहर के बा'द इस के निकाह़ में आई बल्कि अगर्चे उसे तीन त़लाक़ें दी हों। यूहीं अगर ज़ौजा किसी की कनीज़ थी ज़िहार के बा'द ख़रीद ली और अब निकाह़ बाति़ल हो गया मगर बिग़ैर कफ़्फ़ारा वत़ी वग़ैरा नहीं कर सकता। यूहीं अगर औ़रत मुर्तदा हो गई और दारुल ह़र्ब को चली गई फिर क़ैद कर के लाई गई और शोहर ने ख़रीदी या शोहर मुर्तद हो गया ग़रज़ किसी त़रह़ कफ़्फ़ारे से बचाव नहीं।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الطلاق،الباب التاسع في الظھار، ج۱،ص۵۰۶،وغیرہ)

www.dawateislami.net

मस्अला 18 : अगर ज़िहार किसी ख़ास वक़्त तक के लिये है मसलन एक माह या एक साल और इस मुद्दत के अन्दर जिमाअ़ करना चाहे तो कफ़्फ़ारा दे और अगर मुद्दत गुज़र गई और कुर्बत न की तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ और ज़िहार बात़िल । (الجوهرة النيرة،كتاب الظهار،الجزء الثانی،ص٨٢)

मस्अला 19 : शोहर कफ़्फ़ारा नहीं देता तो औ़रत को येह ह़क़ है कि क़ाज़ी के पास दा'वा करे क़ाज़ी मजबूर करेगा कि या कफ़्फ़ारा दे कर कुर्बत करे या औ़रत को त़लाक़ दे और अगर कहता है कि मैं ने कफ़्फ़ारा दे दिया है तो उस का कहना मान लें जब कि उस का झूटा होना मा'रूफ़ न हो । (الفتاوی الهندية،كتاب الطلاق،الباب التاسع في الظهار،ج١،ص٥٠٧)

मस्अला 20 : एक औ़रत से चन्द बार ज़िहार किया तो उतने ही कफ़्फ़ारे दे अगर्चे एक ही मजलिस में मुतअ़द्दद बार अल्फ़ाज़े ज़िहार कहे और अगर येह कहता है कि बार बार लफ़्ज़ बोलने से मुतअ़द्दद ज़िहार न थे बल्कि ताकीद मक़्सूद थी तो अगर एक ही मजलिस में ऐसा हुवा मान लेंगे वरना नहीं । (الدرالمختار،كتاب الطلاق،باب الظهار،ج٥،ص١٣٤)

मस्अला 21 : पूरे रजब और पूरे र-मज़ान के लिये ज़िहार किया तो एक ही कफ़्फ़ारा वाजिब होगा ख़्वाह रजब में कफ़्फ़ारा दे या र-मज़ान में, शा'बान में नहीं दे सकता कि शा'बान में ज़िहार ही नहीं । यूहीं अगर ज़िहार किया और किसी दिन का इस्तिसना किया तो उस दिन कफ़्फ़ारा नहीं दे सकता उस के इलावा जिस दिन चाहे दे सकता है ।

(الدرالمختار،كتاب الطلاق،باب الظهار، ج٥،ص١٣٥)

www.dawateislami.net

कफ़्फ़ारे का बयान (1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۳﴾ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴﴾

(پ۲۸، المجادلة:۳)

जो लोग अपनी औ़रतों से ज़िहार करें फिर वोही करना चाहें जिस पर येह बात कह चुके तो उन पर जिमाअ़ से पहले एक गुलाम आज़ाद करना ज़रूर है येह वोह बात है जिस की तुम्हें नसीह़त दी जाती है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस से ख़बर दार है फिर जो गुलाम आज़ाद करने की त़ाक़त न रखता हो तो लगातार दो महीने के रोज़े जिमाअ़ से पहले रखे फिर जो इस की भी इस्तित़ाअ़त न रखे तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाए येह इस लिये कि तुम **अल्लाह** व रसूल पर ईमान रखो और येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब।

---

(1).... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा. 8, जि. 2, स. 209,

(2).... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो अपनी बीबियों को अपनी मां की जगह कहें फिर वोही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके तो उन पर लाज़िम है एक बुर्दा (गुलाम) आज़ाद करना क़ब्ल इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं येह है जो नसीह़त तुम्हें की जाती है और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बर दार है फिर जिसे बुर्दा न मिले तो लगातार दो महीने के रोज़े क़ब्ल इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं फिर जिस से रोज़े भी न हो सकें तो साठ मिस्कीनों का पेट भरना येह इस लिये कि तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान रखो और येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

www.dawateislami.net

ह़दीस 1 : तिरमिज़ी व अबू दावूद व इब्ने माजा ने रिवायत की, कि सलमा बिन सख़्र बयाज़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी ज़ौजा से र-मज़ान गुज़रने तक के लिये ज़िहार किया था और आधा र-मज़ान गुज़रा कि शब में उन्हों ने जिमाअ़ कर लिया फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ कि। इरशाद फ़रमाया : "एक गुलाम आज़ाद करो।" अ़र्ज़ की, मुझे मुयस्सर नहीं। इरशाद फ़रमाया : "तो दो[2] माह के लगातार रोज़े रखो।" अ़र्ज़ की, इस की भी त़ाक़त नहीं। इरशाद फ़रमाया : "तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाओ।" अ़र्ज़ की, मेरे पास इतना नहीं। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रवह बिन अ़म्र से फ़रमाया कि "वोह ज़न्बील (खजूर के पतों से बना हुवा ऐसा टोकरा जिस में पन्दरह या सोला साअ़ खजूरे आ जाती हैं) दे दो कि मसाकीन को खिलाए।"

(جامع الترمذي، كتاب الطلاق... إلخ، باب ماجاء في كفارة الظهار، الحديث:١٢٠٤، ج٢، ص٤٠٨)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

मस्अला 1 : ज़िहार करने वाला जिमाअ़ का इरादा करे तो कफ़्फ़ारा वाजिब है और अगर येह चाहे कि वत़ी न करे और औ़रत उस पर ह़राम ही रहे तो कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं और अगर इरादए जिमाअ़ था मगर ज़ौजा मर गई तो वाजिब न रहा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج١، ص٥٠٩)

मस्अला 2 : ज़िहार का कफ़्फ़ारा गुलाम या कनीज़ आज़ाद करना है मुसलमान हो या काफ़िर, बालिग़ हो या ना बालिग़ यहां तक कि अगर दूध पीते बच्चे को आज़ाद किया कफ़्फ़ारा अदा हो गया।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج١، ص٥٠٩، ٥١٠)

मस्अला 3 : पहले निस्फ़ गुलाम को आज़ाद किया और जिमाअ़ से पहले फिर निस्फ़ बाक़ी को आज़ाद किया तो कफ़्फ़ारा अदा हो गया और अगर दरमियान में जिमाअ़ कर लिया तो अदा न हुवा और अगर

www.dawateislami.net

गुलाम मुश्तरक है (या'नी ऐसा गुलाम जिस के मालिक दो या दो से ज़ियादा हों) और उस ने अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया तो अदा न हुवा, अगर्चे येह मालदार हो या'नी जब गुलाम मुश्तरक को आज़ाद करे और मालदार हो तो हुक्म येह है कि अपने शरीक को उस के हिस्से की क़दर दे और कुल गुलाम उस की तरफ़ से आज़ाद होगा मगर कफ़्फ़ारा अदा न होगा। यूहीं दो गुलामों में आधे आधे का मालिक है और दोनों के निस्फ़ निस्फ़ को आज़ाद किया तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج ۱، ص ۵۱۰ و الجوھرة النیرة کتاب الظھار، الجزء الثانی، ص ۸۵)

मस्अला 4 : आधा गुलाम आज़ाद किया और एक महीने के रोज़े रख लिये या तीस मिस्कीन को खाना खिला दिया तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा। (الجوھرة النیرة، کتاب الظھار، الجزء الثانی، ص ۸۵)

मस्अला 5 : गुलाम आज़ाद करने में शर्त येह कि कफ़्फ़ारे की निय्यत से आज़ाद किया हो बिग़ैर निय्यते कफ़्फ़ारा आज़ाद करने से कफ़्फ़ारा अदा न होगा अगर्चे आज़ाद करने की निय्यत किया करे।

(الجوھرة النیرة، کتاب الظھار، الجزء الثانی، ص ۸۵)

मस्अला 6 : इस का क़रीबी रिश्तेदार या'नी वोह कि अगर इन में से एक मर्द होता दूसरा औरत तो निकाह बाहम हराम होता मसलन इस का भाई या बाप या बेटा या चचा या भतीजा ऐसे रिश्तेदार का जब मालिक होगा तो आज़ाद हो जाएगा ख़्वाह किसी तरह मालिक हो मसलन इस ने ख़रीद लिया या किसी ने हिबा या तसद्दुक़ किया (या'नी सदक़ा कर दिया) या विरासत में मिला फिर ऐसा गुलाम अगर बिला इख़्तियार उस की मिल्क में आया मसलन विरासत में मिला और आज़ाद हो गया तो अगर्चे इस ने कफ़्फ़ारे की निय्यत की अदा न हुवा और अगर बा इख़्तियार खुद अपनी मिल्क में लाया (मसलन ख़रीदा) और जिस अ़मल के ज़रीए से मिल्क में आया उस

www.dawateislami.net

के पाए जाने के वक़्त (मसलन ख़रीदते वक़्त) कफ़्फ़ारे की निय्यत की तो कफ़्फ़ारा अदा हो गया। (الجوهرة النيرة، كتاب الطلاق، كتاب الظهار، الجزء الثاني، ص٨٥، وغيرها)

मस्अला 7 : जो गुलाम गिरवी या मदयून है उसे आज़ाद किया तो कफ़्फ़ारा अदा हो गया। यूहीं अगर भागा हुवा है और येह मा'लूम है कि ज़िन्दा है तो आज़ाद करने से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा और अगर बिल्कुल उस का पता न मा'लूम हो, न येह मा'लूम कि ज़िन्दा है या मर गया तो न होगा। (الفتاوى الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشر في الكفارة، ج١، ص٥١١-٥١٠)

मस्अला 8 : अगर गुलाम में किसी क़िस्म का ऐब है तो इस की दो[2] सूरतें हैं, एक येह कि वोह ऐब इस क़िस्म का हो जिस से जिन्से मन्फ़िअ़त फ़ौत होती है या'नी देखने, सुनने, बोलने, पकड़ने, चलने की उस को कुदरत न हो या आ़क़िल न हो तो कफ़्फ़ारा अदा न होगा और दूसरे येह कि इस ह़द का नुक़सान नहीं तो हो जाएगा, लिहाज़ा इतना बहरा कि चीख़ने से भी न सुने या गूंगा या अन्धा या मजनून कि किसी वक़्त उस को इफ़ाक़ा न होता हो या बोहरा या वोह बीमार जिस के अच्छे होने की उम्मीद न हो या जिस के सब दांत गिर गए हों और खाने से बिलकुल आ़जिज़ हो या जिस के दोनों हाथ कटे हों या हाथ के दोनों अंगूठे कटे हों या इलावा अंगूठे के हर हाथ की तीन तीन उंगलियां या दोनों पाउं या एक जानिब का एक हाथ और एक पाउं न हो या लुंझा (हाथ पाउं से मा'ज़ूर) या फ़ालिज का मारा हो या दोनों हाथ बेकार हों तो इन सब के आज़ाद करने से कफ़्फ़ारा अदा न हुवा। (الدرالمختار، كتاب الطلاق، باب الكفارة، ج٥، ص١٣٧ و الجوهرة النيرة، كتاب الظهار، الجزء الثانى، ص٨٥)

मस्अला 9 : अगर ऐसा बहरा है कि चीख़ने से सुन लेता है या मजनून है मगर कभी इफ़ाक़ा भी होता है और इसी ह़ालते इफ़ाक़ा में आज़ाद किया या उस का एक हाथ या एक पाउं या एक हाथ एक पाउं

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़ से कटा हो या'नी एक दहना दूसरा बायां या एक हाथ का अंगूठा या पाउं के दोनों अंगूठे या हर हाथ की दो[2] दो[2] उंगलियां या दोनो होंट या दोनों कान या नाक कटी हो या उनसयैन (ख़ुसये, फ़ौते) या उ़ज़्वे तनासुल कट गया हो या लौन्डी का आगे का मक़ाम बन्द हो या भौं या दाढ़ी या सर के बाल न हों या काना या चन्धा (कमज़ोर बीनाई वाला) हो या ऐसा बीमार हो जिस के अच्छे होने की उम्मीद है अगर्चे मौत का ख़ौफ़ हो या सपेद दाग़ की बीमारी (बर्स की बीमारी) हो या ना मर्द हो तो इन के आज़ाद करने से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।

(الدرالمختار،کتاب الطلاق، باب الکفارۃ، ج۵، ص ۱۳۷۔ ۱۳۹ و الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطلاق، الباب العاشرفي الکفارۃ، ج۱،ص ۵۱۰)

मस्अला 10 : लौन्ड़ी के शिकम में बच्चा है उस को कफ़्फ़ारे में आज़ाद किया तो न हुवा। इस के ग़ुलाम को किसी ने ग़स्ब किया इस मालिक ने आज़ाद कर दिया तो हो गया और उम्मुल वलद व मुदब्बर व मुकातब जिस ने बदले किताबत (वोह माल जो ग़ुलाम या लौंडी अपनी आज़ादी के लिये मालिक को अदा करें) कुछ अदा न किया हो या कुछ अदा किया मगर पूरा अदा करने से आ़जिज़ हो गया तो उसे आज़ाद करने से कफ़्फ़ारा अदा हो गया।

(الدرالمختارو ردالمحتار، کتاب الطلاق، باب الکفارۃ، ج۵، ص ۱۳۷، ۱۳۹)

मस्अला 11 : अपना ग़ुलाम दूसरे के कफ़्फ़ारे में आज़ाद कर दिया अगर उस के बिग़ैर हुक्म है तो अदा न हुवा और अगर उस के कहने से मसलन उस ने कहा अपना ग़ुलाम मेरी त़रफ़ से आज़ाद कर दे और कोई इ़वज़ ज़िक्र न किया जब भी अदा न हुवा और अगर इ़वज़ का ज़िक्र है मसलन अपना ग़ुलाम मेरी त़रफ़ से इतने पर आज़ाद कर दे तो हो जाएगा। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطلاق، الباب العاشرفي الکفارۃ، ج۱، ص ۵۱۱)

www.dawateislami.net

मस्अला 12 : ज़िहार के दो(2) कफ़्फ़ारे उस के ज़िम्मे थे, उस ने दो गुलाम आज़ाद किये और येह निय्यत न की, कि फ़ुलां गुलाम फ़ुलां कफ़्फ़रे में आज़ाद किया तो दोनों अदा हो गए।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج١، ص ٥١١)

मस्अला 13 : किसी गुलाम को कहा अगर मैं तुझे खरीदूं तो तू आज़ाद है फिर उसे कफ़्फ़ारए ज़िहार की निय्यत से ख़रीदा तो आज़ाद होगा मगर कफ़्फ़ारा अदा न हुवा और अगर पहले कह दिया था कि अगर तुझे ख़रीदूं तो मेरे ज़िहार के कफ़्फ़ारे में आज़ाद है तो हो जाएगा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج١، ص ٥١١)

मस्अला 14 : जब गुलाम पर क़ुदरत है अगर्चे वोह ख़िदमत का गुलाम हो तो कफ़्फ़ारा आज़ाद करने ही से होगा और अगर गुलाम की इस्तित़ाअ़त न हो ख़्वाह मिलता नहीं या इस के पास दाम (क़ीमत, नक़्दी) नहीं तो कफ़्फ़ारे में पै दर पै (लगातार, मुसलसल) दो2 महीने के रोज़े रखे और अगर उस के पास ख़िदमत का गुलाम है या मदयून (मक़रूज़) है और दैन अदा करने के लिये गुलाम के सिवा कुछ नहीं तो इन सूरतों में भी रोज़े वग़ैरा से कफ़्फ़ारा अदा नहीं कर सकता बल्कि गुलाम ही आज़ाद करना होगा। (الدرالمختار، كتاب الطلاق، باب الكفارة، ج٥، ص١٣٩)

मस्अला 15 : रोज़े से कफ़्फ़ारा अदा करने में शर्त़ है कि न इस मुद्दत के अन्दर माहे र-मज़ान हो, न ईदुल फ़ित्र, न ईदे अज़्हा न अय्यामे तशरीक़। हां अगर मुसाफ़िर है तो माहे र-मज़ान में कफ़्फ़ारे की निय्यत से रोज़ा रख सकता है, मगर अय्यामे मनहिय्या (वोह अय्याम जिन में रोज़ा रखना मन्अ़ है या'नी ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्हा और ग्यारह, बारह, तेरह ज़िल हिज्जा के दिन) में इसे भी इजाज़त नहीं।

(الجوهرة النيرة، كتاب الظهار، الجزء الثاني، ص٨٧ و الدرالمختارورد المحتار،
كتاب الطلاق، باب الكفارة، مطلب: لااستحالة...الخ، ج٥، ص١٤١)

www.dawateislami.net

मस्अला 16 : रोज़े अगर पहली तारीख़ से रखे तो दूसरे महीने के ख़त्म पर कफ़्फ़ारा अदा हो गया अगर्चे दोनों महीने 29 के हों और अगर पहली तारीख़ से न रखे हों तो साठ पूरे रखने होंगे और अगर पन्दरह रोज़े रखने के बा'द चांद हुवा फिर इस महीने के रोज़े रख लिये और येह 29 दिन का महीना हो इस के बा'द पन्दरह दिन और रख लिये 59 दिन हुए जब भी कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।

(الدرالمختار ورد المحتار،کتاب الطلاق، باب الکفارۃ، مطلب: لااستحالۃ في جعل......إلخ،ج٥،ص١٤١)

मस्अला 17 : रोज़ों से कफ़्फ़ारा अदा होने में शर्त़ येह है कि पिछले रोज़े के ख़त्म तक गुलाम आज़ाद करने पर कुदरत न हो यहां तक कि पीछले रोज़े की आख़िर साअ़त में भी अगर कुदरत पाई गई तो रोज़े ना काफ़ी हैं बल्कि गुलाम आज़ाद करना होगा और अब येह रोज़ए नफ़्ल हुवा इस का पूरा करना मुस्तह़ब रहेगा अगर फ़ौरन तोड़ देगा तो इस की क़ज़ा नहीं अलबत्ता अगर कुछ देर बा'द तोड़ेगा तो क़ज़ा लाज़िम है। (الدرالمختار،کتاب الطلاق،باب الکفارۃ،ج٥، ص١٤١، وغیرہ)

मस्अला 18 : कफ़्फ़ारे का रोज़ा तोड़ दिया ख़्वाह सफ़र वग़ैरा किसी उ़ज़्र से तोड़ा या बिग़ैर उ़ज़्र या ज़िहार करने वाले ने जिस औ़रत से ज़िहार किया इन दो महीनों के अन्दर दिन या रात में उस से वत़ी की क़सदन की हो या भूल कर तो सिरे से रोज़े रखे कि शर्त़ येह है कि जिमाअ़ से पहले दो(2) महीने के पै दर पै रोज़े रखे और इन सूरतों में येह शर्त़ पाई न गई। (الدرالمختار ورد المحتار،باب الکفارۃ،ج٥،ص١٤٢)

मस्अला 19 : येह अह़काम जो कफ़्फ़ारे के मुतअ़ल्लिक़ बयान किये गए या'नी गुलाम आज़ाद करने और रोज़े रखने के मुतअ़ल्लिक़ येह ज़िहार के साथ मख़सूस नहीं बल्कि हर कफ़्फ़ारा के येही अह़काम हैं। मसलन क़त्ल का कफ़्फ़ारा या रोज़ए र-मज़ान तोड़ने का कफ़्फ़ारा,

www.dawateislami.net

क़सम का कफ़्फ़ारा मगर क़सम के कफ़्फ़ारे में तीन रोजे़ हैं। और येह हुक्म कि रोज़ा तोड़ दिया तो सिरे से रखने होंगे कफ़्फ़ारे के साथ मख़्सूस नहीं बल्कि जहां पै दरपै की शर्त़ हो मसलन पै दर पै रोज़ों की मन्नत मानी तो यहां भी येही हुक्म है अलबत्ता अगर औ़रत ने र-मज़ान का रोज़ा तोड़ दिया और कफ़्फ़ारे में रोजे़ रख रही थी और ह़ैज़ आ गया तो सिरे से रखने का हुक्म नहीं बल्कि जितने बाक़ी हैं उन का रखना काफ़ी है। हां अगर इस ह़ैज़ के बा'द आइसा हो गई या'नी अब ऐसी उ़म्र हो गई कि ह़ैज़ न आएगा तो सिरे से रखने का हुक्म दिया जाएगा कि अब वो पै दर पै दो महीने के रोजे़ रख सकती है और अगर असनाए कफ़्फ़ारा में (कफ़्फ़ारे के रोजे़ रखने के दौरान) औ़रत के बच्चा हुवा तो सिरे से रखे। ज़िहार व ग़ैर ज़िहार के कफ़्फ़ारों में एक और फ़र्क़ है वोह येह कि ग़ैर ज़िहार के कफ़्फ़ारे में अगर रात में वत़ी की या दिन में भूल कर की तो सिरे से रोजे़ रखने की ह़ाजत नहीं। यूहीं ज़िहार के रोज़ों में अगर भूल कर खा लिया या दूसरी औ़रत से भूल कर जिमाअ़ किया या रात में क़सदन जिमाअ़ किया तो सिरे से रखने की ह़ाजत नहीं। (الدرالمختار ورد المحتار،باب الكفارة،ج٥،ص١٤٢وغيرهما)

मस्अला 20 : ग़ुलाम ने अगर अपनी औ़रत से ज़िहार किया अगर्चे मुकातब हो या उस का कुछ ह़िस्सा आज़ाद हो चुका बाक़ी के लिये सआ़यत करता है (या'नी ग़ुलाम का कुछ ह़िस्सा आज़ाद हो चुका हो और बक़िय्या की आज़ादी के लिये मेह़नत मज़दूरी कर के मालिक को समन अदा कर रहा हो) या आज़ाद ने ज़िहार किया मगर ब वजहे कम अ़क़्ली के उस के तसर्रुफ़ात रोक दिये गए हों तो इन सब के लिये कफ़्फ़ारे में रोजे़ रखना मुअ़य्यन है इन के लिये ग़ुलाम आज़ाद करना या खाना खिलाना नहीं लिहाज़ा अगर ग़ुलाम के आक़ा ने उस की त़रफ़ से ग़ुलाम आज़ाद कर दिया या खाना खिला दिया तो येह काफ़ी

www.dawateislami.net

नहीं अगर्चे गुलाम की इजाज़त से हुवा और कफ़्फ़ारे के रोज़ों से उस का आक़ा मन्अ़ नहीं कर सकता और अगर गुलाम ने कफ़्फ़ारे के रोज़े अब तक नहीं रखे और अब आज़ाद हो गया तो अगर गुलाम आज़ाद करने पर क़ुदरत हो तो आज़ाद करे वरना रोज़े रखे ।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج١، ص ٥١٢-٥١٣)

मस्अला 21 : रोज़े रखने पर भी अगर क़ुदरत न हो कि बीमार है और अच्छे होने की उम्मीद नहीं या बहुत बूढ़ा है तो साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त पेट भर कर खाना खिलाए और येह इख़्तियार है कि एक दम से साठ मिस्कीनों को खिला दे या मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर, मगर शर्त़ येह है कि इस असना में रोज़े पर क़ुदरत ह़ासिल न हो वरना खिलाना सदक़ए नफ़्ल होगा और कफ़्फ़ारे में रोज़े रखने होंगे । और अगर एक वक़्त साठ को खिलाया दूसरे वक़्त इन के सिवा दूसरे साठ को खिलाया तो अदा न हुवा बल्कि ज़रूर है कि पहलों या पिछलों को फिर एक वक़्त खिलाए ।

(الدرالمختارو ردالمحتار، كتاب الطلاق، باب الكفارة، مطلب: أى حر ليس له..إلخ، ج٥، ص ١٤٤

، ص ١٤٤ والفتاوی الهندية، كتاب الطلاق، الباب العاشرفي الكفارة، ج١، ص ٥١٣)

मस्अला 22 : शर्त़ येह है कि जिन मिस्कीनों को खाना खिलाया हो उन में कोई ना बालिग़ ग़ैर मुराहिक़ न हो हां अगर एक जवान की पूरी ख़ूराक का उसे मालिक कर दिया तो काफ़ी है ।

(الدرالمختارو ردالمحتار، كتاب الطلاق، باب الكفارة، مطلب: أى حر ليس له...الخ، ج٥، ص ١٤٤)

मस्अला 23 : येह भी हो सकता है कि हर मिस्कीन को ब क़दरे सदक़ए फ़ित्र या'नी निस्फ़ साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव या इन की क़ीमत का मालिक कर दिया जाए मगर इबाह़त काफ़ी नहीं और उन्हीं लोगों को दे सकते हैं जिन्हें सदक़ए फ़ित्र दे सकत हैं जिन की तफ़्सील सदक़ए

www.dawateislami.net

फ़ित्ऱ के बयान में मज़्कूर हुई और येह भी हो सकता है कि सुब्ह़ को खिला दे और शाम के लिये क़ीमत दे दे या शाम को खिला दे और सुब्ह़ के खाने की क़ीमत दे दे या दो[2] दिन सुब्ह़ को या शाम को खिला दे या तीस को खिलाए और तीस को दे दे ग़र्ज़ येह कि साठ की ता'दाद जिस त़रह़ चाहे पूरी करे इस का इख़्तियार है या पाऊ साअ़ गेहूं और निस्फ़ साअ़ जव दे दे या कुछ गेहूं या जव दे बाक़ी की क़ीमत हर त़रह़ इख़्तियार है। (الدرالمختارو ردالمحتار، كتاب الطلاق،باب الكفارة،مطلب:أى حرليس له...الخ،ج٥، ص١٤٤۔١٤٦)

मस्अला 24 : खिलाने में पेट भर कर खिलाना शर्त़ है अगर्चे थोड़े ही खाने में आसूदा हो जाएं (या'नी पेट भर जाए, सेर हो जाएं) और अगर पहले ही से कोई आसूदा था तो उस का खाना काफ़ी नहीं और बेहतर येह है कि गेहूं की रोटी और सालन खिलाए और इस से अच्छा खाना हो तो और बेहतर और जव की रोटी हो तो सालन ज़रूरी है।

(الدرالمختارو ردالمحتار، كتاب الطلاق،باب الكفارة،مطلب:أى حرليس له...الخ،ج٥، ص١٤٦)

मस्अला 25 : एक मिस्कीन को साठ दिन तक दोनों वक़्त खिलाया या हर रोज़ ब क़द्रे सदक़ए फ़ित्ऱ उसे दे दिया या जब भी अदा हो गया और अगर एक ही दिन में एक मिस्कीन को सब दे दिया या एक दफ़्अ़ में या साठ दफ़्अ़ कर के या उस को सब ब त़ौर अबाह़त दिया तो सिर्फ़ उस एक दिन का अदा हुवा। यूहीं अगर तीस मसाकीन को एक एक साअ़ गेहूं दिये या दो दो साअ़ जव तो सिर्फ़ तीस को देना क़रार पाएगा या'नी तीस मसाकीन को फिर देना पड़ेगा येह उस सूरत में है कि एक दिन में दिये हों और दो दिनों में दिये तो जाइज़ है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الطلاق،الباب العاشرفي الكفارة،ج١،ص٥١٣،وغيره)

मस्अला 26 : साठ मसाकीन को पाव पाव साअ़ गेहूं दे तो ज़रूर है कि इन में हर एक को और पाव पाव साअ़ दे और अगर इन की इवज़ में और

www.dawateislami.net

साठ मसाकीन को पाव पाव साअ़ दिये तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा।

(الفتاوى الهندية،كتاب الطلاق،الباب العاشرفي الكفارة،ج١،ص٥١٣،وغيره)

मस्अला 27 : एक सो बीस मसाकीन को एक वक़्त खाना खिला दिया तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा बल्कि ज़रूर है कि इन में से साठ को फिर एक वक़्त खिलाए ख़्वाह उसी दिन या किसी दूसरे दिन और अगर वोह न मिलें तो दूसरे साठ मसाकीन को दोनों वक़्त खिलाए।

(الدرالمختار،كتاب الطلاق،باب الكفارة،ج٥،ص١٥٠)

मस्अला 28 : इस के ज़िम्मे दो ज़िहार थे ख़्वाह एक ही औ़रत से दोनों ज़िहार किये या दो औ़रतों से और दोनों के कफ़्फ़ारे में साठ मिस्कीन को एक एक साअ़ गेहूं दे दिये तो सिर्फ़ एक कफ़्फ़ारा अदा हुवा और अगर पहले निस्फ़ निस्फ़ साअ़ एक कफ़्फ़ारे में दिये फिर उन्हीं को निस्फ़ निस्फ़ साअ़ दूसरे कफ़्फ़ारे में दिये तो दोनों अदा हो गए। (الفتاوى الهندية،كتاب الطلاق،الباب العاشرفي الكفارة،ج١،ص٥١٤)

मस्अला 29 : दो ज़िहार के कफ़्फ़ारों मे दो ग़ुलाम आज़ाद कर दिये या चार महीने के रोज़े रख लिये या एक सो बीस मिस्कीनों को खाना खिला दिया तो दोनों कफ़्फ़ारे अदा हो गए अगर्चे मुअ़य्यन न किया हो कि येह फुलां का कफ़्फ़ारा है और येह फुला का। और अगर दोनों दो क़िस्म के कफ़्फ़ारे हों तो कोई अदा न हुवा मगर जब कि येह निय्यत हो कि एक कफ़्फ़ारे में येह और एक में वोह अगर्चे मुअ़य्यन न किया हो कि कौन से कफ़्फ़ारे में येह और किस में वोह। और अगर दोनों की त़रफ़ से एक ग़ुलाम आज़ाद किया या दो माह के रोज़े रखे तो एक अदा हुवा और उसे इख़्तियार है कि जिस के लिये चाहे मुअ़य्यन करे और अगर दोनों कफ़्फ़ारे दो क़िस्म के हैं मसलन एक ज़िहार का है दूसरा क़त्ल का तो कोई कफ़्फ़ारा अदा न हुवा मगर जब कि काफ़िर को आज़ाद किया हो तो येह ज़िहार के लिये मुतअ़य्यन

www.dawateislami.net

है कि क़त्ल के कफ़्फ़ारे में मुसलमान का आज़ाद करना शर्त़ है।

(الدرالمختار،کتاب الطلاق،باب الکفارۃ،ج٥،ص١٤٨)

मस्अला 30 : दो[2] क़िस्म के दो कफ़्फ़ारे हैं और साठ मिस्कीन को एक एक साअ़ गेहूं दोनों कफ़्फ़ारों में दे दिये तो दोनों अदा हो गए अगर्चे पूरा पूरा साअ़ एक मरतबा दिया हो।

(الدرالمختار،کتاب الطلاق،باب الکفارۃ،ج٥،ص١٤٨)

मस्अला 31 : निस्फ़ ग़ुलाम आज़ाद किया और एक महीने के रोज़े रखे या तीस मिस्कीनों को खाना खिलाया तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطلاق،الباب العاشرفي الکفارۃ،ج١،ص٥١٤)

मस्अला 32 : ज़िहार में येह ज़रूरी है कि क़ुरबत से पहले साठ मसाकीन को खिला दे और अगर अभी पूरे साठ मसाकीन को खिला नहीं चुका है और दरमियान में वत़ी कर ली तो अगर्चे येह ह़राम है मगर जितनों को खिला चुका है वोह बात़िल न हुवा, बाक़ियों को खिला दे, सिरे से फिर साठ को खिलाना ज़रूर नहीं।

(الجوھرۃ النیرۃ،کتاب الظھار،الجزء الثانی،ص٨٩)

मस्अला 33 : दूसरे ने बिग़ैर इस के हुक्म के खिला दिया तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा और इस के हुक्म से है तो सह़ीह़ है मगर जो सर्फ़ हुवा है वोह इस से नहीं ले सकता, हां अगर इस ने हुक्म करते वक़्त येह कह दिया हो कि जो सर्फ़ होगा मैं दूगां तो ले सकता है।

(الدرالمختارو ردالمحتار،کتاب الطلاق،باب الکفارۃ،مطلب:لااستحالۃ في جعل...إلخ،ج٥،ص١٤٧)

मस्अला 34 : जिस के ज़िम्मे कफ़्फ़ारा था उस का इन्तिक़ाल हो गया वारिस ने उस की त़रफ़ से खाना खिला दिया या क़सम के कफ़्फ़ारे में कपड़े पहना दिये तो हो जाएगा और ग़ुलाम आज़ाद किया तो नहीं।

(الدرالمختارو ردالمحتار،کتاب الطلاق،باب الکفارۃ،مطلب:لااستحالۃ في جعل...إلخ،ج٥،ص١٤٧)

www.dawateislami.net

किनाया का बयान[1]

किनायए त़लाक़ वोह अल्फ़ाज़ हैं जिन से त़लाक़ मुराद होना ज़ाहिर न हो त़लाक़ के इ़लावा और मा'नों में भी इन का इस्ति'माल होता हो।

मस्अला 1 : किनाया से त़लाक़ वाक़ेअ़ होने में येह शर्त़ है कि निय्यते त़लाक़ हो या ह़ालत बताती हो कि त़लाक़ मुराद है या'नी पेशतर त़लाक़ का ज़िक्र था या गुस्से में कहा। किनाया के अल्फ़ाज़ तीन त़रह़ के हैं। बा'ज़ में सुवाल रद करने का एह़तिमाल है, बा'ज़ में गाली का एह़तिमाल है और बा'ज़ में न येह है न वोह, (या'नी न गाली का एह़तिमाल है न सुवाल रद करने का एह़तिमाल) बल्कि जवाब के लिये मुतअ़य्यन हैं। अगर रद का एह़तिमाल है तो मुत़लक़न हर ह़ाल में निय्यत की ह़ाजत है बिग़ैर निय्यते त़लाक़ नहीं और जिन में गाली का एह़तिमाल है उन से त़लाक़ होना ख़ुशी और ग़ज़ब में निय्यत पर मौक़ूफ़ है और त़लाक़ का ज़िक्र था तो निय्यत की ज़रूरत नहीं और तीसरी सूरत या'नी जो फ़क़त़ जवाब हो तो ख़ुशी में निय्यत ज़रूरी है और ग़ज़ब व मुज़ाकरा के वक़्त बिग़ैर निय्यत भी त़लाक़ वाक़ेअ़ है। (الدرالمختار،کتاب الطلاق،باب الکنایات،ج٤،ص٥١٦۔٥٢٢ وغیرہ)

किनाया के बा'ज़ अल्फ़ाज़ येह हैं

(1)जा (2) निकल (3) चल (4) रवाना हो (5) उठ (6) खड़ी हो (7) पर्दा कर (8) दूपट्टा ओढ़ (9) निक़ाब डाल (10) हट सरक (11) जगह छोड़ (12) घर ख़ाली कर (13) दूर हो (14) चल दूर (15) ऐ ख़ाली (16) ऐ बरी (17) ऐ जुदा (18) तू जुदा है (19) तू मुझ से जुदा है (20) मैं ने तुझे बे क़ैद किया (21) मैं ने तुझ से मुफ़ारक़त की (जुदाई इख़्तियार की)(22) रास्ता नाप (23) अपनी राह ले (24) काला मुंह कर (25) चाल दिखा

(1).... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा. 8, जि. 2, स. 128,

www.dawateislami.net

(26) चलती बन (27) चलती नज़र आ (28) दफ़्अ़ हो (29) दाल फ़े ए़न हो (30) रफ़ू चक्कर हो (31) पिन्जरा खाली कर (32) हट के सड़ (33) अपनी सूरत गुमा (34) बिस्तर उठा (35) अपना सुझता देख (36) अपनी गठड़ी बांध (37) अपनी नजासत अलग फ़ैला (38) तशरीफ़ ले जाइये (39) तशरीफ़ का टोकरा ले जाइये (40) जहां सींग समाए जा (41) अपना मांग खा (42) बहुत हो चुकी अब मेहरबानी फ़रमाइए (43) ऐ बे इलाक़ा (44) मुंह छुपा (45) जहन्नम में जा (46) चूलहे में जा (47) भाड़ में पड़ (48) मेरे पास से चल (49) अपनी मुराद पर फ़तह़ मन्द हो (50) मैं ने निकाह़ फ़स्ख़ किया (51) तू मुझ पर मिस्ले मुरदार है (52) या सुवर या (53) शराब के है [न मिस्ल बंग या अफ़्यून या माल फ़ुलां या ज़ौजए फ़ुलां के] (54) तू मिस्ल मेरी मां या बहन या बेटी के है [और यूं कहा कि तू मां बहन बेटी है तो गुनाह के सिवा कुछ नहीं] (55) तु ख़लास है (56) तेरी गुलू ख़लासी हुई (57) तू ख़ालिस हुई (58) ह़लाल ख़ुदाया (59) ह़लाले मुसलमानान या (60) हर ह़लाल मुझ पर ह़राम (61) तू मेरे साथ ह़राम में है (62) मैं ने तुझे तेरे हाथ बेचा अगर्चे किसी इवज़ का ज़िक्र न आए अगर्चे औ़रत ने येह न कहा कि मैं ने ख़रीदा (63) मैं तुझ से बाज़ आया (64) मैं तुझ से दर गुज़रा (65) तू मेरे काम की नहीं (66) मेरे मत़लब की नहीं (67) मेरे मसरफ़ की नहीं (68) मुझे तुझ पर कोई राह नहीं (69) कुछ क़ाबू नहीं (70) मिल्क नहीं (71) मैं ने तेरी राह ख़ाली कर दी (72) तू मेरी मिल्क से निकल गइ (73) मैं ने तुझ से ख़ल्अ़ किया (74) अपने मैके बैठ (75) तेरी बाग ढीली की (76) तेरी रस्सी छोड़ दी (77) तेरी लगाम उतार ली (78) अपने रफ़ीक़ों से जा मिल (79) मुझे तुझ पर कुछ इख़्तियार नहीं (80) मैं तुझ से ला दा'वा होता हूं (81) मेरा तुझ पर कुछ दा'वा नहीं (82) ख़ावन्द तलाश कर (83) मैं तुझ से जुदा हूं या हुवा [फ़क़त़ मैं

www.dawateislami.net

जुदा हूं या हुवा काफ़ी नहीं अगर्चे ब निय्यते त़लाक़ कहा](84) मैं ने तुझे जुदा कर दिया (85) मैं ने तुझ से जुदाई की (86) तू ख़ुद मुख़्तार है (87) तू आज़ाद है (88) मुझ में तुझ में निकाह़ नहीं (89) मुझ में तुझ में निकाह़ बाक़ी न रहा (90) मैं ने तुझे तेरे घर वालों या (91) बाप या (92) मां या (93) ख़ावन्दों को दिया या (94) ख़ुद तुझ को दिया [और तेरे भाई या मामूं या चचा या किसी अजनबी को देना कहा तो कुछ नही](95) मुझ में तुझ में कुछ मुआ़मला न रहा या नहीं (96) मैं तेरे निकाह़ से बेज़ार हूं (97) बरी हों (98) मुझ से दूर हो (99) मुझे सूरत न दिखा (100) किनारे हो (101) तूने मुझ से नजात पाई (102) अलग हो (103) मैं ने तेरा पाउं खोल दिया (104) मैं ने तुझे आज़ाद किया (105) आज़ाद हो जा (106) तेरी बन्द कटी (107) तू बे क़ैद है (108) मैं तुझ से बरी हूं (109) अपना निकाह़ कर (110) जिस से चाहे निकाह़ कर ले (111) मैं तुझ से बेज़ार हुवा (112) मेरे लिये तुझ पर निकाह़ नहीं (113) मैं ने तेरा निकाह़ फ़स्ख़ किया (114) चारों राहें तुझ पर खोलदीं [और अगर यूं कहा कि चारों राहें तुझ पर खुली हैं तो कुछ नहीं जब तक येह न कहे कि (115) जो रास्ता चाहे इख़्तियार कर] (116) मैं तुझ से दस्त बरदार हुवा (117) मैं ने तुझे तेरे घर वालों या बाप या मां को वापस दिया (118) तू मेरी अ़स्मत से निकल गई (119) मैं ने तेरी मिल्क से शरई त़ौर पर अपना नाम उतार दिया (120) तू क़ियामत तक या उ़म्र भर मेरे लाइक़ नहीं (121) तू मुझ से ऐसी दूर है जैसे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा मदीनए त़य्यिबा से या देहली लखनौ से (الفتاوی الرضویۃ، کتاب الطلاق، باب الکنایۃ، ج۱۲، ص۵۱۵۔۵۲۷)

मस्अला 1 : इन अल्फ़ाज़ से त़लाक़ न होगी अगर्चे निय्यत करे, मुझे तेरी ह़ाजत नहीं, मुझे तुझ से सरोकार नहीं, तुझ से मुझे काम नहीं, ग़रज़ नहीं, मत़लब नहीं, तू मुझे दरकार नहीं। तुझ से मुझे रग़बत नहीं, मैं तुझे नहीं चाहता। (الفتاوی الرضویۃ، کتاب الطلاق، باب الکنایۃ، ج۱۲، ص۵۲۰)

www.dawateislami.net

मस्अला 2: किनाया के इन अल्फ़ाज़ से एक बाइन त़लाक़ होगी अगर ब निय्यते त़लाक़ बोले गए अगर्चे बाइन की निय्यत न हो और दो[2] की निय्यत की जब भी वोही एक वाक़ेअ़ होगी मगर जब कि ज़ौजा बांदी हो तो दो[2] की निय्यत सह़ीह़ है और तीन की निय्यत की तो तीन वाक़ेअ़ होंगी । (الد رالمختا ر و ردالمحتار، کتاب الطلاق، باب الکنایات، مطلب: لا اعتبار بالاعراب هنا، ج٤، ص٥٢٤)

मस्अला 3 : मदख़ुला (जिस से जिमाअ़ किया गया हो उस) को एक त़लाक़ दी थी फिर इ़द्दत में कहा कि मैं ने उसे बाइन कर दिया या तीन तो बाइन या तीन वाक़ेअ़ हो जाएंगी और अगर इ़द्दत या रजअ़त के बा'द ऐसा कहा तो कुछ नहीं । (الدرالمختار، کتاب الطلاق، باب الکنایات، ج٤، ص٥٢٨)

मस्अला 4 : सरीह़ सरीह़ को लाह़िक़ होती है या'नी पहले सरीह़ लफ़्ज़ों से त़लाक़ दी फिर इ़द्दत के अन्दर दूसरी मरतबा त़लाक़ के सरीह़ लफ़्ज़ कहे तो इस से दूसरी वाक़ेअ़ होगी । यूहीं बाइन के बा'द भी सरीह़ लफ़्ज़ से वाक़ेअ़ कर सकता है जब कि औ़रत इ़द्दत में हो और सरीह़ से मुराद यहां वोह है जिस में निय्यत की ज़रूरत न हो अगर्चे उस से त़लाक़े बाइन पड़े और इ़द्दत में सरीह़ के बा'द बाइन त़लाक़ दे सकता है । और बाइन बाइन को लाह़िक़ नहीं होती जब कि येह मुमकिन हो कि दूसरी को पहली की ख़बर देना कह सकें मसलन पहले कहा था कि तू बाइन है इस के बा'द फिर येही लफ़्ज़ कहा तो इस से दूसरी वाक़ेअ़ न होगी कि येह पहली त़लाक़ की ख़बर है या दोबारा कहा मैं ने तुझे बाइन कर दिया और अगर दूसरी को पहली से ख़बर देना न कह सकें मसलन पहले त़लाक़े बाइन दी फिर कहा मैं ने दूसरी बाइन दी तो अब दूसरी पड़ेगी ।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطلاق، باب الکنایات، مطلب: الصریح یلحق...إلخ، ج٤، ص٥٢٨-٥٣٣)

www.dawateislami.net

यूहीं पहली सूरत में भी दो[2] वाक़ेअ़ होंगी जब कि दूसरी से दूसरी त़लाक़ की निय्यत हो।[1]

मस्अला 5 : बाइन को किसी शर्त़ पर मुअ़ल्लक़ किया या किसी वक़्त की त़रफ़ मुज़ाफ़ किया और उस शर्त़ या वक़्त के पाए जाने से पहले त़लाक़े बाइन दे दी मसलन येह कहा अगर तू आज घर में गई तो बाइन है या कल तुझे त़लाक़े बाइन है फिर घर में जाने और कल आने से पहले ही त़लाक़े बाइन दे दी तो त़लाक़ हो गई फिर इ़द्दत के अन्दर शर्त़ पाई जाने और कल आने से एक त़लाक़ और पड़ेगी।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق،باب الکنایات،ج٤،ص٥٣٤)

मस्अला 6 : अगर औ़रत को त़लाक़े बाइन दी या उस से ख़ुल्अ़ किया इस के बा'द कहा तू घर में गई तो बाइन है तो अब त़लाक़ वाक़ेअ़ न होगी और अगर दो शर्तों पर त़लाक़े बाइन मुअ़ल्लक़ की मसलन कहा अगर तू घर में जाए तो बाइन है और अगर मैं फ़ुला से काम करूं तो तू बाइन है इन दोनों बातों के कहने के बा'द अब वोह घर में गई तो एक त़लाक़ पड़ी फिर अगर उस शख़्स से इ़द्दत में शोहर ने क़लाम किया तो दूसरी पड़ी। यूहीं अगर पहले कलाम किया फिर घर में गई जब भी दो वाक़ेअ़ होंगी और अगर पहले एक शर्त़ पर मुअ़ल्लक़ की फिर इस के पाए जाने के बा'द दूसरी शर्त़ पर मुअ़ल्लक़ की दूसरी के पाए जाने पर त़लाक़ न होगी। (الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الطلاق، باب الکنایات، مطلب: الصریح صریح یلحق الصریح والبائن،ج٤، ص٥٣٥ و الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطلاق،الباب الثاني،الفصل الخامس في الکنایات،ج١،ص٣٧٧)

मस्अला 7 : क़सम खाई कि औ़रत के पास न जाएगा फिर चार महीने गुज़रने से पहले ब निय्यते त़लाक़ उसे बाइन कहा या उस से ख़ल्अ़ किया तो त़लाक़ वाक़ेअ़ हो गई फिर क़सम खाने से चार

---

(1).... बशर्त़ कि येह इस निय्यत पर दलालत करने वाला कोई लफ़्ज़ भी मज़्कूर हो। عِلْمِیہ، انظر منحۃ الخالق،ج٣،ص٥٣٢ و الفتاویٰ الرضویۃ (المخرجۃ) ،ج١٢،ص٥٧٨س،٥٨٢،٥٨٥۔ ....

www.dawateislami.net

महीने तक उस के पास न गया तो येह दूसरी त़लाक़ हुई और अगर पहले ख़ुल्अ़ किया फिर कहा तू बाइन है तो वाक़ेअ़ न होगी।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطلاق،الباب الثاني،الفصل الخامس في الکنایات،ج۱،ص۳۷۷)

मस्अला 8 : येह कहा कि मेरी हर औ़रत को त़लाक़ है या अगर येह काम करूं तो मेरी औ़रत को त़लाक़ है तो जिस औ़रत से ख़ुल्अ़ किया है या जो त़लाक़े बाइन की इ़द्दत में है इन लफ़्ज़ों से उसे त़लाक़ न होगी। (الدرالمختار،کتاب الطلاق،باب الکنایات،ج٤،ص٥٣٦)

मस्अला 9 : जो फ़ुरक़त (जुदाई) हमेशा के लिये हो या'नी जिस की वजह से उस से कभी निकाह़ न हो सकता हो जैसे हु़रमते मुसाहरत (सुसराली रिश्तों की वजह से निकाह़ का ह़राम होना) व हु़रमते रज़ाअ़ (दुध के रिश्ते की वजह से निकाह़ का ह़राम होना) तो इस औ़रत पर इ़द्दत में भी त़लाक़ नहीं हो सकती। यूहीं अगर इस की औ़रत कनीज़ थी उस को ख़रीद लिया तो अब उसे त़लाक़ नहीं दे सकता कि वोह निकाह़ से बिल्कुल निकल गई।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطلاق،الباب الثاني،الفصل الخامس في الکنایات،ج۱،ص۳۷۸)

मस्अला 10 : ज़न व शोहर में से कोई مَعَاذَاللّٰہ मुर्तद हुवा मगर दारुल इस्लाम में रहा तो त़लाक़ हो सकती है और अगर दारुल ह़र्ब को चला गया तो अब त़लाक़ नहीं हो सकती और मर्द मुर्तद हो कर दारुल ह़र्ब को चला गया था फिर मुसलमान हो कर वापस आया और औ़रत अभी इ़द्दत में है तो त़लाक़ दे सकता है और औ़रत अगर्चे वापस आ जाए त़लाक़ नहीं हो सकती।

(ردالمحتار،کتاب الطلاق،باب الکنایات،مطلب: المختلعۃ و المبانۃ..إلخ،ج٤،ص٥٣٧)

मस्अला 11 : ख़ियारे बुलूग़ या'नी बालिग़ होते ही निकाह़ से नाराज़ी ज़ाहिर की और ख़ियार अ़तक़ कि आज़ाद हो कर तफ़रीक़ (जुदाई) चाही इन दोनों के बा'द त़लाक़ नहीं हो सकती।

(الدرالمختار، کتاب الطلاق، باب الکنایات،ج٤،ص٥٣٨)

www.dawateislami.net

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

हदीसे पाक में है "जिस शख़्स ने **गुस्सा** ज़ब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह **गुस्सा** नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।"

(الجامع الصغير للسيوطى ص ٥٤١ حديث ٨٩٩٧)

मदनी फूल

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ

या'नी मुसलमान वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। (صَحيح بُخارى ج ١ ص ١٥ حديث ١٠)

चुग़ली की ता'रीफ़

किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना **चुग़ली** है।

(عمدة القارى ج ٢ ص ٥٩٤ تحت الحديث ٢١٦ دار الفكر بيروت)

शुमातत की ता'रीफ़

दूसरों की तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर ख़ुशी का इज़्हार करने को शुमातत कहते हैं।

(حديقه نديه شرح طريقه محمديه ج ١ ص ٦٣١)

www.dawateislami.net

मिन्हाजुल आबिदीन

के

मुन्तख़ब अबवाब

www.dawateislami.net

तौबा का बयान

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत के त़लबगा़र ! इबादत में मश्ग़ूल होने से पहले गुनाहों से **तौबा** बेह़द ज़रूरी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें **तौबा** की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। गुनाहों से **तौबा** करना इन दो वजह से लाज़िमी है :

पहली वजह : तौबा से इबादत की तौफ़ीक़ नसीब होती है क्यूंकि गुनाहों की नुहूसत बन्दे को इबादात से मह़रूम कर के उस पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत़ कर देती है, गुनाह एक ऐसी ज़न्जीर है जो बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और नेकी की राह पर चलने से रोक देती है गुनाहों से दिल बोझल हो जाता है और इस में इबादत की लज़्ज़त व ह़लावत पैदा नहीं हो पाती, गुनाहों की आ़दत दिल को सियाह कर देती है जिस से दिल सख़्त हो जाता है, न उस में ख़ुलूस पैदा हो सकता है और न ही उस का तज़किया, जिस की वजह से इबादत में सुरूर व इत़मिनान नहीं मिल सकता, जो शख़्स गुनाहों से ताइब नहीं होगा अगर ख़ुदा का फ़ज़्ल उस के शामिले ह़ाल न हुवा तो रफ़्ता रफ़्ता येह गुनाह उसे कुफ़्र तक पहुंचा देंगे। ऐसे शख़्स पर शक़ावत और बद बख़्ती ग़ालिब आ जाएगी, तो ऐसे शख़्स पर तअ़ज्जुब है कि इस नुहूसत व क़सावत के होते हुए उसे इबादते इलाही की तौफ़ीक़ किस त़रह़ मिल सकती है और गुनाहों पर अड़ने वाला शख़्स इत़ाअ़ते बारी तआ़ला का दा'वा कैसे कर सकता है, और ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर को अपनाते हुए वोह इबादत कैसे बजा ला सकता है ? इसी त़रह़ जो शख़्स गुनाहों की गन्दगी से आलूदा हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात का शरफ़ कैसे ह़ासिल कर सकता है ? इसी लिये हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"اِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَنَحّٰى عَنْهُ الْمَلَكَانِ مِنْ نَتْنِ مَا يَخْرُجُ مِنْ فِيْهِ"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء الفحش والتفحش، الحدیث۱۹۷۹، ج۳، ص۳۹۲، الکامل لابن عدی، مقدمة المصنف، الباب السادس، ج۱، ص۸۸)

"जब इन्सान झूट बोलता है तो किरामन कातिबीन झूट की बदबू की वजह से उस से अ़लाहि़दा हो जाते हैं।" तो ऐसी ज़बान ज़िक्रे इलाही के लाइक़ कैसे हो सकती है। गुनाहों में शबो रोज़ बसर करने वाले आदमी को नेक काम की तौफ़ीक़ मिलना और इ़बादत की त़रफ़ माइल होना बहुत मुश्किल है, ऐसा शख़्स अगर कुछ इ़बादत कर भी ले तो दिल में इस इ़बादत की ह़लावत व रुह़ानिय्यत नहीं पाता। येह सब कुछ गुनाहों की नुहूसत और **तौबा** न करने का नतीजा है। किसी ने सच कहा है कि "**अगर तू रात को क़ियाम करने और दिन को रोज़ा रखने की कुव्वत नहीं रखता तो समझ ले कि तू मन्हूस हो चुका है और गुनाहों की नुहूसत तुझ पर मुसल्लत़ हो चुकी है।**"

दूसरी वजह : तौबा के ज़रूरी होने की दूसरी वजह येह है कि बिग़ैर **तौबा** के इ़बादात क़बूल नहीं होतीं। जिस त़रह़ क़र्ज़ख़्वाह का क़र्ज़ अदा करने से पहले उस के सामने हदिये और तोह़फ़े कोई अहमिय्यत नहीं रखते और न वोह उन्हें क़बूल करता है, इसी त़रह़ पहले गुनाहों से **तौबा** लाज़िम है इस के बा'द आ़म इ़बादाते नाफ़िला, और जब फ़राइज़ किसी के ज़िम्मे लाज़िम हों तो उस के नवाफ़िल वग़ैरा कैसे क़बूल हो सकते हैं। यूहीं अगर कोई शख़्स ह़राम व मम्नूअ़ काम तो तर्क न करे मगर मुबाह़ व ह़लाल अश्या में परहेज़ व एह़तियात़ करे, तो उस का ऐसा परहेज़ क्या वक़्अ़त रख सकता है और वोह शख़्स ख़ुदा तआ़ला से मुनाजात उस की दरगाह में पसन्दीदा और उस की सना करने के लाइक़ कैसे हो सकता है जिस पर ख़ुदा तआ़ला नाराज़ हो, गुनाहों पर इसरार करने वालों का अकसर येही ह़ाल है।

www.dawateislami.net

सुवाल : तौबत्तुन्नुसूह़ के क्या मा'ना हैं, इस की ता'रीफ़ क्या है और बन्दे को क्या करना चाहिये जिस से उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाएं।

जवाब : दिल के कामों में से एक काम **तौबा** है, आ़म उ़लमा ने इस की ता'रीफ़ येह की है : تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ عَنِ الذَّنْبِ दिल को गुनाहों से पाक करना। और हमारे शैख़ رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने येह ता'रीफ़ की है :

اِنَّه تَرْكُ اِخْتِيَارِ ذَنْبٍ سَبَقَ مِثْلُه عَنْهُ مَنْزِلَةً لَا صُوْرَةً تَعْظِيماً لِلّٰهِ تَعَالٰى وَحَذْرًا مِّنْ سَخَطِه.

आयन्दा के लिये ऐसे गुनाहों को तर्क कर देने का क़स्द करना जिस दरजे का पहले गुनाह हो चुका हो और येह तर्क मह़्ज़ ख़ुदा की ता'ज़ीम और उस की नाराज़ी के डर के बाइ़स हो।

शैख़ की ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ **तौबा** की चार शर्तें हैं :

पहली शर्त़ : गुनाह तर्क कर देने का इरादा, इस का मत़लब येह है कि अपने दिल को इस बात पर पुख़्ता और मज़बूत़ कर ले कि आयन्दा कभी गुनाहों की त़रफ़ रुजूअ़ नहीं करूंगा, लेकिन अगर कोई शख़्स बिल फ़े'ल गुनाह छोड़ दे मगर दिल में ख़याल हो कि फिर कभी करूंगा, या इब्तिदा से गुनाह छोड़ने का इरादा ही पुख़्ता न हो तो ऐसा शख़्स बा'ज़ अवक़ात फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, ऐसा शख़्स अगर्चे वक़्ती त़ौर पर गुनाहों से रुक जाता है मगर उसे **ताइब** नहीं कहा जा सकता।

दूसरी शर्त़ : येह है कि जिस गुनाह से **तौबा** कर रहा हो इस मर्तबे का गुनाह पहले कहीं उस से सादिर हो चुका हो, क्यूंकि अगर पहले ऐसा गुनाह सादिर नहीं हुवा, सिर्फ़ आयन्दा के लिये इस से बचता है तो ऐसे शख़्स को ताइब नहीं कहेंगे बल्कि मुत्तक़ी कहेंगे,

www.dawateislami.net

क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्र से बचने वाला तो कह सकते हैं मगर कुफ़्र से **तौबा** करने वाला नहीं कह सकते क्यूंकि कुफ़्र तो مَعَاذَاللّٰہ कभी भी आप से सादिर नहीं हुवा, और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कुफ़्र से ताइब कहेंगे क्यूंकि आप पहले ह़ालते कुफ़्र में रह चुके थे।

तीसरी शर्त़ : येह है कि जो गुनाह पहले वोह कर चुका है इस दरजे और मन्ज़िलत के गुनाह को अपने इख़्तियार से तर्क करे। क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि जिस पुराने बूढ़े ने जवानी के ज़माने में ज़िना या डाकाज़नी का इर्तिकाब किया हो, वोह अब बुढ़ापे में **तौबा** कर सकता है, क्यूंकि **तौबा** का दरवाज़ा बन्द नहीं, मगर अब उसे ज़िना या डाकाज़नी के तर्क का इख़्तियार नहीं क्यूंकि अब वोह अ़मली त़ौर पर येह गुनाह नहीं कर सकता। तो चूंकि अब वोह ज़िना या डाकाज़नी पर क़ादिर नहीं, इस लिये येह नहीं कह सकते कि वोह अपने इख़्तियार से इन्हें छोड़ रहा है, या इन से रुक रहा है क्यूंकि अब वोह आ़जिज़ हो चुका है और उसे अब इन पर क़ुदरत नहीं रही, मगर वोह इस वक़्त भी ज़िना या डाकाज़नी जैसे दूसरे ह़राम व मम्नूअ़ अफ़्आ़ल पर क़ादिर है। जैसे झूट बोलना, किसी पर ज़िना की तोहमत लगाना, किसी की ग़ीबत या चुग़ली करना वग़ैरा उमूर येह सब गुनाह हैं अगर्चे हर एक में अपनी अपनी नोइय्यत के ए'तिबार से फ़र्क़ है लेकिन येह तमाम गुनाह एक ही रुत्बे के शुमार होते हैं और येह मरतबा बिदअ़त के मरतबे से कम है और बिदअ़त का रुत्बा कुफ़्र से कम है बहर ह़ाल ऐसा शख़्स जो अब ज़िना और डाकाज़नी जैसे अफ़्आ़ल पर क़ादिर नहीं इस का **तौबा** करना दुरुस्त होगा कि वोह दरजे और मन्ज़िलत में इन जैसे अफ़्आ़ल के तर्क पर क़ादिर है।

www.dawateislami.net

चोथी शर्त़ : येह है कि गुनाहों से **तौबा** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम के लिये और उस के दर्दनाक अ़ज़ाब से डर कर हो किसी दुन्यवी ग़रज़ या लोगों से डर या उन से दाद व तह़सीन या अपनी शोहरत होने या जिस्मानी ज़ो'फ़ या मोह़ताजी या किसी और रुकावट की वजह से न हो। जब **तौबा** के येह अरकान व शराइत़ पाए जाएंगे तब उसे ह़क़ीक़ी और सच्ची **तौबा** कहा जाएगा।

तौबा के मुक़द्दमात या'नी जिन चीज़ों का **तौबा** से पहले होना ज़रूरी है वोह तीन हैं :

अव्वल : येह कि अपने गुनाहों को निहायत क़बीह़ अफ़्आ़ल तसव्वुर करे।

दुवुम : येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब की शिद्दत और उस के क़ह्र व ग़ज़ब को दिल में ह़ाज़िर करे जिसे बर्दाश्त करने की त़ाक़त उस में नहीं है।

सिवुम : येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब व क़ह्र के सामने अपनी कमज़ोरी और बे बसी को मद्दे नज़र रखे। क्यूंकि जो शख़्स सूरज की तेज़ धूप, सिपाही के थप्पड़ और च्यूंटी के डंख को बर्दाश्त नहीं कर सकता वोह दोज़ख़ की शदीद गर्मी, जहन्नम के फ़िरिश्तों की मार और इन्तिहाई ज़हरीले सांपों के डंख कैसे बर्दाश्त कर सकता है। दोज़ख़ में **बिच्छू** ख़च्चर जितने बड़े और वहां के **सांप** ऊंट की गरदन जितने मोटे होंगे और येह सांप और बिच्छू वग़ैरा दोज़ख़ की आग के होंगे। इस वक़्त वोह ग़ज़ब और अ़ज़ाब के मकान में रखे हुए हैं। हम बार बार ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाब से पनाह मांगते हैं।

तुम अगर इन दहशत नाक उमूर को याद रखोगे और हर दिन रात किसी वक़्त में इन की याद ताज़ा करते रहोगे तो ज़रूर तुम्हें गुनाहों से ख़ालिस **तौबा** नसीब हो जाएगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर एक को अपने फ़ज़्ल से **तौबा** की तौफ़ीक़ दे।

www.dawateislami.net

सुवाल : अगर कोई शख़्स येह कहे कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो **तौबा** के मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ येह फ़रमाया है कि اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ.

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث:٤٢٥٢، ج٤، ص٤٩٢)

या'नी गुनाहों पर पशेमान होने का नाम **तौबा** है और जो अरकान व शराइत़ **तौबा** के आप ने बयान किये हैं इन का हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो कोई ज़िक्र नहीं फ़रमाया ?

जवाब : सिर्फ़ नदामत को **तौबा** नहीं कहा जा सकता क्यूंकि गुनाहों पर पशेमानी बन्दे के इख़्तियार व क़ुदरत में नहीं, तुम इस चीज़ को मह़सूस करते हो कि बसा अवक़ात बन्दा अपने एक फ़े'ल पर नादिम व पशेमान हो रहा होता है ह़ालांकि दिल से वोह इस नदामत व पशेमानी को पसन्द नहीं कर रहा होता तो मा'लूम हुवा कि नदामत व पशेमानी बन्दे के इख़्तियार में नहीं और **तौबा** तो इख़्तियारी चीज़ है, इसी लिये **तौबा** का हुक्म दिया गया है, तो इस तशरीह़ से साफ़ त़ौर पर मा'लूम हुवा कि नदामत व पशेमानी यक़ीनन ऐन **तौबा** नहीं, इस लिये मज़्कूरा ह़दीस के वोह मा'ना नहीं जो ज़ाहिरन समझ में आते हैं, बल्कि इस के येह मा'ना हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़्मत व हैबत का तसव्वुर कर के और उस के दर्दनाक अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से जो नदामत और पशेमानी बन्दे के दिल में पैदा होती है वोह बन्दे को ख़ालिस **तौबा** करने पर उभारती है और ऐसी नदामत व पशेमानी सह़ीह़ ताइबीन का ह़ाल और उन की सिफ़त है, क्यूंकि बन्दा जब मुन दरिजए बाला **तौबा** के मुक़द्दमात को बार बार ख़याल में लाएगा तो उसे अपने गुनाहों पर नदामत मह़सूस होगी, और येही नदामत उस को तर्के मआ़सी (गुनाह छोड़ने) पर उभारेगी और ऐसी नदामत आयन्दा के लिये भी ताइब के दिल में क़ाइम रहेगी और ख़ुदावन्दे तआ़ला के दरबार में आ़जिज़ी और गिर्या व ज़ारी पर उक्साएगी तो चूंकि ऐसी नदामत **तौबा** का सबब और ताइब की

www.dawateislami.net

सिफ़तों में से है इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसी नदामत को **तौबा** फ़रमाया। इस मा'ना को अच्छी त़रह़ समझ लो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें समझने की तौफ़ीक़ दे।

सुवाल : येह कैसे हो सकता है कि इन्सान ऐसा हो जाए कि उस से कोई सग़ीरा या कबीरा गुनाह सादिर ही न हो ? ह़ालांकि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام जो तमाम मख़्लूक़ात से क़त़ई त़ौर पर अशरफ़ व आ'ला थे उन के मुतअ़ल्लिक़ भी अहले इ़ल्म में इख़्तिलाफ़ है कि वोह इस मर्तबे पर पहुंचे या नहीं।

जवाब : ऐसे दरजे पर पहुंच जाना कि कोई सग़ीरा या कबीरा गुनाह सादिर न हो, मुमकिन है मुह़ाल नहीं, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ जिस के शामिले ह़ाल हो जाए उस के लिये आसान है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस को चाहे अपनी रह़मत के साथ ख़ास कर लेता है।

फिर येह भी **तौबा** के शराइत़ में से है कि क़स्दन गुनाह सादिर न हो, हां अगर भूल चूक से कोई लग़्ज़िश हो जाए तो ख़ुदा तआ़ला रऊफ़ व रह़ीम उसे मुआ़फ़ कर देगा और जिसे ख़ुदा की तौफ़ीक़ ह़ासिल हो गई हो वोह गुनाहों से बा आसानी मह़फ़ूज़ रह सकता है।

अगर तुम **तौबा** न करने का येह बहाना करो कि हमें अपने नफ़्स पर ए'तिमाद नहीं, शायद **तौबा** के बा'द गुनाहों से बाज़ रहे या न रहे, और शायद हम **तौबा** पर साबित व मज़बूत़ रहें या न रहें, इस लिये **तौबा** करने से क्या फ़ाइदा ? तो इस बहाने का जवाब सुन लो कि ऐसा ख़याल शैत़ान का सरासर धोका और फ़रेब है क्यूंकि तुम्हें कैसे मा'लूम है कि **तौबा** के बा'द ज़रूर तुम से गुनाह हो जाएगा। हो सकता है **तौबा** के बा'द फ़ौरन ही तुम्हें मौत आ जाए और गुनाह करने का मौक़अ़ न मिले, बाक़ी येह वहम कि शायद गुनाह हो जाए तो ऐसे वहम का कोई ए'तिबार नहीं, तुम पर सिर्फ़ येह लाज़िम है कि **तौबा** के वक़्त आयन्दा गुनाह तर्क कर देने का इरादा पक्का और सच्चा हो, बाक़ी इस इरादे पर तुम्हें इस्तिक़ामत देना ख़ुदा का काम है पस अगर

www.dawateislami.net

इस इरादे पर तुम ख़ुदा के फ़ज़्ल से क़ाइम रहे तो येही मक़्सूद है, और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता तुम इस इरादे पर क़ाइम न रहे तो भी तुम्हारे गुज़श्ता गुनाह तो मुआफ़ हो गए, उन के अ़ज़ाब और आलूदगी से तो तुम्हें ख़लासी मिल गई **तौबा** के बा'द अगर कोई गुनाह हुवा तो बस वोही तुम्हारे ज़िम्मे है। तो साबिक़ा गुनाहों का मुआफ़ हो जाना क्या कोई कम नफ़्अ़ है? इस लिये सिर्फ़ इस वस्वसे से **तौबा** करने से न रुको कि कहीं फिर गुनाह न हो जाए क्यूंकि ख़ालिस **तौबा** करने से तुम्हें दो बड़े फ़ाइदों से एक फ़ाइदा तो यक़ीनन होगा कि या तो हमेशा के लिये तौबतुन्नुसूह़ मुयस्सर आ जाएगी, या साबिक़ा गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ व हिदायत का मालिक है।

गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ येह याद रखो कि गुनाहों की नोइय्यत मुख़्तलिफ़ है, क्यूंकि गुनाह तीन क़िस्म के हैं।

एक येह कि तुम ने ख़ुदा के फ़र्ज़ कर्दा अह़काम को अदा न किया हो और उन की अदाएगी तुम्हारे ज़िम्मे हो जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और कफ़्फ़ारा वग़ैरा, तो येह मह़्ज़ ज़बानी **तौबा** से मुआफ़ नहीं होंगे बल्कि ह़त्तल इम्कान इन की क़ज़ा लाज़िम है।

दूसरी क़िस्म वोह गुनाह जिन की अब क़ज़ा तो नहीं हो सकती मगर हों वोह भी तुम्हारे और ख़ुदा के दरमियान ही जैसे कभी शराब नोशी की हो, या राग रंग की मह़फ़िल सजाई हो या सूद खाया हो तो[1] इस क़िस्म के गुनाहों की मुआफ़ी की सूरत येह है कि गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत व पशेमानी की जाए और आयन्दा के लिये उन्हें तर्क कर देने का मुसम्मम इरादा कर लिया जाए।

---

[1]..... जो माल रिश्वत या तग़न्नी (गाने) या चोरी से ह़ासिल हुवा हो उस पर फ़र्ज़ है कि जिस जिस से लिया उन पर वापस कर दे वोह न रहे हों तो वरसा को दे पता न चले तो फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे येही हुक्म सूद वग़ैरा उ़क़ूदे फ़ासिदा का है फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि जिस से लिया बिल ख़ुसूस उन्हें वापस करना फ़र्ज़ नहीं बल्कि उसे इख़्तियार है कि (जिस से लिया) उसे वापस कर दे ख़्वाह इब्तिदाअन तसद्दुक़ (ख़ैरात) कर दे।
(चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 46 ब ह़वाला फ़तावा रज़विय्या जि. 23, स. 552)

www.dawateislami.net

तीसरी क़िस्म वोह गुनाह हैं जो तुम्हारे और मख़्लूक़ के दरमियान हैं, तमाम गुनाहों से ज़ियादा संगीन गुनाह येह तीसरी क़िस्म के गुनाह हैं, इन की नोइय्यत मुख़्तलिफ़ होती है, बा'ज़ किसी के माल से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और बा'ज़ किसी की ज़ात से, इसी त़रह़ बा'ज़ वोह होते हैं जिन का तअ़ल्लुक़ किसी की इ़ज़्ज़त व हु़रमत से होता है और बा'ज़ वोह होते हैं जिन का तअ़ल्लुक़ किसी को दीनी नुक़्सान पहुंचाने से होता है। तो जिन का तअ़ल्लुक़ माल से है, उन के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी है कि अगर हो सके तो वोह माल वापस कर दिया जाए अगर ग़ुर्बत व इफ़्लास के बाइ़स वापस करने से मा'ज़ूर है तो साह़िबे माल से जाइज़ व ह़लाल करवा ले, अगर साह़िबे माल मर चुका है या वहां मौजूद नहीं तो माल की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ कोई चीज़ सदक़ा कर दे, और अगर येह भी मुमकिन न हो तो आ'माले सालिह़ा की कसरत करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबार में गिर्या व ज़ारी करे, ताकि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस साह़िबे माल को राज़ी कर दे। और वोह गुनाह जिन का तअ़ल्लुक़ किसी की जान या ज़ात से हो जैसे किसी को क़त्ल किया हो तो उस के इ़वज़ क़िसास देना लाज़िम है या मक़्तूल के वारिसों से मुआ़फ़ कराना ज़रूरी है और अगर वारिस मौजूद नहीं तो दरबारे ईज़दी में गिर्या व ज़ारी ज़रूरी है और ख़ुदा से इस की मुआ़फ़ी चाहना लाज़िम है ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मक़्तूल को तुम से राज़ी कर दे। और किसी की इ़ज़्ज़त व आबरू से मुतअ़ल्लिक़ येह गुनाह है कि किसी की ग़ीबत की जाए (और उसे मा'लूम हो जाए) या किसी पर बोहतान लगाया जाए, या किसी को गालियां दी जाएं तो इस क़िस्म के गुनाह की मुआ़फ़ी की सूरत येह है कि उस के सामने अपने आप को झूटा कहा जाए और अपनी ज़ियादती और ख़त़ा का ए'तिराफ़ किया जाए और अगर उस

www.dawateislami.net

के सामने अपनी ज़ियादती व ग़लत़ी का ए'तिराफ़ करने में फ़ितना और झगड़े का सह़ीह़ अन्देशा हो तो इस सूरत में भी मुआ़फ़ी के लिये खु़दा के दरबार में ही गिर्या व ज़ारी करे ताकि मुआ़फ़ी हो जाए। और किसी की आबरू से मुतअ़ल्लिक़ येह गुनाह है कि किसी के अहलो इ़याल से ख़ियानत की जाए या कोई और ह़रकते बद की जाए तो ऐसे गुनाह को न तो उस के सामने ज़ाहिर किया जा सकता है और न ही मुआ़फ़ करवाया जा सकता है तो उस की मुआ़फ़ी के लिये भी दरबारे ईज़दी में ही गिर्या व ज़ारी करनी चाहिये। हां अगर फ़ितने का ख़ौफ़ न हो, अगर्चे येह नादिर है तो उस के सामने ज़ाहिर कर के मुआ़फ़ करा लिया जाए। और वोह गुनाह जिन का तअ़ल्लुक़ किसी के दीन से हो, येह हैं कि किसी को काफ़िर या बिदअ़ती गुमराह कहा जाए तो येह भी सख़्त गुनाह है, ऐसे गुनाहों की मुआ़फ़ी भी इसी सूरत में हो सकती है कि उस के सामने अपनी ख़त़ा और ग़लत़ी का ए'तिराफ़ किया जाए। और अगर वोह मौजूद न हो तो दरबारे इलाही में गिड़गिड़ाए और इस्तिग़फ़ार करे, और अपने आप पर मलामत करे, ताकि रोज़े क़ियामत खु़दा तआ़ला उस शख़्स को राज़ी कर दे।

खु़लासा येह कि जहां तुम गुनाह के साथ तकलीफ़ देने वालों को राज़ी भी कर सको वहां उन को राज़ी भी करो, वरना मुआ़फ़ी और बख़्शिश के लिये खु़दा तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करो, उस के दरबार में गिर्या व ज़ारी करो और सदक़ा व ख़ैरात करो, ताकि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दरमियान रिज़ामन्दी करा दे। इस लिये कि खु़दा के फ़ज़्लो करम से येह उम्मीद है कि वोह तुम्हारी सच्ची गिर्या व ज़ारी देख कर उसे अपने ख़ज़ानों से अ़त़ा कर के तुम्हारी त़रफ़ से राज़ी कर दे।

www.dawateislami.net

तौबा के अरकान व शराइत़ जो हम ने बयान किये हैं, जब तुम इन पर पूरी त़रह़ अ़मल पेरा हो जाओगे और आयन्दा के लिये अपने दिल को हर क़िस्म के गुनाहों से पाक रखने का अ़हद कर लोगे तो तुम्हारे गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। अब आयन्दा अगर इस अ़हद पर तो तुम क़ाइम रहे मगर गुज़श्ता क़ज़ाएं अदा न कर सके, या नाराज़ लोगों को राज़ी न कर सके तो येह साबिक़ा गुनाह ही तुम्हारे ज़िम्मे रहे, बाक़ी तमाम बख़्श दिये जाएंगे। और इस बाबुत्तौबा की शर्ह़ बहुत त़वील है जिस की गुन्जाइश येह मुख़्तसर किताब नहीं रखती, अगर इस की ज़ियादा शर्ह़ मत़लूब हो तो किताब एह़याउल उ़लूम के بَابُ التَّوْبَة या اَلْقُرْبَةُ اِلَى الله या किताब اَلْغَايَةُ الْقُصْوٰى का मुत़ालआ़ करो, यहां सिर्फ़ इसी क़दर बयान किया है जिस की अशद्द ज़रूरत थी।

फिर तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि **तौबा** की घाटी बहुत सख़्त घाटी है, इस की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है और इस से ग़फ़्लत शदीद नुक़्सान का बाइस है, **तौबा** की अहम्मिय्यत व ज़रूरत इस वाक़िए से ज़ाहिर होती है जो उस्ताद अबू इस्ह़ाक़ इस्फ़राइनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है, उस्ताद मौसूफ़ बा अ़मल और रासिख़ फ़ील इ़ल्म उ़लमा में से थे। आप फ़रमाते हैं : मैं ने तीस बरस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबतुन्नुसूह़ नसीब होने की इल्तिजा की तीस बरस के बा'द मैं अपने दिल में मुतअ़ज्जिब हुवा और दरबारे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक और बे ऐ़ब है, तीस बरस से मैं तेरी बारगाह में एक ह़ाजत के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हूं, मेरी ह़ाजत बर नहीं आई, जब मैं सोया तो ख़्वाब में एक शख़्स देखा जो मुझ से कह रहा था : तू अपनी तीस साला दुआ़ पर तअ़ज्जुब करता है, तुझे येह मा'लूम नहीं कि तू कितनी बड़ी चीज़ का मुत़ालबा कर रहा है ? तू उस चीज़ का मुत़ालबा कर रहा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे अपना दोस्त बना ले, क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद नहीं सुना कि

www.dawateislami.net

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾

(پ۲،البقرۃ:۲۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत **तौबा** करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

तो क्या तू **तौबा** को मा'मूली शै ख़याल करता है ?

ऐ ग़ाफ़िल मुसलमानो ! ज़रा उन अइम्मए दीन के ह़ालात पर तो नज़र करो कि वोह **तौबा** के लिये कितना एहतिमाम करते थे और इस्लाहे़ क़ुलूब के लिये किस त़रह़ मुसलसल तगो दो में लगे रहते थे और तौशए आख़िरत तय्यार करने की ख़ात़िर किस त़रह़ जां फ़िशानी से मसरूफ़ रहते थे। **तौबा** में ताख़ीर करना सख़्त नुक़्सान देह है, क्यूंकि गुनाह से इब्तिदाअन **क़सावते क़ल्बी** पैदा होती है। फिर रफ़्ता रफ़्ता इन्सान कुफ़्र व गुमराही तक जा पहुंचता है, क्या तुम्हें इब्लीस और बल्अ़म बाऊ़र का वाक़िआ़ याद नहीं ? उन से इब्तिदा में एक ही गुनाह सादिर हुवा, मगर वोह बा'द में कुफ़्र व गुमराही तक पहुंच गए और हमेशा के लिये तबाह ह़ाल लोगों में शामिल हो गए, इस लिये **तौबा** के बारे में तुम पर बेदारी व कोशिश लाज़िम है। अगर तुम जल्द **तौबा** करोगे तो उम्मीद है कि अ़न क़रीब गुनाहों पर इसरार करने के मरज़ का तुम्हारे दिल से क़ल्अ़ क़म्अ़ हो जाए और गुनाहों की नुहूसत का बोझ तुम्हारी गर्दन से उतर जाए। गुनाहों की वजह से जो क़सावते क़ल्बी पैदा होती है उस से हरगिज़ बे ख़ौफ़ न हो। बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो, क्यूंकि बा'ज़ सालिह़ीन ने फ़रमाया है :

اِنَّ سَوَادَ الْقَلْبِ مِنَ الذُّنُوْبِ وَعَلَامَةُ سَوَادِ الْقَلْبِ اَنْ لَّا تَجِدَ مِنَ الذُّنُوْبِ مَفْزَعًا وَّلَا لِلطَّاعَةِ مَوْقِعًا وَّلَا لِلْمَوْعِظَةِ مَنْجَعًا وَّلَا تَسْتَحْقِرَنَّ مِنَ الذُّنُوْبِ شَيْئًا فَتَحْسِبَ نَفْسَكَ تَآئِبًا وَّاَنْتَ مُصِرٌّ عَلَى الْكَبَائِرِ.

www.dawateislami.net

बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है, और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, त़ाअ़त के लिये मौक़अ़ नहीं मिलता, नसीह़त से कोई फ़ाइदा नहीं होता, ऐ अ़ज़ीज़ किसी गुनाह को मा'मूली न ख़याल कर, और कबीरा गुनाहों पर इसरार करने के बा वुजूद अपने आप को ताइब गुमान न कर।

ह़ज़रते कहमस बिन अल ह़सन رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि आप ने फ़रमाया कि मुझ से एक गुनाह सरज़द हुवा तो मैं इस पर चालीस बरस रोता रहा। लोगों ने पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! वोह कौन सा गुनाह था ? तो आप ने फ़रमाया : एक दफ़्आ़ मेरा एक दोस्त मेरी मुलाक़ात को आया तो मैं ने उस के लिये मछली पकाई, जब वोह खाना खा चुका तो मैं ने उठ कर अपने पड़ोसी की दीवार से मिट्टी ले कर अपने मेहमान के हाथ धुलाए।

(حلية الاولياء، كهمس الدعاء، الرقم: ٨٣٨٩، ج٦، ص٢٢٨)

पस ऐ लोगो ! नफ़्स को गुनाहों पर टोकते रहो, इस का मुह़ासबा करते रहो और **तौबा** करने में सुस्ती और ताख़ीर न करो, क्यूंकि मौत का वक़्त पोशीदा है, और दुन्या धोके व फ़रेब में डाल रही है, और नफ़्सो शैत़ान दो ख़त़रनाक दुश्मन तुम्हें गुमराह करने की ताक में हैं। इस लिये हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबार में गिर्या व ज़ारी करते रहो, और अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ह़ाल अकसर ज़ेहन में दोहराते रहो जिन को रब तआ़ला ने अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और उन में अपनी रूह़ फूंकी और फिर फ़िरिश्ते उन्हें उठा कर जन्नत में ले गए। आप से सिर्फ़ एक लग़्ज़िश सरज़द हुई तो आप को जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाना पड़ा। इस लग़्ज़िश की वजह से एक त़वील अ़र्से तक गिर्या व ज़ारी और अपने रब की बारगाह में **तौबा** करते रहे बिल

www.dawateislami.net

आख़िर आप की **तौबा** मक़्बूल हुई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की लग़्ज़िश मुआ़फ़ फ़रमा दी। लिहाज़ा ग़ौर करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक नबी अपनी लग़्ज़िश पर इस क़दर गिर्या व ज़ारी करे तो गुनाहों पर इसरार करने वाले ग़ाफ़िल को किस क़दर ज़ियादा गिर्या व ज़ारी की ज़रूरत होगी? एक शाइ़र ने इसी चीज़ को कितने अच्छे अन्दाज़ में अदा किया है :

يَـخَـافُ عَلٰى نَفْسِه مَنْ يَّتُوْبُ　　　فَـكَيْفَ تَرٰى حَالَ مَنْ لَا يَتُوبُ

(العقد الفرید، کتاب الزمردۃ فی المواعظ والزھد، باب من کلام الزھاد...الخ، ج۳، ص۱۴۰)

वोह डर रहे हैं जो हर वक़्त **तौबा** व इस्तिग़्फ़ार में मसरूफ़ रहते हैं, तो उन का क्या ह़ाल होगा जो सिरे से **तौबा** ही से ग़ाफ़िल हैं।

और **तौबा** करने के बा'द अगर **तौबा** तोड़ डालो और फिर गुनाह शुरूअ़ कर दो तो जल्द **तौबा** की त़रफ़ लौटो और नफ़्स को **तौबा** पर राग़िब करने के लिये येह कहो : ऐ नफ़्स! अब दोबारा ख़ुलूस से **तौबा** कर ले, शायद येह तेरी आख़िरी **तौबा** हो और इस के बा'द इर्तिकाबे गुनाह के बिग़ैर ही तू मर जाए। इसी त़रह़ गुनाह के बा'द **तौबा** करते रहो और जिस त़रह़ तुम ने गुनाह करना दस्तूर बना लिया है, गुनाह के बा'द **तौबा** को भी पेशा बना लो, और गुनाह कर के **तौबा** से आ़जिज़ न हो जाओ और कभी **तौबा** में मुंह न मोड़ो और शैत़ानी धोके में आ कर **तौबा** से हरगिज़ न रुको, क्यूंकि **तौबा** करना नेक होने की अ़लामत है, क्या तुम ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इरशाद नहीं सुना, आप फ़रमाते हैं :

خِيَارُكُمْ كُلُّ مُفَتَّنٍ تَوَّابٍ (شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، الحدیث: ۷۱۲۱، ج۵، ص۴۱۸)

तुम में से बेहतर वोह शख़्स है जिस से गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ौरन **तौबा** कर ले।

www.dawateislami.net

और ख़ुदा की त़रफ़ ज़ियादा रुजूअ़ करे और गुनाहों पर पशेमान ज़ियादा हो, और ख़ुदा तआ़ला से डर कर इस्तिग़फ़ार ज़ियादा करे, तुम इस आयते क़ुरआनी के मा'ना पर तो ग़ौर करो :

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾ (پ۵، النساء: ۱۱۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर **अल्लाह** से बख़्शिश चाहे तो **अल्लाह** को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।*

फ़स्ल

अल ग़रज़ जब तुम **तौबा** व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए़ अपने दिल को तमाम गुनाहों से साफ़ कर लो और आयन्दा के लिये अपने दिल को गुनाहों से दूर रहने पर मज़बूत़ कर लो और इस ख़ुलूस से **तौबा** कर लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल को **तौबा** में सच्चा और ख़ालिस बना दे और जहां तक हो सके लोगों को राज़ी कर लो जिन्हें तुम ने माली, बदनी, या दीनी क़िस्म की अज़िय्यतें पहुंचाई हों और गुज़श्ता ज़माने की छूटी हुई नमाज़ें और रोज़े वग़ैरा भी ह़त्तल इमकान क़ज़ा कर लो। और जो क़ज़ा नहीं कर सकते इन की मुआ़फ़ी के लिये दरबारे ख़ुदावन्दी में गिर्या व ज़ारी भी कर चुको जिस के ज़रीए़ तुम्हारे बाक़ी मांदह गुनाह और लग़्ज़िशें मुआ़फ़ हो जाएं तो फिर तुम ग़ुस्ल करो, और पाक कपड़े पहनो और वुज़ू कर के पूरे ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से चार रकअ़त नमाज़ अदा करो, और अपनी पेशानी को ऐसी जगह ज़मीन पर रखो जहां तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई न देख रहा हो, फिर तुम अपने चेहरे पर ख़ाक डालो, और अपने चेहरे को जो तमाम आ'ज़ा से आ'ला उ़ज़्व है, ख़ाक से आलूदा करो, और ह़ालत येह हो जाए कि आंखों से आसूं बह रहे हों, दिल ग़म के दरिया में डूबा हुवा हो और शिद्दते ख़ौफ़ के बाइ़स तुम्हारे रोने

www.dawateislami.net

की आवाज़ बे साख़्ता बुलन्द हो रही हो, एक एक कर के तुम्हारे गुनाह आंखों के सामने फिर रहे हों, तो अपने गुनाहों को याद करते हुए अपने नफ़्स को डांटते हुए इस से यूं ख़ित़ाब करो :

اَمَاتَستَحِيْنَ يَانَفسُ اَمَا اٰنَ لَكِ اَنْ تَتُوبِی اَلَكِ طَاقَةٌ

بِعَذَابِ اللّٰهِ سُبحَانَهٗ اَلَكِ حَاجَةٌ بِسَخَطِ اللّٰهِ سُبحَانَهٗ.

ऐ नफ़्स क्या तुझे ख़ुदा से शर्म नहीं आती ? क्या तेरी **तौबा** का वक़्त अभी क़रीब नहीं आया ? क्या तुझ में क़ह्हार व जब्बार के दर्दनाक अ़ज़ाब बर्दाश्त करने की सकत है ? क्या तू अपने ऊपर ख़ुदा को नाराज़ करने का ख़्वाहिश मन्द है ?

इसी त़रह़ चन्द बार गुनाहों को याद कर के इन अल्फ़ाज़ का तकरार करो और पूरे सोज़ो गुदाज़ से रोओ और गिर्या व ज़ारी करो, फिर सजदे से सर उठाओ और अपने मेहरबान ख़ुदा के आगे दुआ़ के लिये हाथ फैला दो और येह दुआ़ करो :

اِلٰهِیْ عَبْدُكَ الْاٰبِقُ رَجَعَ اِلٰى بَابِكَ وَعَبْدُكَ الْعَاصِیْ رَجَعَ اِلَى الصُّلْحِ

وَعَبْدُكَ الْمُذْنِبُ اَتَاكَ بِالْعُذْرِ فَاعْفُ عَنِّیْ بِجُوْدِكَ وَتَقَبَّلْنِیْ بِفَضْلِكَ

وَانْظُرْ اِلَیَّ بِرَحْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَا سَلَفَ مِنَ الذُّنُوْبِ وَ اعْصِمْنِیْ

فِیْمَا بَقِیَ مِنَ الْاَجَلِ فَاِنَّ الْخَیْرَ كُلَّهٗ بِیَدِكَ وَاَنْتَ بِنَا رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ.

मौला ! तेरा भागा हुवा बन्दा तेरे दर पर वापस आ गया है, तेरा ना फ़रमान बन्दा सुल्ह़ की त़रफ़ लौट आया है और तेरा गुनहगार बन्दा मुआ़फ़ी के लिये तेरे दरबार में ह़ाज़िर है, मुझे अपने करम से बख़्श दे और मुझे क़बूल फ़रमा ले और मुझ पर नज़रे रह़मत फ़रमा, या इलाही मेरे गुज़श्ता तमाम गुनाह बख़्श दे और बाक़ी उ़म्र में हर गुनाह से मुझे मह़फ़ूज़ रख, तू ही हर भलाई का मालिक है और तू ही हम पर मेहरबान और नर्मी फ़रमाने वाला है ।

www.dawateislami.net

फिर येह दुआ़ करे, जिसे दुआ़ए शिद्दत कहते हैं :

يَا مُجلِی عَظَائِمِ الْاُمُوْرِ یَا مُنْتَهِی هِمَّةِ الْمَهْمُوْمِیْنَ یَا مَنْ اِذَا اَرَادَ اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ اَحَاطَتْ بِنَا ذُنُوْبُنَا اَنْتَ الْمَذْخُوْرُ لَهَا يَا مَذْخُوْرًا لِكُلِّ شِدَّةٍ كُنْتُ اَدَّخِرُكَ لِهٰذِهِ السَّاعَةِ فَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.

ऐ तमाम अ़ज़ीमुश्शान कामों के ज़ाहिर करने वाले, ऐ मुश्किलात को ह़ल करने वाले, ऐ ग़मनाक और परेशान ह़ाल लोगों की जाए पनाह ! ऐ वोह क़ादिर ज़ात जिस की शान येह है कि जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमाए तो लफ़्ज़े **कुन** फ़रमाने से वोह शै वुजूद में आ जाती है, हमारा ह़ाल येह है कि कसरते मआ़सी ने हम को घेर लिया है, तू ही तमाम गुनाहों का इह़ात़ा फ़रमाने वाला है ऐ तमाम कामों के इह़ात़ा करने वाले ! मैं इन तमाम गुनाहों को ले कर तेरे दरबार में ह़ाज़िर हूं, तू मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे, बेशक तू ही **तौबा** क़बूल फ़रमाने वाला और मेहरबान है।

फिर जितना ज़ियादा रो सको रोओ और अपनी ज़िल्लत व आ़जिज़ी का इज़्हार करो और ज़बान से येह दुआ़ करो :

يَامَنْ لَّا يَشْغَلُهٗ شَاْنٌ عَنْ شَاْنٍ وَّلَا سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ يَا مَنْ لَا تُغَالِطُهٗ كَثْرَةُ الْمَسَائِلِ يَا مَنْ لَا يُبْرِمُهٗ اِلْحَاحُ الْمُلْحِيْنَ اَذِقْنَا بَرْدَ عَفْوِكَ وَحَلَاوَةَ مَغْفِرَتِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

ऐ वोह ज़ात जिस को एक काम दूसरे काम से बाज़ व मश्ग़ूल नहीं रख सकता और न ही एक बात का सुनना दूसरी बात सुनने से बाज़ रख सकता है, ऐ वोह ज़ात जिसे मसाइल की कसरत मुग़ालते

www.dawateislami.net

में नहीं डाल सकती और न दुआ़ में इसरार करने वालों का इसरार उसे रुकावट में डाल सकता है हमें अपनी मुआ़फ़ी की राह़त व ठन्डक पहुंचा और बख़्शिश की ह़लावत व चाश्नी अ़त़ा फ़रमा। ऐ सब से बेहतर रह़्म फ़रमाने वाले हम पे रह़्म फ़रमा, बेशक तू सब कुछ कर सकता है। इस दुआ़ के बा'द हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर दुरूद शरीफ़ भेजो और तमाम मोअमिनीन व मोअमिनात के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करो, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करो।

जब येह तमाम मुन दरिजए बाला दुआ़एं, दरबारे ख़ुदावन्दी में गिर्या व ज़ारी और **तौबा** व इस्तिग़्फ़ार वग़ैरा पूरी त़रह़ कर लो तो बेशक तुम्हें तौबतुन्नुसूह़ ह़ासिल हो गई और तुम गुनाहों से ऐसे पाक हो गए जैसे आज ही पैदा हुए। अब तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोस्त बना लेगा और तुम्हें बहुत अज्रो सवाब अ़त़ा करेगा और तुम पर इतनी रह़मत व बरकत नाज़िल फ़रमाएगा जिस का बयान नहीं हो सकता। अब तुम्हें ह़क़ीक़ी अम्न व ख़लासी ह़ासिल हो गई और तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब और गुनाहों की सज़ा से नजात पा गए और दुन्या व आख़िरत में गुनाहों की आफ़त से छूट गए और तुम्हारी **तौबा** की घाटी बि इज़्ने इलाही उ़बूर हो गई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही अपने फ़ज़्ल व एह़सान से हिदायत का मालिक है।

मुअ़ज़्ज़ज़ कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام *ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे आ'ला* عَزَّوَجَلَّ *! तेरे नज़्दीक कौन सा बन्दा ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ? फ़रमाया : वोह जो बदला लेने की क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे।* (شُعَبُ الْاِیمان ج۶ ص ۳۱۹ حدیث ۸۳۲۷)

www.dawateislami.net

तक़्वा का बयान

ऐ अ़ज़ीज़ ! अव्वल तुम्हें येह जानना चाहिये कि **तक़्वा** एक नादिर ख़ज़ाना है अगर तुम इस ख़ज़ाने को पा लेने में काम्याब हो गए तो तुम्हें इस में बेश क़ीमत मोती व जवाहिरात मिलेंगे और इ़ल्म व दौलते रूह़ानी का बहुत बड़ा ख़ज़ाना हाथ लगेगा, रिज़्क़े करीम तुम्हारे हाथ आ जाएगा। तुम बहुत बड़ी काम्याबी ह़ासिल कर लोगे, बहुत बड़ी ग़नीमत पा लोगे, और मिल्के अ़ज़ीम (जन्नत) के ह़क़दार बन जाओगे, यूं समझो कि दुन्या व आख़िरत की भलाइयां **तक़्वा** में जम्अ़ कर दी गई हैं। तुम ज़रा क़ुरआने ह़कीम में तो ग़ौर करो कि कहीं इरशाद फ़रमाया अगर तुम **तक़्वा** इख़्तियार करोगे तो हर क़िस्म की ख़ैर व बरकत को पा लोगे। कहीं **तक़्वा** इख़्तियार करने पर अज्र व सवाब के वा'दे फ़रमाए गए हैं और कहीं फ़रमाया गया कि सआ़दत का ज़रीआ़ **तक़्वा** व परहेज़गारी इख़्तियार करना है। मैं यहां क़ुरआने ह़कीम से **तक़्वा** के बारह फ़वाइद बयान करता हूं।

(1) मुत्तक़ी शख़्स की रब तआ़ला ता'रीफ़ फ़रमाता है, इरशादे रब्बानी है :

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ (پ۴،ال عمران:۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो येह बड़ी हिम्मत का काम है।*

(2) मुत्तक़ी शख़्स दुश्मनों से मामून व मह़फ़ूज़ रहता है, चुनान्चे इरशाद होता है :

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا (پ۴،عمران: ۱۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किये रहो तो उन का दाऊं तुम्हारा कुछ ना बिगाड़ेगा।*

(3) मुत्तक़ी शख़्स की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ताईद व इमदाद फ़रमाता है, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ (پ۱۴، النحل:۱۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अल्लाह उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं।*

www.dawateislami.net

एक जगह फ़रमाया :

وَاللّٰهُ وَلِیُّ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۹﴾
(پ۲۵، الجاثية:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डर वालों का दोस्त अल्लाह ।

(4) अहले **तक़्वा** आख़िरत की होलनाकियों और सख़्तियों से नजात में रहेंगे और दुन्या में उन्हें रिज़्क़े ह़लाल नसीब होगा चुनान्चे इरशादे रब्बानी है :

وَمَنْ یَّتَّقِ اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ﴿۲﴾ وَّیَرْزُقْهُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ
(پ۲۸،الطلاق:۲۔۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो ।

(5) उस के आ'माल की इस्लाह़ हो जाएगी । कुरआने पाक में वारिद है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِیْدًا ﴿۷۰﴾ یُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ
(پ۲۲، الاحزاب:۷۰۔۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा ।

(6) **तक़्वा** की बरकत से तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं, कुरआने मजीद में है :

وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ
(پ۲۲،الاحزاب:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा ।

(7) मुत्तक़ी शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दोस्त बन जाता है, जैसा कि **कलामुल्लाह** शरीफ़ में आया है :

اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۴﴾
(پ۱۰، التوبة:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है ।

www.dawateislami.net

(8) **तक़्वा** से आ'माल दरजए क़ुबूलिय्यत को पहुंचते हैं, चुनान्चे इरशाद है :

إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾ (پ۶، المائدة: ۲۷)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** उसी से क़ुबूल करता है जिसे डर है।*

(9) **तक़्वा** के बाइ़स इन्सान ख़ुदा तआ़ला के हां ए'ज़ाज़ व इकराम का मुस्तह़िक़ हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरशादे गिरामी है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ (پ۲۶، الحجرات: ۱۳)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।*

(10) मुत्तक़ी लोगों को ब वक़्ते मौत दीदारे इलाही और आख़िरत में नजात की ख़ुश ख़बरी दी जाती है, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ؕ ﴿۶۳﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ (پ۱۱، یونس: ۶۳،۶۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी है दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।*

(11) अहले **तक़्वा** जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ रहेंगे, रब तआ़ला का इरशाद है :

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا (پ۱۶، مریم: ۷۲)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हम डर वालों को बचा लेंगे।*

दूसरी जगह फ़रमाया :

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿۱۷﴾ (پ۳۰، اللیل: ۱۷)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बहुत जल्द उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार*

www.dawateislami.net

(12) अहले **तक़्वा** को हमेशा के लिये जन्नत में रहने की सआ़दत नसीब होगी, जैसे कि ह़क़ तआ़ला का इरशाद है :

أُعِدَّتۡ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۱۳۳﴾
(پ۴،آل عمران:۱۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है।*

तो खुलासा येह निकला कि दुन्या व आखि़रत की सआ़दतें और भलाइयां इस एक **तक़्वा** में जम्अ़ कर दी गई हैं। इस लिये ऐ अ़ज़ीज़ ! तू भी राहे **तक़्वा** इख़्तियार कर और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त इस से ह़िस्सा ह़ासिल कर। फिर बयान कर्दा **तक़्वा** के फ़वाइद में से येह तीन उमूर ख़ास कर इबादत से तअ़ल्लुक़ रखते हैं।

अव्वल : इबादत की तौफ़ीक़ और उस में इआ़नत व मदद, जैसे फ़रमाया गया :

اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۱۹۴﴾
(پ۲،البقرۃ:۱۹۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह डर वालों के साथ है।*

दुवुम : आ'माल की इस्लाह़ व दुरुस्ती और इबादत की ख़ामियों को पूरा करना। येह चीज़ भी **तक़्वा** से ह़ासिल होती है चुनान्चे फ़रमाया :

يُّصۡلِحۡ لَكُمۡ اَعۡمَالَكُمۡ
(پ۲۲،الاحزاب:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा।*

सिवुम : क़बूलिय्यते आ'माल, क़बूलिय्यते आ'माल की येह फ़ज़ीलत भी अहले **तक़्वा** ही को नसीब होती है, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۲۷﴾
(پ۶،المائدۃ:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।*

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अहले **तक़्वा** के आ'माल ही मक़्बूल होते हैं और इबादत का दारो मदार भी इन तीन उमूर पर है, अव्वलन तौफ़ीक़े इबादत, ताकि उस की बन्दगी की जा सके, फिर इस में जो कमी रह जाए उस की इस्लाह़, और फिर इस इबादत का बारगाहे ह़क़ तआ़ला में मक़्बूल होना येह तीन उमूर या'नी तौफ़ीक़े इबादत, इस्लाहे़ आ'माल, और क़बूले आ'माल, वोह चीज़ें हैं, जिन्हें आ़बिद लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से रो रो कर मांगते हैं और दुआ़ करते हैं।

رَبَّنَا وَفِّقْنَا لِطَاعَتِکَ وَاَتِمْ تَقْصِيْرَنَا وَتَقَبَّلْ مِنَّا

ऐ हमारे परवर्दगार हमें इबादत की तौफ़ीक़ दे और हमारी कोताहियों से दर गुज़र फ़रमा और हमारी इस इताअ़त को अपनी बारगाह में क़बूल व मन्ज़ूर फ़रमा।

लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अस्ह़ाबे **तक़्वा** का ए'ज़ाज़ व इकराम फ़रमाते हुए बिग़ैर इन के अ़र्ज़ किये ख़ुद ही इन तीन उमूर का वा'दा फ़रमा लिया है। इस लिये अगर रब तआ़ला की इबादत व बन्दगी करना चाहते हो, बल्कि दुन्या व आख़िरत की तमाम सआ़दात समेटना चाहते हो तो अपने में सिफ़ते **तक़्वा** पैदा करो। एक शाइ़र ने **तक़्वा** की क्या ही उ़म्दा अन्दाज़ में ता'रीफ़ की है।

مَنِ اتَّقَی اللّٰہَ فَذَاکَ الَّذِی　　سِیْقَ اِلَیْہِ الْمَتْجَرُ الرَّابِحُ
لَا یَتْبَعُ الْمَرْءَ اِلٰی قَبْرِہٖ　　غَیْرُ التُّقٰی وَ الْعَمَلُ الصَّالِحُ

(1) जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है वोही नफ़्अ़ वाली शै ह़ासिल करता है।

(2) क़ब्र में इन्सान के साथ सिर्फ़ **तक़्वा** और अ़मले सालेह़ ही जाते हैं।

तक़्वा की शान बा'ज़ दूसरे शोअ़रा ने इस त़रह़ बयान की है।

مَنْ عَرَفَ اللّٰہَ فَلَمْ تُغْنِہٖ　　مَعْرِفَۃُ اللّٰہِ فَذَالِكَ الشَّقِی
مَا یَصْنَعُ الْعَبْدُ بِعِزِّ الْغِنٰی　　وَالْعِزُّ کُلُّ الْعِزِّ لِلْمُتَّقِی
مَا ضَرَّ ذَا الطَّاعَۃِ مَا نَالَہٗ　　فِیْ طَاعَۃِ اللّٰہِ وَ مَاذَا لَقِی

www.dawateislami.net

(4) जिस शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल हो और वोह उस मा'रिफ़त को काफ़ी न जाने तो ऐसा शख़्स बद बख़्त है।

(5) दौलत से इन्सान को क्या इ़ज़्ज़त ह़ासिल हो सकती है, इ़ज़्ज़त तो सब **तक़्वा** से वाबस्ता है।

(6) मुत्तक़ी शख़्स को जो चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में ह़ासिल होती हैं वोह मुज़िर नहीं बल्कि मुफ़ीद ही मुफ़ीद हैं।

बा'ज़ लोगों ने किसी के मरने के बा'द उस की क़ब्र पर येह शे'र लिखा :

لَيْسَ زَادٌ سِوَى التُّقَا   خُذِي مِنْهُ اَوْ دَعِي

तक़्वा ही आख़िरत का तोशा है, अब तेरी मर्ज़ी है कि उसे ह़ासिल करे या छोड़ दे।

फिर इस बात पर भी ग़ौर करो कि तुम सारी उ़म्र इ़बादत के लिये मशक़्क़तें उठाते और मुजाहदे व रियाज़तें करते हो, यहां तक कि अपनी तमन्ना और आरज़ू को पा लेते हो लेकिन ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह इ़बादत अगर दरबारे इलाही में मक़्बूल न हो तो सारी कोशिशें और मुजाहदे ज़ाएअ़ हो गए। तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया है :

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾
(پ۶،المائدة:۲۷)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।*

तो ज़ाहिर हुवा कि तमाम मुआ़मला **तक़्वा** ही से मुतअ़ल्लिक़ है इसी लिये ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या की किसी शै या इन्सान को पसन्द नहीं फ़रमाते थे मगर साह़िबे **तक़्वा** को।

(المسند للامام احمد، مسند عائشة رضی اللّٰه تعالٰی عنها، الحديث:۲۴۴۵۷، ج۹، ص۳۴۱)

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि तौरात शरीफ़ में मज़्कूर है। ऐ इन्सान ! तू मुत्तक़ी बन जा, फिर जहां चाहे सो। (الزھد الکبیر للبیھقی الحدیث:۹۶۲،ص۳۵۰)

ह़ज़रते आ़मिर बिन क़ैस رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ सुना है कि आप ब वक़्ते मौत रो पड़े ह़ालांकि ज़िन्दगी में आप की ह़ालत येह थी कि हर दिन और रात में एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ते, फिर अपने बिस्तर पर आते और बिस्तर को मुख़ात़ब हो कर फ़रमाते : ऐ हर बुराई की जगह ! क़सम ख़ुदा की मैं ने तुझे एक लम्हे भर भी पसन्द नहीं किया, जब आप रोए तो किसी ने कहा आप क्यूं रोते हैं ? फ़रमाया : मैं रब तआ़ला के इस क़ौल को याद कर के रोता हूं।

اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۲۷﴾ (پ۶،المائدۃ:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।*

फिर एक और नुक्ते पर भी ग़ौर करो, जो तमाम बातों की बुन्याद है, वोह येह कि बा'ज़ सालेह़ीन ने अपने किसी शैख़ की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : मुझे कोई वसिय्यत कीजिये, तो शैख़ ने फ़रमाया : मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वोह वसिय्यत करता हूं जो उस ने तमाम अव्वलीनो आख़िरीन को की है, चुनान्चे इरशाद फ़रमाया :

وَلَقَدْ وَصَّیْنَا الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِیَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ (پ۵،النساء:۱۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि अल्लाह से डरते रहो।*

मैं कहता हूं बन्दे की बेहतरी और भलाई का इ़ल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा और किसे हो सकता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे का सब से बढ़ कर भलाई चाहने और रह़्म करने वाला मेहरबान है तो जहां में बन्दे के लिये **तक़्वा** के इ़लावा अगर कोई और शै मुफ़ीद होती, उस में ज़ियादा भलाई होती, उस का ज़ियादा सवाब होता

www.dawateislami.net

इबादत में उस की ज़ियादा ज़रूरत होती, शान में **तक़्वा** से ऊपर होती और दुन्या व आख़िरत में **तक़्वा** से ज़ियादा वक़्अ़त रखती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तक़्वा** के बजाए अपने बन्दों को इस की वसिय्यत और इस का हुक्म देता, और अपने ख़वास को इसी की ताकीद फ़रमाता, क्यूंकि वोह कामिल हिक्मत और बहुत रह़्म फ़रमाने वाला है। तो जब रब तआ़ला ने **तक़्वा** की ताकीद फ़रमाई और तमाम अव्वलीन व आख़िरीन को इसी का हुक्म दिया तो साबित हो गया कि **तक़्वा** ही सब से आ'ला चीज़ है, और इस के सिवा कुछ और मक़्सूद नहीं। इस तक़रीर से तुम पर येह भी वाज़ेह़ हो गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर भलाई, हर राहनुमाई, हर इरशाद, हर तम्बीह व तादीब, हर ता'लीम व तहज़ीब को **तक़्वा** ही से मुतअ़ल्लिक़ किया है और येह उस ने अपनी ह़िकमत व रह़्मत के ऐन मुत़ाबिक़ किया है और तुम्हें येह भी मा'लूम हो गया कि **तक़्वा** ही दीनी व दुन्यवी भलाइयों का जामेअ़ और बन्दगी व इबादत को दरजाते क़बूलिय्यत पर पहुंचाने का ज़ामिन है, एक शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

اَلا اِنَّمَا التَّقْوٰی هِیَ الْعِزُّ وَ الْکَرَمُ   وَ حُبُّکَ لِدُّنْیَا هُوَ الذُّلُّ وَ الْعَدَمُ

وَ لَیْسَ عَلٰی عَبْدٍ تَقِیٍّ نَقِیْصَةٌ   اِذَا صَحَّحَ التَّقْوٰی وَاِنْ حَاکَ اَوْ حَجَم

(1) सुन लो कि **तक़्वा** ही इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी है, दुन्या की मह़ब्बत तो ज़िल्लत व रुस्वाई है।

(2) जब कोई शख़्स अपने अन्दर वस्फ़े **तक़्वा** पैदा कर ले तो वोह अगर जूलाहे (कपड़ा बुनने वाला) का पेशा या ह़जाम (नाई) का पेशा इख़्तियार कर ले तो इस में कोई ऐब नहीं।

येह आख़िरी नुक्ता वोह बात है कि इस से आ'ला कोई बात नहीं और नूर व हिदायत वाले के लिये येह काफ़ी है चाहिये कि इस पर अ़मल करे और दूसरी चीज़ों से बे नियाज़ हो जाए। واللّٰہ تعالٰی ولی الھدایة والتوفیق بفضله

www.dawateislami.net

सुवाल : आप की बयान कर्दा इस तफ़्सील से मा'लूम होता है कि **तक़्वा** का मक़ाम बहुत बुलन्दो बाला है और दुन्या व आख़िरत में इस की शदीद ज़रूरत है, चुनान्चे इस की पहचान करना बेह़द ज़रूरी है, लिहाज़ा हमें तफ़्सील के साथ इस की ह़क़ीक़त बताई जाए।

जवाब : बात यूं ही है कि **तक़्वा** एक निहायत ही अ़ज़ीम शै है, इस की तह़सील ज़रूरी है और इस की मा'रिफ़त ह़ासिल किये बिग़ैर चारा नहीं लेकिन तुम्हें मा'लूम है कि जिस क़दर कोई शै आ'ला व मुफ़ीद होती है उसी क़दर उस का ह़ुसूल दुश्वार होता है और उस का ह़ुसूल इतनी ही ज़ियादा मह़नत व मशक़्क़त और बुलन्द हिम्मती चाहता है लिहाज़ा जिस त़रह़ येह **तक़्वा** एक नफ़ीस व आ'ला चीज़ है इसी त़रह़ इस के ह़ुसूल के लिये अ़ज़ीम मुजाहदे और शदीद जिद्दो जहद की ज़रूरत है, नीज़ इस के ह़ुक़ूक़ व आदाब का भी लिह़ाज़ रखना अशद्द ज़रूरी है, क्यूंकि दरजात ह़स्बे मुजाहदा अ़त़ा होते हैं और जिस दरजे की कोशिश की जाती है उसी दरजे का समरा और फल मिलता है, क़ुरआने मजीद में फ़रमाया गया है :

وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَاؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ۠ (۶۹)

(پ ۲۱، العنکبوت: ۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है।*

और ख़ुदा तआ़ला रऊफ़ व रह़ीम है, हर मुश्किल को आसान करना उस के दस्ते क़ुदरत में है, अब तुम हमारी बातें तवज्जोह से सुनो और इन को ज़ेहन नशीन करने के लिये बेदार हो जाओ और **तक़्वा** की माहिय्यत व ह़क़ीक़त को पूरे ग़ौर से समझो ताकि इस की ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ होने के बा'द इस को ह़ासिल करने के लिये कमर बस्ता हो सको और इस की ह़क़ीक़त को जान लेने के बा'द इस पर

www.dawateislami.net

अ़मल पैरा होने के लिये रब तआ़ला से मदद त़लब करो क्यूंकि इबादत की शान इसी **तक़्वा** में पिन्हां है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही सब को अपने फ़ज़्लो करम से हिदायत व तौफ़ीक़ देता है।

ऐ अ़ज़ीज़ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे दिन में बरकत और तेरे यक़ीन में इज़ाफ़ा फ़रमाए, **तक़्वा** के जो मा'ना मशाइख़े किराम ने बयान फ़रमाए हैं, पहले वोह जान लो चुनान्चे बा'ज़ मशाइख़ ने **तक़्वा** के येह मा'ना किये हैं : تَنۡزِيۡهُ الۡقَلۡبِ عَنۡ ذَنۡبٍ لَمۡ يَسۡبِقۡ عَنۡکَ مِثۡلُهٗ दिल को उस गुनाह से बचाए रखना कि जैसा गुनाह तुम से पहले सादिर न हुवा हो।

मत़लब येह है कि तुम गुनाहों को तर्क करने का पुख़्ता अ़ज़्म कर लो कि येह अ़ज़्म व इरादा तुम्हारा गुनाहों से मुहा़फ़िज़ व निगेहबान बन जाए। मेरे शैख़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیه ने **तक़्वा** की येही ता'रीफ़ की है, क्यूंकि लफ़्ज़ تَقۡوٰی लुग़ते अ़रब में अस्ल में وَقۡوٰی था और लफ़्ज़ وقوٰی وِقَايَة की त़रह़ मसदर है। कहा जाता है وَقٰی يَقِی وِقَايَةً وَ وَقۡوٰی फिर वाव को ता से तब्दील किया गया जैसे वुकलान से तुकलान बना दिया गया और विक़ाया के मा'ना हैं बचाव व ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़, जब बन्दा गुनाह छोड़ने का पुख़्ता अ़ज़्म कर लेता है और दिल को गुनाह छोड़ने पर मज़बूत़ कर लेता है तो ऐसे अ़ज़्म व इरादे वाले शख़्स को मुत्तक़ी और इस अ़ज़्म व मज़बूती को **तक़्वा** कहते हैं। फिर **तक़्वा** का इत़लाक़ क़ुरआने ह़कीम में तीन अश्या पर हुवा है, एक ख़ौफ़ व हैबते ख़ुदावन्दी जैसे

وَ اِيَّایَ فَاتَّقُوۡنِ ﴿۴۱﴾ (پ ۱، البقرة: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुझी से डरो।*

दूसरी जगह फ़रमाया :

www.dawateislami.net

وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ ۫ (پ۳،البقرۃ:۲۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की त़रफ़ फिरोगे ।

और **तक़्वा** का लफ़्ज़ इत़ाअ़त व इ़बादत के मा'ना में भी इस्ति'माल हुवा है, चुनान्चे रब तआ़ला का इरशादे गिरामी है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ (پ٤،آل عمران:۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है ।

यहां डरने से मुराद इत़ाअ़त व इ़बादत है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येही मा'ना किये हैं चुनान्चे आप ने तर्जमा करते हुए यूं फ़रमाया है : اَطِیْعُوا اللّٰهَ حَقَّ اِطَاعَتِه. फ़रमां बरदारी करो अल्लाह की जैसा उस का ह़क़ है और ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस आयत की यूं तफ़्सीर फ़रमाई है :

هُوَ اَنْ یُّطَاعَ فَلَا یُعْصٰی، وَاَنْ یُّذْکَرَ فَلَا یُنْسٰی وَاَنْ یُّشْکَرَ فَلَا یُکْفَرَ

(تفسیر البحرالمحیط ،سورۃ آل عمران،تحت الآیۃ:۱۰۲،ج۳،ص۱۹ بتغیر)

या'नी रब तआ़ला की ऐसी इत़ाअ़त करना कि फिर ना फ़रमानी न हो और उस का ज़िक्र इस त़रह़ हो कि फिर फ़रामोशी न हो और उस की इस त़रह़ शुक्र गुज़ारी की जाए कि फिर हरगिज़ ना शुक्री का सुदूर न हो ।

और लफ़्ज़ **तक़्वा** क़ुरआने ह़कीम में तीसरे इस मा'ना में इस्ति'माल हुवा है, تَنْزِیْهُ الْقَلْبِ عَنِ الذُّنُوْبِ. दिल को गुनाहों से दूर रखना ।

और **तक़्वा** के ह़क़ीक़ी मा'ना येही तीसरे मा'ना हैं, पहले दोनों मा'ना मजाज़ी हैं, क्या तुम ने क़ुरआने मजीद में येह आयते करीमा नहीं पढ़ी !

www.dawateislami.net

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝۵۲

(پ۱۸،النور:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो हुक्म माने* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल का और* ***अल्लाह*** *से डरे और परहेज़गारी करे तो येही लोग काम्याब हैं।*

इस आयए करीमा में पहले इत़ाअ़त और ख़ौफ़ का ज़िक्र फ़रमाया फिर **तक़्वा** का, तो मा'लूम हुवा कि **तक़्वा** इत़ाअ़त व ख़शिय्यत के सिवा किसी तीसरी शै का नाम है, और येह तीसरी शै "تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ عَنِ الذُّنُوْبِ" है।

फिर उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि **तक़्वा** के तीन मरातिब हैं :

(1) शिर्क से **तक़्वा** (बचना) (2) बिदअ़त से **तक़्वा** (बचना) (3) गुनाहों से **तक़्वा** (बचना) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह तीनों मर्तबे इस एक आयत में ज़िक्र फ़रमा दिये हैं, वोह आयए मुबारका येह है :

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۹۳

(پ۷،المائدۃ:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो ईमान लाए और नेक काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है जो कुछ उन्हों ने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और* ***अल्लाह*** *नेकों को दोस्त रखता है।*

इस आयत में पहले **तक़्वा** से **शिर्क से परहेज़** और ईमान से तौह़ीद मुराद है। दूसरे से बिदअ़त से परहेज़ और उस के मुक़ाबिल ईमान से अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाइद व नज़रिय्यात का इक़रार व ए'तिराफ़ मुराद है और तीसरे **तक़्वा** से सग़ीरा गुनाहों से

www.dawateislami.net

परहेज़ और उस के मुक़ाबिल एह़सान से इत़ाअ़त व इस्तिक़ामत मुराद है, तो इस वज़ाह़त से ज़ाहिर हुवा कि इस आयत में **तक़्वा** के तीनों मर्तबे बयान कर दिये गए हैं, या'नी मर्तबए ईमान, मर्तबए सुन्नत और इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी पर इस्तिक़ामत का मर्तबा। येह है वोह तफ़्सील जो हमारे उ़लमाए किराम ने **तक़्वा** के मा'ना बयान करते हुए इरशाद फ़रमाई है।

(इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं कि मैं ने **तक़्वा** का एक और मा'ना भी पाया है और येह मा'ना हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से एक मश्हूर ह़दीस में मरवी है, ह़दीस के अल्फ़ाज़ येह हैं : اِنَّمَا سُمِّيَ الْمُتَّقُوْنَ مُتَّقِيْنَ، لِتَرْكِهِمْ مَالَا بَأْسَ بِهٖ حَذَرًا عَمَّا بِهٖ بَأْسٌ. या'नी मुत्तक़िय्यों को मुत्तक़ी इस लिये कहा गया कि उन्हों ने इस काम को भी तर्क कर दिया जिस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं, येह एह़तियात़ करते हुए कि इस के ज़रीए़ ऐसे काम में न पड़ जाएं जिस में ह़रज और गुनाह हो।

मैं मुनासिब ख़याल करता हूं कि उ़लमाए किराम के बयान कर्दा मा'ना और इस ह़दीस में **तक़्वा** के वारिद शुदा मा'नों को जम्अ़ कर दूं ताकि **तक़्वा** के मुकम्मल और पूरे मा'ना बयान हो जाएं। तो **तक़्वा** के जामेअ़ तरीन मा'ना येह हुए कि हर उस शै और काम से इजतिनाब करना जिस से दीन को नुक़्सान पहुंचने का ख़ौफ़ हो। तुम्हें मा'लूम नहीं कि बुख़ार में मुब्तला शख़्स को जब वोह हर उस चीज़ से परहेज़ करे जो उस की सिह़्ह़त के लिये मुज़िर हो, जैसे खाना, पीना और फल वग़ैरा, तो उसे ह़क़ीक़ी परहेज़ करने वाला कहते हैं। इसी त़रह़ जो शख़्स हर ख़िलाफ़े शरअ़ अम्र से इजतिनाब करे तो ऐसा ही शख़्स दर ह़क़ीक़त मुत्तक़ी कहलाने का ह़क़दार है। फिर वोह चीज़ें जिन से दीन को नुक़्सान पहुंचने का ख़ौफ़ है दो त़रह़ की हैं।

www.dawateislami.net

(1) ह़राम व मा'सिय्यत (2) ह़लाल मगर ज़रूरत से ज़ाइद, क्यूंकि ज़रूरत से ज़ाइद ह़लाल अश्या में मश्ग़ूलिय्यत और इनहिमाक भी रफ़्ता रफ़्ता गुनाह व ह़राम में मुब्तला होने का बाइ़स बन जाता है। और वोह इस त़रह़ कि ज़ाइद अज़ ज़रूरत ह़लाल अश्या के इस्ति'माल से और उन की आ़दत डालने से नफ़्स की ह़िर्स, उस की सरकशी और शहवात ज़ोर पकड़ जाती हैं और बन्दा गुनाह में मुब्तला हो जाता है। तो जो शख़्स अपने दीन को मुकम्मल त़ौर पर मह़फ़ूज़ करना चाहता हो, उस के लिये ज़रूरी है कि ह़राम और फ़ुज़ूल ह़लाल से इजतिनाब करे, ताकि ह़लाल की ज़ियादती से ह़राम तक न पहुंच जाए। इसी अम्र को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस इरशादे मुबारक में बयान फ़रमाया है : لِتَرْكِهِمْ مَالَا بَأْسَ بِهٖ حَذَرًا عَمَّا بِهٖ بَأْسٌ. या'नी फ़ुज़ूल ह़लाल से भी परहेज़ करते हैं ताकि ह़राम में न पड़ जाएं, तो **तक़्वा** की जामेअ़ तरीन ता'रीफ़ येह हुई कि दीन में हर नुक़्सान देह चीज़ से इजतिनाब व परहेज़ करना। येह है **तक़्वा** की ह़क़ीक़त व माहिय्यत का मुफ़स्सल बयान, وَالْحَمْدُ لِلّٰه

और इ़ल्मे सिर्र के ए'तिबार से **तक़्वा** की ह़क़ीक़त येह है कि हर उस बुराई से दिल को दूर रखना जिस की मिस्ल बन्दे ने पहले बुराई न की हो ताकि गुनाहों से दूर रहने का अ़ज़्म उन से ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़ बन जाए। फिर शर दो क़िस्म है।

एक, शर्रे अस्ली : और वोह येह है जिस से शरअ़ ने सराह़तन रोका हो, जैसे गुनाह और मआ़सी।

दूसरा, शर्रे ग़ैरे अस्ली : इस से वोह शर मुराद है जिस से शरअ़ ने तादीबन रोका हो और वोह फ़ुज़ूल और ज़ाइद अज़ ज़रूरत ह़लाल है। जैसे आ़म मुबाह़ चीज़ें, जिन से शहवत को तक़्विय्यत मिलती है।

www.dawateislami.net

शर्रे अस्ली से बचना फ़र्ज़ है और न बचने की सूरत में मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब होगा।

शर्रे ग़ैरे अस्ली से इजतिनाब बेहतर व मुस्तह़ब है और इजतिनाब न करने पर रोज़े क़ियामत ह़श्र में ह़िसाब के लिये रोका जाएगा और उस से हर शै का ह़िसाब लिया जाएगा और दुन्या में बिला ज़रूरत उमूर के इर्तिकाब पर उसे आ़र व नदामत दिलाई जाएगी। शर्रे अस्ली से बचने वाले का **तक़्वा** कम दरजे का है और येह इत़ाअ़त पर इस्तिक़ामत का दरजा है। और शर्रे ग़ैरे अस्ली से बचने वालों का दरजा बुलन्द है और येह तर्के मुबाह़ ज़ाइद अज़ ज़रूरत का दरजा है, और जो शख़्स दोनों क़िस्म का **तक़्वा** अपने अन्दर पैदा कर ले वोह कामिल मुत्तक़ी है और येही वोह शख़्स है जिस ने **तक़्वा** के पूरे हुक़ूक़ मल्ह़ूज़ रखे, ऐसा शख़्स ही **तक़्वा** के पूरे फ़वाइद ह़ासिल करता है और इसी का नाम कामिल वरअ़ है जिस पर दीन के कमाल का दारो मदार है। दरबारे इलाही में ह़ाज़िरी के लिये जिन आदाब की ज़रूरत है वोह इसी **तक़्वा** से ह़ासिल होते हैं **तक़्वा** के इन मा'नों को ख़ूब समझो और फिर इन पर अ़मल करो।

सुवाल : येह बयान फ़रमाइये कि इस **तक़्वा** के ह़ुसूल का क्या त़रीक़ा और क्या ज़रीआ़ है और हम अपने नफ़्स को इस का कैसे आ़मिल बना सकते हैं ताकि येह इल्म हो जाए कि नफ़्स को इस **तक़्वा** का आ़दी कैसे बनाया जाए ?

जवाब : इस की सूरत येह है कि नफ़्स को पूरे अ़ज़्म व इस्तिक़ामत से हर मा'सिय्यत से रोका जाए और हर त़रह़ के फ़ुज़ूल ह़लाल से दूर रखा जाए। ऐसा करने से बदन के ज़ाहिरी व बात़िनी आ'ज़ा सिफ़ते **तक़्वा** से मौसूफ़ हो जाएंगे आंख, कान, ज़बान, दिल, पेट, शर्मगाह और बाक़ी जुम्ला आ'ज़ा और अज्ज़ाए बदन में **तक़्वा** पैदा हो जाएगा और नफ़्स **तक़्वा** की सिफ़त से मुत्तसिफ़ हो जाएगा।

www.dawateislami.net

कान की हिफ़ाज़त का बयान

कान को भी बुरी और फ़ुज़ूल बातों के सुनने से मह़फ़ूज़ रखना ज़रूरी है और इस का ज़रूरी होना दो वजह से है। एक तो इस लिये कि रिवायत में आया है कि सुनने वाला भी कलाम करने वाले के साथ शरीक होता है। (الزهد لابن مبارك، باب من طلب العلم...الخ، الرقم:٤٨، ص١٦)

किसी शाइ़र ने इसी बात को इन दर्जे ज़ैल अश्आ़र में बयान किया है :

تَحَرَّ مِنَ الطُّرُقِ اَوْسَاطَهَا   وَعَدِّ عَنِ الْجَانِبِ الْمُشْتَبِهِ

وَسَمْعَكَ صُنْ عَنْ سَمَاعِ الْقَبِيْحِ   كَصَوْنِ اللِّسَانِ عَنِ النُّطْقِ بِهِ

فَاِنَّكَ عِنْدَ اِسْتِمَاعِ الْقَبِيْحِ   شَرِيْكٌ لِقَائِلِهِ فَانْتَبِهِ

इफ़रात़ व तफ़रीत़ से बच कर दरमियानी राह इख़्तियार करो
और शुब्हात से दूर रहो।
अपने कानों को बुरी बातें सुनने से रोके रखो जिस त़रह़
ज़बान को बुरी गुफ़्त्गू से रोकते हो।
क्यूंकि अगर तुम ख़िलाफ़े शरअ़ बातें सुनोगे तो याद रखो
कि तुम भी कहने वाले के साथ शरीक समझे जाओगे।

बुरी बातें सुनने से परहेज़ की दूसरी वजह येह है कि अगर तुम उन्हें सुनोगे तो दिल में वस्वसे और ख़यालात पैदा होंगे इस त़रह़ तुम ख़यालात में मुस्तग़्रक़ हो जाओगे और इस सूरत में लाज़िमन इ़बादत में ग़ैर मा'मूली रुकावट पैदा होगी।

फिर ऐ अ़ज़ीज़ ! तू जान कि जो गुफ़्त्गू इन्सान के दिल और ज़बान तक पहुंचती है उस की ख़ासिय्यत ऐसी है जैसे पेट में त़आ़म और सब जानते हैं कि बा'ज़ खाने नुक़्सान देह और बा'ज़ नफ़्अ़ देने वाले होते हैं, बा'ज़ खाने जिस्म की ग़िज़ा बनते हैं और बा'ज़ ज़हर

www.dawateislami.net

की मानिन्द बुरा असर करते हैं, ठीक इसी त़रह़ अच्छी और पाकीज़ा गुफ़्त्गू से ईमान ताज़ा होता है और बुरी गुफ़्त्गू से दिल मुर्दा हो जाता है, बल्कि त़आ़म की निस्बत कलाम का असर ज़ियादा होता है और ज़ियादा देर बाक़ी रहता है, इस लिये कि नुक़्सान देह त़आ़म मे'दे से नींद वग़ैरा के ज़रीए़ ज़ाइल हो जाता है और बसा अवक़ात इस का असर कुछ वक़्त बाक़ी रहने के बा'द ख़त्म हो जाता है, अगर असर ज़ाइल न भी हो तो दवा के ज़रीए़ ज़ाइल किया जा सकता है। लेकिन बा'ज़ बातें बसा अवक़ात इन्सान के दिल में इस त़रह़ बैठ जाती हैं कि भूलती ही नहीं, अगर वोह ख़राब और नारवा हों तो उन बातों की बुराई भी दिल में जमी रहती है जिन की वजह से दिल वस्वसों की आमाज गाह बना रहता है, ह़ालांकि इन ख़यालात से दिल को पाक रखना ज़रूरी होता है, ऐसे वसाविस से दिल को मह़फ़ूज़ रखने के लिये ह़क़ तआ़ला की मदद त़लब करनी चाहिये, क्यूंकि बसा अवक़ात येह वस्वसे किसी बला और आफ़त में मुब्तला कर देते हैं और इन्सान के एह़सासात को ख़्वाह म ख़्वाह ह़रकत देते रहते हैं, यहां तक कि बन्दा इन के सबब किसी बड़ी आफ़त में मुब्तला हो जाता है। लेकिन अगर इन्सान अपने कानों को फ़ुज़ूल व लाया'नी बातों के सुनने से मह़फ़ूज़ रखे तो बहुत सी आफ़ात से आराम में रहता है अ़क़्लमन्द को चाहिये कि इस में ग़ौर करे। وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيق

शुमातत की ता'रीफ़

दूसरों की तकलीफ़ों और मुसीबतों पर ख़ुशी का इज़्हार करने को शुमातत कहते हैं।

(الحديقة الندية شرح الطريقه المحمديه ج١ ص٦٣١)

www.dawateislami.net

फ़स्ल

तुम पर इन चार आ'ज़ा की हिफ़ाज़त करना लाज़िम व ज़रूरी है क्यूंकि जिस्म में येही चार उ़ज़्व बड़े और अस्ल हैं।

आंख की हिफ़ाज़त

अव्वल : आंख, इस की निगेहदाश्त इस लिये ज़रूरी और लाज़िमी है कि दीन व दुन्या के कामों का दारो मदार दिल पर है और दिल की ख़राबी और इस में वस्वसे वग़ैरा अकसर व बेशतर आंख की वजह से पैदा होते हैं, इसी लिये ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया है कि जो शख़्स अपनी आंख की हिफ़ाज़त नहीं करता उस का दिल बे क़द्रो क़ीमत होता है, या'नी उस में कोई कमाल या नूर वग़ैरा नहीं आ सकता।

ज़बान की हिफ़ाज़त

दूसरा उ़ज़्व : ज़बान, इस की हिफ़ाज़त और निगेहदाश्त इस लिये ज़रूरी और अहम है कि तुम्हारी इ़बादत व इत़ाअ़त का नफ़्अ़, फल और सिला इसी की निगेहदाश्त से वाबस्ता है, नीज़ इ़बादत में वस्वसे और इ़बादत का ख़राब होना भी अकसर इसी ज़बान के बाइ़स होता है क्यूंकि बनावट और सजा कर गुफ़्त्गू और ग़ीबत वग़ैरा अगर्चे एक लफ़्ज़ ही हो, तुम्हारी साल भर की बल्कि पन्दरह साल की इ़बादत व रियाज़त को तबाह और बरबाद कर देती है, इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि : مَاشَیْءٌ اَحَقَّ بِطُولِ السِّجْنِ مِنَ اللِّسَانِ (شعب الایمان،الباب الرابع والثلاثون فی حفظ اللسان،الرقم:۵۰۰۳،ج۳،ص۲۵۹) सब से ज़ियादा जिस चीज़ को क़ैद व बन्द में रखना ज़रूरी है वोह **ज़बान** है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से रिवायत है कि सात आ़बिदों में से एक आ़बिद ने ह़ज़रते यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

की बारगाह में अ़र्ज़ किया : "ऐ यूनुस ! (عَلَيْهِ السَّلَام) जो लोग पूरी मेह्नत और कोशिश से इबादत में मश्ग़ूल रहते हैं उन को इबादत पर जो इस्तिक़ामत नसीब होती है वोह ज़बान की पूरी त़रह़ निगेहदाश्त का नतीजा है" फिर उस आ़बिद ने कहा : "ज़बान की ह़िफ़ाज़त से ज़ियादा पसन्दीदा कोई चीज़ नहीं क्यूंकि दिल को हर क़िस्म के वस्वसों से पाक रखने का ज़रीआ़ येही है।"

फिर तू ज़रा ज़िन्दगी के वोह क़ीमती लम्ह़ात तो याद कर जो तू ने बेहूदा और फ़ुज़ूल गुफ़्त्गू में ज़ाएअ़ किये हैं अगर तू उन क़ीमती लम्ह़ात में **तौबा** व इस्तिग़फ़ार करता तो शायद किसी मुबारक साअ़त में तेरी **तौबा** क़बूल हो जाती और तेरे गुनाह बख़्श दिये जाते और तुझे नफ़्अ़ होता या इन लम्ह़ात में لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه का विर्द करता रहता तो तुझे बे ह़िसाब अज्र व सवाब मिलता, या इन लम्ह़ात में येह दुआ़ करता ! اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَافِيَةَ मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत व सलामती का सुवाल करता हूं, शायद किसी मुबारक साअ़त में येह अल्फ़ाज़ तेरे मुंह से निकलते और तेरी दुआ़ क़बूल हो जाती। इस त़रह़ तू दुन्या व आख़िरत की आफ़ात से नजात पा जाता। तो क्या फ़ुज़ूल और बेहूदा कलाम में लम्ह़ाते ज़िन्दगी को ज़ाएअ़ करना वाज़ेह़ और बय्यिन ख़सारा नहीं ! इन अवक़ात में अगर ज़बान को अवराद व वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल रखता तो बड़े बड़े फ़ाइदे ह़ासिल होते। तू ख़ुद को फ़ुज़ूल कामों में न लगाता कि रोज़े क़ियामत तुझे मलामत न हो और मैदाने मह़शर में ह़िसाब के लिये ज़ियादा देर न रुकना पड़े, इस मज़्मून को एक शाइ़र ने अच्छे पेराए में अदा किया है,

وَ اِذَا مَا هَمَمْتَ بِالنُّطْقِ فِي الْبَاطِلِ   فَاجْعَلْ   مَكَانَهُ   تَسْبِيْحًا

जब तू ज़बान से कोई बात़िल बात कहने का क़स्द करे तो इस से ज़बान को रोक और इस की जगह ख़ुदा की तस्बीह़ कर।

www.dawateislami.net

पेट की हि़फ़ाज़त

तीसरा उ़ज़्व : जिस की हि़फ़ाज़त और निगेहदाश्त ज़रूरी है वोह **पेट** है, इस की निगेहदाश्त इस लिये ज़रूरी है कि बन्दा दुन्या में इ़बादत के लिये आया है और गिज़ा अ़मल के लिये बीज और पानी की त़रह़ है। जैसा बीज और जिस तनासुब से उसे पानी दिया जाएगा वैसा ही दरख़्त निकलेगा और जब बीज ख़राब हो तो उस से खेती अच्छी नहीं होगी। बल्कि ऐसे बीज से येह ख़त़रा है कि शायद वोह तेरी ज़मीन ही हमेशा के लिये ख़राब कर दे और आयन्दा ज़राअ़त के क़ाबिल न रहे। इसी लिये ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया है :

जब तू रोज़ा रखे तो इस बात का ख़याल रख कि किस चीज़ से इफ़्त़ार करता है और किस के पास इफ़्त़ार करता है और किस के खाने से इफ़्त़ार करता है। क्यूंकि बहुत दफ़्अ़ ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मे से दिल की कैफ़िय्यत ख़राब हो जाती है और फिर सारी उ़म्र वोह अपनी पहली ह़ालत पर नहीं आ सकता और बहुत दफ़्अ़ ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मा पेट में जाने से एक साल तक नमाज़े तहज्जुद अदा करने से इन्सान मह़रूम हो जाता है, और बहुत दफ़्अ़ ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक दफ़्अ़ बद निगाही करने से बन्दा एक अ़र्से तक तिलावते क़ुरआने पाक से मह़रूम हो जाता है।

(قوت القلوب،الفصل الثامن والاربعون فیه کتاب تفصیل الحلال والحرام...الخ،ج۲، ص ۴۷۲ باختصار)

इस लिये ऐ अ़ज़ीज़ ! अगर तू इस्लाहे़ क़ल्ब और तौफ़ीक़े इ़बादत चाहता है तो तुझ पर लाज़िम है कि अपनी गिज़ा के बारे में सख़्त एह़तियात़ करे, येह अस्ल गिज़ा के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म है फिर इस में दरजए इस्तिह़बाब पर निगाह रखना भी ज़रूरी है वरना तू गिज़ा उठाने वाला टट्टू (ख़च्चर) बन जाएगा और तुम्हारा शुमार वक़्त ज़ाएअ़ करने

www.dawateislami.net

वालों में होगा क्यूंकि हमें यक़ीन है बल्कि हम ने कई बार मुशाहदा किया है कि पेट भर कर खाने से इ़बादत क़ुतअ़न नहीं हो सकती और अगर नफ़्स को मजबूर कर के और ह़ीले बहाने से इ़बादत की त़रफ़ लगाया भी जाए तो ऐसी इ़बादत में बिल्कुल लज़्ज़त व ह़लावत नहीं होती इसी लिये बा'ज़ सालिह़ीन ने फ़रमाया है : لَا تَطْمَعْ بِحَلَاوَةِ الْعِبَادَةِ مَعَ كَثْرَةِ الْاَكْلِ (فیض القدیر للمناوی، حرف الهمزة، ج۱، ص۳۷۷) अगर तू पेट भर के खाने का आ़दी है तो ह़लावते इ़बादत की उम्मीद न रख, और दिल में बिग़ैर इ़बादत नूर कैसे आ सकता है, या उस इ़बादत से भी कैसे नूर आ सकता है जो बे लज़्ज़त और बे ज़ौक़ है। इसी लिये ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया है कि मैं कोहे लुबनान में बहुत से अहलुल्लाह की सोह़बत में रहा हूं, उन में से हर एक मुझे येही वसिय्यत किया करता था कि ऐ इब्राहीम ! जब तू अहले दुन्या के पास जाए तो उन को इन चार बातों की नसीह़त करना।

(1) जो पेट भर कर खाएगा उसे इ़बादत में लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।
(2) जो ज़ियादा सोएगा उस की उ़म्र में बरकत नहीं होगी।
(3) जो लोगों की ख़ुश्नूदी चाहे वोह **अल्लाह** की ख़ुश्नूदी से ना उम्मीद हो जाए।
(4) जो ग़ीबत और फ़ुज़ूलगोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।

ह़ज़रते सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया है कि तमाम नेकियां इन्हीं चार बातों में बन्द हैं।
(1) पेट को ख़ाली रखना (2) ख़ामोशी (3) मख़्लूक़ से कनारा कशी और (4) शब बेदारी (قوت القلوب،الفصل السابع والعشرون فيه كتاب اساس المريدين...الخ،ج۱،ص۱۷۰باختصار)

बा'ज़ सालिह़ीन ने फ़रमाया है : اَلْجُوْعُ رَأْسُ مَالِنَا भूक हमारा सरमाया है। इस क़ौल के मा'ना येह हैं कि हमें जो फ़राग़त, सलामती,

www.dawateislami.net

इ़बादत, ह़लावत, इ़ल्म और अ़मले नाफ़ेअ़ वग़ैरा नसीब होता है वोह सब भूक के सबब और सब्र की ब-रकत से होता है।

दिल की ह़िफ़ाज़त

चौथा उ़ज़्व : जिस की ह़िफ़ाज़त और निगेहदाश्त अज़ ह़द ज़रूरी है वोह दिल है, क्यूंकि येह तमाम जिस्म की अस्ल है चुनान्चे अगर तेरा दिल ख़राब हो तो तेरे तमाम आ'ज़ा ख़राब होंगे और अगर तू इस की इस्लाह़ कर ले तो बाक़ी सब आ'ज़ा की इस्लाह़ हो जाएगी, क्यूंकि दिल दरख़्त के तने की मानिन्द है और बाक़ी आ'ज़ा शाख़ों की त़रह़ और शाख़ों की इस्लाह़ या ख़राबी दरख़्त के तने पर मौक़ूफ़ है, इसी त़रह़ अगर तेरी आंख, ज़बान, पेट वग़ैरा दुरुस्त हों तो इस का मत़लब येह है कि तेरा दिल दुरुस्त और इस्लाह़ याफ़्ता है और अगर आंख, ज़बान, शिकम वग़ैरा गुनाहों की त़रफ़ राग़िब हों तो समझ ले कि तेरा दिल ख़राब है।

फिर तुझे यक़ीन करना चाहिये कि दिल का फ़साद ज़ियादा और संगीन है, इस लिये इस्लाहे़ क़ल्ब की त़रफ़ पूरी तवज्जोह दे ताकि तमाम आ'ज़ा की इस्लाह़ हो जाए और ताकि तू रूह़ानी राह़त मह़सूस करे।

फिर क़ल्ब की इस्लाह़ निहायत मुश्किल और दुश्वार है क्यूंकि इस की ख़राबी ख़त़रात व वसाविस पर मब्नी है, जिन का पैदा होना बन्दे के इख़्तियार में नहीं, इस लिये इस की इस्लाह़ में पूरी होशियारी बेदारी और बहुत ज़ियादा जिद्दो जह्द की ज़रूरत है, इन्हीं वुजूहात की बिना पर अस्ह़ाबे मुजाहदा रियाज़त इस्लाहे़ क़ल्ब को ज़ियादा दुश्वार ख़याल करते हैं और अरबाबे बसीरत इस की इस्लाह़ का ज़ियादा एहतिमाम करते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते बायज़ीद बुस्त़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि आप ने फ़रमाया : عَالَجْتُ قَلْبِی عَشْرًا وَلِسَانِی عَشْرًا وَنَفْسِی عَشْرًا فَکَانَ قَلْبِی اَصْعَبَ الثَّلَاثَۃِ. मैं ने अपने दिल,

www.dawateislami.net

ज़बान और नफ़्स की इस्लाह़ पर दस दस बरस सर्फ़ किये, इन में दिल की इस्लाह़ सब से ज़ियादा दुश्वार मा'लूम हुई।

फिर इस्लाहे़ क़ल्ब के सिलसिले में चार उमूर जो हम पीछे ज़िक्र कर आए हैं या'नी लम्बी उम्मीदें, आ'माल में जल्द बाज़ी, ह़सद और तकब्बुर से बचना और एह़तिराज़ करना लाज़िम है। इस मक़ाम पर इन चार उमूर से इजतिनाब करने की तख़्सीस हम ने इस लिये की है कि अगर्चे अ़ाम लोग भी इन उमूर में मुब्तला हैं, मगर इबादत गुज़ार लोग ख़ास तौर पर इन में मुब्तला हैं, इस लिये येह चार उमूर ज़ियादा क़बीह़ और बुरे हैं, ऐसा अ़ाम होता है कि इबादत करने वाला किसी लम्बी उम्मीद में मुब्तला रहता है, और वोह उसे एक अच्छी निय्यत ख़याल कर रहा होता है और आख़िरुल अम्र वोह इस के बाइ़स अ़मल में सुस्ती और काहिली में गिरिफ़्तार हो जाता है और कभी ऐसा होता है कि वोह बुलन्द रुत्बा ह़ासिल करने में जल्दबाज़ी से काम लेता है जिस की बिना पर वोह उसे ह़ासिल नहीं कर पाता, इसी त़रह़ बा'ज़ दफ़्अ़ किसी बुज़ुर्ग से दुआ़ कराता है मगर जल्दी मचाने की वजह से मह़रूम कर दिया जाता है या बा'ज़ दफ़्अ़ किसी के ह़क़ में बद दुआ़ करता है और बा'द में पशेमान होता है और बा'ज़ दफ़्अ़ अपने हम उ़म्रों से माल व अवलाद वग़ैरा पर ह़सद करता है और बा'ज़ अवक़ात आफ़ते ह़सद में गिरिफ़्तार हो कर ऐसे ऐसे क़बीह़ और बुरे अफ़्आ़ल कर गुज़रता है जिन के करने की एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर आदमी को भी जुर्अत नहीं होती, इसी बिना पर ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है : मुझे अपनी जान के मुतअ़ल्लिक़ सब से ज़ियादा ख़त़रा उ़लमा और इबादत गुज़ार लोगों से है।

लोगों ने आप की इस बात का बुरा मनाया तो आप ने जवाब दिया, येह बात मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं कही बल्कि येह ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है। (فیض القدیر للمناوی، حرف الهمزة، ج۲، ص۱۰۳)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अ़त़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه से मरवी है कि एक दफ़्अ़ ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने मुझ से फ़रमाया : इबादत गुज़ार लोगों से ख़त़रे में रहो और इन की त़रह़ मुझ से भी ख़त़रे में रहो क्यूंकि बसा अवक़ात मैं एक अनार के मुतअ़ल्लिक़ कहूंगा येह मीठा है दूसरा कहेगा नहीं येह तुर्श है, इसी मा'मूली बात से हमारा तकरार बढ़ जाएगा और कोई बईद नहीं कि एक दूसरे के क़त्ल तक नोबत पहुंच जाए।

(فیض القدیر للمناوی، حرف الھمزۃ، ج۲، ص۱۰۳)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं इबादत गुज़ार लोगों की गवाही दूसरों के ह़क़ में तो क़बूल करने को तय्यार हूं, लेकिन इन के अपने अन्दर एक दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ इन की शहादत क़बूल करने को तय्यार नहीं हूं क्यूंकि मैं ने इन्हें एक दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ ह़सद से भरा हुवा पाया है।

(المجالسۃ و جواھر العلم،الجزء الحادی و العشرون،الرقم:۲۹۶۸،ج۳،ص۹۵)

मज़्कूर है कि ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने अपने लड़के को फ़रमाया कि मुझे इबादत गुज़ार और रस्मी सूफ़ियों से दूर कोई मकान ख़रीद दे क्यूंकि मुझे इस क़ौम में रहने से क्या फ़ाइदा जो मेरी लग़्ज़िश देख कर इस का चर्चा करें और मुझे आराम व आसाइश में देख कर ह़सद करें। (فیض القدیر للمناوی، حرف الھمزۃ، ج۲، ص۱۰۳)

तुम ने ख़ुद भी देखा होगा कि ख़ुश्क आ़बिद और रस्मी सूफ़ी तकब्बुर से पेश आते हैं, दूसरों को ह़क़ीर ख़याल करते हैं, तकब्बुर की वजह से अपने रुख़्सार को टेढ़ा रखते हैं और लोगों से मुंह बिसूरे रखते हैं, गोया कि दो रक्अ़त नमाज़ ज़ियादा पढ़ कर लोगों पर एह़सान करते हैं या शायद उन्हें दोज़ख़ से नजात और जन्नत के दाख़िले का सर्टीफ़िकेट मिल चुका है या उन को यक़ीन हो चुका है कि सिर्फ़ हम ही नेक बख़्त हैं बाक़ी सब लोग बदबख़्त और शक़ी हैं,

www.dawateislami.net

फिर वोह इन तमाम बुराइयों के होते हुए लिबासे आ़जिज़ और मुतवाज़ेअ़ लोगों जैसा पहनते हैं जैसे सोफ़ वग़ैरा और बनावट से ख़ामोशी और कमज़ोरी का इज़्हार करते हैं, ह़ालांकि ऐसे लिबास और ख़ामोशी वग़ैरा का तकब्बुर और ग़ुरूर से क्या तअ़ल्लुक़ बल्कि येह चीज़ें तो तकब्बुर और ग़ुरूर के मनाफ़ी हैं, लेकिन इन अन्धों को समझ नहीं।

मज़्कूर है कि एक दफ़अ़ फ़रक़द सन्जी ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास आया वोह उस वक़्त एक दरवेशाना गोदड़ी पहने हुए था और ह़ज़रत नया जोड़ा पहने हुए थे वोह बार बार ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के कपड़ों को देखता था और हाथ लगाता था। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : तू बार बार मेरे लिबास को क्या देखता है सुन ले मेरा लिबास अहले जन्नत का लिबास है और तेरा लिबास दोज़ख़ियों का लिबास है। मुझ तक येह बात पहुंची है कि अकसर अहले दोज़ख़ गोदड़ी पहने होंगे, फिर फ़रमाया उन लोगों ने कपड़ों में तो ज़ोहद इख़्तियार किया है मगर सीनों में तकब्बुर और ग़ुरूर को जगह दे रखी है, क़सम ख़ुदा की ख़ुशपोश मगर साफ़ दिल लोग रस्मी गोदड़ी पहनने वालों से हज़ार दरजे बेहतर हैं।

(فیض القدیر للمناوی، حرف الهمزة، ج۲، ص۱۰۳)

ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के मुनदरिजए ज़ैल अश्आ़र भी इसी मज़्मून की त़रफ़ इशारा करते हैं :

تَصَوَّفَ فَازْدَهٰى بِالصُّوفِ جَهْلًا ‏ وَ بَعْضُ النَّاسِ يَلْبَسُهُ مَجَانَه

يُرِيكَ مَهَانَةً وَيُرِيكَ كِبْرًا ‏ وَلَيْسَ الْكِبَرُ مِنْ شَكْلِ الْمَهَانَه

تَصَوَّفَ كَي يُقَالَ لَهُ اَمِيْنٌ ‏ وَمَا مَعْنٰى تَصَوُّفِهِ الْاَمَانَه

وَلَمْ يُرِدِ الْاِلٰهَ بِهٖ وَلٰكِنْ ‏ اَرَادَ بِهِ الطَّرِيقَ اِلَى الْخِيَانَه

(فیض القدیر للمناوی، حرف الهمزة، ج۲، ص٤٠٦)

www.dawateislami.net

बा'ज़ लोग सूफ़ियों का सा लिबास पहनते हैं और अज़ राहे जहालत दूसरों को नज़रे ह़क़ारत से देखते हैं और बा'ज़ लोग तो फ़ुज़ूल ही सोफ़ का लिबास पहनते हैं।

ऐसे जाहिल सूफ़ी दूसरों के सामने अपने आप को कमज़ोर व नातवां ज़ाहिर करते हैं और दूसरों को तकब्बुर से देखते हैं, ह़ालांकि आ़जिज़ी करने वालों में तकब्बुर नहीं होता।

ऐसे सूफ़ी येह लिबास सिर्फ़ इस ग़रज़ से पहनते हैं ताकि अ़वाम उन्हें अमीन और नेक ख़याल करें मगर दर ह़क़ीक़त उन की इस सूफ़ियाई का मक़सद नेकी और शराफ़त नहीं होता।

दरवेशाना लिबास से उन का मक़्सूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा नहीं बल्कि वोह इस त़रह़ अ़वाम के साथ धोकादेही और ख़ियानत की राह हमवार करते हैं।

तो ऐ अ़ज़ीज़ ! तू इन चार मोहलिकात (हलाक करने वालों) से बच, ख़ास कर तकब्बुर से, इस लिये कि दूसरी तीन आफ़तें तो ऐसी आफ़तें हैं जिन से तू सिर्फ़ गुनाह और ना फ़रमानी में मुब्तला होगा मगर तकब्बुर ऐसा ख़त़रनाक मरज़ है जो बसा अवक़ात इन्सान को कुफ़्र और गुमराही तक पहुंचा देता है। तकब्बुर के सिल्सिले में तू इब्लीस और उस की गुमराही को हरगिज़ न भूल, उस की गुमराही का आग़ाज़ इसी से हुवा कि उस ने तकब्बुर किया और ख़ुदा के हुक्म का इन्कार किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की दरगाहे बे कस पनाह में दुआ़ करनी चाहिये कि हमें अपने फ़ज़्ल से हर गुमराही और लग़्ज़िश से बचाए।

www.dawateislami.net

रजा व ख़ौफ़ का बयान

रजा का शुऊ़र व इल्म ह़ासिल करना दो वजह से ज़रूरी है : एक तो इस लिये कि इ़बादात और नेक कामों का जज़्बा पैदा हो क्यूंकि नेक अ़मल की अन्जामदेही नफ़्स पर गिरां होती है शैत़ान भी नेकी की त़रफ़ रुख़ नहीं करने देता, और नफ़्सानी ख़्वाहिशात बदी की त़रफ़ खींचती हैं और इन्सान अहले ग़फ़लत के ह़ालात का ज़ियादा असर क़बूल करता है। जो नेक कामों को बिल्कुल तर्क कर के सरासर दुन्या की परस्तिश में मस्रूफ़ हैं, और आख़िरत में नेकियों पर जो सवाब अ़ता होगा, वोह इस वक़्त आंखों से पोशीदा है, और इस सवाब को पा लेने का मुआ़मला बई़द है, जब सूरते ह़ाल येह हो तो नेक कामों की त़रफ़ नफ़्स का मुतवज्जेह होना और पूरी त़रह़ राग़िब होना और ह़रकत करना एक मुश्किल अम्र है, तो ऐसी शै का साथ होना ज़रूरी है जो इन रुकावटों का मुक़ाबला कर के इन्हें दूर कर सके बल्कि ऐसी क़वी हो कि नेकियों की रग़बत बढ़ाए और वोह शै रजा है, या'नी रह़मते ख़ुदावन्दी की क़वी उम्मीद, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नेकों के लिये जो बेहतरीन अज्र तय्यार कर रखा है उस की जानिब मज़बूत़ यक़ीन के साथ रग़बत। हमारे पीरो मुर्शिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "اَلْحُزْنُ یَمْنَعُ عَنِ الطَّعَامِ، وَ الْخَوْفُ یَمْنَعُ عَنِ الذُّنُوْبِ، وَ الرَّجَاءُ یُقَوِّیْ عَلَی الطَّاعَاتِ، وَ ذِکْرُ الْمَوْتِ یُزَہِّدُ فِی الْفُضُوْلِ (تفسیر روح البیان، تحت الاسراء:۵۷، ج۵، ص۱۷۵) ग़म व फ़िक्र खाने की रग़बत ख़त्म कर देता है, ख़ौफ़े इलाही गुनाहों से रोक देता है और रह़मते ख़ुदावन्दी की उम्मीद नेक कामों की रग़बत पैदा करती है और मौत की याद फ़ुज़ूल और लग़्व कामों से मुतनफ़्फ़िर कर देती है।"

दूसरे इस लिये रजा का शुऊ़र व इल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है कि इस से इ़बादत की राह में आने वाली मशक़्क़तें और दुश्वारियां आसान हो जाती हैं।

www.dawateislami.net

मा'लूम होना चाहिये कि जो शख़्स अपनी मत़्लूबा शै की अहमिय्यत व ज़रूरत पहचान लेता है उस पर इस शै के हुसूल के लिये अपनी हर चीज़ कुरबान कर देना आसान हो जाता है और जिसे कोई चीज़ पसन्द आ जाती है और दिलो जान से इस की चाहत व रग़बत रखता है वोह इस की शिद्दत व मशक़्क़त को बरदाश्त कर लेता है और इस के हुसूल में जो मह़नत व मशक़्क़त उसे उठानी पड़ती है वोह उस की परवाह नहीं करता और जिसे किसी चीज़ से पूरे त़ौर पर प्यार हो जाता है तो वोह उस के लिये हर मुश्किल व दुश्वारी बरदाश्त करने पर आमादा हो जाता है बल्कि अपनी मह़बूब शै की ख़ात़िर मुश्किलात व तकालीफ़ बरदाश्त करने में एक क़िस्म की लज़्ज़त व फ़रह़त मह़सूस करता है। तुम देखते नहीं कि शहद फ़रोख़्त करने वाला नफ़्अ़ की ख़ात़िर मक्खियों के डंक मारने की तकलीफ़ की परवाह नहीं करता और मज़दूर इन्सान गर्मियों के लम्बे लम्बे दिनों में कड़ाके की धूप के अन्दर सारा सारा दिन दो दिरहम की ख़ात़िर भारी बोझ सर पर उठा कर बड़ी ऊंची ऊंची सीढ़ियों पर चढ़ता है। इसी त़रह़ किसान अनाज कमाने की ख़ात़िर गर्मी और सर्दी की तकलीफ़ और सारा साल मशक़्क़त व मेह़नत उठाने को आसान जानता है। इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उन साह़िबे कोशिश बन्दों ने जब जन्नत में ह़ासिल होने वाले आराम व आसाइश, खाने पीने, हूर व कुसूर, ख़ुशनुमा ज़ेवर व लिबास और उन ने'मतों पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नतियों के लिये तय्यार की हैं यक़ीन किया और इन की याद ज़ेह्न में रखी तो उन पर ह़क़ तआ़ला की इबादत व इत़ाअ़त में पेश आने वाली मशक़्क़तें आसान हो गईं और दुन्या की लज़्ज़तें और ने'मतें फ़ौत हो जाने पर उन्हें रन्ज और कोफ़्त मह़सूस न हुई, और जन्नत की ख़ात़िर दुन्या में हर त़रह़ के ज़रर, ख़स्ता ह़ाली, बे चैनी और मशक़्क़त को उन्हों ने ख़ुशी ख़ुशी बरदाश्त किया।

www.dawateislami.net

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साथियों ने आप के ख़ौफ़े इलाही, इ़बादत में इन्तिहा दरजे की कोशिश व मेह़नत और आख़िरत के डर की वजह से आप की परेशां ह़ाली को देख कर अ़र्ज़ किया : ऐ उस्ताज़े मोह़तरम ! आप इस से कम दरजे की कोशिश के ज़रीए भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी मुराद पा लेंगे। आप ने जवाब दिया : मैं क्यूं कोशिश न करूं, ह़ालांकि मुझे येह बात पहुंची है कि अहले जन्नत अपने मनाज़िल व मकानात में तशरीफ़ फ़रमा होंगे कि अचानक उन पर नूर की एक तजल्ली पड़ेगी जिस से आठों जन्नतें जगमगा उठेंगी। जन्नती गुमान करेंगे येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात का नूर है तो सजदे में गिर पडेंगे। उन्हें निदा होगी अपने सर सजदे से उठा लो, येह वोह नहीं है जिस का तुम्हें गुमान हुवा है, येह तो जन्नती औ़रत के तबस्सुम का नूर है जो उस ने अपने ख़ावन्द के सामने किया है। फिर हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह अश्आ़र पढ़े।

مَاضَرَّمَنْ كَانَتِ الْفِرْدَوْسُ مَسْكَنُهُ　　مَاذَا تَحَمَّلَ مِنْ بُؤْسٍ وَاِقْتَارِ

تَرَاهُ يَمْشِىْ كَئِيْبًا خَائِفًا وَجِلًا　　اِلَى الْمَسَاجِدِ يَمْشِىْ بَيْنَ اَطْمَارِ

يَا نَفْسُ مَالَكِ مِنْ صَبْرٍعَلَى لَهَبٍ　　قَدْ حَانَ اَنْ تُقْبِلِى مِنْ بَعْدِ اِدْبَارِ

(شرح مسند ابی حنیفة، اسنادہ عن اسماعیل بن عبد اللّٰه، ص٤٧٢-٤٧١)

मशक़्क़त व तंगदस्ती बरदाश्त करना उसे कोई मुज़िर व नुक़्सान देह नहीं जिस का मस्कन और जाए क़रार जन्नते फ़िरदौस है।

ऐसा शख़्स दुन्या में ग़मनाक, ख़ाइफ़ और आख़िरत में पेश आने वाले मुआ़मले से डरता रहता है। आ़जिज़ी व इन्किसारी का लिबास ज़ेबे तन किये अदाए नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ उस की आमद व रफ़्त जारी रहती है।

ऐ नफ़्स ! तुझे आतशे दोज़ख़ के शो'ले बरदाश्त करने की हिम्मत नहीं है और आ'माले बद की वजह से क़रीब है कि ज़िल्लत व ख़्वारी के बा'द तुझे उस अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया जाए।

www.dawateislami.net

मैं कहता हूं जब मदारे उ़बूदिय्यत दो चीज़ों पर है, एक : इत़ाअ़त की बजा आवरी, दुवुम : गुनाह और मा'सिय्यत से इजतिनाब और येह मक़्सद इस नफ़्से अम्मारा की मौजूदगी में सिर्फ़ उसी वक़्त हो सकता है जब उसे तरग़ीब व तरहीब और उम्मीद व ख़ौफ़ के ज़रीए़ इस त़रफ़ मुतवज्जेह रखा जाए क्यूंकि सरकश हैवान उसी वक़्त क़ाबू में रहता है जब एक आगे से खींचने वाला हो और एक पीछे से हांकने वाला हो, येह हैवान जब अपनी पसन्द का चारा चरने लगता है तो तू उसे एक डन्डा रसीद करता है और रोकता है इतने में दूसरी जानिब सब्ज़ चारा नज़र आता है तो वोह इधर मुतवज्जेह हो जाता है, यहां तक कि तू पूरी होशियारी और एह़तियात़ से उसे रोकता है, तब जा कर वोह रुकता है और सरकश बच्चा ता'लीम की त़रफ़ सिर्फ़ इस सूरत में तवज्जोह करता है कि उस के वालिदैन उसे कई त़रह़ का लालच दें और मुअ़ल्लिम अपने रो'ब और दबदबे के नीचे रखे। **बिऐ़निही** येही ह़ालत इस नफ़्से अम्मारह की है, येह भी एक सरकश हैवान है जो अपनी शहवात की चरागाह में रहने का सख़्त मुश्ताक़ है, ख़ौफ़ इस के लिये डन्डा और हांकने वाले का काम देता है और उम्मीदे सवाब व नजात इस के लिये सब्ज़ जव हैं जिस से इत़ाअ़त की त़रफ़ राग़िब होता है, नीज़ येह नफ़्से अम्मारा सरकश बच्चे की मानिन्द है, जिसे इ़बादत व तक़्वा की किताब पढ़ानी मक़्सूद है, आतशे दोज़ख़ और अ़ज़ाब का ज़िक्र तो इस में डर पैदा करता है और जन्नत और सवाबे आ'माल इस में उम्मीद व रग़बत पैदा करते हैं, ठीक इसी त़रह़ रियाज़त व इ़बादत के लिये ज़रूरी है कि नफ़्स में ख़ौफ़ व रजा का शुऊ़र पैदा करे, वरना येह उम्मीद नहीं की जा सकती कि येह नफ़्स तक़्वा व इ़बादत की किताब पढ़ने पर आमादा हो जाए और तुम से मुवाफ़िक़त इख़्तियार कर ले। त़ालिबे इ़बादत में येही शुऊ़र पैदा करने के लिये क़ुरआने मजीद में बार बार

www.dawateislami.net

और मुबालगे़ की ह़द तक वा'द वईद और तरग़ीब व तरहीब का ज़िक्र किया गया है, सवाब का इस पेराये में ज़िक्र किया कि ख़ुद बख़ुद कशिश पैदा होती है और अ़ज़ाबे अलीम का इस तफ़्सील से ज़िक्र किया कि इस के बरदाश्त की इन्सान में त़ाक़त और हिम्मत नहीं, लिहाज़ा ज़रूरी है कि ख़ौफ़ व रजा को पेशे नज़र रखो, ताकि इबादत की बजा आवरी की मुराद ह़ासिल हो सके, और इस राह में मशक़्क़त व तकलीफ़ बर्दाश्त करना आसान हो, وَاللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوْفِیْقِ بِفَضْلِهٖ وَرَحْمَتِهٖ.

सुवाल : ख़ौफ़ व रजा की ह़क़ीक़त व माहिय्यत और इन का हुक्म व नतीजा क्या है ?

जवाब : ख़ौफ़ व रजा हमारे उ़लमाए अहले सुन्नत के नज़दीक क़बीला ख़वातिर[1] में से हैं, बन्दे की क़ुदरत में सिर्फ़ येही है कि वोह ख़ौफ़ व रजा के मुक़द्दमात को अ़मल में लाए चुनान्चे ख़ौफ़ की ता'रीफ़ येह की गई है : اَلْخَوْفُ رَعْدَةٌ تَحْدُثُ فِی الْقَلْبِ عَنْ ظَنِّ مَکْرُوْہٍ یَنَالُہٗ. (الطریقۃ المحمدیۃ،ج۲،ص۱۱۶) ख़ौफ़ उस डर और लरज़े का नाम है जो किसी ना पसन्दीदा चीज़ के पहुंचने के गुमान से दिल में पैदा होता है।

---

(1).....**ख़वात़िर :** वोह आसार हैं जो बन्दे के दिल में पैदा होते हैं और किसी काम के करने, न करने का हुक्म देते हैं, इन्हें ख़वात़िर इस लिये कहते हैं कि लफ़्ज़ ख़त़रा में "इज़्तिराब" का मा'ना पाया जाता है जैसे कहा जाता है "**ख़त़रातुर्रीह़**" जिस का मा'ना है "हवा का आना जाना" इसी त़रह क़ल्ब में आने वाले ख़यालात में भी इज़्तिराब पाया जाता है कि कभी कुछ ख़याल आता है और चला जाता है फिर कुछ ख़याल आ जाता है। येह ख़वात़िर चार क़िस्म के होते हैं : एक वोह जो शुरूअ़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से दिल में पैदा होते हैं उन को सिर्फ़ ख़वात़िर कहते हैं, दूसरे वोह जो इन्सानी त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ दिल में पैदा होते हैं इन्हें हवाए नफ़्स कहते हैं, तीसरे वोह जो मुल्हिम फ़िरिश्ता (हर आदमी के दिल पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर है जो उसे भलाई की त़रफ़ बुलाता है उसे मुल्हिम कहते हैं) की दा'वत के ज़रीए़ दिल में पैदा होते हैं इन्हें इल्हाम कहते हैं और चोथे वोह जो शैत़ान (हर आदमी के दिल पर एक शैत़ान मुसल्लत़ है जो उसे बुराई की त़रफ़ बुलाता है उसे वसवास कहते हैं) की दा'वत से दिल में आते हैं इन्हें वस्वसा कहते हैं। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 112)

www.dawateislami.net

ख़शिय्यत भी ख़ौफ़ जैसी कैफ़िय्यत का नाम है लेकिन ख़शिय्यत के मफ़्हूम में जिस से ख़ौफ़ होता है उस की हैबत और अ़ज़मत का तसव्वुर भी शामिल है, ख़ौफ़ के मुक़ाबिल जुर्अत है, बा'ज़ दफ़्अ़ ख़ौफ़ के मुक़ाबले में अम्न भी आता है, जैसे कहते हैं कि خائفٌ و امِنٌ और خَوفٌ وامِنٌ क्यूंकि आमिन या'नी बे ख़ौफ़ वोह शख़्स होता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम के मुतअ़ल्लिक़ ला परवाही और बे बाकी का मुज़ाहिरा करे लेकिन ह़क़ीक़तन ख़ौफ़ के मुक़ाबिल जुर्अत ही है। अपने अन्दर ख़ौफ़ पैदा करने के चार मुक़द्दमात और अस्बाब हैं :

(1) अपने गुज़िश्ता गुनाहों को याद करना।

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस शिद्दत व सख़्ती को याद करना जिसे बरदाश्त करने की तुम में सकत नहीं।

(3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब के आगे अपने ज़ो'फ़ व ना तवानी और अपनी कमज़ोरी को याद करना।

(4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत व त़ाक़त को याद रखना कि वोह जब चाहे, जैसे चाहे गिरिफ़्त कर सकता है।

रजा की ता'रीफ़ येह की गई है : هُوَ اِبْتِهَاجُ الْقَلْبِ بِمَعْرِفَةِ فَضْلِ اللّٰهِ سُبْحَانَهُ وَاسْتِرْوَاحُه اِلٰى سَعَةِ رَحْمَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى (الطريقة المحمدية،ج۲،ص۱۲۸) या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल व करम को पहचान कर दिल में ख़ुशी मह़सूस करना और इस की रह़मत के दामन में राह़त ह़ासिल करने का तसव्वुर।

रजा का येह मफ़्हूम व मा'ना ख़वात़िर में से है और बन्दे की क़ुदरत से बाहर है, हां रजा बईं मा'ना هُوَتَذَكُّرُ فَضْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَسَعَةِ رَحْمَتِهِ. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की वुस्अ़ते रह़मत को याद करना, बन्दे की क़ुदरत में है।

www.dawateislami.net

ख़त़रात व ह़वादिस के मुतअ़ल्लिक़ येह इरादा और अ़क़ीदा रखना कि बे मशिय्यते इलाही इन से ज़रर व नुक़्सान नहीं पहुंच सकता इस को रजा कहा गया है, रजा के इस बयान में हमारे नज़्दीक पहला मा'ना मुराद है, या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल व रह़मत को याद कर के मसर्रत व राह़त मह़सूस करना।

रजा की ज़िद, यास (ना उम्मीद) है, ना उम्मीदी और यास की येह ता'रीफ़ की गई है : هُوَتَذَكُّرُ فَوَاتِ رَحْمَةِ اللّٰهِ وَ فَضْلِهٖ وَ قَطْعُ الْقَلْبِ عَنْ ذٰلِكَ (الطريقة المحمدية،ج٢، ص١٢٧) इस ख़याल को कि मुझे ख़ुदा की रह़मत और उस का फ़ज़्ल नहीं पहुंचेगा, नीज़ दिल को रब तआ़ला के फ़ज़्ल व रह़मत की उम्मीद से अलग कर लेने को यास कहते हैं।

इस त़रह़ की ना उम्मीदी मह़्ज़ गुनाह है और जब रजा का तसव्वुर पुख़्ता किये बिग़ैर ना उम्मीदी और यास का क़ल्अ़ क़म्अ़ करना दुश्वार हो तो ऐसी सूरत में रजा फ़र्ज़ है, और अगर ऐसी सूरते ह़ाल न हो तो रजा नफ़्ल है, जब कि इज्माली त़ौर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल व करम और वुस्अ़ते रह़मत का अ़क़ीदा दिल में मज़बूत़ और पुख़्ता हो। रजा चार चीज़ों से पैदा होती है :

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात व इन्आ़माते साबिक़ा को याद करना जो उस ने तुम्हें बिग़ैर किसी अ़मल व बिग़ैर किसी सिफ़ारिश के अ़त़ा फ़रमाए।

(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी शाने रह़ीमी व करीमी के मुत़ाबिक़ अ़ज़ीम इ़ज़्ज़तों और बड़े अज्रो सवाब के जो वा'दे किये हैं उन को ज़ेहन में रखना, उस अज्रो सवाब को ज़ेहन में न रखना जिस के तुम अपने आ'माल के इ़वज़ मुस्तह़िक़ हो सकते हो, क्यूंकि अज्रो सवाब अगर बन्दे के अफ़्आ़ल व आ'माल की ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ मिले तो वोह बिल्कुल क़लील व ह़क़ीर होगा।

www.dawateislami.net

(3) इस्तिह़क़ाक़ के बिग़ैर और बे मांगे दीन व दुन्या के हर शो'बे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो मेहरबानियां और क़िस्म क़िस्म की ने'मतें अ़त़ा फ़रमा रहा है उन को याद करना।

(4) येह तसव्वुर कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व मेहरबानी उस के ग़ज़ब और उस की गिरिफ़्त पर ग़ालिब है और येह तसव्वुर कि खुदावन्दे कुद्दूस रह़मान, रह़ीम, ग़नी, करीम और अपने बन्दए मोमिन पर निहायत मेहरबान है, जब तुम ख़ौफ़ व उम्मीद दोनों के मुत़ाबिक़ तसव्वुरात व ख़यालात को जे़ह्न में रखोगे तो तुम में हर वक़्त ख़ौफ़ व रजा की कैफ़िय्यात बेदार रहेंगी। وَاللّٰهُ تَعَالٰی وَلِیُّ التَّوفِیقِ بِمَنِّهٖ وَفَضْلِهٖ.

फ़स्ल

तो ऐ बन्दे ! तुझ पर पूरे एह़तियात़, पूरे ध्यान और पूरी रिआ़यत के साथ ख़ौफ़ व रजा की इस घाटी को तै़ करना ज़रूरी है, एह़तियात़ की इस लिये ज़रूरत है कि येह घाटी निहायत दुश्वार गुज़ार है, इस में त़रह़ त़रह़ के ख़त़रात हैं, क्यूंकि ख़ौफ़ व रजा की इस घाटी का रास्ता दो मोहलिक और ख़ौफ़नाक रास्तों के दरमियान से गुज़रता है, एक तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बिल्कुल बे ख़ौफ़ हो जाने का रास्ता और दूसरा उस से बिल्कुल मायूस हो जाने का रास्ता, इन दोनों टेढ़ी राहों के दरमियान ख़ौफ़ व रजा का रास्ता है, अगर रजा इस क़दर ग़ालिब हो गई कि खुदा عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ बिल्कुल न रहा, तो येह भी ग़लत़ राह है, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَلَا یَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ۠ ﴿۹۹﴾ (پ۹،الاعراف:۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।

और अगर ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुवा कि दिल से उम्मीदे रह़मत व बख़्शिश का नाम व निशान मिट गया तो येह ना उम्मीदी और मायूसी का रास्ता है और येह भी ग़लत़ है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

لَا یَایْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ (پ۱۳،یوسف:۸۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ***अल्लाह*** *की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग ।*

लेकिन अगर तुम ख़ौफ़ व रजा के दरमियान चले और दोनों का दामन पकड़ा तो येही वोह सिरात़े मुस्तक़ीम है जो उस के उन औलिया व अस्फ़िया का रास्ता है जिन की उस ने अपनी किताब में यूं सिफ़त फ़रमाई है ।

اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ یَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ﴿۹۰﴾ (پ۱۷،الانبیاء:۹۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं*

जब तुम्हें मा'लूम हो गया कि इस घाटी में तीन मुख़्तलिफ़ रास्ते हैं ।

(1) रास्ता अम्न व बेबाकी (मुकम्मल बे ख़ौफ़ी)

(2) ना उम्मीदी और मायूसी का रास्ता

(3) इन दोनों राहों के दरमियान ख़ौफ़ व रजा का रास्ता

तो अगर तुम ज़रा भी दाएं या बाएं हुए तो मोहलिक रास्तों में जा पड़ोगे और हलाक होने वालों के साथ हलाक हो जाओगे । फिर सूरते ह़ाल येह है कि बे ख़ौफ़ी और मायूसी के दोनों रास्ते दरमियानी रास्ते की निस्बत ज़ियादा कुशादा हैं, और इन की त़रफ़ बुलाने वालों की कसरत है, और दरमियानी रास्ते की निस्बत इन दो पर चलना ज़ियादा सहल और आसान है, क्यूंकि अगर तुम जानिबे अम्न (बे ख़ौफ़ी) की त़रफ़ नज़र दोड़ाओगे तो तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वसीअ़ रह़मत, उस के बे पायां फ़ज़्ल व करम और उस की बख़्शिश और जूद के वोह समुन्दर नज़र आएंगे कि ख़ौफ़ व डर का शाइबा भी दिल में बाक़ी नहीं रहेगा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल पर भरोसा कर के बे ख़ौफ़ हो कर बैठ जाओगे और अगर जानिबे ख़ौफ़ की त़रफ़ देखोगे

www.dawateislami.net

तो ख़ुदा तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुदरत, ग़ालिब तदबीर, जलाल व हैबत, औलिया व अस्फ़िया से भी मुआ़मलए ह़िसाब व किताब की नज़ाकत के वोह लरज़ा ख़ेज़ वाक़िआ़त व ह़ालात सामने आएंगे कि रजा बाक़ी नहीं रहेगी, तो मायूसी और ना उम्मीदी का शिकार हो जाओगे। लिहाज़ा ऐसी सूरते ह़ाल के पेशे नज़र तुम पर येह भी ज़रूरी है कि महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वुस्अ़ते रह़मत पर ही इन्ह़िसार न करो ताकि उस की रह़मत पर भरोसा कर के बिल्कुल बे ख़ौफ़ न हो जाओ, कि येह भी ग़लत़ है और न उस की अ़ज़ीम हैबत और आख़िरत की सख़्त पुरसिश व गिरिफ़्त पर ही नज़र रखो क्यूंकि इस त़रह़ तुम ना उम्मीदी और मायूसी का शिकार हो जाओगे, बल्कि दोनों पहलूओं को पेशे नज़र रखो, कुछ ह़िस्सा ख़ौफ़ का लो और कुछ रजा का, फिर इन दोनों के कन्धे पर सुवार हो कर इस बारीक राह पर चलो ताकी भटकने से मह़फ़ूज़ रहो। क्यूंकि सिर्फ़ रजा का रास्ता बहुत आसान और सहल है और बड़ा वसीअ़ और कुशादा है, लेकिन इस की मन्ज़िल और इन्तिहा अ़ज़ाबे ख़ुदा से बिल्कुल बे ख़ौफ़ी और ख़सारा है, इसी त़रह़ सिर्फ़ ख़ौफ़ का रास्ता भी अगर्चे बड़ा वसीअ़ व अ़रीज़ है, लेकिन इस का अन्जाम ज़लालत व गुमराही है, और ए'तिदाल का रास्ता ख़ौफ़ और रजा के दरमियान है, और येह दरमियानी रास्ता अगर्चे दुश्वार गुज़ार है लेकिन हर ख़त़रे से मह़फ़ूज़ और बिल्कुल वाज़ेह़ और साफ़ है जो मग़फ़िरत व भलाई, जन्नत व रिज़्वान और लिक़ाए इलाही तक ले जाता है, क्या तुम ने ख़ौफ़ व रजा के रास्ते पर चलने वालों के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुदा तआ़ला का येह इरशादे मुबारक नहीं सुना !

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا
(پ۲۱،السجدة:۱٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते।*

www.dawateislami.net

फिर इन की जज़ा के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ۝۱۷

(پ۲۱،السجدۃ:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठंडक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।*

कोई इन्सान नहीं जान सकता आंखों की उस ठंडक को जो ख़ौफ़ व रजा की राह पर चलने वालों के लिये उन की जज़ा के त़ौर पर (आख़िरत में) पोशीदा रखी हुई है।

इस जुम्लए क़ुरआनी पर पूरी त़रह़ ग़ौर करो, फिर इस राह पर चलने के लिये पूरी त़रह़ मुस्तइद और बेदार हो जाओ क्यूंकि ख़ौफ़ व रजा का मक़ाम ह़ासिल करना आसान नहीं। फिर येह मा'लूम होना भी ज़रूरी है कि इस राह पर चलना और सुस्त और सरकश नफ़्स को इस की मह़बूब चीज़ों से हटा कर इ़बादात और आ'माले सालेह़ में लगाना जो उसे बड़ा ना गवार है, उस वक़्त तक ह़ासिल नहीं हो सकता जब तक तीन उसूल ज़ेह्न में न रखे जाएं और ग़फ़्लत और सुस्ती के बिग़ैर इन उसूलों की हमेशा ह़िफ़ाज़त व निगेहदाश्त न की जाए। वोह तीन उसूल येह हैं :

(1) तरग़ीब व तरहीब के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इरशादात ज़ेह्न नशीन करना

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़फ़ या गिरिफ़्त फ़रमाने को पेशे नज़र रखना

(3) आख़िरत में नेक लोगों के सवाब और बुरे लोगों के अ़ज़ाब को याद रखना।

इन तीन उसूलों की कमा ह़क़्क़ुहू तफ़्सील के लिये तो दफ़्तर दरकार हैं, हम ने इस बाब में एक मुस्तक़िल किताब "तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन" तसनीफ़ की है और इस मुख़्तसर किताब में हम सिर्फ़ उन कलिमात की त़रफ़ इशारा करते हैं जिन को ज़ेह्न नशीन कर लेने के बा'द मक़्सूद से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वाक़िफ़ हो जाओगे। وَاللّٰهُ وَلِیُّ التَّوْفِیْق.

www.dawateislami.net

अस्ले अव्वल

तरग़ीब व तरहीब के मुतअ़ल्लिक़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इरशादात

ऐ बरादरे अ़ज़ीज़ ! तुझे इन आयात में ज़रूर तदब्बुर और ग़ौर करना चाहिये जिन में खुदा तआ़ला ने तरग़ीब व तरहीब और ख़ौफ़ व रजा का ज़िक्र फ़रमाया है, चुनान्चे रजा के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने मजीद में फ़रमाया :

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ (پ ٢٤،الزمر:٥٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है।

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۣ (پ ٤ ،ال عمران:١٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के।

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ (پ ٢٤،المومن:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा और कौन गुनाह बख़्शने वाला है ?

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ (پ٢٥،الشورىٰ:٢٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है।

كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ (پ٧،الانعام:١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ने अपने करम के ज़िम्मा पर रह़मत लिख ली है।

www.dawateislami.net

وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ
(پ۹،الاعراف:۱۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़न क़रीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते हैं।

اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۴۳﴾
(پ۲،البقرۃ:۱۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह आदमियों पर बहुत मेहरबान मेहर (रह़्म) वाला है।

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَحِیْمًا ﴿۴۳﴾
(پ۲۲،الاحزاب:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह मुसलमानों पर मेहरबान है।

इन मज़्कूरा आयात और इस त़रह़ की दीगर बहुत सी आयात में रजा का बयान है।

ख़ौफ़ और हैबत की आयात

یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾
(پ۲۳،الزمر:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾
(پ۱۸،المومنون:۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।

اَیَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ یُّتْرَكَ سُدًی ؕ ﴿۳۶﴾ (پ۲۹،القیامۃ:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या आदमी इस घमन्ड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा।

لَیْسَ بِاَمَانِیِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِیِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ (پ۵،النساء:۱۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और ना किताब वालों की होस पर।

www.dawateislami.net

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾

(پ٥، النساء:١٢٣)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और **अल्लाह** के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार।

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ (پ١٦، الكهف:١٠٤)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾ (پ٢٤، الزمر:٤٧)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी।

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾

(١٩، الفرقان:٢٣)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रौज़न की धूप में नज़र आते हैं।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते हैं कि वोह हमें अपने दामने रह़मत में जगह दे और बद आ'मालियों से बचाए।

चन्द वोह आयाते मुबारका जिन में ख़ौफ़ व रजा दोनों का बयान है

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾

(پ١٤، الحجر:٤٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ख़बर दो मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान।

इस के मुत्तसिल बा'द फ़रमाया :

www.dawateislami.net

وَ اَنَّ عَذَابِیۡ هُوَ الۡعَذَابُ الۡاَلِیۡمُ ۝۵۰ (پ۱۴،الحجر:۵۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है।*

अ़ज़ाब का ज़िक्र साथ ही इस लिये फ़रमाया ताकि बन्दे पर सिर्फ़ रजा का ही ग़लबा न हो जाए, इसी त़रह़ कुरआने मजीद में एक जगह जहां येह फ़रमाया :

شَدِیۡدِ الۡعِقَابِ ۙ (پ۲۴،المؤمن:۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *सख़्त अ़ज़ाब करने वाला*

वहां इस के मुत्तसिल बा'द येह भी फ़रमाया :

ذِی الطَّوۡلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ (پ۲۴،المومن:۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *बड़े इन्आ़म वाला उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।*

ताकि बिल्कुल ख़ौफ़ का ग़लबा ही न हो जाए।

इस सिल्सिले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़जीब तरीन क़ौल येह है कि पहले फ़रमाया :

وَ یُحَذِّرُکُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ ؕ (پ۳،آل عمران:۳۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है।*

फिर इस के साथ ही फ़रमा दिया :

وَ اللّٰهُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ۝۳۰ (پ۳،آل عمران:۳۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है।*

और इस से भी अ़जीब तर येह क़ौल है :

مَنۡ خَشِیَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَیۡبِ (پ۲۶، ق:۳۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *जो रह़मान से बे देखे डरता है।*

www.dawateislami.net

कि ख़शिय्यत के साथ अपना ज़िक्र इस्मे जब्बार या मुन्तक़िम या मुतकब्बिर से न किया जो ख़शिय्यत के लिहाज़ से मौक़अ़ के मुनासिब था बल्कि ख़शिय्यत को रह़मान से मोअ़ल्लक़ फ़रमाया ताकि ख़शिय्यत और रह़मत का ज़िक्र हो जाए, कि दिल सिर्फ़ ज़िक्रे ख़शिय्यत से फ़ना ही न हो जाए, लिहाज़ा डराने के साथ साथ अम्न देने का तज़किरा किया और तह़रीक के साथ साथ तस्कीन का ज़िक्र भी कर दिया। इस आयत के मज़्मून की मिसाल यूं है कि तुम किसी को कहो तुम अपनी मेहरबान मां से क्यूं नहीं डरते या तुम अपने मुशफ़िक़ बाप से क्यूं ख़ौफ़ नहीं खाते या तुम रह़्म दिल ह़ाकिम से क्यूं नहीं डरते, इस क़िस्म की गुफ़्तगू से मक़्सद येह होता है कि ख़ौफ़ व अम्न का दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना चाहिये और बिल्कुल मायूसी या बिल्कुल बे ख़ौफ़ी से दूर रहना चाहिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत व करम से हमें और तुम्हें इस ज़िक्रे ह़कीम में तदब्बुर और इस पर अ़मल करने वालों में से करे। बेशक वोह बड़ा जव्वाद और करीम है। गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है जो किब्रियाई और बड़ाई वाला है।

ग़ीबत से मह़फ़ूज़ रहने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते अ़ल्लामा मजदुद्दीन फ़िरोज़ाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى *से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो :* بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد *तो* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो :* بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد *तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा।* (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع، ص٢٧٨)

www.dawateislami.net

इख़्लास का बयान

इख़्लास से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़मल को मक़ामे मक़्बूलिय्यत ह़ासिल होता है और इन्सान को इस अ़मल पर सवाब मिलता है वरना इख़्लास मफ़्क़ूद होने की सूरत में आ'माल मरदूद हो जाते हैं और इन का सवाब या तो बिल्कुल ही या कुछ न कुछ ज़ाएअ़ और बरबाद हो जाता है। क्यूंकि मशहूर ह़दीस में हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं शिर्क से बिल्कुल बे नियाज़ हूं, जो शख़्स अ़मल में मेरे ग़ैर को शरीक करे, तो मेरा हि़स्सा भी उस शरीक को ही पहुंचा, में सिर्फ़ उस अ़मल को क़बूल करता हूं जो ख़ालिस मेरे लिये किया गया हो।

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب رياء و السمعة ، الحديث: ٤٢٠٢، ج٤، ص٤٦٩ و الدرالمنثور، تحت پ١٦ ، الكهف: ١١٠، ج٩، ص١٥٩٤)

मरवी है कि क़ियामत के रोज़ जब बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने आ'माल पर सवाब का त़लबगार होगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : क्या तुझे मजालिस व मह़ाफ़िल में वुस्अ़त नहीं दी गई थी क्या वहां तुझे सरदारी नहीं दी गई थी, क्या तेरे कारोबार में तरक़्क़ी व सहूलत और हर क़िस्म की आसानी अ़त़ा नहीं की गई थी। क्या तुझे इसी त़रह़ के बे शुमार ए'ज़ाज़ात व इन्आ़मात नहीं दिये गए थे। क्या तुम्हें हर क़िस्म की तक्लीफ़ों, ख़त़रों और नुक़्सानों से मह़फ़ूज़ नहीं रखा गया था या'नी येह सब कुछ जज़ाए आ'माल के त़ौर पर दुन्या में तुझे दे दिया गया था।

मैं कहता हूं रिया के ख़त़रात में से कम अज़ कम दो की तो नदामत इन्सान को होती है और दो मुसीबतें इस पर मुसल्लत़ होती हैं, एक नदामत तो पोशीदा क़िस्म की है और वोह तमाम मलाइका के सामने शर्मिन्दगी है जैसा कि रिवायत में है कि मलाइका एक बन्दे के आ'माल ख़ुशी ख़ुशी ऊपर ले जाते हैं। मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

त़रफ़ से हुक्म होता है कि येह आ'माल सिज्जिय्यीन में फैंक दो क्यूंकि इस ने येह आ'माल मेरी रिज़ा और ख़ुशनूदी के लिये नहीं किये थे।

(حلیۃ الاولیاء، ۲۱۰ یحیی بن ابی کثیر،الحدیث:۳۲۵۵،ج۳،ص۸۲)

तो उस वक़्त इस बन्दे और इस के अ़मल को उन मलाइका के सामने नदामत लाहि़क़ होती है। दूसरी नदामत और शर्मिन्दगी अ़लानिया उस को लाहि़क़ होगी जो क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने होगी। हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि । اِنَّ الْمُرَائِیْ یُنَادٰی یَوْمَ الْقِیَامَۃِ بِاَرْبَعَۃِ اَسْمَآءٍ یَا کَافِرُ، یَا فَاجِرُ، یَاغَادِرُ، یَاخَاسِرُ، ضَلَّ سَعْیُکَ وَبَطَلَ عَمَلُکَ فَلَا خَلَاقَ لَکَ الْیَوْمَ الْتَمِسِ الْاَجْرَ مِمَّنْ کُنْتَ تَعْمَلُ لَہٗ یَا مُخَادِعُ.

(فردوس الاخبار،الحدیث:۶۹۰۱،ج۲،ص۳۵۶)

रियाकार को क़ियामत के दिन चार नामों से पुकारा जाएगा, ऐ काफ़िर, ऐ फ़ाजिर, ऐ ग़द्दार, ऐ ख़सारा उठाने वाले तेरी कोशिश बेकार चली गई तेरे आ'माल बेकार हो चुके हैं, यहां आख़िरत में तेरा कोई हि़स्सा नहीं, ऐ धोकेबाज़ अपने आ'माल का अज्रो सवाब उस से जा कर ले जिस को दिखाने के लिये तू अ़मल करता था।

एक रिवायत येह भी है कि یُنَادِی مُنَادٍ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ یُسْمِعُ الْخَلَائِقَ، اَیْنَ الَّذِیْنَ کَانُوْا یَعْبُدُوْنَ النَّاسَ؟ قُوْمُوْا خُذُوْا اُجُوْرَکُمْ مِمَّنْ کُنْتُمْ عَمِلْتُمْ لَہٗ، فَاِنِّی لَا اَقْبَلُ عَمَلًا خَالَطَہٗ شَیْءٌ (جمع الجوامع، قسم الاقوال،حرف الھمزۃ،الحدیث:۲۴۷۶، ج۱،ص۳۳۶) क़ियामत के रोज़ एक निदा करने वाला निदा करेगा जिसे तमाम मख़्लूक़ात सुनेगी। कहां हैं वोह जो ख़ुदा के बजाए लोगों की इ़बादत करते थे जाओ और अपने आ'माल का बदला उन से लो जिन के लिये करते थे। मैं उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में रिया और नुमाइश की मिलावट हो।

www.dawateislami.net

और रिया से आने वाली दो मुसीबतों में एक मुसीबत जन्नत से मह़रूमी है, क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि जन्नत ने गुफ़्त्गू की और कहा : "اَنَا حَرَامٌ عَلٰی کُلِّ بَخِیْلٍ وَّ مُرَاءٍ." मैं बख़ील और रियाकार पर ह़राम हूं।

(تاریخ مدینة دمشق،٦١٣٣۔محمد بن بشر، ج٥٢،ص١٥١)

इस ह़दीस शरीफ़ के दो मा'ना हो सकते हैं एक येह कि इस बख़ील से वोह बख़ील मुराद है जो सब से बेहतर कलिमे को ज़बान पर लाने से बुख़्ल करता है, या'नी صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه) तसदीक़े क़ल्बी के साथ नहीं पढ़ता और इस रियाकार से वोह मुराद है जो बद तरीन क़िस्म की रियाकारी का मुज़ाहिरा करता है। या'नी मुनाफ़िक़ जो अपनी तौह़ीद और अपने ईमान में रियाकारी करता है। ह़दीस के इस मा'ना में उम्मीद की त़रफ़ इशारा है कि अगर सिद्क़ और इख़्लास पैदा हो जाए तो इस का मुआ़मला दुरुस्त हो सकता है, ह़दीस का दूसरा मा'ना येह हो सकता है कि जो शख़्स बुख़्ल और रियाकारी से बाज़ न आए और अपनी परवाह और रिआ़यत न करे, तो ऐसी सूरत में दो ख़त़रे हैं एक तो येह कि मुमकिन है इस बुख़्ल और रियाकारी की नुह़ूसत उस पर आ पड़े और वोह कुफ़्र के गढ़े में जा गिरे और इस तरह़ जन्नत से बिल्कुल मह़रूम हो जाए। اَلْعِیَاذُ بِاللّٰهِ مِنْه

दूसरा ख़त़रा येह है कि इस बुख़्ल व रियाकारी के बाइ़स ईमान ही सल्ब हो जाए और दोज़ख़ का मुस्तह़िक़ हो जाए। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और शदीद ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं।

और दूसरी मुसीबत दोज़ख़ में जाना है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ सब से पहले हि़साब के लिये जिस शख़्स को बुलाया जाएगा वोह ह़ाफ़िज़ और क़ारीए क़ुरआन होगा और एक वोह जिस ने राहे ख़ुदा में जान दी होगी और एक मालदार शख़्स को, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ारी से फ़रमाएगा : क्या मैं ने तुझे वोह किताब नहीं सिखाई थी जो मैं ने अपने रसूल पर नाज़िल की थी वोह जवाब देगा : हां या रब ! तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पूछेगा : तो इ़ल्म के मुत़ाबिक़ तूने अ़मल किया ? क़ारी जवाब देगा : मैं तेरी ख़ुशनूदी के लिये सारी सारी रात और दिन के अवक़ाते मुख़्तलिफ़ा में आयाते क़ुरआनी की तिलावत में मश्ग़ूल व मस्रूफ़ रहा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तू झूट बोलता है" और फ़िरिश्ते भी कहेंगे : "तू झूट बोलता है" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : तिलावते आयात से तेरा इरादा येह था कि लोग कहें फ़ुलां शख़्स क़ारी है और येह बात तुझे ह़ासिल हो गई थी।

फिर साहि़बे माल शख़्स को बुलाया जाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से पूछेगा : क्या मैं ने तुझे रिज़्क़ में फ़राख़ी और वुस्अ़त अ़त़ा नहीं की थी, यहां तक कि मैं ने तुझे किसी इन्सान का मोह़ताज नहीं रखा था। वोह कहेगा : हां या रब तआ़ला ! तो उस से पूछेगा : मेरे दिये हुए माल को तूने किस अ़मल में सर्फ़ किया वोह कहेगा मैं ने इस माल के साथ सिलए रेह़्मी क़ाइम की और तेरी राह में स-दक़ा और ख़ैरात किया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तू झूटा है" फ़िरिश्ते भी कहेंगे : "तू झूटा है," अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : बल्कि तेरी निय्यत तो येह थी कि दुन्या तुझे सख़ी और फ़य्याज़ के नाम से पुकारे और येह चीज़ दुन्या में तुझे ह़ासिल हो गई, और

उस शख़्स को दरबारे ख़ुदावन्दी में लाया जाएगा जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जान दे दी होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से

www.dawateislami.net

पुछेगा : तूने दुन्या में क्या नेक काम किये, अ़र्ज़ करेगा, मुझे तेरी राह में जिहाद का हुक्म मिला तो मैं जिहाद में मस्रूफ़ हो गया, ह़त्ता कि तेरे रास्ते में जान कटा दी, **अल्लाह** عزّوجلّ फ़रमाएगा : "तू झूट बोलता है" मलाइका भी कहेंगे : "तू झूट बोल रहा है," **अल्लाह** عزّوجلّ फ़रमाएगा बल्कि तेरा तो येह मक़्सद था कि लोग तुझे दिलेर और शुजाअ़ कहें, ओर येह बात तुझे दुन्या में ह़ासिल हो गई फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक मेरे घुटने पर मारा और फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ)! येही वोह लोग हैं जिन को सब से अव्वल दोज़ख़ में फैंक कर **अल्लाह** عزّوجلّ दोज़ख़ की आग भड़काएगा। (سنن الترمذی، کتاب الزھد،باب ماجاء فی الریاء والسمعۃ،الحدیث:۲۳۸۹،ج٤،ص۱٦۹)

एक दूसरी ह़दीस ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है फ़रमाते हैं : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم یَقُوْلُ: اِنَّ النَّارَ وَ اَھْلَھَا یَعُجُّوْنَ مِنْ اَھْلِ الرِّیَاءِ قِیْلَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ وَ کَیْفَ تَعُجُّ النَّارُ؟ قَالَ مِنْ حَرِّ النَّارِ الَّتِیْ یُعَذَّبُوْنَ بِھَا मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "दोज़ख़ और अहले दोज़ख़ रियाकारों से चीख़ उठेंगे।" अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) दोज़ख़ क्यूं चीख़ेगी ? आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस आग की तपिश से जिस से रियाकारों को अ़ज़ाब दिया जा रहा होगा।" क़ियामत के रोज़ लाह़िक़ होने वाली शर्मिन्दगियों और नदामतों में अहले बसीरत के लिये दर्से इब्रत है। واللّٰہُ سُبْحَانَہٗ وَلِیُّ الْھِدَایَۃِ بِفَضْلِہٖ.

सुवाल : आप हमें इख़्लास और रिया की ह़क़ीक़त और इन के नतीजे से आगाह फ़रमाएं नीज़ इन से इन्सान के आ'माल में किस क़िस्म का असर रूनुमा होता है इस पर भी रोशनी डालें ?

जवाब : हमारे उ़लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक इख़्लास की दो क़िस्में हैं।

(1) अ़मल में इख़्लास (2) त़लबे सवाब में इख़्लास

www.dawateislami.net

इख़्लास फ़िल अ़मल तो येह है कि बन्दा अपने अ़मल से तक़र्रुबे ह़क़ तआ़ला, उस के हुक्म की ता'ज़ीम और उस के अह़कामात की बजा आवरी का इरादा करे, और येह इख़्लास ए'तिक़ादे सह़ीह़ से नसीब होता है। इस इख़्लास की ज़िद निफ़ाक़ है, जिस में ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब मक़्सूद होता है। हमारे शैख़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : निफ़ाक़ उस ए'तिक़ादे फ़ासिद का नाम है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में मुनाफ़िक़ के दिल में पाया जाता है और येह ए'तिक़ाद इरादे के क़बीले में से नहीं है जैसा कि हम दूसरे मक़ाम पर ज़िक्र कर चुके हैं। लेकिन त़लबे सवाब में इख़्लास की ह़क़ीक़त येह है कि बन्दा नेक अ़मल से नफ़ए आख़िरत का इरादा करे, हमारे शैख़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ इस की ह़क़ीक़त येह बयान करते थे : ऐसे नेक काम पर नफ़्अ़ का इरादा करना जिसे शरअ़न रद्द करना दुश्वार हो और रद्द कर देने की सूरत में आख़िरत में नफ़्अ़ की उम्मीद बाक़ी न रहे। हम इख़्लास की इस ता'रीफ़ में मलह़ूज़ क़ैदों की शर्ह़ दूसरे मक़ाम पर कर चुके हैं।

एक दफ़्अ़ ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़वारियों ने आप से दरयाफ़्त किया : इख़्लास क्या है ? आप ने इरशाद फ़रमाया : इख़्लास येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये नेक काम करे और दिल में इस की चाहत न रखे कि इस पर उस की मद्ह़ व सताइश की जाए। (تاریخ مدینۃ دمشق،ج۴۷،۴۴۸) ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस क़ौल मुबारक का मत़लब भी येही है कि बन्दा रिया को नज़दीक न आने दे और मद्ह़ व सताइश की ख़्वाहिश से ख़ुसूसन इस लिये मन्अ़ फ़रमाया कि येह रिया के बहुत क़वी अस्बाब में से है जो इख़्लास को तबाह व बरबाद करते हैं।

www.dawateislami.net

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रियाकारी वग़ैरा के मैल कुचैल से आ'माल को पाक व साफ़ रखने का नाम इख़्लास है। (احیاء علوم الدین، کتاب النیۃ والاخلاص والصدق، ج۵،ص ۱۱۰)

हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तमाम नफ़्सानी और बशरी तक़ाज़ों को भूल जाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते पाक के साथ दवाम रब्त़ और दवाम मुराक़बा का नाम इख़्लास है।

येह इख़्लास का मुकम्मल बयान है। इख़्लास की ता'रीफ़ में और भी बहुत से अक़्वाल हैं। लेकिन इन्किशाफ़े ह़क़ाइक़ के बा'द नक़्ले अक़्वाल में कोई फ़ाइदा नहीं।

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से जब इख़्लास की ह़क़ीक़त दरयाफ़्त की गई तो आप ने फ़रमाया : "تَقُوْلُ رَبِّیَ اللّٰہُ ثُمَّ تَسْتَقِیْمُ کَمَا اُمِرْتَ." इख़्लास येह है कि तू कहे मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और फिर जो तुझे हुक्म है उस पर क़ाइम और मज़बूत़ हो जाए।

या'नी तू अपने नफ़्स और ख़्वाहिशात की पैरवी छोड़ दे, बल्कि सिर्फ़ रब तआ़ला की इ़बादत और बन्दगी करे, और उस के हुक्म के मुत़ाबिक़ उस की इ़बादत और बन्दगी में मुस्तक़ीम रहे। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस इरशाद में दर अस्ल इस त़रफ़ इशारा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर शै से तअ़ल्लुक़ मुन्क़त़ेअ़ कर ले और उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ अपनी नज़र से हटा दे। इख़्लासे ह़क़ीक़ी इसी का नाम है, इख़्लास के मुक़ाबले में रिया है, और रिया की ता'रीफ़ है : अ़मले आख़िरत के इवज़ दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा करना। फिर रिया की दो क़िस्में हैं। (1) रियाए मह़्ज़ (2) रियाए मख़्लूत़। रियाए मह़्ज़ तो येह है कि सिर्फ़ दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा किया जाए और रियाए मख़्लूत़ येह है कि अ़मले आख़िरत से दुन्यवी और उख़रवी दोनों क़िस्म के नफ़्अ़ का इरादा किया जाए। येह तो थी

www.dawateislami.net

इख़्लास और रिया दोनों की ह़क़ीक़त और माहिय्यत बाक़ी रही इन दोनों की तासीर तो इख़्लास से तो तुम अपने फे'ल को कुर्बत और नज़्दीकी का सबब बना लोगे और त़लबे सवाब में इख़्लास से तुम्हारा अ़मल बड़े सवाब और अ़ज़्मत का मुस्तह़िक़ हो जाएगा इस के बर अ़क्स निफ़ाक़ अ़मले ख़ैर को ज़ाएअ़ कर देता है और इस से अ़मल नज़्दीकी और कुर्बत का सबब नहीं बनता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नेक अ़मल पर सवाब का जो वा'दा किया है निफ़ाक़ से वोह अ़मल इस वा'दे का मुस्तह़िक़ नहीं रहता। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक रिया मह़्ज़ का सुदूर आ़रिफ़ से नहीं हो सकता, हां रिया की आमेज़िश हो सकती है। जिस से निस्फ़ सवाब बात़िल और ज़ाएअ़ हो सकता है और बा'ज़ दूसरे उ़लमा के नज़्दीक आ़रिफ़ से रियाए मह़्ज़ का सुदूर भी हो सकता है और इस से दुगने का निस्फ़ सवाब ज़ाएअ़ होता है और रियाए मख़्लूत़ से दुगने का चोथाई सवाब बरबाद होता है और हमारे शैख़ قُدِّسَ سِرُّہٗ के नज़्दीक सह़ीह़ बात येह है कि आ़रिफ़ से आख़िरत का तसव्वुर होते हुए रियाए मह़्ज़ का सुदूर नहीं हो सकता। हां आख़िरत से बे तवज्जोही की सूरत में रियाए मह़्ज़ का सुदूर मुमकिन है, मुख़्तार और पसन्दीदा बात येह है कि रिया की तासीर से अ़मल की क़बूलिय्यत ख़त्म हो जाती है और सवाब में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है। बाक़ी येह अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि निस्फ़ सवाब ज़ाएअ़ होता है या चोथाई सवाब और इन मसाइल की शर्ह़ बड़ी त़वील है, हम इन की मुकम्मल और पूरी शर्ह़ व तफ़्सील किताब एह़याउल उ़लूम और असरारे मुआ़मलाते दीन में कर चुके हैं।

अगर तुम येह सुवाल करो कि इख़्लास का मौक़ेअ़ महूल कौन सा है और किस इ़बादत में येह पाया जाता है और कहां वाजिब व ज़रूरी है? तो इस का जवाब येह है कि बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक आ'माल तीन क़िस्म हैं, एक क़िस्म वोह है जिस में दोनों क़िस्म का

www.dawateislami.net

इख़्लास पाया जाता है और वोह इबादाते ज़ाहिरा अस्लिय्या हैं जैसे नमाज़ वग़ैरा। दूसरी क़िस्म इबादात की वोह है जिस में दोनों क़िस्म का इख़्लास नहीं पाया जाता वोह इबादाते बातिनिय्या अस्लिय्या हैं जैसे ईमान तवक्कुल वग़ैरा और आ'माल की तीसरी क़िस्म वोह है जिस में तलबे अज्र व सवाब का इख़्लास तो पाया जाता है लेकिन इख़्लासुल अमल नहीं पाया जाता और येह वोह मुबाहात हैं जो सामाने आख़िरत के तौर पर इन्सान अपने पास रखता है। हमारे शैख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया है वोह इबादाते अस्लिय्या जो ग़ैरुल्लाह के लिये भी हो सकती हैं उन में इख़्लासे अमल पाया जाता है तो अकसर इबादाते बातिनिय्या में इख़्लासे अमल मुतहक़्क़िक़ होता है। लेकिन तलबे अज्र में इख़्लास, तो येह अकसर मशाइख़े किरामिय्या के नज़दीक इबादाते बातिनिय्या में नहीं पाया जाता। क्यूंकि इन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मुत्तलअ़ नहीं होता। तो इन में रिया के अस्बाब व दवाई नहीं पाए जा सकते। लिहाज़ा इन में तलबे अज्र के इख़्लास की हाजत और ज़रूरत नहीं पड़ती। हमारे शैख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का कहना है कि जब एक बन्दए मुक़र्रब इबादाते बातिना से दुन्यवी नफ़्अ़ का क़स्द करे तो येह भी रिया में दाख़िल है, मैं कहता हूं इस सूरत में कोई बईद नहीं कि बहुत सी इबादाते बातिना में दोनों क़िस्म का इख़्लास पाया जाए। इसी तरह नवाफ़िल शुरूअ़ करते वक़्त दोनों क़िस्म का इख़्लास होना ज़रूरी है, लेकिन वोह मुबाहात जो तय्यारिये आख़िरत की ग़रज़ से इन्सान ने अपने पास रखे हुए हैं इन में तलबे सवाब का इख़्लास तो पाया जाता है मगर इख़्लासे अमल नहीं पाया जाता क्यूंकि येह मुबाहात ब ज़ाते ख़ुद इबादत व क़ुर्बत नहीं हैं, बल्कि क़ुर्बत व बन्दगी का ज़रीआ़ हैं।

सुवाल : अगर तुम कहो कि येह जो बयान किया गया है येह दोनों क़िस्म के इख़्लास के मौक़अ़ व महल का बयान था इन दोनों का वक़्त भी बताएं।

www.dawateislami.net

जवाब : इख़्लासे अ़मल तो फ़े'ल के साथ ही होता है इस से जुदा और मोअख़्ख़र नहीं हो सकता। लेकिन अज्र त़लब करने में इख़्लासे अ़मल से जुदा और मोअख़्ख़र हो सकता है और बा'ज़ उ़लमा अ़मल से फ़राग़त के वक़्त का ए'तिबार करते हैं, या'नी अ़मल से फ़राग़त इख़्लास की कैफ़िय्यत पर होती है तो इख़्लास का ए'तिबार होगा और अगर रिया पर होती हो तो रिया का ए'तिबार होगा और चूंकि अ़मल से फ़राग़त हो चुकी है, इस लिये अब इस का तदारुक मुमकिन नहीं और मशाइख़े कर्रामिया के नज़दीक जब तक अ़मल से कोई दुन्यवी मन्फ़अ़त ह़ासिल न की हो और इख़्लास का इरादा कर लिया जाए तो इख़्लास मो'तबर हो जाएगा। लेकिन अगर दुन्यवी मन्फ़अ़त ह़ासिल कर ली हो तो फिर इख़्लास का ए'तिबार नहीं किया जा सकता और बा'ज़ उ़लमा का ख़याल है कि फ़राइज़ में मौत तक इख़्लास का पैदा कर लेना मुमकिन है। लेकिन नवाफ़िल में नहीं और उन्हों ने फ़राइज़ और नवाफ़िल में फ़र्क़ की येह वजह बयान की है कि फ़राइज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बन्दा दाख़िल होता है तो इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की त़रफ़ से आसानी की उम्मीद होती है। लेकिन नवाफ़िल में येह सूरते ह़ाल नहीं क्यूंकि नवाफ़िल बन्दा अपनी मर्ज़ी और चाहत से शुरूअ़ करता है। लिहाज़ा इन में उस से मुत़ालबा किया जाता है कि वोह इन्हें कमाह़क़्क़ुहू अदा करे और इन में ज़रा सी कोताही न आने दे, मैं कहता हूं कि इस मस्अले में एक फ़ाइदा है, वोह येह कि जिस शख़्स से रिया का सुदूर हो चुका हो, या तर्के इख़्लास का इर्तिकाब हो चुका हो तो उस के लिये मज़कूरा वुजूह की रौशनी में तलाफ़ी और तदारुक की गुन्जाइश है। इन बारीक और दक़ीक़ मसाइल में लोगों के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब नक़्ल करने का एक मक़्सद येह है कि फ़ी ज़माना ग़फ़्लत के सबब तसव्वुफ़ की राह पर चलने वाले जिन का शौक़ व जज़्बा मांद पड़ चुका है वोह फिर से पुर अ़ज़्म हो जाएं। और दूसरा मक़्सद येह है कि इस रास्ते की जानिब

www.dawateislami.net

क़दम बढ़ाने वाले को क़रीब लाया जाए कि अगर उसे अपनी बीमारियों का इलाज एक मज़हब में न मिले तो दूसरे मज़हब में पा ले क्यूंकि इन्सानी अमराज़, अग़राज़, आ'माल की ख़राबियां और इन की आफ़ात मुख़्तलिफ़ हैं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुम येह बातें अच्छी त़रह़ समझ लोगे।

सुवाल : क्या हर अ़मल में इख़्लासे मुफ़रिद ही सिर्फ़ काफ़ी हो सकता है या हर अ़मल के हर जुज़्व के लिये अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा इख़्लासे जदीद की ज़रूरत है ?

जवाब : इस में उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इख़्तिलाफ़ है, बा'ज़ तो येह कहते हैं सारे अ़मल के लिये एक ही इख़्लास की ज़रूरत है और बा'ज़ येह कहते हैं कि कुछ आ'माल ऐसे हैं जिन में एक इख़्लास ही किफ़ायत करता है जैसे वोह आ'माल जो मुख़्तलिफ़ अरकान से मुरक्कब हैं लेकिन मजमूई त़ौर पर एक शै की ह़ैसिय्यत रखते हैं जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरा।

सुवाल : एक शख़्स अपने अ़मले ख़ैर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ख़ुशनूदी नहीं बल्कि अपने नफ़्अ़ और फ़ाइदे का इरादा करता है। लोगों से कोई इरादा नहीं रखता या'नी उस के दिल में येह बात नहीं कि इस अ़मले ख़ैर पर लोग मेरी ह़म्दो सना करें, या मेरे अ़मल को देखें या मुझे कोई नफ़्अ़ पहुंचाएं तो क्या इस क़िस्म का अ़मल भी रियाकारी में दाख़िल है ?

जवाब : इस क़िस्म का अ़मल ख़ालिस रियाकाराना अ़मल है, उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अ़मल में मुराद का ए'तिबार होता है, इस का ए'तिबार नहीं होता जिस से मुराद त़लब की जा रही हो, लिहाज़ा अ़मल से तेरी मुराद अगर दुन्यवी नफ़्अ़ और फ़ाइदा हो तो बहर ह़ाल येह रिया है चाहे ख़ुदा तआ़ला से येह मुराद त़लब की जा रही हो या लोगों से। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।*

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الۡاٰخِرَةِ نَزِدۡ لَهٗ فِىۡ حَرۡثِهٖ‌ ۚ وَمَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الدُّنۡيَا نُؤۡتِهٖ مِنۡهَا وَمَا لَهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ مِنۡ نَّصِيۡبٍ ﴿۲۰﴾ (پ۲۵،الشورٰی:۲۰)

और लफ़्ज़े रिया का ए'तिबार नहीं, बल्कि निय्यत और मुराद का ए'तिबार है और येह लफ़्ज़ रुयतुन से मुश्तक़ (निकाला गया) है, इस से इश्तिक़ाक़ (निकालने) की वजह येह है कि येह इरादए फ़ासिदा अकसर व बेशतर लोगों की त़रफ़ से और उन के देखने की वजह से पैदा होता है।

सुवाल : अगर एक शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुन्या इस लिये त़लब करे कि वोह लोगों के सामने दस्ते ह़ाजत दराज़ करने से बचे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी और इबादत में दिल जमई से मस्रूफ़ व मश्ग़ूल रह सके तो क्या ऐसा क़स्द व इरादा भी रिया में दाख़िल है ?

जवाब : लोगों के सामने हाथ फैलाने से बचना कसरते माल व जाह और सामाने दुन्या की ज़ियादती से नहीं होता बल्कि येह चीज़ तो क़नाअ़त और ख़ुदा तआ़ला पर कामिल भरोसे और तवक्कुल से होती है लेकिन अगर त़लबे दुन्या से उस का मक़्सद यकसूई से इबादत में मस्रूफ़ होना हो तो इस त़रह़ का मक़्सद व इरादा रिया में दाख़िल नहीं लेकिन इस से वोही चीज़ें मुराद होंगी जो आख़िरत और अस्बाबे आख़िरत से तअ़ल्लुक़ रखती हैं और इस का क़स्द भी क़त़अ़न आख़िरत की तय्यारी से ही मुतअ़ल्लिक़ हो। अगर किसी अ़मले ख़ैर से इस क़िस्म का इरादा हो तो वोह रिया नहीं क्यूंकि दुन्यवी उमूर इस इरादे से ख़ैर बन जाते हैं या आ'माले आख़िरत के हुक्म के तह़त आ जाते हैं और ख़ैर का इरादा रिया नहीं हो सकता। यूं ही अगर तुम येह इरादा करो कि लोगों में तुम्हारी इ़ज़्ज़त हो और

www.dawateislami.net

मशाइख़ और मज़हबी रहनुमा तुम से महब्बत करें। लेकिन इस से तुम्हारा मक़्सूद येह हो कि तुम्हें अहले हक़ के मज़हब की ताईद व तक़विय्यत की क़ुदरत हासिल हो या इस तरह मोअस्सिर तौर तरीक़े पर अहले बिदअ़त का रद्द कर सको, ठोस तरीक़े से इल्मे दीन की इशाअ़त कर सको और लोगों को इबादत की तह़रीस व तरग़ीब दे सको। अपने नफ़्स की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी और हुसूले दुन्या की निय्यत न हो तो दीन से मुतअ़ल्लिक़ इस तरह के तमाम मज़बूत इरादे और अच्छी निय्यतें रिया में दाख़िल नहीं, क्यूंकि दर ह़क़ीक़त इन से मक़्सूद आख़िरत है।

मैं ने बा'ज़ मशाइख़ से पूछा कि कई औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ الله की आ़दत है कि वोह उ़स्रत व तंगी के अय्याम में सूरए वाक़िआ़ पढ़ते हैं। क्या उन की निय्यत येह नहीं होती कि इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की इस उ़स्रत और तंगी को दूर करे और उन्हें रिज़्क़ के मुआ़मले में फ़राख़ी और वुस्अ़त अ़ता करे। क्या अ़मले आख़िरत से हुसूले दुन्या का इरादा करना दुरुस्त है?

बा'ज़ मशाइख़ की तरफ़ से इस का जो जवाब मुझे मिला उस का मफ़्हूम येह था कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की मुराद व निय्यत इस से येह होती है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें क़नाअ़त अ़ता करे और इतनी मिक़्दार में रोज़ी अ़ता करे जिस से वोह इबादाते इलाही बजा लाते रहें और दर्स व तदरीस की क़ुव्वत बह़ाल रहे तो इस तरह़ का इरादा नेक इरादा है दुन्या का इरादा नहीं।

जानना चाहिये कि उ़स्रत व तंगी के वक़्त फ़राख़िये रिज़्क़ के लिये इस सूरत को पढ़ने का मा'मूल बनाना ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھُم से मरवी है यहां तक कि ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ ने ब वक़्ते वफ़ात सब माल ख़ैरात कर दिया और अपनी अवलाद के लिये कुछ न छोड़ा तो इस

www.dawateislami.net

फ़े'ल पर जब उन को मलामत की गई तो उन्हों ने जवाब दिया मैं अपनी अवलाद के लिये सूरए वाक़िआ़ छोड़ कर जा रहा हूं।

(شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل سورو الآیات،الحدیث:۲۴۹۷،ج۲،ص۴۹۱)

सुन्नत के इसी उसूल के मुत़ाबिक़ हमारे उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस क़िस्म की बातें इख़्तियार कीं वरना بِحَمْدِاللهِ تَعَالٰی उन्हें दुन्या की उ़स्रत और फ़राख़ी की कोई परवाह नहीं थी बल्कि वोह तो अस्बाबे दुन्या की कमी और उ़स्रत व तंगी को ग़नीमत जानते थे और इस में एक दूसरे पर फ़ौक़िय्यत ले जाने की कोशिश करते थे और माली तंगदस्ती को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़साने अ़ज़ीम तसव्वुर करते और जब अपने आप को साज़ो सामाने दुन्यवी की वुस्अ़त व कुशादगी में देखते तो सख़्त डर जाते। ह़ालांकि अक्सर लोग दुन्यवी माल व ने'मत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम ख़याल करते हैं। बा वुजूद येह कि येह वुस्अ़ते माल व दौलत उन के लिये इस्तिदराज और मुसीबत होता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे उ़स्रत व तंगदस्ती को क्यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान तसव्वुर न करें जब कि उन की अन्दरूनी ह़ालत येह होती है कि वोह उ़मूमन भूक की ह़ालत में होते हैं। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाया करते थे : भूक हमारा सरमाया है। इस बारे में अहले तसव्वुफ़ का मज़हब येही है और मेरा और मेरे मशाइख़ का मज़हब भी येही है और हमारे अस्लाफ़ की सीरत भी येही थी। बाक़ी रहा इस सिल्सिले में बा'ज़ मुतअख़्ख़िरीन का कोताही करना तो इस का कोई ए'तिबार नहीं। रिज़्क़ की वुस्अ़त और तंगी के मुतअ़ल्लिक़ उन के नुक़्त़ए नज़र मैं ने इस लिये बयान किया है ताकि मुख़ालिफ़ जहालत की वजह से उन को ह़क़ीर और मजबूर ख़याल न करे या सह़ीहुल अ़क़ीदा मुब्तदी (राहे इ़बादत में क़दम रखने वाला) उन के मुतअ़ल्लिक़ ग़लत़ी में मुब्तला न हो।

www.dawateislami.net

सुवाल : अहले इ़ल्म, इ़बादत के लिये तन्हाई इख़्तियार करने वाले और अरबाबे सब्र व क़नाअ़त को येह कब लाइक़ है कि वोह हुसूले दुन्या के लिये वज़ीफ़े करते फिरें ?

जवाब : जब मक़्सूद हुसूले क़नाअ़त और तय्यारिये आख़िरत हो तो फिर इतनी क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये कि भूक के सबब मौत न वाक़ेअ़ हो जाए कोई वज़ीफ़ा पढ़ना या क़ुरआन की सूरत पढ़ना सुन्नत से साबित है। हां ह़िर्स व शहवत और उ़स्रत व तंगदस्ती के ख़ौफ़ से अपने माल को दुगना करने के लिये ऐसा करना दुरुस्त नहीं, और अकसर व बेशतर तू इस सूरत को पढ़ने के बा'द अपने दिल में क़नाअ़त मह़सूस करेगा और भूक की वजह से पैदा होने वाले ग़म को भी मफ़्क़ूद पाएगा। नीज़ त़आ़म से बे नियाज़ी को भी मह़सूस करेगा जिन लोगों ने इस का तजरिबा किया है उन को इस का अच्छी त़रह़ इ़ल्म है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे तौफ़ीक़ दे इस तह़क़ीक़ को ज़ेह्न में रख।

दय्यूस की ता'रीफ़

*जो शख़्स अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए (वोह "**दय्यूस**" है)* (دُرِّمُختار،ج٦،ص١١٣)

*बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों, बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों और **मख़्लूत़** तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अज्नबी पड़ोसियों, ना मह़रम रिश्तेदारों, ग़ैर मह़रम मुलाज़िमों, चोकिदारों और ड्राईवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले **दय्यूस** जन्नत से मह़रूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं।*

कीना की ता'रीफ़

*दिल की छुपी हुई दुश्मनी को **कीना** कहते हैं।*

(फ़ैज़ाने सुन्नत जि. 1 स. 1412)

www.dawateislami.net

उ़जब का बयान

आ'माल को ज़ाएअ़ कर देने वाली एक और बुराई **उ़जब** है इस से बचना दो वजह से ज़रूरी है, एक तो येह कि **उ़जब** के बाइ़स इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से मिलने वाली तौफ़ीक़ व ताईद से मह़रूम हो जाता है। **उ़जब** में गिरिफ़्तार इन्सान आख़िरे कार ज़लील व ख़्वार होता है, जब इन्सान तौफ़ीक़ व ताईदे ख़ुदावन्दी से मह़रूम हो जाता है तो हलाकत व बरबादी का जल्द शिकार होता है, इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन्सान को तीन चीज़ें हलाक करती हैं, बुख़्ल जिस की पैरवी की जाए, ख़्वाहिशे नफ़्सानी जिस का इन्सान मुत्तबेअ़ बन जाए और आदमी का अपने आप को अच्छा जानना। (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللّٰہ تعالٰی،الحدیث:٧٤٥،ج١،ص٤٧١)

दूसरी वजह येह है कि **उ़जब** अ़मले सालेह़ को तबाह व बरबाद कर देता है। इसी लिये ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़वारियों से फ़रमाया : बहुत से चिराग़ हैं जिन को हवा ने बुझा दिया और बहुत से आ़बिद हैं जिन को **उ़जब** ने तबाह कर दिया। जब इन्सानी ज़िन्दगी से मक़्सूद और ग़र्ज़ व ग़ायत इ़बादत व बन्दगी है और येह ख़स्लत इन्सान को इस मक़्सूद से मह़रूम कर देती है कि इन्सान किसी ख़ैर को ह़ासिल नहीं कर सकता और अगर कुछ थोड़ी बहुत नेकी कर भी ले तो येह **उ़जब** उस को भी तबाह कर देता है और उस के हाथ में कुछ भी नहीं रहता तो बहुत ज़रूरी है कि इन्सान इस से बचे और मह़फ़ूज़ रहे। وَاللّٰہُ وَلِیُّ التَّوْفِیْقِ وَالْعِصْمَۃ.

उ़जब की ह़क़ीक़त और इस का मा'ना

अगर तुम येह दरयाफ़्त करो कि **उ़जब** की ह़क़ीक़त और इस का मा'ना क्या है, नीज़ इस की तासीर और इस का हुक्म और नतीजा क्या है इस की वज़ाह़त होनी चाहिये तो तुम्हें मा'लूम

www.dawateislami.net

होना चाहिये कि **उ़जब** की ह़क़ीक़त येह है :

اَلْعُجُبُ اِسْتِعْظَامُ الْعَمَلِ الصَّالِح (الطريقة المحمدية،الخلق الرابع عشر من الاخلاق...الخ،ج١،ص٥٩٠)

अपने नेक आ'माल को अ़ज़ीम ख़याल करने का नाम उ़जब है।

हमारे उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़दीक **उ़जब** की तफ़्सील येह है कि बन्दा येह ज़िक्र व इज़्हार करे कि उसे इन नेक आ'माल का शरफ़ अपनी ज़ात, फ़ुलां शै और मख़्लूक़ से ह़ासिल हुवा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सान का ज़िक्र व इज़्हार न करे। उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का बयान है कि **उ़जब** में मुब्तला इन्सान बा'ज़ अवक़ात तीनों चीज़ों का ज़िक्र करता है, बा'ज़ अवक़ात दो का और बा'ज़ अवक़ात सिर्फ़ एक का ज़िक्र करता है और **उ़जब** की ज़िद एह़सान और मिन्नत है। एह़सान व मिन्नत से येह मुराद है कि इन्सान येह ज़ाहिर करे कि येह सब बुज़ुर्गी व फ़ज़ीलत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ताईद व तौफ़ीक़ से है और मुझे येह ह़ासिल शुदा शरफ़ व बुज़ुर्गी और मर्तबा व मक़ाम अ़ता करने वाला रब तआ़ला है। **उ़जब** के अस्बाब व अ़लामत के ज़ुहूर के वक़्त ख़ुदा तआ़ला के एह़सान का ज़िक्र करना फ़र्ज़ हो जाता है और आ़म अवक़ात व ह़ालात में इस एह़साने ख़ुदावन्दी का तज़्किरा मुस्तह़ब व बेहतर है। बाक़ी रही **उ़जब** व ख़ुद सताई की अ़मले सालेह़ में तासीर तो इस के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि **उ़जब** वाले इन्सान के आ'माल को ज़ाएअ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ इन्तिज़ार किया जाता है। अगर वोह मौत से पहले **तौबा** कर ले तो उस के आ'माल ज़ाएअ़ होने से बच जाते हैं वरना ज़ाएअ़ कर दिये जाते हैं। फ़िर्क़ा कर्रामिया(1) के मशाइख़ में से मुह़म्मद बिन साबिर का येही मज़हब है, मुह़म्मद बिन साबिर के नज़दीक आ'माल के ज़ाएअ़ होने का मत़लब येह है

---

(1).....येह फ़िर्क़ा अबू अ़ब्दुल्लाह बिन किराम से मन्सूब है इस का अ़क़ीदा है कि ज़बानी इक़रार ही ईमान है, क़ल्ब की तस्दीक़ इस के लिये ज़रूरी नहीं।

www.dawateislami.net

कि अ़मले सालेह़ हर क़िस्म की अच्छाई से ख़ाली हो जाए कि अज्र व सवाब और मद्ह़ तक का मुस्तह़िक़ न रहे, मुह़म्मद बिन साबिर के इ़लावा दूसरों के नज़्दीक आ'माल ज़ाएअ़ होने का मत़लब येह है कि अ़मले सालेह़ पर दुगना-तिगना सवाब जो मिलना था वोह ज़ाएअ़ हो जाता है अ़मल का अस्ल सवाब बाक़ी रहता है।

सुवाल : आ़रिफ़ शख़्स पर येह बात कैसे पोशीदा रह सकती है कि अ़मले सालेह़ की तौफ़ीक़ देने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है और वोही अपने फ़ज़्ल व एह़सान से बुलन्द मर्तबा और कसीर सवाब अ़त़ा करता है।

जवाब : दर अस्ल यहां एक लत़ीफ़ नुक्ता है जिस को ज़ेह्न नशीन कर लेना जवाब के तमाम पहलू वाज़ेह़ कर देता है और वोह येह है कि **उ़जब** के मुआ़मले में लोग तीन क़िस्म के हैं। एक वोह हैं जो हर ह़ाल में **उ़जब** व ख़ुद सताई का शिकार हैं और येह मो'तज़िला और क़दरिय्या का गुरौह है जो अपने अफ़्आ़ल का ख़ुद अपने आप को ख़ालिक़ जानता है और इस मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अपने ऊपर कोई एह़सान तस्लीम नहीं करता और उस की मदद व नुस्रत, तौफ़ीक़ और लुत़्फ़े ख़ास का मुन्किर है और इस ख़राबी की वजह इन का येही शुबा है जिस में येह मुब्तला हैं। दूसरा गुरौह उन कामिलीन का है जो हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सान को ही याद करते हैं। उन को अपने किसी भी अ़मल में **उ़जब** लाह़िक़ नहीं होता और येह इस बसीरत के बाइ़स है जो उन को अ़त़ा होती है और इस ताईद की वजह से है जो उन्हीं के साथ ख़ास है।

तीसरा गुरौह वोह आ़म अहले सुन्नत व जमाअ़त हैं जो जब ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार होते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ही एह़सान मानते हैं और जब उन पर ग़फ़्लत त़ारी होती है तो **उ़जब** व ख़ुद सताई का शिकार हो जाते हैं ऐसा इन की ग़फ़्लत, इ़बादत में सुस्ती और बसीरत की कमी की वजह से होता है।

www.dawateislami.net

सुवाल : मो'तज़िला और **क़दरिय्या** के अफ़्आ़ल व आ'माल की सूरते ह़ाल क्या है क्या इस **उ़जब** की वजह से उन के सब आ'माल ज़ाएअ़ और बरबाद हैं ?

जवाब : इस में बहुत इख़्तिलाफ़ है, बा'ज़ का क़ौल है कि इन के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ और बेकार हैं क्यूंकि इन का अ़क़ीदा ही ख़राब है और बा'ज़ कहते हैं अगर कोई शख़्स फ़िल जुम्ला इस्लामी अ़क़ीदे रखता हो तो थोड़ी बहुत ए'तिक़ादी ग़लती से उस के आ'माल ज़ाएअ़ नहीं होते जब तक हर अ़मल में **उ़जब** मौजूद न हो, जिस त़रह़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत होते हुए येह ज़रूरी नहीं कि तमाम आ'माल में **उ़जब** से मह़फ़ूज़ रहे जब तक ख़ुसूसिय्यत से हर अ़मले सालेह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान तसव्वुर न करे ।

सुवाल : क्या रिया और **उ़जब** के इलावा भी कोई चीज़ आ'माल को नुक़्सान देती है ?

जवाब : इन के इ़लावा भी बहुत ऐसी चीज़ें हैं जो आ'माल को ख़राब करती हैं, हम ने इन दो का ख़ुसूसिय्यत से इस लिये ज़िक्र किया है कि बरबादिये आ'माल में अस्ल और बुन्याद की ह़ैसिय्यत रखते हैं। वरना बा'ज़ मशाइख़ का क़ौल है कि बन्दे पर लाज़िम है कि अपने अ़मल को दस चीज़ों से मह़फ़ूज़ रखे । (1) निफ़ाक़ (2) रिया (3) लोगों से मैल जोल (4) एह़सान जतलाने (5) अज़िय्यत देने (6) नदामत (7) **उ़जब** (8) ह़स्रत (9) सुस्ती और काहिली से और (10) लोगों की मलामत के ख़ौफ़ से या'नी अगर मैं ने फ़ुलां नेक काम किया तो लोग मलामत करेंगे । फिर हमारे शैख़े मुकर्रम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने इन में से हर एक की ज़िद और इन से आ'माल को जो ज़रर पहुंचता है सब बयान किया है । चुनान्चे आप फ़रमाते हैं निफ़ाक़ की ज़िद इख़्लासे अ़मल है और रिया की ज़िद त़लबे सवाब में इख़्लास पैदा करना है और लोगों से मैल जोल की ज़िद अ़लाह़िदगी

www.dawateislami.net

और ख़ल्वत है और एह़सान जतलाने की ज़िद अपने अ़मल को ख़ुदा तआ़ला के सिपुर्द करना है और अज़िय्यत देने की ज़िद अपने अ़मल की हिफ़ाज़त है। नदामत की ज़िद नफ़्स को मज़बूत़ और क़ाइम करना है, और **उ़जब** की ज़िद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सान का इज़्हार है, ह़स्रत की ज़िद नेकी और ख़ैर को ग़नीमत जानना है। सुस्ती की ज़िद तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी की ता'ज़ीम करना है, ख़ौफ़े मलामत की ज़िद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़शिय्यत और उस का डर है। निफ़ाक़ से अ़मल ज़ाएअ़ और बरबाद होता है। रिया अ़मल को मर्दूद बनाता है। एह़सान जतलाना और अज़िय्यत देना स-दक़े के सवाब को बरबाद करते हैं और बा'ज़ मशाइख़ के नज़दीक एह़सान जतलाने और अज़िय्यत देने से अस्ल अ़मल का सवाब ज़ाएअ़ नहीं होता। अलबत्ता दुगना-तिगना सवाब जो मिलना था वोह ज़ाएअ़ हो जाता है। लेकिन नेक अ़मल पर नदामत भी बिल इत्तिफ़ाक़ अ़मल को बेकार करती है। **उ़जब** से आ'माल का ज़ाइद सवाब ज़ाएअ़ होता है और ह़स्रत और सुस्ती और ख़ौफ़े मलामत से अ़मल का सवाब कम होता है और अ़मल की क़द्र व क़ीमत नाक़िस हो जाती है।

मैं कहता हूं आ'माल का मक़्बूल या मर्दूद होना अहले इ़ल्म के नज़दीक अ़मल की ता'ज़ीम और तख़्फ़ीफ़ पर इन्ह़िसार करता है और आ'माल के ज़ाएअ़ होने की भी मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। बा'ज़ अवक़ात तो अ़मल में की जाने वाली कोई ख़राबी नफ़्अ़ की बरबादी का बाइ़स होती है और बा'ज़ अवक़ात आ'माल में रिया वग़ैरा की ख़राबी अ़मल के बेकार हो जाने का सबब बन जाती है। फिर बा'ज़ अवक़ात आ'माल पर सवाब ही नहीं मिलता और बा'ज़ दफ़्अ़ आ'माल का ज़ाइद सवाब नहीं मिलता। और सवाब तो अ़मल का नफ़्अ़ है जिस के लिये अ़मल किया जाता है और येह अ़मल की ह़ालत और कैफ़िय्यत के मुत़ाबिक़ होता है और तज़ईफ़ (या'नी इस

www.dawateislami.net

सवाब का दुगना तिगना होना) वोह ज़ियादती व इज़ाफ़ा है जो इस अस्ल सवाब पर बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ा किया जाता है और आ'माल की ख़ूबी और उस की क़द्र व क़ीमत उस ज़ियादती का नाम है जो दूसरे ख़ारिजी ह़ालात व क़राइन की वजह से ह़ासिल होती है, मसलन नेक लोगों से ह़ुस्ने सुलूक करना भी बड़े सवाब का काम है मगर वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक करना तो इस से भी बढ़ कर सवाब का बाइ़स है और नबी से ह़ुस्ने सुलूक से पेश आना तो बहुत ही ज़ियादा अज्र व सवाब का बाइ़स है। इस त़रह़ अ़मल की ख़ूबी और इस की क़द्र व क़ीमत तो बढ़ जाती है मगर इस का सवाब दुगना तिगना नहीं मिलता। इस बाब में येह गुफ़्त्गू मेरी तह़क़ीक़ का ख़ुलासा है इस लिये इसे अच्छी त़रह़ समझ लो, وبِاللّٰهِ التَّوفِيق

फ़स्ल
उ़जब और रिया से बचने के उसूल

तुम पर **उ़जब** व रिया जैसी ख़ौफ़नाक व पुर ख़त़र वादी का तै करना भी ज़रूरी है, येह वादी कई त़रह़ की हलाकत ख़ेज़ियों को अपने अन्दर लिये हुए है। लिहाज़ा इस में सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है, इ़बादात और नेकियों का सरमाया रखने वाले को इस घाटी से गुज़रना पड़ता है और इस रास्ते की तमाम मशक़्क़तें बरदाश्त करना पड़ती हैं और इन घाटियों को उ़बूर करने से ही आ़बिद को दर ह़क़ीक़त इ़बादत का मुअ़ज़्ज़ज़ और उ़म्दा सरमाया हाथ आता है और इस सरमाए के ज़ाएअ़ होने का ज़ियादा तर ख़त़रा इसी घाटी में पेश आता है क्यूंकि इस घाटी में रहज़न शैत़ान के ऐसे ऐसे मक़ामात और आ'माल की तबाही व बरबादी के ऐसे ऐसे मवाज़ेअ़ मौजूद हैं जिन में इस सरमाये के छिन जाने के ज़बरदस्त ख़त़रात पाए जाते हैं और ऐसी ऐसी आफ़ात नुमूदार होती हैं जो बन्दे की इ़बादत व इत़ाअ़त को बेकार कर के रख देती हैं सब से ज़ियादा वाक़ेअ़ होने वाली और सब से बड़ी येह दो आफ़तें

www.dawateislami.net

हैं, एक रिया दूसरा **उ़जब**, लिहाज़ा हम यहां इन दोनों से बचाव के चन्द ज़रूरी और जामेअ़ उसूल ज़िक्र करते हैं इन को ज़ेह्न नशीन करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम इन के नुक़्सानात से बचे रहोगे।

पहला उसूल :

रिया के बारे में सब से पहले मैं ख़ुदा तआ़ला का येह इरशाद नक़्ल करता हूं :

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ۬ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾ (پ۲۸،الطلاق:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह है जिस ने सात आसमान बनाए और उन्हीं की बराबर ज़मीनें हुक्म इन के दरमियान उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है और अल्लाह का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है।*

इस आयत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने गोया यूं फ़रमाया है, मैं ने आसमान पैदा किये और ज़मीनें पैदा कीं और इन दोनों के दरमियान अपनी क़ुदरते कामिला के अ़जीब व ग़रीब शाहकार भी पैदा किये येह सब कुछ पैदा कर के तेरी नज़रे इ़ब्रत के ह़वाले कर दिया ताकि तू ख़ुद मुशाहदे से जान ले कि मैं क़ादिर भी हूं, आ़लिम भी हूं और ऐ इन्सान तेरे नक़्स व ज़ो'फ़ का येह ह़ाल है कि दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ता है मगर उस में भी तुझ से कई त़रह़ की कोताही वाक़ेअ़ हो जाती है और कई क़िस्म के उ़यूब व नक़ाइस रह जाते हैं। मैं चूंकि क़ादिर होने के साथ साथ आ़लिम भी हूं इस लिये तेरी इन दो रक्अ़तों को अच्छी त़रह़ देख रहा हूं। मगर तू अपनी इस नाक़िस इ़बादत के बारे में मेरी नज़र, मेरे इ़ल्म, मेरी मद्ह़ व सना और क़बूलिय्यत व क़द्र दानी पर किफ़ायत नहीं करता बल्कि तू इस का त़ालिब होता है कि लोगों को तेरी इस इ़बादत का ह़ाल मा'लूम हो ताकि लोग तेरी मद्ह़ व सना करें।

www.dawateislami.net

क्या तेरा येह रविय्या वफ़ादारी का रविय्या है? क्या येह दानिशमन्दी की बात है? ऐसा रविय्या कोई अ़क्लमन्द अपने लिये इख़्तियार नहीं करता, तुझ पर अफ़्सोस तू बड़ी बे समझी का मुज़ाहरा करता है।

दूसरा उसूल :

जिस शख़्स के पास एक नफ़ीस शै हो जिसे बेच कर वोह लाखों दीनार वुसूल कर सकता हो फिर वोह एक पैसे के इवज़ फ़रोख़्त कर दे तो क्या येह अ़ज़ीम ख़सारा नहीं कहलाएगा? और येह इन्तिहाई दर्जा का नुक़्सान नहीं होगा? और इस का येह फे़'ल उस की पस्त हिम्मती और इ़ल्म की कमी की दलील नहीं होगा? और येह इस की कमज़ोरिये राय और कम अ़क्ली का सुबूत नहीं? ज़रूर इस की कम अ़क्ली का सुबूत है। **बि ऐ़निही** येही ह़ालत उस बन्दे की है जो अपने अ़मल से ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा, उस की बारगाह में अपने अ़मल की क़बूलिय्यत, मद्ह़ व सताइश और सवाब को छोड़ कर मख़्लूक़ की त़रफ़ से ता'रीफ़ व तौसीफ़ और ज़लील दुन्या का त़लबगार हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व सवाब के मुक़ाबले में मख़्लूक़ की मद्ह़ व सना और दुन्या की त़लबगारी लाखों दीनार के मुक़ाबले में एक पैसे से भी कम हैसिय्यत रखती है बल्कि तमाम दुन्या व मा फ़ीहा बल्कि एक दुन्या नहीं इस त़रह़ की बीसियों दुन्या भी ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा के सामने हेच और बे ह़ैसिय्यत हैं। क्या येह वाज़ेह़ ख़सारा नहीं कि अपने नफ़्स को आ'माले सालिह़ा के इवज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाली इनायाते अ़ज़ीमा को छोड़ कर इन ह़क़ीर और ज़लील चीज़ों को चाहे और क़बूल करे। फिर अगर ह़क़ीर दुन्या की चाहत और कम हिम्मती का मुज़ाहरा करने से बाज़ नहीं आ सकते, तो फिर भी आख़िरत ही को चाहो दुन्या इस के साथ ख़ुद ब ख़ुद मिल जाएगी बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा और ख़ुशनूदी के ही त़लबगार बनो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें दोनों जहां

www.dawateislami.net

की ने'मतों से माला माल कर देगा, क्यूंकि वोह दुन्या व आख़िरत सब का मालिक है, चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ (پ ٥، النساء: ١٣٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो दुन्या का इन्आ़म चाहे तो अल्लाह ही के पास दुन्या व आख़िरत दोनों का इन्आ़म है।*

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللّٰهَ لَيُعْطِى الدُّنْيَا بِعَمَلِ الْاٰخِرَةِ وَلَا يُعْطِى الْاٰخِرَةَ بِعَمَلِ الدُّنْيَا (فردوس الاخبار، باب الالف، ج ١، ص ٣٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नेक आ'माल के तुफ़ैल दुन्या भी अ़त़ा कर देता है, मगर आ'माले दुन्यवी के साथ आख़िरत अ़त़ा नहीं करता।

तो जब तुम निय्यत ख़ालिस कर लो और अपनी हिम्मत व कोशिश को आख़िरत के लिये सर्फ़ कर दो तो तुम्हें दुन्या व आख़िरत दोनों मिल जाएंगी। लेकिन अगर तुम ने सिर्फ़ दुन्या को ही चाहा तो आख़िरत तुम्हारे हाथ से निकल जाएगी और बसा अवक़ात इतनी दुन्या भी तुम को न मिलेगी जितनी तुम चाहते थे और अगर ह़स्बे मन्शा तुम को दुन्या मिल भी गई तो फिर भी वोह चन्द दिन की बहार है, तो त़ालिबे दुन्या बन कर तुम ने दुन्या व आख़िरत दोनों का ख़सारा मोल ले लिया लिहाज़ा दानिश मन्दी का सुबूत दो।

तीसरा उसूल :

वोह मख़्लूक़ जिस के लिये तुम काम करोगे और जिस की रिज़ा के त़ालिब बनोगे अगर उसे मा'लूम हो जाए कि तुम उस की रिज़ा के लिये येह काम कर रहे हो तो वोह तुम्हें बुरा जानेगी और तुम पर नाराज़ होगी और तुम्हें ज़लील और हल्का जानेगी। तो एक अ़क़्लमन्द आदमी इस के लिये कोई काम करने को तय्यार नहीं हो सकता जिस को अगर पता चल जाए कि वोह मेरी रिज़ा के लिये काम कर रहा है तो उस पर नाराज़ हो और उस को ज़लील जाने

www.dawateislami.net

लिहाज़ा ऐ मिस्कीन बन्दे उस की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये काम कर और उस को अपना मक़्सूद और अपनी कोशिशों का मर्कज़ बना जो तुझ से मह़ब्बत करे जो तुझे ने'मत अ़त़ा करे अपनी रह़मत तुझ पर नाज़िल करे, तेरी इ़ज़्ज़त करे, यहां तक कि तुझे अज्र व सवाब दे कर ख़ुश और राज़ी करे और तुझे सब से बे नियाज़ कर दे। अगर तू अ़क़्लमन्द है तो इस नुक्ते को ज़ेह्न में बिठा।

चोथा उसूल :

जिस शख़्स के पास कोशिश व सअ्य का ऐसा सरमाया मौजूद हो जिस के ज़रीए़ वोह दुन्या में सब से बड़े बादशाह की रिज़ा और ख़ुशनूदी ह़ासिल कर सकता हो लेकिन वोह इस से बादशाह की ख़ुशनूदी तो ह़ासिल न करे बल्कि इस से एक ख़ाकरोब की रिज़ा व ख़ुशनूदी का ख़्वाहां बने तो इस की येह ह़रकत इस बात की दलील है कि येह शख़्स बे वुक़ूफ़ और अह़मक़ है, अ़क़्लमन्द नहीं। बद बख़्त और बद क़िस्मत है, सब लोग इस से येही कहेंगे कि जब अ़ज़ीम बादशाह की ख़ुशनूदी ह़ासिल करना तेरे लिये मुमकिन था तो तूने उसे तर्क कर के एक ख़ाकरोब की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने में क्या बेहतरी मह़सूस की। ख़ास कर जब कि बादशाह की नाराज़ी की वजह से वोह ख़ाकरोब भी तुझ से नाराज़ होगा तो इस त़रह़ दोनों की ख़ुशनूदी से तू हाथ धो बैठा। **बिऐ़निही** येही ह़ाल रिया कार इन्सान का है। जब कि इन्सान को चाहिये कि उस **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने की कोशिश करे जो तमाम मुसीबतों और मुश्किलों में बन्दे को काफ़ी है। ह़क़ीर, ज़ईफ़, बे वक़्अ़त मख़्लूक़ की रिज़ाजूई की क्या ज़रूरत व ह़ाजत है। फिर अगर तुम्हारी हिम्मत कमज़ोर हो और तुम बसीरत से ख़ाली हो कि ला मुह़ाला रिज़ाए मख़्लूक़ के ही त़ालिब बनो तो ऐसी सूरत में भी तुम्हें अपना इरादा ग़ैर की रिज़ा से ख़ाली करना चाहिये और अपनी सअ्य व कोशिश

www.dawateislami.net

ख़ालिस ख़ुदा तआ़ला के लिये होनी चाहिये क्यूंकि लोगों के क़ुलूब और उन की पेशानियां उसी के क़ब्ज़े में हैं। वोह दिलों को तेरी त़रफ़ झुका देगा और इन्सानों को तेरा गिरवीदा बना देगा और लोगों के सीने तेरी मह़ब्बत व उल्फ़त से लबरेज़ कर देगा तो इस त़रह़ तुम्हें वोह कुछ मिलेगा जो तुम अपनी कोशिश और क़स्द व इरादे से ह़ासिल नहीं कर सकते थे। लेकिन अगर तुम अपनी कोशिशों को ख़ुदा तआ़ला के लिये ख़ालिस न करो और रिज़ाए मख़्लूक़ात के ही त़ालिब बनो तो ऐसी सूरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों के दिल तुम से फेर देगा और लोगों के दिलों में तेरे मुतअ़ल्लिक़ नफ़रत डाल देगा और मख़्लूक़ को तुझ पर नाराज़ कर देगा तो तुम्हारे इस रविय्ये से ख़ुदा तआ़ला भी नाराज़ हो गया और मख़्लूक़ भी नाराज़ हो गई। तो ऐसे शख़्स के ख़सारे और मह़रूमी का क्या ठिकाना।

ह़िकायत :

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علَیْه से मन्क़ूल है कि एक शख़्स कहा करता था ख़ुदा की क़सम मैं ऐसी इ़बादत करूंगा जिस से लोगों में मेरा चर्चा हो, येह शख़्स नमाज़ के लिये सब से पहले मस्जिद में दाख़िल होता और सब से आख़िर मस्जिद से निकलता। अवक़ाते नमाज़ में हर वक़्त नमाज़ पढ़ता ही नज़र आता, हमेशा रोज़ादार रहता। मजालिसे ज़िक्र में पाबन्दी से शरीक होता, सात माह का अ़र्सा वोह इसी त़रह़ करता रहा। लेकिन उस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों का रविय्या येह था कि जब भी कहीं से गुज़रता तो सब लोग येही कहते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस रियाकार को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए आख़िर उस ने अपने आप पर मलामत की और कहा कि मेरी इ़बादत और बन्दगी तो ज़ाएअ़ हो गई और इस का कुछ नतीजा नहीं निकला। आयन्दा के लिये बन्दगी-इ़बादत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये करूंगा। उस ने इ़बादत में पहले की निस्बत मज़ीद इज़ाफ़ा न किया बल्कि उतनी

www.dawateislami.net

ही मिक़्दार में करता रहा जितनी मिक़्दार में पहले करता था। उस ने सिर्फ़ निय्यत में तब्दीली की और उस में इख़्लास पैदा किया इस के बा'द जहां से भी वोह गुज़रता सब येही कहते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां शख़्स पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए। येह ह़िकायत बयान करने के बा'द ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने येह आयत पढ़ी :

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

(پ١٦،مريم:٩٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न क़रीब उन के लिये रह़मान मह़ब्बत कर देगा।*

(تفسير ابن كثير، مريم: ٩٦، ج٥، ص٢٣٨)

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ुद भी उन से दोस्ती करेगा और लोगों के दिलों में भी उन की दोस्ती और मह़ब्बत डाल देगा। किसी ने बहुत ठीक कहा है :

يَا مُبْتَغِى الْحَمْدَ وَ الثَّوَابَا ... فِى عَمَلٍ تَبْتَغِى مُحَالَا

قَدْ خَيَّبَ اللّٰهُ ذَارِيَاءِ ... وَ اَبْطَلَ السَّعْىَ وَالْكَلَالَا

مَنْ كَانَ يَرْجُوْ لِقَاءَ رَبٍّ ... اَخْلَصَ مِنْ خَوْفِهِ الْفَعَالَا

اَلْخُلْدُ وَ النَّارُ فِى يَدَيْهِ ... فَرَائِهُ يُعْطِكَ النَّوَالَا

وَ النَّاسُ لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْئًا ... فَكَيْفَ رَاَيْتَهُمْ ضَلَالَا

(1) ऐ लोगों से ह़म्द व सवाब के त़ालिब तू अपने अ़मल से एक अम्रे मुह़ाल का क़स्द कर रहा है।

(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रियाकार को नाकाम व ना मुराद करता है, उस की सअ़्य और मशक़्क़त को बेकार कर देता है।

(3) जो मुलाक़ाते रब तआ़ला का उम्मीद वार हो वोह उस के डर से अपने अफ़्आ़ल में इख़्लास पैदा करता है।

www.dawateislami.net

(4) जन्नत और दोज़ख़ उस के दस्ते क़ुदरत में हैं इस लिये अपने आ'माल उसी को दिखा वोह तुझे अपनी अ़त़ाओं से माला माल कर देगा।

(5) लोगों के क़ब्ज़ए इख़्तियार में कुछ नहीं, तू बे समझी के बाइ़स उन के लिये रियाकारी क्यूं करता है।

हम इस से बचाव के लिये भी चन्द ज़रूरी और जामेअ़ उसूल बयान करते हैं :

पहला उसूल :

येह है कि बिला शुबा बन्दे का फ़े'ल उसी वक़्त मुफ़ीद और क़ाबिले ए'तिबार होता है जब कि उसे मह़्ज़ ह़ुसूले रिज़ाए इलाही के लिये किया जाए वरना इस की मिसाल उस मज़्दूर की त़रह़ होगी जो कि सारा दिन दो दिरहमों के लिये मारा मारा फिरता है और उस चौकीदार की त़रह़ जो सिर्फ़ दो पैसों के लिये तमाम रात जाग कर गुज़ार देता है और ऐसे जैसा कि कारोबारी लोग मह़्ज़ चन्द टकों के लिये शबो रोज़ अपने अवक़ाते अ़ज़ीज़ा को ज़ाएअ़ करते रहते हैं तो फिर जब बन्दा मसलन मह़्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी के लिये एक रोज़ा रखता है तो यूं समझना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी की वजह से इस रोज़े की जज़ा की मिसाल नहीं जैसा कि रब तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया है :

اِنَّمَا یُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ۝۱۰ (پ۲۳،الزمر:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती।*

ह़दीस शरीफ़ में वारिद है :

اَعْدَدْتُّ لِعِبَادِیَ الصَّائِمِیْنَ مَا لَا عَیْنٌ رَاَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ وَ لَا خَطَرَ عَلٰی قَلْبِ بَشَرٍ

(الکامل فی ضعفاء الرجال،یوسف بن السفر، الرقم:۲۰۲ ۸،ج۸،ص ۵۰۰)

www.dawateislami.net

मैं ने अपने रोज़ादार बन्दों के लिये ऐसा अज्र मुतअ़य्यन कर रखा है जिस को किसी आंख ने देखा तक नहीं और न ही किसी कान ने उसे सुना और न ही किसी के दिल पर इस का ख़याल तक गुज़रा।

येह तेरा वोह दिन है कि सारा दिन मशक़्क़त और बार बरदारी के बा'द इस की क़ीमत सिर्फ़ दो दिरहम है और अगर तू उस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक रोज़ा रखता है तो उस रोज़े की क़द्र व क़ीमत और इस पर मिलने वाले अज्र का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता इसी त़रह अगर बन्दा किसी रात मह़ज़ रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर क़ियाम करता है तो इस क़ियाम की क़द्र व मन्ज़िलत का कोई अन्दाज़ा नहीं जैसा कि अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला फ़रमाता है :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ۝۱۷ (پ۲۱، السجدۃ:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठंडक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।*

तो येह तुम्हारा शब का मा'मूली सा अ़मल जिस की क़ीमत दो दानिक़ (दानिक़ : दिरहम का छटा हिस्सा) या दो दिरहम थी, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जाए तो इस की क़द्र व मन्ज़िलत का अन्दाज़ा नहीं हो सकता बल्कि अगर किसी साअ़त में मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये दो रकअ़तें पढ़ी जाएं बल्कि एक सांस जिस में لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने के लिये पढ़ा जाए तो उस के लिये बे पनाह अज्र व सवाब है जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया है :

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ یُرْزَقُوْنَ فِیْهَا بِغَیْرِ حِسَابٍ۝۴۰ (پ۲۴، المؤمن:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औ़रत और हो मुसलमान तो वोह जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे वहां बे गिनती रिज़्क़ पाएंगे।*

www.dawateislami.net

तो येह सांस जिस की दुन्या दारों के हां कोई इ़ज़्ज़त व क़ीमत नहीं उसे जब रिज़ाए इलाही के हुसूल के लिये इस्ति'माल किया जाए तो कितने ग़ैर मा'मूली ऐ'ज़ाज़ का मुस्तह़िक़ हो जाता है फिर भी तू शबो रोज़ अपने इन क़ीमती अवक़ात को फ़ुज़ूल और बेहूदा कामों में ज़ाएअ़ करता हुवा नज़र आता है पस अ़क़्ल मन्द को येह सोचना चाहिये कि वोह फ़े'ल जो कि रिज़ाए इलाही की निय्यत के बिग़ैर कुछ क़ीमत नहीं रखता था वोही रिज़ाए इलाही पाने के लिये करने से किस क़दर शराफ़त और एह़तिराम का मुस्तह़िक़ हो जाता है सो इस का हर फ़े'ल ख़ुशनूदिये ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये होना लाज़िमी है ताकि दुन्या व आख़िरत में हर त़रह़ से मुफ़ीद साबित हो और इस की यूं मिसाल दी जा सकती है कि मसलन अंगूर का ख़ोशा या रैह़ान (एक ख़ुश्बूदार पौदे) का शगूफ़ा जिस की बाज़ार में एक पैसा या एक दिरहम क़ीमत हो, अगर कोई उस को बादशाह की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या पेश करे और वोह बादशाह उस ह़क़ीर से तोह़फ़े को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शे और ख़ुशी से एक हज़ार अशरफ़ी दे दे तो वोह ह़क़ीर शै हुसूले रिज़ा की वजह से एक हज़ार दीनार की हो गई और अगर वोह उस को क़बूल न करे तो उस की क़ीमत वोही एक पैसा या एक दिरहम ही रहेगी, इसी त़रह़ बन्दे के जुम्ला आ'माल की कैफ़िय्यत है कि उन को देख कर इतराना और दूसरे के आ'माल की तह़क़ीर करना बन्दे के लिये एक मोहलिक शै है बल्कि येह इल्तिजा करनी ज़रूरी है कि ऐ **अल्लाह** येह सब तेरा ही फ़ज़्लो करम है। तेरी तौफ़ीक़ से सब कुछ होता है कि बन्दे के जुम्ला अक़्वाल व अफ़्आ़ल दुन्या व आख़िरत में मूजिबे अज्रो सवाब हों।

दूसरा उसूल :

येह है कि तुम्हें मा'लूम है कि दुन्या के बादशाह जब किसी

www.dawateislami.net

आदमी को कोई खाना या मश्रूब या लिबास या चन्द एक फ़ानी दिरहम व दीनार अ़ता करते हैं तो वोह आदमी दिन रात उस बादशाह की ख़िदमत बजा लाता है ह़ालांकि इस ख़िदमत में ज़िल्लत भी होती है वोह इस की ख़िदमत में इस त़रह़ खड़ा रहता है कि उस के पाऊं बे ह़िस्स हो जाते हैं और जब बादशाह अपनी सुवारी पर सुवार होता है तो वोह उस के साथ साथ दोड़ता है कभी सारी सारी रात उस के दरवाज़े पर पेहरा देता है और कभी दुश्मन से मुक़ाबले की नौबत आती है तो अपनी वोह जान उस पर क़ुरबान कर देता है जो उसे फिर कभी न मिल सकेगी और येह तमाम ख़िदमत, तकलीफ़, ख़त़रात और नुक़्सान सिर्फ़ इस थोड़े से ह़क़ीर मनाफ़ेअ़ के लिये बरदाश्त कर जाता है ह़ालांकि ह़क़ीक़त में येह तमाम एह़सानात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से होते हैं और बादशाह सिर्फ़ एक ज़ाहिरी सबब होता है। फिर तेरा वोह रब जिस ने तुझे पैदा किया जब कि तेरी कोई ह़क़ीक़त न थी फिर तेरी तरबिय्यत की और बहुत अच्छी की फिर तुझ पर दीनी दुन्यावी ज़ाहिरी और बात़िनी मनाफ़ेअ़ की बारिश बरसा दी कि जिन को समझने से तेरी अ़क़्ल, फ़ह्म और फ़िरासत क़ासिर है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَاِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ لَا تُحۡصُوۡهَا ؕ

(پ ۱٤، النحل: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर **अल्लाह** की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।*

फिर देख कि तू दो रकअ़त नमाज़ पढ़ता है जिन में कई एक ख़ामियां और कोताहियां होती हैं, इन दो रक्अ़तों पर रब ने आख़िरत के बेहतरीन अज्र व सवाब और त़रह़ त़रह़ की नवाज़िशात का वा'दा फ़रमाया है, अपनी कोताहियों और ख़ामियों के बा वुजूद तुम इन दो रक्अ़तों को बहुत बड़ी इ़बादत समझते हो और इस पर ग़ुरूर करते हो अगर तुम ग़ौर करोगे तो येह ज़ाहिर हो जाएगा कि येह अ़क़्ल मन्दी का काम नहीं है। इसे याद रख।

www.dawateislami.net

तीसरा उसूल :

येह है कि ऐसा बादशाह जिस की ख़िदमत दुन्या के बादशाह और उमरा करते हों जिस की ख़िदमत में बड़े बड़े और सरदार लोग दस्त बस्ता खड़े हों जिस की ख़िदमत पर बड़े बड़े दानिशमन्द अफ़राद **फ़ख़्र** मह़सूस करते हों जिस की ता'रीफ़ उ़क़ला और उ़लमा करते हों जिस के आगे आगे रुअसा दोड़ते हों वोह बादशाह अगर किसी बाज़ारी या देहाती आदमी को मह़्ज़ अपने फ़ज़्ल व करम से अपने दरवाज़े पर ह़ाज़िर होने की इजाज़त बख़्श दे जिस के दरवाज़े पर बादशाहों, बड़े लोगों, सरदारों और उ़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام व फु-ज़ला की भीड़ लगी हो और फिर वोह बादशाह उस को एक मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ाम पर जगह दे और उस की ख़िदमत को ब नज़रे पसन्द देखे ह़ालांकि इस में कई एक ऐ़ब भी हों तो क्या येह नहीं कहा जाएगा कि उस ह़क़ीर इन्सान पर बादशाह ने बहुत बड़ा करम फ़रमाया। फिर अगर येह ह़क़ीर अपनी नाकारा ख़िदमत की वजह से बादशाह पर अपना एह़सान जताने लगे और इस को बहुत कुछ समझे और इस पर मग़रूर हो तो क्या येह नहीं कहा जाएगा कि वोह ह़द दरजे का बे वुक़ूफ़ और पागल आदमी है, इस के होश व ह़वास सलामत नहीं हैं जब येह बात साबित हो गई तो अब समझना चाहिये कि हमारा मा'बूदे बर ह़क़ एक ऐसा बादशाह है जिस की तस्बीह़ात आस्मान ज़मीन और इन की तमाम मौजूदात कर रही हैं।

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ

(پ١٥، بنی اسرائیل: ٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उस की पाकी न बोले।*

और एक ऐसा मा'बूद है जिस के सामने तमाम आस्मान और ज़मीनें सजदा रेज़ हैं ख़्वाह ख़ुशी से या ना ख़ुशी से और उस के बाबे रह़मत के ख़ुद्दाम में जिब्रीले अमीन, मीकाइल, इसराफ़ील, इ़ज़्राईल

www.dawateislami.net

और अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते, करुबी (मुक़र्रबे बारगाह फ़िरिश्ते) और रूह़ानी (फ़िरिश्तों की एक क़िस्म) और तमाम मलाइकए मुक़र्रबीन عَلَيْهِمُ السَّلَام हैं कि जिन की ता'दाद को **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन के सिवा कोई नहीं जानता, बा वुजूद येह कि उन के मक़ामात बड़े बुलन्द हैं इन के नुफ़ूस पाक हैं इन की इ़बादत भी बहुत बड़ी और ज़ियादा है और फिर उसी के बाबे आ़ली के ख़ादिम हैं नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام, इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام, ईसा عَلَيْهِ السَّلَام, और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो तमाम काइनात से अफ़्ज़ल हैं और उन के इ़लावा दूसरे अम्बिया और रसूल भी (ख़ुदा तआ़ला की उन पर रह़मतें और सलाम नाज़िल हों) जिन के मरातिब और मनाक़िब आ'ला और बुलन्द हैं । फिर उ़लमाए अइम्मा, नेक लोग और ज़ाहिद भी अपने बुज़ुर्ग मरातिब, पाक अजसाम और कसीर ख़ालिस इ़बादात के बा वुजूद उसी के बाबे रह़मत के ख़ादिम हैं और दुन्या के बादशाह और जाबिर लोग उस के दरवाज़े के एक अदना ख़ादिम हैं निहायत ज़िल्लत से उस के सामने सजदा रेज़ होते हैं, निहायत ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ से उस के सामने अपने चेहरे ख़ाक पर रखते हैं रो रो कर आ़जिज़ी के साथ अपनी ह़ाजतें उस के सामने पेश करते हैं उस की ख़ुदावन्दी और अपनी ग़ुलामी का इक़रार सजदए उ़बूदिय्यत से करते हैं फिर वोह कभी उन की त़रफ़ नज़रे करम फ़रमाता है और अपने फ़ज़्लो करम से उन की ह़ाजतें पूरी करता है और ग़लत़ियों से दर गुज़र फ़रमाता है । वोह अ़-ज़मत, जलाल, बादशाही और कमाल वाला रब तुझ को बा वुजूद तेरी ह़क़ारत, तेरे उ़यूब और तेरी गन्दगी के अपने दरवाज़े पर ह़ाज़िर होने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाता है ह़ालांकि तेरी ह़ैसिय्यत येह है कि अगर तू अपने शहर के सरदार से दाख़िले की इजाज़त मांगे तो तुझे इजाज़त न मिले, अगर अपने मह़ल्ले के सरदार से गुफ़्तगू करना

www.dawateislami.net

चाहे तो वोह तुझ से न बोले और अगर तू अपने शहर के ह़ाकिम के सामने सजदा (ता'ज़ीमी) करना चाहे तब भी वोह तेरी त़रफ़ तवज्जोह न दे ।

और उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे इजाज़त दे रखी है कि तू उस की इ़बादत करे, उस की सना कहे, उसे मुख़ात़ब कर सके बल्कि अपनी ह़ाजतें उस की बारगाह में पेश करे दिल खोल कर अ़र्ज़ करे अपनी ज़रूरिय्यात उस से मांग ले और वोह तेरी तमाम मुरादें पूरी करे । फिर वोह तेरी इन दो रकअ़तों से ख़ुश होता है ह़ालांकि इन में बहुत से उ़यूब हैं और फिर इन पर इतना सवाब अ़त़ा फ़रमाता है कि किसी इन्सान के दिल में इस का तसव्वुर भी नहीं आ सकता और फिर तू अपनी इन दो रकअ़तों पर मग़रूर है और इन को बहुत कुछ समझता है और बड़ा जानता है और इस मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात को नहीं समझता । तू कितना बुरा गुलाम है और कैसा जाहिल इन्सान है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन मददगार है और उसी की बारगाह में, इस बुराई का हुक्म देने वाले नफ़्स की शिकायत पेश की जाती और उसी की ज़ात पर भरोसा किया जाता है । इस को याद रख ।

फ़स्ल

अब एक और त़रीक़े से देखो कि अगर कोई बहुत बड़ा बादशाह तह़ाइफ़ और हदाया नज़्र करने की इजाज़त बख़्शे और उस की बारगाह में उमरा, कुबरा, रूअसा, उ़क़ला, दौलतमन्द लोग क़ीमती हीरों, नफ़ीस चीज़ों और बे तह़ाशा मालो दौलत के तह़ाइफ़ पेश करने लगें फिर अगर कोई सब्ज़ी फ़रोश कोई मा'मूली सब्ज़ी या कोई देहाती अंगूर का गुच्छा जिस की क़ीमत एक पैसा या दाना बराबर हो ले कर उन बड़े बड़े लोगों और दौलतमन्दों के गुरोह में घुस जाए, जो बेहतरीन तह़ाइफ़ ले कर खड़े हों और फिर वोह बादशाह उस फ़क़ीर

www.dawateislami.net

से उस का हदिय्या क़बूल फ़रमा ले और उसे पसन्दीदगी और क़बूलिय्यत की निगाह से देखे और उस के लिये ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा और इ़ज़्ज़त व एह़तिराम का हुक्म सादिर फ़रमाए तो क्या येह उस का इन्तिहाई फ़ज़्ल व करम न होगा ?

फिर अगर येह फ़क़ीर बादशाह पर एह़सान जताने लगे और अपने हदिये को बहुत कुछ समझे और बादशाह के एह़सान का तज़्किरा करना भूल जाए तो क्या उसे दीवाना, बद ह़वास या बे वुक़ूफ़ और बे तमीज़ और इन्तिहाई नादान न समझा जाएगा ?

अब तुझ पर लाज़िम है कि जब तू ख़ुदा तआ़ला के सामने खड़ा हो और दो रक्अ़त अदा करे तो फ़ारिग़ होने पर ज़रा सोच कि इस रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कितने ख़ादिम खड़े हुए होंगे ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशों में, जंगलों, समुन्दरों, पहाड़ों और शहरों में कई एक इस्तिक़ामत वाले, सिद्दीक़, ख़ाइफ़, मुश्ताक़, मुज्तहिदीन और आ़जिज़ी करने वालों के गुरोह। और ग़ौर कर कि इस घड़ी में ख़ुदावन्दे तआ़ला की बारगाह में कैसी ख़ालिस इ़बादत पेश की जा रही होगी और वोह भी डरने वाले लोगों, पाक ज़बानों, रोने वाली आंखों, आबाद दिलों, पाक सीनो और परहेज़गार लोगों की त़रफ़ से और तेरी नमाज़ अगर्चे तू ने इस को अच्छी त़रह़ अदा करने में इस के इख़्लास और मज़बूती में अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ कोशिश की होगी लेकिन फिर भी उस अ़ज़ीम बादशाह की बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहां है और इन इ़बादात के मुक़ाबले में इस की क्या ह़ैसिय्यत है जो वहां पेश हो रही हैं क्यूंकि तूने इसे ग़ाफ़िल दिल से अदा किया जिस में त़रह़ त़रह़ के उ़यूब शामिल थे बदन गुनाहों की आलूदगी से नापाक था और ज़बान फ़ुज़ूल और गुनाह की बातों से लिथड़ी हुई थी फिर ऐसी नमाज़ उस की बारगाह में पेश होने के

www.dawateislami.net

क़ाबिल कहां थी और रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में हदिया करने की उस में कौन सी सलाहि़य्यत थी।

हमारे शैख़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया ऐ अ़क़्लमन्द ग़ौर कर आस्मान की त़रफ़ नमाज़ भेजने में तूने कभी वोह तवज्जोह की है जो किसी अमीर आदमी के सामने खाना पेश करते वक़्त तू करता है।

अबू बक्र वर्राक़ फ़रमाया करते कि जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ होता हूं तो उस औ़रत से ज़ियादा शर्मिन्दगी मुझ पर मुसल्लत़ हो जाती है जो ज़िना से फ़ारिग़ हुई हो। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मह़्ज़ अपने फ़ज़्लो करम से इन दो रक्अ़तों की क़द्र अफ़्ज़ाई की और इन पर बहुत बड़े सवाब का वा'दा फ़रमाया ह़ालांकि तू उस का बन्दा है उस का दिया हुवा खाता है और फिर येह अ़मल भी उसी की तौफ़ीक़ और इमदाद से तूने किया है फिर बा वुजूद इन तमाम चीज़ों के तू इन पर मग़रूर है और अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सान को भूल रहा है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! येह तमाम अ़जाइबात में से अ़जीब चीज़ है और इस का सुदूर ऐसे जाहिल ही से हो सकता है जिस में कोई अ़क़्ल न हो और ऐसे ग़ाफ़िल से जिस का कोई ज़ेह्न न हो और या फिर किसी मुर्दा दिल से जिस में कोई भलाई न हो। इस को याद रख, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से उस के फ़ज़्लो करम का वास्त़ा दे कर बेहतरीन किफ़ायत का सुवाल करते हैं।

फ़स्ल

फिर इन गुज़ारिशात के बा'द मैं कहूंगा कि ऐ इन्सान इस घाटी में ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो वरना ख़सारा उठाएगा, येह घाटी बड़ी सख़्त दुश्वार गुज़ार, निहायत कड़वी और नुक़्सान देह है जो तुझे इस राह में पेश आनी है क्यूंकि पिछली तमाम खाइयों के समरात यहीं आ कर मुन्तही होते हैं अगर तू यहां से बच कर निकल गया तो

www.dawateislami.net

ग़नीमत और फ़ाइदा ह़ासिल करेगा और अगर दूसरी त़रह़ का मुआ़मला हुवा तो तमाम मेह़नत राइगां जाएगी उम्मीदें ख़ाक में मिल जाएंगी, उ़म्र ज़ाएअ़ हो जाएगी।

अब मुआ़मला येह है कि इस घाटी में तीन उमूर आ कर इकट्ठे हो गए हैं।

पहला येह है कि मुआ़मला निहायत बारीक है और नुक़्सान बड़ा सख़्त और ख़त़रात बे अन्दाज़ा, मुआ़मले की बारीकी तो येह है कि आ'माल में रिया और **उ़जब** की राहें निहायत बारीक हैं इन पर दीनी उमूर में बसीरत रखने वाला, निहायत अ़क़्लमन्द, बेदार दिल और होशियार आदमी ही मुत्त़लअ़ हो सकता है और एक जाहिल, खिलन्डरा, बे परवाह और ग़फ़्लत की नींद सोया हुवा आदमी कहां इन को जान सकता है।

मैं ने अपने उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام से नीशापूर में सुना बयान करते थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक कपड़ा निहायत अच्छा बुना। बड़ा ख़ूब सूरत कपड़ा तय्यार हुवा आप उसे उठा कर बाज़ार ले गए और बज़्ज़ाज़ (कपड़े बेचने वाले) को जा कर दिखाया उस ने उस की क़ीमत बहुत थोड़ी लगाई और कहा कि इस में फ़ुलां फ़ुलां ऐ़ब हैं तो अ़त़ा ने उस को वापस ले लिया और रोने लगे और बड़ा सख़्त रोए। बज़्ज़ाज़ को इस पर नदामत हुई और आप से मा'ज़िरत करने लगा और ह़ज़रते अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मांगी हुई क़ीमत देने पर तय्यार हो गया तो ह़ज़रते अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा मैं इस लिये नहीं रो रहा, बल्कि रोने की वजह येह है कि मैं येह सनअ़त जानता हूं मैं ने इस कपड़े की मज़बूत़ी और ख़ूबसूरती में बहुत कोशिश की यहां तक कि मेरे ख़याल में इस में कोई ऐ़ब न था, फिर जब इस के उ़यूब को जानने वाले पर पेश किया तो उस ने

www.dawateislami.net

इस के उ़यूब ज़ाहिर कर दिये जिन से मैं बे ख़बर था फिर हमारे उन आ'माल का क्या ह़ाल होगा जब कि कल वोह ख़ुदा तआ़ला के हुज़ूर पेश किये जाएंगे मा'लूम नहीं उन में कितने उ़यूब और नुक़्सान ज़ाहिर होंगे जिन से आज हम बे ख़बर हैं।

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक रात सह़री के वक़्त सड़क के किनारे एक बालाख़ाने पर सूरए **त़ाहा** पढ़ रहा था, जब मैं ने सूरह को ख़त्म कर लिया तो मुझे कुछ ऊंघ सी आ गई मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी आस्मान से नाज़िल हुवा उस के हाथ में एक सह़ीफ़ा था उस ने वोह मेरे सामने फैला कर रख दिया तो उस में वोही सूरए **त़ाहा** लिखी हुई थी और हर कलिमे के नीचे दस नेकियां लिखी हुई थीं मगर एक कलिमा मैं ने देखा कि वोह मिटा हुवा है और उस के नीचे कुछ भी नहीं लिखा हुवा। मैं ने कहा मैं ने येह कलिमा भी पढ़ा तो था मगर न उस का सवाब लिखा हुवा है न येह कलिमा ही लिखा हुवा है। तो उस आदमी ने कहा तुम सह़ीह़ कहते हो तुम ने उसे पढ़ा था और हम ने लिखा भी था मगर हम ने आस्मान से एक आवाज़ देने वाले को सुना उस ने कहा कि इस कलिमे को मिटा दो और इस का सवाब भी ख़त्म कर दो तो हम ने उस को मिटा दिया। उस आदमी ने कहा कि मैं अपने ख़्वाब ही में रोने लगा और उन से पूछा कि तुम ने ऐसा क्यूं किया तो उस ने जवाब दिया कि एक आदमी सड़क पर से गुज़रा तो उस को सुनाने के लिये तुम ने येह कलिमा बुलन्द आवाज़ से पढ़ा था तो इस का सवाब ख़त्म हो गया, इस को याद रख।

(قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجهر با لقرآن، ج۱،ص۱۱۳)

बाक़ी रही नुक़्सान की शिद्दत तो इस की वजह येह है कि रिया और **उ़जब** एक बहुत बड़ी आफ़त है जो एक लह़ज़े में वाक़ेअ़ हो जाती है और बसा अवक़ात सत्तर साल की इ़बादत को बिगाड़ कर रख देती है।

www.dawateislami.net

बयान किया जाता है कि एक आदमी ने ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه और उन के साथियों की ज़ियाफ़त की तो अपने घर वालों से कहा कि उस थाल में रोटी रख कर लाओ जो मैं दूसरे ह़ज के मौक़अ़ पर लाया था पहले ह़ज वाले थाल में रोटी न लाना तो सुफ़्यान ने उस की त़रफ़ देखा और कहा कि इस मिस्कीन ने इतनी सी बात में अपने दोनों ह़ज बात़िल व ज़ाएअ़ कर दिये और बा'ज़ ने नुक़्सान ज़ियादा होने की येह तौजीह की है कि वोह थोड़ी सी इ़बादत जो रिया और **उ़जब** से सलामत रहे उस इ़बादत की क़ीमत ख़ुदा तआ़ला के नज़्दीक बहुत ज़ियादा है और ऐसी बहुत सी इ़बादत जिसे येह आफ़त पहुंच जाए उस की कोई क़ीमत नहीं रहती मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को बचा ले जैसा कि ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मन्क़ूल है कि आप ने फ़रमाया मक़्बूल अ़मल कभी कम नहीं होता और मक़्बूल अ़मल कम हो भी कैसे सकता है।

(فیض القدیر،تحت الحدیث: ۲۹۸،ج۱،ص ۲۸۰)

इमाम नख़ई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि फ़ुलां फ़ुलां अ़मल का कितना सवाब है? आप ने फ़रमाया : जब वोह क़बूल हो जाए तो उस के सवाब की कोई ह़द नहीं। (فیض القدیر،تحت الحدیث:۲۹۸،ج۱،ص ۲۸۰)

और वहब से रिवायत है कि गुज़श्ता उम्मतों के एक आदमी ने सत्तर साल इस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, कि एक हफ़्ते के बा'द रोज़ा इफ़्त़ार किया करता था। उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से एक ह़ाजत का सुवाल किया तो उस की वोह ह़ाजत पूरी न हुई वोह अपने नफ़्स को मलामत करने लगा और कहने लगा अगर तेरे पास कोई भलाई होती तो तेरी ह़ाजत पूरी कर दी जाती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ते को नाज़िल फ़रमाया उस ने कहा ऐ इब्ने आदम! तेरी वोह एक घड़ी जिस में तू ने अपने नफ़्स को बे ह़क़ीक़त समझा वोह तेरी पहली तमाम इ़बादत से बेहतर है। (الزھد للامام احمد بن حنبل،زھد سعید بن جبیر،۲۱۹۵،ص ۳۷۰ بتغیر قلیل)

www.dawateislami.net

मैं कहता हूं कि अ़क़्लमन्द को इस कलाम पर ग़ौर करना चाहिये क्या येह शदीद नुक़्सान नहीं है कि एक आदमी सत्तर साल तक तकलीफ़ और मेह़नत उठाए और दूसरा एक घड़ी सोच बिचार करे तो उस की एक घड़ी की फ़िक्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सत्तर साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल हो जाए। क्या येह अ़ज़ीम नुक़्सान नहीं है कि सत्तर साल से एक घड़ी ज़ियादा बेहतर हो जाए और सत्तर साल की तमाम इ़बादत बेकार चली जाए, ख़ुदा की क़सम येह बहुत बड़ा नुक़्सान है, और इस से बे ख़बर रहना इस से भी बड़ा नुक़्सान है, तो ऐसी ख़स्लत जिस की येह क़ीमत हो और ऐसे ख़त़रात हों तो ज़रूरी है कि इस से इजतिनाब और परहेज़ किया जाए और इसी मा'ना में अ़क़्लमन्द लोगों की निगाह ऐसी बारीकियों पर पड़ती है, फिर वोह इन अस्रार को पहचानने का अव्वलन तो एहतिमाम करते हैं और बा'द में रिआ़यत और ह़िफ़ाज़त का ख़याल रखते हैं, उन की निगाह आ'माल की ज़ाहिरी कसरत पर नहीं होती। वोह कहते हैं कि शान सफ़ाई में है कसरत में नहीं । वोह कहते हैं एक हीरा हज़ार कोड़ियों से बेहतर है, लेकिन जिन लोगों का इ़ल्म कम होता है और जिन की निगाह इस बाब में क़ासिर है वोह ऐसे मआ़नी से बे ख़बर हैं और वोह दिलों के उ़यूब से बे ख़बर हैं और अपने नुफ़ूस को रुकूअ़ और सुजूद और खाने पीने से रोक कर थका देते हैं, उन को ता'दाद और कसरत ने धोका दे रखा है और वोह सफ़ाई और बुज़ुर्गी पर निगाह नहीं रखते और ऐसे अख़रोटों की कसरत कोई फ़ाइदा नहीं देती जिन में कोई गूदा न हो, ऐसे मकानों की बुलन्द छतें कोई नफ़्अ़ नहीं देतीं जिन की बुन्यादें मज़्बूत़ न हों और इन ह़क़ाइक़ को सिर्फ़ आ़लिम लोग ही जान सकते हैं जिन पर ख़ुदा तआ़ला ने इन ह़क़ाइक़ को ज़ाहिर कर दिया हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही अपने फ़ज़्लो करम

www.dawateislami.net

से हिदायत का वली है और बाक़ी रहा ख़त़रात का बड़ा होना तो उस की कई एक वुजूहात हैं।

पहली येह है कि मा'बूद एक ऐसा बादशाह है कि जिस के जलाल और अ़ज़मत की कोई इन्तिहा नहीं और उस के तुझ पर एह़सानात इतने हैं जो ह़िसाब और शुमार से बाहर हैं और तेरा बदन पोशीदा उ़यूब से आलूदा है, बे शुमार आफ़ात से भरा हुवा है और मुआ़मला ख़त़रनाक है, अगर नफ़्स की जल्द बाज़ी की बिना पर तुम से कोई लग़ज़िश व ख़त़ा वाक़ेअ़ हो गई तो तू मोह़ताज होगा कि ऐ़बदार, बुराई की त़रफ़ माइल और बुराई का हुक्म देने वाले नफ़्स के साथ इख़्लास वाले आ'माल करे ऐसे त़रीके़ पर कि वोह रब्बुल आ़लमीन के जलाल और अ़-ज़मत के लाइक़ हो, और उस की ने'मतों और एह़सानात की कसरत का शुक्राना बन सके और उस की बारगाह में पसन्दीदगी और क़बूलिय्यत ह़ासिल कर सके वरना तुझ से वोह अ़ज़ीम फ़ाइदा फ़ौत हो जाएगा जिस के फ़ौत होने को कोई नफ़्स ब रिज़ा व रग़बत क़बूल नहीं कर सकता और येह भी हो सकता है कि तुझे कोई ऐसी मुसीबत पहुंच जाए कि जिस की तुझे त़ाक़त न हो और ख़ुदा की क़सम येह एक अ़जीब ह़ालत है और एक अ़ज़ीम कैफ़िय्यत है। बाक़ी रहा उस बादशाह के जलाल और अ़ज़मत का मुआ़मला इस त़रह़ कि मलाइकए मुक़र्रबीन हर वक़्त दिन रात उस की इ़बादत में खड़े हैं। यहां तक कि बा'ज़ उन में से अपनी इब्तिदाए पैदाइश से ले कर क़ियाम में हैं और बा'ज़ रुकूअ़ की ह़ालत में और बा'ज़ सजदे की कैफ़िय्यत में और बा'ज़ उन में से तस्बीह़ व तहलील में मश्ग़ूल हैं तो क़ियाम करने वाले का क़ियाम और रुकूअ़ करने वाले का रुकूअ़ और सजदा करने वाले का सजदा और तस्बीह़ कहने वाले की तस्बीह़ और لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहने वाले की तहलील सूर फूंकने तक बराबर जारी

www.dawateislami.net

रहेगी लेकिन फिर भी उन की इबादत पूरी न होगी। जब वोह इस अ़ज़ीम सआ़दत से फ़ारिग़ होंगे तो सब के सब पुकार उठेंगे तू पाक है, जैसा तेरी इबादत का ह़क़ था हम उसे अदा नहीं कर सके। और येह रसूलों के सरदार, तमाम मख़्लूक़ात से ज़ियादा इल्म और फ़ज़ीलत रखने वाले ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जो फ़रमाते हैं कि मैं तेरी ऐसी सना बयान नहीं कर सकता, जिस सना का तू मुस्तह़िक़ है, और कहते हैं कि मैं तेरी उस ता'रीफ़ को बयान करने से क़ासिर हूं जिस ता'रीफ़ का तू मुस्तह़िक़ है और तेरी ऐसी इबादत नहीं कर सकता जिस का तू अहल है। (صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب مایقال فی الرکوع والسجود، الحدیث: ٤٧٦، ص٢٥٢)

और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही का फ़रमान है कि कोई आदमी जन्नत में अपने अ़मल से दाख़िल नहीं हो सकता, सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** के रसूल ! क्या आप भी दाख़िल नहीं हो सकते ? तो आप ने फ़रमाया : जब तक ख़ुदा तआ़ला की रह़मत मुझ को न ढांप ले, मैं भी नहीं दाख़िल हो सकता।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب القصد و المداومة علی العمل، الحدیث: ٦٤٦٧، ج٤، ص٢٣٨)

बाक़ी रहे इन्आ़मात और एह़सानात तो जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है :

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

(پ ١٤، النحل: ١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर **अल्लाह** की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।*

और जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है :

يُحْشَرُ النَّاسُ عَلٰى ثَلٰثَةِ دَوَاوِيْنَ دِيْوَانِ الْحَسَنَاتِ وَدِيْوَانِ السَّيِّاٰتِ وَدِيْوَانِ النِّعَمِ فَتُقَابَلُ الْحَسَنَاتُ بِالنِّعَمِ فَلَا يُؤْتٰى بِحَسَنَةٍ اِلَّا اُتِيَ بِنِعْمَةٍ حَتّٰى تَغْمُرَ الْحَسَنَاتُ النِّعَمَ وَتَبْقَى السَّيِّئَاتُ وَالذُّنُوْبُ فَلِلّٰهِ تَعَالٰى فِيْهَا الْمَشِيَّةُ.

लोगों के आ'माल के तीन दफ़्तर होंगे एक नेकियों का दफ़्तर एक बुराइयों का दफ़्तर और एक ख़ुदा तआ़ला की ने'मतों का दफ़्तर।

www.dawateislami.net

नेकियों को ने'मतों के मुक़ाबिल लाया जाएगा जब कोई नेकी लाई जाएगी तो उस के मुक़ाबिल में ने'मत रख दी जाएगी। यहां तक कि नेकियां ने'मतों में ख़त्म हो जाएंगी और गुनाह और बुराइयां बाक़ी रह जाएंगे तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उन में इख़्तियार है चाहे तो अ़ज़ाब दे चाहे तो बख़्श दे।

बाक़ी रहे नफ़्स के उ़यूब और उन की आफ़ात, पस हम पहले इस को इस के बाब में ज़िक्र कर चुके हैं, और ख़त़रनाक मुआ़मला तो येह है कि आदमी इ़बादत में सत्तर साल तक मेह़नत करता है और तकलीफ़ उठाता है और वोह उन के उ़यूब और आफ़ात से बे ख़बर होता है। फिर कभी तो ऐसा होता है कि उन में से एक भी मक़्बूल नहीं होता और कभी वोह कई साल तक मेह़नत करता है और एक घड़ी उसे बरबाद कर के रख देती है और उन तमाम ख़त़रात से बढ़ कर येह ख़त़रा है कि कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है और बन्दे की येह ह़ालत होती है कि वोह ख़ुदा तआ़ला की इ़बादत लोगों को दिखाने के लिये करता है इस त़रह़ कि उस का ज़ाहिर तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये होता है और बात़िन मख़्लूक़ के लिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को इस त़रह़ मर्दूद क़रार देता है कि उसे कोई भी मक़्बूल नहीं बना सकता इस से ख़ुदा तआ़ला की पनाह।

और बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السّلام से सुना है कि वोह ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते थे कि उन की वफ़ात के बा'द उन को ख़्वाब में देखा गया तो उन से उन का ह़ाल पूछा गया तो फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने सामने खड़ा कर लिया और फ़रमाया : ऐ ह़सन ! क्या तुझे याद है कि एक दिन तू मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था लोगों ने तुझ को देखा तो तू ने अपनी नमाज़ अच्छी कर के पढ़ी अगर तेरी पहली नमाज़ें मेरे लिये ख़ालिस न होतीं तो मैं तुझे आज अपनी बारगाह से दूर कर के अपनी रह़मतों

www.dawateislami.net

और इनायतों को रोक लेता। जब मुआ़मला मुश्किल और बारीकी की वजह से इस अ़ज़ीम ह़द तक बढ़ा हुवा है तो अ़क्लमन्द लोगों ने इस में ग़ौर किया और वोह अपनी जानों पर डरते रहे यहां तक कि बा'ज़ उन में से अपने उस अ़मल की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करते थे। जो लोगों पर ज़ाहिर हो जाए, यहां तक कि ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या رحمة الله تعالى عليها से बयान किया जाता है कि उन्हों ने फ़रमाया कि मेरा जो अ़मल ज़ाहिर हो जाए मैं उसे शुमार में नहीं लाती और किसी और ने कहा अपनी नेकियों को इस त़रह़ छुपा जिस त़रह़ तू अपनी बुराइयों को छुपाता है और किसी और ने कहा अगर तुझे नेकियों को छुपा कर रखने की कोई जगह मिल सके तो ऐसा ही कर। बयान किया जाता है कि ह़ज़रते राबिआ़ رحمة الله تعالى عليها से सुवाल किया गया कि आप को अपने कौन से अ़मल पर सब से ज़ियादा उम्मीद है। तो उन्हों ने फ़रमाया इस अ़मल पर कि मैं अपने आ'माल से मायूस हूं। बयान किया जाता है कि मुह़म्मद बिन वासेअ़ और मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه दोनों की मुलाक़ात हुई तो ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने कहा : या तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत होगी या जहन्नम, तो ह़ज़रते मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत होगी या जहन्नम, तो मालिक ने कहा मुझे आप जैसे उस्ताद की अशद्द ज़रूरत है। (فیض القدیر،تحت الحدیث:٤٦٨٨، ج٤،ص١٣٧)

ह़ज़रते बायज़ीद बुस्त़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى से रिवायत है कि आप ने फ़रमाया मैं ने तीस साल तक इ़बादत में **मेह़नत** की फिर मैं ने एक कहने वाले को देखा कि जो मुझ से कहने लगा ऐ बायज़ीद ! उस के ख़ज़ाने इ़बादत से भरे हुए हैं अगर तू उस की बारगाह तक पहुंचना चाहता है तो तुझे ज़िल्लत और मिस्कीनी इख़्तियार करनी चाहिये। (فیض القدیر،تحت الحدیث:٤٦٨٨، ج٤،ص١٣٧)

www.dawateislami.net

और मैं ने उस्ताद अबुल ह़सन से सुना, वोह उस्ताद अबुल फ़ज़्ल رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه से बयान करते थे कि आप ने फ़रमाया मैं अच्छी त़रह़ जानता हूं कि मैं जो भी इ़बादत करता हूं वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ना क़ाबिले क़बूल है। आप से इसी मुआ़मले में गुफ़्त्गू की गई तो आप ने जवाब दिया किसी काम के मक़्बूल होने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है उन को मैं जानता हूं और मुझे येह भी मा'लूम है कि मैं उन को पूरा नहीं कर रहा हूं, तो मैं जानता हूं कि मेरे अ़मल ना क़ाबिले क़बूल हैं। अ़र्ज़ किया गया फिर आप अ़मल क्यूं करते हैं, फ़रमाया इस उम्मीद पर कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी दिन मुझ को दुरुस्त कर दे तो नफ़्स को अच्छे काम करने की आ़दत तो होगी और इब्तिदा से उसे आ़दत डालने की ज़रूरत न होगी। येह ह़ाल उन बड़े बड़े लोगों का है जो साह़िबे मुजाहदा, मुश्किलात को उ़बूर करने वाले और साबित क़दम रहने वाले थे। तेरी ह़ालत ऐसी है जैसा कि किसी शाइ़र ने कहा है :

فَاطْلُبْ لِنَفْسِكَ صُحْبَةً مَعَ غَيْرِهِمْ وَقَعَ الْاِيَاسُ وَخَابَتِ الْآمَالُ
هَيْهَاتَ تُدْرِكُ بِالتَّوَانِى سَادَةً كَدُّوا النُّفُوسَ وَ سَاعِدِ الْاِقْبَالُ

पस अपने नफ़्स के लिये ग़ैर लोगों की सोह़बत तलाश करो क्यूंकि मायूसी त़ारी हो गई है और उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं। अफ़्सोस कि सुस्ती के बदले सरदारी की ख़्वाहिश करता है नफ़्सों से कोशिश कराओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह करने में मदद करो।

फिर मुझे ख़याल हुवा कि मैं यहां वोह ह़दीस बयान कर दूं जो सादिक़ुल मस्दूक़ صَلَّى الله تعالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسلَّم से मन्क़ूल है और हम ने उस को कई किताबों में ज़िक्र किया है। इब्ने मुबारक رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تعالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी ह़दीस सुनाएं जो आप ने रसूलुल्लाह صَلَّى الله تعالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسلَّم से ख़ुद सुनी हो और उस

www.dawateislami.net

को याद किया हो और उस की शिद्दत और बारीकी की वजह से आप उस का तज़्किरा हर रोज़ करते हों तो आप ने फ़रमाया हां बयान करता हूं। फिर आप बड़ी देर तक रोते रहे फिर कहने लगे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की मुलाक़ात का शौक़ ह़द से बढ़ गया है फिर फ़रमाया : एक दफ़्अ़ मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास था आप सुवारी पर बैठे और मुझे भी अपने पीछे बिठा लिया। फिर हम चले आप ने अपनी निगाह आसमान की त़रफ़ उठाई फिर फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़ उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये है जो अपनी मख़्लूक़ में जो चाहता है फ़ैसला फ़रमाता है। ऐ मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मैं ने अ़र्ज़ किया : لَبَّيك يا سَيِّدَ الْمُرسلين! صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسلَّم आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुझ से ऐसी बात बयान कर रहा हूं कि अगर तू ने इस को याद रखा तो तुझे नफ़्अ़ देगी और अगर तूने इस को ज़ाएअ़ कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक तेरी हु़ज्जत ख़त्म हो जाएगी। ऐ मुआ़ज़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने ज़मीन और आसमान की पैदाइश से पहले सात फ़िरिश्तों को आसमानों के ख़ाज़िन और दरबान की ह़ैसिय्यत से पैदा किया और हर एक आसमान के दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ते को ब ह़ैसिय्यत दरबान खड़ा कर दिया। फिर किरामन कातिबीन बन्दे के आ'माल ले कर चढ़ते हैं उन में रोशनी और चमक होती है जैसे सूरज की रोशनी, यहां तक कि वोह पहले आसमान पर चले जाते हैं और किरामन कातिबीन उस के अ़मल को बहुत ज़ियादा समझते हैं और उस को ख़ालिस जानते हैं, फिर जब वोह दरवाज़े पर पहुंचते हैं तो दरबान फ़िरिश्ता उन से कहता है : इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो ! मैं ग़ीबत का फ़िरिश्ता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि लोगों की ग़ीबत करने वाले के किसी अ़मल को अपने ग़ैर की त़रफ़ न जाने दूं। फिर दूसरे दिन फ़िरिश्ते ऊपर जाते हैं, उन के पास बहुत

www.dawateislami.net

अच्छे अ़मल होते हैं, वोह अ़मल नूर से रोशन होते हैं किरामन कातिबीन उन को बहुत ज़ियादा और पाकीज़ा ख़याल करते हैं यहां तक कि जब वोह दूसरे आसमान पर जाते हैं तो फ़िरिश्ता कहता है : ठहर जाओ और इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो क्यूंकि उस की निय्यत इस अ़मल से दुन्या कमाने की थी मुझे मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है। फिर फ़िरिश्ते शाम तक उस पर ला'नत करते रहते हैं, फिर फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं और उन से बड़ा ख़ुश होते हैं उन में स-दक़ा रोज़ा और बहुत सी नेकियां होती हैं फ़िरिश्ते उन को बहुत ज़ियादा समझते हैं और जानते हैं, फिर जब वोह तीसरे आसमान तक पहुंचते हैं तो दरबान फ़िरिश्ता कहता है कि ठहर जाओ और इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो मैं तकब्बुर वालों का फ़िरिश्ता हूं, मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, येह आदमी लोगों पर उन की मजालिस में अपनी बड़ाई बयान किया करता था और फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं और वोह अ़मल इस त़रह़ चमकते हैं जैसे सितारे या कोई रोशन सितारा। उन आ'माल में से तस्बीह़ की आवाज़ आती है। उन में रोज़ा, ह़ज, नमाज़ और उ़मरह होता है फिर जब वोह चोथे आसमान पर जाते हैं तो वहां का दरबान फ़िरिश्ता उन से कहता है ठहर जाओ, और इस अ़मल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो, मैं **उ़जब** वालों का फ़िरिश्ता हूं मुझे मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दे रखा है, कि मैं ऐसे आदमी का अ़मल ऊपर न जाने दूं जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है। येह आदमी जब कोई अ़मल करता तो उस पर मग़रूर हो जाता। फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल

www.dawateislami.net

ले कर ऊपर जाते हैं वोह अ़मल इस त़रह़ आरास्ता होते हैं जैसे दुल्हन सुसराल जाने के वक़्त। जब वोह इन को ले कर पांचवें आसमान तक पहुंचते हैं इन में जिहाद, ह़ज, उ़मरह वग़ैरा अच्छे आ'माल होते हैं उन की चमक सूरज जैसी होती है, तो फ़िरिश्ता कहता है मैं ह़सद करने वालों का फ़िरिश्ता हूं, येह आदमी लोगों पर उन चीज़ों में ह़सद करता था जो उन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्ल से दी हैं येह आदमी ख़ुदा तआ़ला की पसन्दीदा तक़्सीम पर नाराज़ है, मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इस के अ़मल ऊपर न जाने दूं कि वोह मुझे छोड़ कर दूसरों की त़रफ़ मुतवज्जेह है और फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं उन में अच्छे वुज़ू, बहुत सी नमाज़ें, रोज़े, ह़ज और उ़मरह होता है। वोह छटे आसमान तक पहुंच जाते हैं तो दरवाज़े पर मुक़र्रर निगहबान कहता है मैं रह़मत का फ़िरिश्ता हूं इन आ'माल को अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो, येह आदमी कभी किसी इन्सान पर रह़्म नहीं करता था और किसी बन्दे को मुसीबत पहुंचती तो ख़ुश होता, मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इस के आ'माल को ऊपर न जाने दूं येह मुझे छोड़ कर ग़ैरों की त़रफ़ मुतवज्जेह है। फिर फ़िरिश्ते बन्दे का अ़मल ले कर चढ़ते हैं, उस में बहुत सा स-दक़ा, नमाज़, रोज़ा, जिहाद और परहेज़गारी होती है, उन की आवाज़ ऐसी होती है जैसे कड़क की आवाज़ और चमक जैसे बिजली की चमक। फिर जब वोह सातवें आसमान पर पहुंचते हैं, तो फ़िरिश्ता जो उस आसमान पर मुवक्किल होता है कहता है मैं ज़िक्र का फ़िरिश्ता हूं। इस अ़मल वाले ने अपने अ़मले मजलिस में तज़किरा और दोस्तों और बुलन्दी और बड़े लोगों के नज़दीक जाह पसन्दी की निय्यत की थी, मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इस के अ़मल को ऊपर न जाने दूं कि येह मुझे छोड़ कर दूसरों की त़रफ़ मुतवज्जेह

www.dawateislami.net

होता है और हर वोह अ़मल जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ालिस न हो वोह रिया है और रियाकार का अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़बूल नहीं फ़रमाता और फ़िरिश्ते बन्दे के आ'माल नमाज़, ज़कात, रोज़ा, ह़ज, उ़मरह अच्छा खुल्क़, ख़ामोशी और ज़िक्रे इलाही ले कर ऊपर जाते हैं सातवें आसमानों के फ़िरिश्ते उन की ता'ज़ीम के लिये साथ हो जाते हैं यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह के सामने से तमाम पर्दे हट जाते हैं। फिर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़े हो कर उस के लिये शहादत देते हैं कि उस का अ़मल नेक ख़ालिस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है तुम मेरे बन्दे के आ'माल पर निगरान हो और मैं उस की जान से ज़ियादा उस के क़रीब हूं, इस अ़मल से उस का इरादा मेरी रिज़ा नहीं बल्कि मेरे सिवा औरों को खुश करना मक़्सूद था। मैं उस की निय्यत को खूब जानता हूं, उस पर मेरी ला'नत, उस ने बन्दों को भी धोका दिया और तुम को भी, लेकिन मुझे धोका नहीं दे सकता, मैं ग़ैबों का जानने वाला हूं, दिलों के ख़यालात से वाक़िफ़ हूं, मुझ पर कोई पोशीदा चीज़ छुपी नहीं रह सकती और कोई छुपी चीज़ मुझ से ओझल नहीं है, तमाम मौजूदात व तमाम मा'दूमात (जो अभी तक वुजूद में नहीं आएं) और जो कुछ हो चुका और जो आयन्दा होगा सब का मुझे इ़ल्म है, पोशीदा बातों और दिल के इरादों से अच्छी त़रह़ बा ख़बर हूं तो मेरा बन्दा अपने अ़मल के साथ मुझे किस त़रह़ धोका दे सकता है। धोका तो मख़्लूक़ खाती है जिन को इ़ल्म नहीं होता और मैं तो ग़ैबों का जानने वाला हूं। उस पर मेरी ला'नत है और सातों फ़िरिश्ते और तीन हज़ार उन के मुत्तबिईन फ़िरिश्ते सब कहते हैं : ऐ हमारे रब ! इस पर तेरी ला'नत है और हमारी भी ला'नत। फिर आसमानों वाले कहते हैं : उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत और ला'नत करने वालों की ला'नत,

www.dawateislami.net

फिर मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ रोने लगे और बड़ा सख़्त रोए और कहा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! आप ने जो ज़िक्र फ़रमाया है इस से नजात की क्या सूरत है ? तो फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! (رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ) अपने नबी (صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की यक़ीन में इक़्तिदा कर । मैं ने कहा : आप तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं (صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) और मैं मुआ़ज़ बिन जबल हूं, मुझे नजात और ख़लासी किस त़रह़ नसीब हो सकती है ? आप ने फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! (رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ) अगर तेरे अ़मल में कोताही हो तो अपनी ज़बान को रोक लोगों की बुराइयां बयान करने से, रोक ख़ुसूसिय्यत के साथ अपने क़ुरआन पढ़ने वाले भाइयों से और तुम्हारे वोह उ़यूब जिन को तुम जानते हो वोह तुम्हें लोगों की ग़ीबत और बुराई से रोकें और अपने भाइयों को ज़लील व रुस्वा कर के अपने नफ़्स को पाक न बना और अपने भाइयों को गिरा कर अपने आप को बुलन्द करने की कोशिश न कर और अपने अ़मल में रियाकारी न कर कि तू लोगों में पहचाना जाए और इस त़रह़ दुन्या में मश्ग़ूल न हो जा कि तुझे आख़िरत का मुआ़मला भूल जाए और जब तेरे पास कोई और आदमी बैठा हो तो किसी दूसरे से छुप कर मश्वरा न कर और लोगों में बड़ाई ह़ासिल करने की कोशिश न कर कि दुन्या और आख़िरत की भलाइयां तुझ से मुंह मोड़ लेंगी और अपनी मजलिस में इस त़रह़ फ़ोह़श गोई न कर कि लोग तेरी बद अख़्लाक़ी की वजह से तुझ से गुरैज़ करने लगें और लोगों पर एह़सान न जता और लोगों की इ़ज़्ज़त का पर्दा अपनी ज़बान से चाक न कर कि तुझे जहन्नम के कुत्ते फाड़ डालेंगे और येही है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ौल : "وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿۲﴾" (پ۳۰،النازعات:۲) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : जहन्नम के कुत्ते हड्डियों से गोश्त को अलग कर देंगे । मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन ख़साइल पर कौन

www.dawateislami.net

कारबन्द रह सकता है, आप ने फ़रमाया ऐ मुआ़ज़ ! رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ जो मैं ने तुझ से बयान किया है वोह उसी आदमी पर आसान है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसान करे। तुझे इन तमाम बातों से येह चीज़ किफ़ायत करती है कि तू लोगों के लिये वोही कुछ पसन्द करे जो तू अपने नफ़्स के लिये पसन्द करता है और लोगों के लिये वोह कुछ ना पसन्द करे जो अपने नफ़्स के लिये ना पसन्द करता है, अगर तू ऐसा करेगा तो सलामत रहेगा और नजात पा जाएगा। ख़ालिद बिन मा'दान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ क़ुरआने पाक की तिलावत भी इस कसरत से नहीं करते थे जितना कि इस ह़दीस को बयान करते और अपनी मजलिस में इस का तज़्किरा करते।

(الترغیب والترھیب،المقدمۃ،الترھیب من الریاء.... الخ،الحدیث: ۵۹،ج۱،ص۴۸بتغیر)

और ऐ आदमी ! जब तू ने येह अ़ज़ीम ह़दीस और बहुत बड़ी ख़बर सुन ली है जिस का अन्जाम बड़ा दर्दनाक है जिस के असर से दिल उड़ने लगते हैं और अ़क़्लें परेशान हो जाती हैं और जिस को सीने उठाने से तंग हैं। जिस की हैबत से नफ़्स घबराते हैं तो अपने मौला की रह़मत का दामन थाम ले और आ़जिज़ी व तज़र्रुअ़ और दिन रात के रोने से उस के दरवाज़े को लाज़िम पकड़ जैसा कि दूसरे आ़जिज़ी करने वाले और तज़र्रुअ़ करने वाले करते हैं, इस मुआ़मले में नजात सिर्फ़ उस की रह़मत से है और इस समुन्दर से सलामती के साथ बच निकलना सिर्फ़ उस की तवज्जोह और तौफ़ीक़ और इ़नायत से है। ग़ाफ़िलों की नींद से बेदार हो और इस काम को इस का ह़क़ दे और इस ख़ौफ़नाक घाटी में अपने नफ़्स से जिहाद कर ताकि तू हलाक होने वालों के साथ हलाक न हो जाए और हर ह़ालत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद की इल्तिजा है वोह बेहतरीन मददगार है, और वोह सब रह़्म करने वालों से ज़ियादा रह़्म करने वाला है और गुनाह से बचने और नेकी करने की त़ाक़त भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बुलन्द व बरतर और अ़ज़ीम की तौफ़ीक़ से है।

www.dawateislami.net

फ़स्ल

किस्सए मुख़्तसर जब तू ने अच्छी त़रह़ देख लिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत की क़द्र व मन्ज़िलत को मुलाह़ज़ा कर लिया और मख़्लूक़ की कमज़ोरी व जहालत को देख लिया तो अपने दिल के साथ मख़्लूक़ की त़रफ़ तवज्जोह मत कर और उन की मद्ह़ो सना और उन की ता'ज़ीम से बे नियाज़ हो जा कि इस में कोई फ़ाइदा नहीं है, तू उन की रिज़ा का इरादा कर के अपनी इबादत को मर्दूद न कर और जब तूने दुन्या की ज़िल्लत व ह़क़ारत और जल्द ख़त्म हो जाने को जान लिया है, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत से उस की त़रफ़ तवज्जोह न कर और अपने नफ़्स से कह : ऐ नफ़्स ! रब्बुल आ़लमीन की ता'रीफ़ और उस की बारगाह से मिलने वाला ए'ज़ाज़, आ़जिज़ और जाहिल मख़्लूक़ की सना से बेहतर है जो ह़क़ीक़त में तेरे अ़मल की क़द्र को और तेरी मेह़नत को जानते ही नहीं और तेरे ह़क़ को तेरे आ'माल में और तेरी तकलीफ़ात में नहीं पहचान सकते, बल्कि बसा अवक़ात तुझ पर किसी ऐसे आदमी को फ़ज़ीलत देंगे जो कि तुझ से हज़ार हां दरजा कम तर होगा और सब से ज़ियादा ह़ाजत के अवक़ात में तुझ को ज़ाएअ़ कर देंगे और भूल जाएंगे और अगर वोह ऐसा न भी करें तो उन के हाथ में आख़िर है भी क्या और उन की त़ाक़त कहां तक पहुंच सकती है ? फिर वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के क़ब्ज़े में हैं। तो फिर वोह उन को जिस त़रह़ चाहेगा और जिधर चाहेगा फेर देगा तो ऐ नफ़्स अ़क्ल से काम ले और अपनी क़ीमती इबादत को उन की वजह से ज़ाएअ़ न कर और नहीं फ़ौत होगी तुझ से उस ज़ात की सना जिस की सना तमाम तर फ़ख़्र और अ़त़ा है, और जिस की अ़त़ा तमाम तर ज़ख़ीरा है। और कहने वाले ने कितना सच कहा है :

سَهَرُ الْعُيُوْنِ لِغَيْرِ وَجْهِكَ بَاطِلٌ   وَ بُكَاؤُهُنَّ لِغَيْرِ عَفْوِكَ ضَائِعٌ

www.dawateislami.net

तेरी ज़ात के इलावा के लिये रातों को जागना बात़िल है और मग़फ़िरत की त़लब के इलावा के लिये आंसू बहाना फ़ुज़ूल है।

और कहो : ऐ नफ़्स ! क्या हमेशा की जन्नत बेहतर है या दुन्या और इस का नाकारा और फ़ानी ह़राम से आलूदा सामान, ह़ालांकि तुझे त़ाक़त है कि तुझे तेरी इस इ़बादत से हमेशा की ने'मतें ह़ासिल हों, पस तू कम हिम्मत और कमज़ोर इरादे वाला न बन। क्या तू ग़ौर नहीं करता कि कबूतर जब फ़ज़ा में बुलन्द उड़ने वाला हो तो उस की क़ीमत किस त़रह़ बढ़ जाती है और उस की क़द्र कितनी ज़ियादा हो जाती है। सो तू अपनी तमाम हिम्मत को आसमान की त़रफ़ बुलन्द कर और अपने दिल को अकेले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ाली कर दे जिस के इख़्तियार में तमाम उमूर हैं और नाकारा चीज़ों की वजह से अपनी कमाई हुई इ़बादत को ज़ाएअ़ न कर और जब तू अच्छी त़रह़ ग़ौर करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों और बड़े बड़े एह़सानात को इस इ़बादत में अपने ऊपर मुलाह़ज़ा फ़रमाएगा कि उसी ने तुझ को इस की तौफ़ीक़ बख़्शी और उस ने इस का सामान फ़राहम किया और उसी ने तमाम रुकावटों को तुझ से दूर फ़रमाया यहां तक कि तू इस इ़बादत के लिये फ़ारिग़ हुवा। फिर उस ने तुझ को तौफ़ीक़ व ताईद से ख़ास किया और इस को तुझ पर आसान बनाया और तेरे दिल में इस की चाहत व मह़ब्बत पैदा कर दी यहां तक कि तूने इस पर अ़मल किया।

फिर उसी ने अपनी अ़ज़मत और जलाल और तेरी इ़बादत और तुझ से बे नियाज़ी और अपनी तुझ पर बे अन्दाज़ा ने'मतों के बा वुजूद तेरे लिये इस मा'मूली अ़मल पर सनाए जमील और सवाबे जलील का अज्र तय्यार कर रखा है, जिस का तू किसी सूरत में मुस्तह़िक़ नहीं है, फिर वोह इस पर तेरा ए'ज़ाज़ फ़रमाता है और इस मा'मूली काम पर तेरी ता'रीफ़ करता है और इसी की वजह से तुझ से मह़ब्बत रखता है। येह सब कुछ उस के फ़ज़्ले अ़ज़ीम की वजह

www.dawateislami.net

से है न किसी और वजह से वरना तेरा कौन सा ह़क़ है और तेरे इस ऐ़बदार और ह़क़ीर अ़मल की कौन सी क़द्र है, सो ऐ नफ़्स ! अपने रब्बे करीम सुब्ह़ानहू व तआ़ला के एह़सान को याद कर कि उस ने तुझ पर इस इ़बादत के बजा लाने में कितना एह़सान किया और उस से शर्म कर कि तू अपने अ़मल की त़रफ़ तवज्जोह करे बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का हम पर हर ह़ाल में फ़ज़्ल और एह़सान है और इस इ़बादत के ह़ासिल हो जाने के बा'द तेरा शग़्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तज़र्रुअ़ और आ़जिज़ी के सिवा और कुछ नहीं होना चाहिये कि वोह उसे अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमा ले । क्या तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़लील इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बात नहीं सुनी कि जब वोह ख़ुदा तआ़ला के घर की ता'मीर की ख़िदमत से फ़ारिग़ हुए तो किस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में गिड़गिड़ाए कि वोह उस को क़बूल फ़रमा कर उन पर एह़सान करे उन्हों ने कहा :

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۱۲۷﴾ (پ۱، البقرۃ: ۱۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता ।*

और जब अपनी दुआ़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया :

رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ (پ۱۳، ابراھیم: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले ।*

फिर अगर उस ने नाक़िस इ़बादत को क़बूल फ़रमा कर तुझ पर एह़सान किया तो उस ने अपनी ने'मत को मुकम्मल कर दिया और एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया । तो येह कैसी सआ़दत, दौलत, इ़ज़्ज़त और रिफ़्अ़त व बुलन्दी का मक़ाम है इस वक़्त येह ख़िल्अ़त व ने'मत और ज़ख़ीरा व करामत तुझ पर कितनी ज़ैब देगी और अगर दूसरी कैफ़िय्यत हुई तो इस ख़सारे और नुक़्सान और मह़रूमी पर निहायत अफ़्सोस, पस तू उठ और इस इन्आ़म वाले रास्ते पर चल, जब तू इस अ़मल पर हमेशगी करेगा और अपनी इ़बादत से फ़ारिग़ होने पर अपने दिल में इस

www.dawateislami.net

की तकरार करेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद चाहेगा तो वोह तुझे मख़्लूक़ और नफ़्स के इल्तिफ़ात से बचा लेगा और **उ़जब** और रियाकारी की आफ़त से मह़फ़ूज़ रखेगा और तुझे इख़्लास वाली इ़बादात की तौफ़ीक़ देगा और फिर तमाम ह़ालात में तुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान होगा। तुझे ज़ाहिरी इत़ाअ़त ह़ासिल होगी जो उम्मीद के क़ाबिल हो और ऐसी नेकियां मुयस्सर आएगी जिन में कोई कदूरत न हो और ऐसी मक़्बूल इ़बादतें ह़ासिल हों जिन में कोई नक़्स न हो और ऐसी इ़बादत अगर बिल फ़र्ज़ ज़िन्दगी में एक ही दफ़्अ़ मुयस्सर हो जाए और फिर कभी मुयस्सर न हो तो वोह भी ह़क़ीक़त में बहुत है और मुझे अपनी उ़म्र की क़सम अगर्चे इस की ता'दाद कम हो लेकिन इस के मा'ना बहुत है इस की क़द्र बड़ी है, इस का नफ़्अ़ कसीर है। इस का अन्जाम अच्छा है और इस त़रह़ की तौफ़ीक़ मिलना बहुत अ़ज़ीज़ है और बन्दे पर ख़ुदा तआ़ला का बहुत बड़ा एह़सान है। फिर उस तोह़फ़े से कौन सा तोह़फ़ा बड़ा हो सकता है कि जिस को **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन क़बूल कर ले और उस की कोशिश से अच्छी और कौन सी कोशिश हो सकती है जिस का ए'ज़ाज़ बे क़रारों की दुआएं सुनने वाला फ़रमाए और उस पर ता'रीफ़ करे और कौन सी कमाई उस कमाई से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ है जिस को रब्बुल आ़लमीन पसन्द फ़रमाए और उस पर ख़ुश हो, पस ए मिस्कीन ग़ौर कर और होशियार हो जा कि तू ख़सारा पाने वालों से न हो जाए और जब मुआ़मला इस ह़द तक पहुंच जाएगा तो तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुख़्लिस डरने वाले फ़िक्र करने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात पर राज़ी होने वाले लोगों में से हो जाएगा और तू उस ख़ौफ़नाक घाटी को अपने पीछे छोड़ जाएगा उस की आफ़तों से सलामत रहेगा और उस की भलाइयां और फल अपने साथ ले जाएगा उस की सआ़दतों और करामतों पर हमेशा के लिये फ़ाइज़ हो जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही अपने फ़ज़्लो करम से तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाने में और गुनाहों से बचाने में बेहतरीन वाली व मदद गार है, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।

www.dawateislami.net

जिन की नमाज़ें क़ज़ा हैं......!

जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उसे वक़्त में बजा लाने को अदा कहते हैं (درمختار معه رد المحتار، ج۲، ص ٦٢٧) और वक़्त ख़त्म होने के बा'द अ़मल में लाना क़ज़ा है। (درمختار معه رد المحتار، ج۲، ص٦٣٢)

बिला उ़ज़्रे शरई नमाज़ क़ज़ा कर देना सख़्त गुनाह है, उस पर फ़र्ज़ है कि इस की क़ज़ा पढ़े और सच्चे दिल से **तौबा** भी करे, **तौबा** या ह़ज्जे मक़्बूल से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ताख़ीर का गुनाह मुआ़फ़ हो जाएगा। (درمختار معه ردالمحتار، ج۲، ص٦٢٦)

जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है, मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरियात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है, लिहाज़ा कारोबार भी करता रहे और फ़ुरसत का जो वक़्त मिले इस में क़ज़ा पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाए। (درمختار معه ردالمحتار ج۲ ص٦٤٦)

क़ज़ा नमाज़ें अदा करने वाला जब से बालिग़ हुवा उस वक़्त से नमाज़ों का ह़िसाब लगाए और तारीख़े बुलूग़ मा'लूम न हो तो एह़तियात़ इसी में है कि औ़रत "9" साल की उ़म्र से और मर्द "12" साल की उ़म्र से नमाज़ों का ह़िसाब लगाए।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या जि. 8 स. 154)

क़ज़ा हर रोज़ की "20" रक्अ़तें होती है, दो फ़र्ज़ फ़ज्र के, चार ज़ोहर के, चार अ़स्र के, तीन मग़रिब के। इशा के चार फ़र्ज़ और तीन वित्र।

www.dawateislami.net

क़ज़ा नमाज़ें पढ़ने का आसान त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! जिन के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हैं उन का सुन्नते ग़ैर मोअक्कदा और नफ़्ल नमाज़ की जगह क़ज़ाए उ़मरी अदा करना अफ़्ज़ल है। **शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी रज़वी** دامت برکاتهم العالیه नमाज़ के अह़काम, स. 342 पर नक़्ल फ़रमाते है :

नवाफ़िल की जगह क़ज़ाए उ़मरी पढ़िये

क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल से अहम है या'नी जिस वक़्त नफ़्ल पढ़ता है उन्हें छोड़ कर उन के बदले क़ज़ाएं पढ़े कि बरियुज़्ज़िम्मा हो जाए। अलबत्ता तरावीह़ और बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा की न छोड़े (رد المحتار،ج۱،ص٥٣٦) लिहाज़ा नीचे दिये गए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मा'मूल बना लिया जाए तो आसानी से रोज़ाना पांच फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ पांच क़ज़ा नमाज़ें भी अदा हो जाएगी।

फ़ज्र की क़ज़ा, ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल की जगह पढ़ ले। ज़ोहर की क़ज़ा, मग़रिब के बा'द पढ़े जाने वाले अव्वाबीन के छे रक्अ़त नफ़्ल की जगह पढ़ लें। इसी त़रह अ़स्र की क़ज़ा, अ़स्र की सुन्नतें क़ब्लिय्या की जगह पढ़ लें, मग़रिब की क़ज़ा, इशा में वित्र से पहले पढ़े जाने वाले दो नफ़्ल की जगह पढ़ ले और इशा की क़ज़ा, इशा की सुन्नते क़ब्लिय्या की जगह और वित्र की क़ज़ा वित्र के बा'द

www.dawateislami.net

पढ़े जाने वाले नफ़्ल की जगह पढ़ लें। इसी तरह पूरे दिन की 20 रक्अ़तें क़ज़ा पढ़ने में काम्याब हो जाएंगे नीज़ उम्मीद रखें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने करमे ख़ास से क़ज़ा नमाज़ों के ज़िम्न में सुन्नतें ग़ैर मोअक्कदा और नफ़्ल का सवाब भी अ़ता फ़रमा दे। निय्यत इस तरह करें, मसलन सब से पहली फ़ज्र जो मुझ से क़ज़ा हुई इस को अदा करता हूं, हर नमाज़ में इसी तरह निय्यत कीजिये।

जिस पर ब कसरत क़ज़ा नमाज़ें हैं वोह आसानी के लिये अगर यूं भी अदा करे तो जाइज़ है की हर रुकूअ़ और हर सजदे में तीन तीन बार سُبحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم और سُبحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی की जगह सिर्फ़ एक एक बार कहे। मगर येह हमेशा और हर तरह की नमाज़ में याद रखना चाहिये कि जब रुकूअ़ में पूरा पहुंच जाए उस वक़्त سُبحٰن का सीन शुरूअ़ करे और जब عَظِیْم का मीम ख़त्म कर चुके उस वक़्त रुकूअ़ से सर उठाए। इसी तरह सजदे में भी करे, **एक** तख़्फ़ीफ़ तो येह हुई और **दूसरी** येह कि फ़र्ज़ों की तीसरी और चोथी रक्अ़त में اَلْحَمْد शरीफ़ की जगह फ़क़त् سُبْحٰنَ الله तीन बार कह कर रुकूअ़ कर ले मगर वित्र की तीनों रक्अ़तों में اَلْحَمْد शरीफ़ और सूरत दोनों ज़रूर पढ़ी जाएं। **तीसरी** तख़्फ़ीफ़ येह कि का'दए आख़ीरा में तशह्हुद या'नी अत्तहिय्यात के बा'द दोनों दुरूदों और दुआ़ की जगह सिर्फ़ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِه कह कर सलाम फैर दे। **चोथी** तख़्फ़ीफ़ येह कि वित्र की तीसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत की जगह اَللهُ اَکْبَر कह कर फ़क़त् एक बार या तीन बार رَبِّ اغْفِرْلِی कहे।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 8 स. 157)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! म-दनी इन्आ़मात में सुन्नते ग़ैर मोअक्कदा और मुख़्तलिफ़ नवाफ़िल (मसलन तहिय्यतुल वुज़ू, तहिय्यतुल मस्जिद, तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन, पंज वक़्ता नमाज़ों के नवाफ़िल, सलातुत्तौबा) पढ़ना भी शामिल है लिहाज़ा जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हैं वोह नवाफ़िल की जगह क़ज़ा पढ़े उस का नवाफ़िल की अदाएगी वाले म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल हो जाएगा।

निगाहों की ह़िफ़ाज़त और फ़ुज़ूल गोई से बचने का म-दनी त़रीक़ा

ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना के 12 म-दनी फूल

(1) सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो चुप रहा उस ने नजात पाई। (سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة...الخ، باب ١١٥، الحديث:٢٥٠٩، ج٤، ص٢٢٥) (2) इन्सान के सर गुनाहों का बोझ लदवाने में ज़बान सब आ'ज़ा से बढ़ कर है। (3) याद रखिये ! बरोज़े क़ियामत एक एक लफ़्ज़ का ह़िसाब देना पड़ेगा। (4) हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, जो बात एक लफ़्ज़ में अदा की जा सकती हो वोह अगर दो या तीन अल्फ़ाज़ में कही तो जितने अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं वोह फ़ुज़ूल और वबाल है। (लिहाज़ा कम से कम और नपे तुले अल्फ़ाज़ में गुफ़्तगू निमटाने की आ़दत बनाए।) (احياء علوم الدين، کتاب آفات اللسان، ج٣، ص١٤١)

(5) हर वोह बात फ़ुज़ूल है जिस में न दीन का फ़ाइदा हो न दुन्या का। (6) हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी बिला ज़रूरत कोई लफ़्ज़ ज़बाने अक़्दस से नहीं निकाला, हां अच्छी अच्छी बातें करना सुन्नत है। (7) कम गोई की आ़दत बनाने के लिये जहां जहां

www.dawateislami.net

मुमकिन हो बोलने के बजाए इशारे से या लिख कर बात करने की कोशिश कीजिये। (8) ख़ामोश रहने के लिये अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ मुंह में पथ्थर लिये रहते थे। (کیمیائے سعادت،ج۲، ص ۵۶۳) हो सके तो आप भी सुन्नते सिद्दीक़ी अदा करते हुए रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट मुंह में इतने ह़ज्म का पथ्थर रखिये कि इसे बहार निकाले बिग़ैर गुफ़्त्गू करना मुमकिन न रहे, पथ्थर को रोज़ाना धो लिया करें। पथ्थर में मा'मूली सी भी शिकस्तगी (टूट फूट या दरार) न हो वरना मैल जम्अ़ होगा और ऐसा पथ्थर मुंह में रखना मुज़िर्रे सिह़्ह़त है। (9) आप ख़ामोशी की आ़दत डालने की कोशिश करेंगे तो शायद इस त़रह़ आज़माइश हो सकती है कि आप का मज़ाक़ उड़े, या तन्क़ीद हो, अगर आप हिम्मत हार गए या गुस्सा कर बैठे तो शैत़ान ख़ुश होगा। लिहाज़ा सब्र से काम लें। (10) मुमकिन है आप के लिये ख़ामोशी की आ़दत डालना कठिन साबित हो, मगर हिम्मत न हारें। बार बार कोशिश करें, हो सकता है किसी एक दिन फ़ुज़ूल गोई से बचने में काम्याब हो जाए मगर फिर कई रोज़ तक ख़ामोशी नसीब न हो मगर फिर कोशिश करें, फिर कोशिश करें, फिर कोशिश करें ..... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कभी तो काम्याबी ह़ासिल हो ही जाएगी। निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान (11) जब बोलने को जी चाहे तो ग़ौर कर लिया करें कि इस बात में फ़ाइदा भी है या नहीं। अगर बोले बिग़ैर भी गुज़ारा हो सकता हो तो उतनी देर तक दुरूद शरीफ़ पढ़ ले। शैत़ान अपना सर पीट लेगा और जब कोई

www.dawateislami.net

ग़ैर ज़रूरी बात मुंह से निकल जाए तो बत़ौरे इज़ाला फ़ौरन दुरूदे पाक पढ़ लिया करें। (12) रात सोते वक़्त अगर ग़ौर कर लिया करें कि आज मैं ने कौन कौन सी ग़ैर ज़रूरी बात की फिर ग़ैर ज़रूरी बातों पर अपने आप को मलामत करें इस त़रह़ भी ख़ामोशी की आ़दत बनाने में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मदद मिलेगी, आह ! वोह शख़्स भी कितना बद नसीब होगा जो सिर्फ़ ज़बान की बे एह़तियात़ियों के सबब दाख़िले जहन्नम होगा। वाक़ेई इस से तो गूंगा ही भला !

आंखों के क़ुफ़्ले मदीना के 12 म-दनी फूल

(1) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शर्मो ह़या से अकसर निगाहें नीची किये रहते थे। (شمائل ترمذی،الحدیث:۷،ص۲۳) (2) बिला ज़रूरत इधर उधर नज़रें घुमाना सुन्नत नहीं है। (3) जिस से बात कर रहे हैं उस के चेहरे पर नज़र गाड़ना सुन्नत नहीं। (وسائل الوصول الی شمائل الرسول،الفصل الرابع فی صفة حیاتہ ومزاحہ، ص ۲۲۹) (4) गुफ़्तगू करते वक़्त भी निगाहें नीची रखने की आ़दत बनाइयें। (5) गाड़ी में सफ़र करते वक़्त एह़तियात़ फ़रमाए कि आंखें फ़ोह़श तो फ़ोह़श फ़ुज़ूल नज़ारों में भी मशग़ूल न हों।

आंख उठती तो मैं झुंझला के पलक सी लेता
दिल बिगड़ता तो मैं घबरा के संभाला करता

(6) अज्नबिय्या औ़रत को देखना या अम्रद को शहवत के साथ देखना ह़राम है। (قدوری، کتاب الحظر والاباحة،ص۴۱۲وتفسیرات احمدیہ، ص ۵۵۹) "मुका-श-फ़तुल क़ुलूब" में है जिस ने अपनी आंख को ह़राम से पुर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की आंख को आग से

www.dawateislami.net

भर देगा । (مکاشفة القلوب،الباب الاول فی بیان الخوف،ص۱۰) (7) निगाहों की हिफ़ाज़त की आ़दत बनाने के लिये कुफ़्ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल मुफ़ीद है। इसे बनाने का त़रीक़ा येह है कि दोनों GLASSES के उपरी एक तिहाई (1/3) हिस्से की ग्राइन्डर से घिसाई करवा लें या इतने हिस्से पर TAPE लगा लें। (8) जिस वक़्त कुफ़्ले मदीना का ऐनक पहना हो उस वक़्त निगाहें नीची रखें अगर बार बार ऊपर देखेंगे तो हो सकता है सर और गर्दन में दर्द हो जाए बल्कि इब्तिदाई दिनों में कुछ दर्द होने का इमकान है, आ़दत हो जाने की सूरत में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द नहीं होगा। (9) इस की आ़दत बनाने का त़रीक़ा येह है कि इब्तिदाअन चार दिन सिर्फ़ 12 मिनट पहनें फिर रफ़्ता रफ़्ता वक़्त बढ़ाते जाएं। (10) जब कुफ़्ले मदीना का ऐनक पहनें तो GLASS के घिसे हुए हिस्से पर नज़र डालने की कोशिश न करें कि आंखों के लिये नुक़्सान देह है। (11) GLASS पर उंगली वग़ैरा लगने से धब्बा हो जाए तो साफ़ किये बिग़ैर न पहनें। (12) गाड़ी चलाते हुए कुफ़्ले मदीना का ऐनक हरगिज़ न पहनें।

या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रो की ह़या का साथ हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अपनी निगाहों और ज़बान की हिफ़ाज़त के लिये मज़बूत **कुफ़्ले मदीना** लगा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ख़ूब ब-र-कतें नसीब होंगी।

www.dawateislami.net

ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सलाम

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के अ़लाक़ा दादन शाह के मुक़ीम इस्लामी भाई के ह़ल्फ़िया (या'नी क़समिय्या) बयान का ख़ुलासा है कि "ग़ालिबन येह सि. 1991 ई. की बात है। एक रात जब मैं सोया तो ख़्वाब में एक नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग जिन्हों ने **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़** का ताज सजा रखा था, फ़रमा रहे हैं : **इल्यास क़ादिरी को मेरा सलाम कहना** और पैग़ाम देना कि अपने मुरीदीन (और मुतअ़ल्लिक़ीन) से कहें कि वोह अच्छी त़रह़ कुफ़्ले मदीना लगाएं।" मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ तक येह पैग़ाम न पहुंचा सका।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! चन्द रोज़ बा'द येही इस्लामी भाई आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हुए। शुरक़ा में एक डॉक्टर साह़िब भी थे जो आज कल इस्लामाबाद में न्यूरो सर्जन हैं। उन्हों ने ह़ल्फ़िया बयान दिया कि मस्जिद में दौराने दर्स मुझ समेत तमाम शुरक़ाए क़ाफ़िला ने ऐन बेदारी के आ़लम में देखा कि **अचानक क़रीब रखी हुई चादर उड़ी और सामने दरवाज़े के क़रीब जा कर बिछ गई**। तमाम शुरक़ा ह़ैरतज़दा थे कि यकायक वोह इस्लामी भाई जिन्हें ख़्वाब में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को सलाम व पयाम पहुंचाने का हुक्म मिला था। रोते हुए बा अदब अन्दाज़ में उठे और जो चादर उड़ कर बिछी थी उस के क़रीब दो ज़ानू बैठ कर रोना शुरूअ़ कर दिया। काफ़ी देर उन की येही केफ़िय्यत रही, इफ़ाक़ा होने पर पूछा गया तो बताया

www.dawateislami.net

कि मैं ने चादर पर उन्ही सब्ज़ इमामे वाले बुज़ुर्ग को तशरीफ़ फ़रमा देखा जो ख़्वाब में तशरीफ़ लाए थे। और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लिये पैग़ाम दिया था। उन्हों ने फ़रमाया कि तुम ने अभी तक मेरा पैग़ाम इल्यास क़ादिरी को नहीं पहुंचाया ? **मैं शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जिलानी** (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) हूं, **इल्यास क़ादिरी** को मेरा सलाम कहना और कहना कि अपने मुरीदीन (मुतअ़ल्लिक़ीन) से कहें कि वोह सख़्ती से क़ुफ़्ले मदीना लगाए।

अल्लाह हमें कर दे अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना

हर एक मुसलमां ले लगा क़ुफ़्ले मदीना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो* اٰمِين بِجاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

केसिट इजतिमाअ़ के 12 म-दनी फूल

(اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों को सुन कर बे नमाज़ियों और गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वालो की इस्लाह़ हो चुकी है। आप अगर अपने घर में म-दनी माह़ोल क़ाइम करने के ख़्वाहिश मन्द हैं तो मेहरबानी फ़रमा कर अहले ख़ाना को नर्मी के साथ बयानात के केसिट सुनने पर आमादा करें)

(1) हर ज़ैली ह़ल्क़े की किसी मस्जिद या घर वग़ैरा में ह़फ़्तावार "**केसिट इजतिमाअ़**" का एहतिमाम फ़रमाए। (2) नए नए इस्लामी भाइयों को शिर्कत के लिये राज़ी करें। (3) परेशानी से बचने के लिये केसिट और टेप रेकोर्डर पहले से ही चैक कर लें। (4) ए'लान में

www.dawateislami.net

घड़ी का वक़्त बताएं, मसलन फ़ुलां रात दस बजे केसिट इजतिमाअ़ होगा। किसी का इन्तेज़ार न फ़रमाएं ख़्वाह एक ही इस्लामी भाई मौजूद हो वोही बयान का आग़ाज़ कर दे। इन्तेज़ार किया तो इजतिमाअ़ नाकाम हो सकता है। (5) बयान शुरूअ़ होने से क़ब्ल मुख़्तसर तिलावत हो और एक ना'त शरीफ़ भी पढ़े। (6) मुमकिन हो तो इस्लामी बहनों के सुनने का भी एहतिमाम फ़रमाए। (7) इस्लामी बहनें भी अपने अपने ज़ैली ह़ल्क़ो में केसिट इजतिमाअ़ शुरूअ़ करें। (8) एक जगह मख़्सूस करना ज़रूरी नहीं। अलग अलग घरों में इजतिमाअ़ करने में फ़ाइदा ज़ियादा है कि इस त़रह़ ज़ियादा नए नए इस्लामी भाई मुस्तफ़ीज़ होंगे। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ (9) जब केसिट बयान जारी हो उस वक़्त काम की बात भी हरगिज़ न कि जाए वरना तवज्जोह बट जाएगी बल्कि जहां मुमकिन हो अन्धेरे में सुनें ताकि यक्सूई ह़ासिल हो। (10) इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर चाए वग़ैरा पर रक़म ख़र्च करने के बजाए इतनी रक़म के **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाले रसाइल तक़्सीम कर दिये जाएं। (**ह़िक्मते अ़मली :** अगर मा'लूम हो जाए कि साह़िबे ख़ाना चाए वग़ैरा का इन्तेज़ाम करेंगे तो अब इन को चाए के बजाए तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब दिलाएं न कि पहले ही से मुत़ालबा फ़रमाएं कि रिसाले बाटने होंगे।) (11) सलातो सलाम के तीन अश्आ़र और मुख़्तसर दुआ़ पर इजतिमाअ़ का इख़्तिताम फ़रमाए। (12) लाज़िमी त़ौर पर हर एक से मुलाक़ात करें और इजतिमाअ़, नेकी की दा'वत और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये नए इस्लामी भाइयों को राज़ी करें।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने म-दनी इन्आ़मात** में रोज़ाना रात को सूरए मुल्क की तिलावत की भी तरग़ीब दिलाई है चुनान्चे इस से मुतअ़ल्लिक़ कुछ फ़ज़ाइल और आख़िर में एक म-दनी बहार भी मुलाह़ज़ा फ़रमाए :

सूरए मुल्क के फ़ज़ाइल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि मालिके बह़्रो बर, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक क़ुरआन में तीस आयतों पर मुश्तमिल एक सूरत है जो अपने क़ारी के लिये **शफ़ाअ़त** करती रहेगी। यहां तक कि उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी और येह تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ है।

(سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورة الملك،الحدیث:۲۹۰۰،ج۴،ص۴۰۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ुरआने करीम में एक सूरत है जो अपने क़ारी के बारे में झगड़ा करेगी यहां तक कि उसे जन्नत में दाख़िल करा देगी और वोह येही **सूरए मुल्क** है। (الدرالمنثور،ج۸،ص۲۳۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते है कि "जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था, फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।"

तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम **सूरए मुल्क** है जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।

(المستدرك على الصحيحين،تفسير سورة الملك،الحديث:٣٨٩٢،ج٣،ص٣٢٢)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक मैं कुरआन में 30 आयात की एक सूरत पाता हूं, जो शख़्स सोते वक़्त इस (सूरत) की तिलावत करे, उस के लिये 30 नेकियां लिखी जाएंगी, और उस के 30 गुनाह मिटाए जाएंगे, और उस के 30 दरजात बुलन्द किये जाएंगे, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता उस की त़रफ़ भेजेगा ताकि वोह इस पर अपने पर बिछा दे और उस की हर चीज़ से जागने तक ह़िफ़ाज़त करे और येह मुजादला (या'नी झगड़ा) करने वाली है, अपने पढ़ने वाले की मग़फ़िरत के लिये क़ब्र में झगड़ा करेगी, और येह تَبَارَکَ الَّذِیْ بِیَدِہِ الْمُلْکُ है। (الدرالمنثور،ج٨،ص٢٣٣)

www.dawateislami.net

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि मेरी ख़्वाहिश है कि **تَبَارَکَ الَّذِیْ بِیَدِہِ الْمُلْکُ** हर मोमिन के दिल में हो। (کَنْزُ الْعُمَّال،کتاب الاذکار،قسم الاقوال،الحدیث:۲۶۴۵،ج۱،ص۲۹۱)

चांद देख कर इस को पढ़ा जाए तो महीने के तीस दिनों तक वोह सख़्तियों से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ रहेगा, इस लिये कि येह तीस आयतें हैं और तीस दिन के लिये काफ़ी हैं।

(تَفْسِیْر رُوْحُ الْمعَانِی،سورۃالملك،ج۱۵،ص۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْھُما फ़रमाते हैं कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ ने एक क़ब्र पर अपना ख़ैमा लगाया उन्हें इ़ल्म न था कि यहां क़ब्र है अचानक उन्हों ने सुना कि एक शख़्स इस में सूरए मुल्क पढ़ रहा है और उस ने पूरी सूरत ख़त्म की वोह सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा तान लिया मुझे मा'लूम न था कि वहां क़ब्र है अचानक मैं ने सुना कि एक शख़्स इस में **सूरए मुल्क** पढ़ रहा है और उस ने पूरी सूरत ख़त्म की। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : "येही रोकने वाली है, येही नजात दिलाने वाली है जो अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाएगी।

(سنن الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ الملك،الحدیث:۲۸۹۹،ج۴،ص۴۰۷)

तिलावत की आवाज़

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के मशहूर शहर "ह़ैदराबाद" के मुक़ीम जवां साल मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुह़म्मद काशिफ़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی जो सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा

www.dawateislami.net

मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के मुरीद थे, अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ "म-दनी इन्आ़मात" के मुत़ाबिक़ गुज़ार रहे थे जिस की ब दौलत न सिर्फ़ फ़राइज़ व वाजिबात बल्कि सुनन व मुस्तह़ब्बात पर भी पाबन्दी से अ़मल था। आप का मा'मूल था कि म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ रोज़ाना रात को सूरए मुल्क की तिलावत का ख़ुसूसिय्यत के साथ एहतिमाम फ़रमाते। दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों से अपनी ज़िन्दगी मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ गुज़ारते हुए एक रोज़ बस के ह़ादिसे में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। (اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْن)

इन के चचा का ह़ल्फ़िया बयान है कि मुह़म्मद काशिफ़ अ़त्त़ारी के इन्तिक़ाल के दूसरे रोज़, रात के वक़्त मेरी आंख अचानक खुल गई और बुलन्द आवाज़ से तिलावत की आवाज़ कानों में पड़ी, मैं समझा शायद फ़ज्र का वक़्त हो चुका है चुनान्चे मस्जिद जा पहुंचा। देखा तो वहां ताला था लिहाज़ा वापस लौट आया, रात के 3:00 बज रहे थे, तिलावत की बुलन्द आवाज़ ब दस्तूर आ रही थी..... मैं ह़ैरान था कि आवाज़ कहां से आ रही है और इस वक़्त कौन तिलावत कर रहा है। ग़ौर करने पर मह़सूस हुवा कि येह तो मर्हूम मुह़म्मद काशिफ़ अ़त्त़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی की आवाज़ है जो **सूरए मुल्क** की तिलावत फ़रमा रहे हैं। जब मज़ीद ग़ौर किया तो वाज़ेह़ तौ़र पर मह़सूस हुवा कि आवाज़ उस चारपाई से आ रही है जिस पर उन को मरने के बा'द रखा गया था। गोया मर्हूम मुह़म्मद काशिफ़ अ़त्त़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی इस चारपाई पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर **सूरए मुल्क** की तिलावत फ़रमा रहे हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो, आमीन !

www.dawateislami.net

ركوعاتها ٢ ﴿٦٧ سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ ٧٧﴾ اٰياتها ٣٠

सूरए मुल्क मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला [1.]

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ

बड़ी बरकत वाला है वोह जिस के क़ब्जे़ में सारा मुल्क [2.] और वोह हर चीज़

شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ

पर क़ादिर है वोह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि

لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

तुम्हारी जांच हो [3.] तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है [4.] और वोही इ़ज़्ज़त

الْغَفُوْرُ ۙ ﴿٢﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ

वाला बख़्शिश वाला है जिस ने सात आसमान बनाए एक के ऊपर दूसरा

(1) **सूरतुल मुल्क** मक्किया है इस में दो रुकूअ़, तीस आयतें, तीन सो तीस कलिमे, एक हज़ार तीन सो तेरह हुरूफ़ हैं। ह़दीस में है कि सूरए मुल्क शफ़ाअ़त करती है (ترمذی وابوداؤد) एक और ह़दीस में है अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक जगह ख़ैमा नस्ब किया वहां एक क़ब्र थी और उन्हे ख़याल न था कि वोह साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते रहे यहां तक कि तमाम की, तो ख़ैमे वाले सहाबी ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया मुझे ख़याल न था कि यहां क़ब्र है और थी वहां क़ब्र और साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहां तक कि ख़त्म किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सूरत मानिआ़ मुन्जिय्या है अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाती है (الترمذی وقال غریب) (2) जो चाहे करे जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत। (3) दुन्या की ज़िन्दगी में। (4) या'नी कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ व मुख़्लिस है।

www.dawateislami.net

مَا تَرٰى فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ

तो रह़मान के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता है 5. तो निगाह उठा कर

الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③ ثُمَّ ارْجِعِ

देख 6. तुझे कोई रख़्ना (ख़राबी व ऐ़ब) नज़र आता है फिर दोबारा

الْبَصَرَ كَرَّتَیْنِ یَنْقَلِبْ اِلَیْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ هُوَ

निगाह उठा 7. नज़र तेरी त़रफ़ नाकाम पलट आएगी थकी

حَسِیْرٌ ④ وَ لَقَدْ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ

मान्दी 8. और बेशक हम ने नीचे के आसमान को 9. चरागों से आरास्ता किया 10.

وَ جَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّیٰطِیْنِ وَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ

और उन्हें शैत़ानों के लिये मार किया 11. और उन के लिये 12. भड़कती आग

عَذَابَ السَّعِیْرِ ⑤ وَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ

का अ़ज़ाब तय्यार फ़रमाया 13. और जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया 14.

عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِیْرُ ⑥ اِذَاۤ اُلْقُوْا

उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही बुरा अन्जाम जब उस में

(5) या'नी आसमानों की पैदाइश से क़ुदरते इलाही ज़ाहिर है कि उस ने कैसे मुस्तह़कम, इस्तिवार, मुस्तक़ीम, मस्तवी, मुतनासिब बनाए। (6) आसमान की त़रफ़ बारे दिगर (दूसरी मरतबा) (7) और बार बार देख (8) कि बार बार की जुस्त्जू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी। (9) जो ज़मीन की त़रफ़ सब से ज़ियादा क़रीब है। (10) या'नी सितारों से (11) कि जब शयात़ीन आसमान की त़रफ़ उन की गुफ़्त्गू सुनने और बातें चुराने पहुंचें तो कवाकिब से शो'ले और चिंगारियां निकलें जिन से उन्हें मारा जाए। (12) या'नी शयात़ीन के लिये (13) आख़िरत में (14) ख़्वाह वोह इन्सानों में से हों या

www.dawateislami.net

فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَّهِيَ تَفُورُ ۝٧ لا تَكَادُ

डाले जाएंगे उस का रेंकना (चिंघाड़ना) सुनेंगे कि जोश मारती है मा'लूम होता

تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ط كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ

है कि शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गिरोह उस में डाला जाएगा उस के दारोग़ा 15.

خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝٨ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ

उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला न आया था 16. कहेंगे क्यूं नहीं बेशक हमारे

جَاءَنَا نَذِيرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ

पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए 17. फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं

مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝٩ وَ

ऊतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में और

قَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ

कहेंगे अगर हम सुनते या समझते 18. तो दोज़ख़ वालों

السَّعِيرِ ۝١٠ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ

में न होते अब अपने गुनाह का इक़रार किया 19. तो फिटकार हो

जिन्नों में से (15) मालिक और उन के आ'वान ब त़रीक़े तौबीख़। (16) या'नी अल्लाह का नबी जो तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता (17) और उन्हों ने अह़कामे इलाही पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे आख़िरत से डराया। (18) रसूलों की हिदायत और उस को मानते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि तकलीफ़ का मदार अदिल्लए समइय्या व अ़क़्लिय्या दोनों पर है और दोनों हुज्जतें मुलज़िमा हैं। (19) कि रसूलों की तकज़ीब करते थे और उस वक़्त का इक़रार कुछ नाफ़ेअ़ नहीं।

www.dawateislami.net

السَّعِيۡرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَيۡبِ

दोज़ख़ियों को बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं [20]

لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّاَجۡرٌ كَبِيۡرٌ ﴿۱۲﴾ وَاَسِرُّوۡا قَوۡلَكُمۡ

उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है [21] और तुम अपनी बात आहिस्ता

اَوِ اجۡهَرُوۡا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا

कहो या आवाज़ से वोह तो दिलों की जानता है [22] क्या

يَعۡلَمُ مَنۡ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيۡفُ الۡخَبِيۡرُ ﴿۱۴﴾

वोह न जाने जिस ने पैदा किया [23] और वोही है हर बारीकी जानता ख़बरदार

هُوَ الَّذِيۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ ذَلُوۡلًا فَامۡشُوۡا فِيۡ

वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (ताबेअ़) कर दी तो उस के

مَنَاكِبِهَا وَكُلُوۡا مِنۡ رِّزۡقِهٖ ؕ وَاِلَيۡهِ النُّشُوۡرُ ﴿۱۵﴾

रस्तों में चलो और **अल्लाह** की रोज़ी में से खाओ [24] और उसी की त़रफ़ उठना है [25]

ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِي السَّمَآءِ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمُ الۡاَرۡضَ

क्या तुम उस से निडर हो गए जिस की सल्त़नत आसमान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे [26]

(20) और उस पर ईमान लाते हैं (21) उन की नेकियों की जज़ा। (22) उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुशरिकीन आपस में कहते थे चुपके चुपके बात करो मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का ख़ुदा सुन न पाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि उस से कोई चीज़ छुप नहीं सकती येह कोशिश फ़ुज़ूल है। (23) अपनी मख़्लूक़ के अह़वाल को (24) जो उस ने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाई। (25) क़ब्रों से जज़ा के लिये। (26) जैसा क़ारून को

www.dawateislami.net

فَاِذَا هِیَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ اَنْ

जभी वोह कांपती रहे 27. या तुम निडर हो गए उस से जिस की सल्त़नत आसमान

یُّرْسِلَ عَلَیْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَیْفَ

में है कि तुम पर पथराव भेजे 28. तो अब जानोगे 29. कैसा था

نَذِیْرِ ﴿۱۷﴾ وَ لَقَدْ كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

मेरा डराना और बेशक उन से अगलों ने झुटलाया 30.

فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا اِلَی الطَّیْرِ

तो कैसा हुवा मेरा इन्कार 31. और क्या उन्हों ने अपने ऊपर परन्दे

فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّ یَقْبِضْنَ ؔۘ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا

न देखे पर फैलाते 32. और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता 33. सिवा

الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ ﴿۱۹﴾ اَمَّنْ هٰذَا

रह़मान के 34. बेशक वोह सब कुछ देखता है या वोह कौन

الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ

सा तुम्हारा लश्कर है कि रह़मान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद

धंसाया। (27) ताकि तुम उस के अस्फ़ल में पहुंचो (या'नी सब से नीचे पहुंचो)। (28) जैसा लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام की क़ौम पर भेजा था (29) या'नी अ़ज़ाब देख कर (30) या'नी पहली उम्मतों ने (31) जब मैं ने उन्हें हलाक किया। (32) हवा में उड़ते वक़्त (33) पर फैलाने और समेटने की ह़ालत में गिरने से (34) या'नी बा वुजूद येह कि परन्दे बोझल, मोटे, जसीम होते हैं और शै सक़ील त़बअ़न पस्ती की त़रफ़ माइल होती है वोह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती, अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत है कि वोह ठेहरे रहते हैं,

www.dawateislami.net

الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ۚ﴿۲۰﴾ اَمَّنْ

करे 35. काफ़िर नहीं मगर धोके में 36. या कौन सा

هٰذَا الَّذِیْ یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا

ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वोह अपनी रोज़ी रोक ले 37. बल्कि वोह सरकश

فِیْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ

और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं 38. तो क्या वोह जो अपने मुंह के बल औंधा चले 39.

اَهْدٰۤى اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۲﴾

ज़ियादा राह पर है या वोह जो सीधा चले 40. सीधी राह पर 41.

قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ

तुम फ़रमाओ 42. वोही जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और

ऐसे ही आसमानों को जब तक वोह चाहे रुके हुए हैं और वोह न रोके तो गिर पड़ें। (35) अगर वोह तुम्हें अ़ज़ाब करना चाहे। (36) या'नी काफ़िर शैत़ान के इस फ़रेब में हैं कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। (37) या'नी उस के सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं। (38) कि ह़क़ से क़रीब नहीं होते, उस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने काफ़िर व मोमिन के लिये एक मसल (मिसाल) बयान फ़रमाई (39) न आगे देखे न पीछे न दाएं न बाएं। (40) रास्ते को देखता (41) जो मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाने वाली है। मक़्सूद इस मसल का येह है कि काफ़िर गुमराही के मैदान में इस त़रह़ हैरान व सरगर्दां जाता है कि न उसे मंज़िल मा'लूम न राह पहचाने और मोमिन आंखें खोले राहे ह़क़ देखता पहचानता चलता है। (42) ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुशरिकीन से कि जिस ख़ुदा की त़रफ़ मैं तुम्हें दा'वत देता हूं वोह।

www.dawateislami.net

الْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾

आंख और दिल बनाए 43. कितना कम हक़ मानते हो 44.

قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ اِلَیْهِ

तुम फ़रमाओ वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें फैलाया और उसी की त़रफ़

تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ

उठाए जाओगे 45. और कहते हैं 46. येह वा'दा 47. कब आएगा अगर

كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ

तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ येह इल्म तो अल्लाह के पास है और

اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً

मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला 48. फिर जब उसे 49. पास

سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ قِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ

देखेंगे काफ़िरों के मुंह बिगड़ जाएंगे 50. और उन से फ़रमाया जाएगा 51.

(43) जो आलाते इल्म है लेकिन तुम ने उन कूवा (कुव्वतों) से फ़ाएदा न उठाया जो सुना वोह न माना जो देखा उस से इब्रत ह़ासिल न की, जो समझा उस में ग़ौर न किया (44) कि अल्लाह तआ़ला के अ़त़ा फ़रमाए हुए कूवा और आलाते इदराक से वोह काम नहीं लेते जिस के लिये वोह अ़त़ा हुए, येही सबब है कि शिर्क व कुफ़्र में मुब्तला होते हो । (45) रोज़े क़ियामत ह़िसाब व जज़ा के लिये (46) मुसलमानों से तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा के त़ौर पर (47) अ़ज़ाब या क़ियामत का (48) या'नी अ़ज़ाब व क़ियामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूं इतने ही का मा'मूर हूं इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है वक़्त का बताना मेरे ज़िम्मे नहीं । (49) या'नी अ़ज़ाबे मौऊ़द (तै शुदा अ़ज़ाब) को (50) चेहरे सियाह पड़ जाएंगे वह़शत व ग़म से सूरतें ख़राब हो जाएंगी (51) जहन्नम के फ़िरिश्ते कहेंगे ।

www.dawateislami.net

كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ

येह है जो तुम मांगते थे 52. तुम फ़रमाओ 53. भला देखो तो अगर **अल्लाह** मुझे और

اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ

मेरे साथ वालों को 54 हलाक कर दे या हम पर रह़्म फ़रमाए 55. तो वोह कौन सा है जो काफ़िरों

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ

को देख के अ़ज़ाब से बचा लेगा 56. तुम फ़रमाओ वोही रह़मान है 57. हम उस पर ईमान लाए

عَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ

और उसी पर भरोसा किया तो अब जान जाओगे 58. कौन खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا

में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह़ को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए 59.

فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿۳۰﴾ ع

तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता 60.

(52) और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से कहते थे कि वोह अ़ज़ाब कहां है जल्दी लाओ अब देख लो येह है वोह अ़ज़ाब जिस की तुम्हें त़लब थी (53) ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कुफ़्फ़ारे मक्का से जो आप की मौत की आरज़ू रखते हैं (54) या'नी मेरे अस्ह़ाब को (55) और हमारी उ़म्रें दराज़ कर दे। (56) तुम्हें तो अपने कुफ़्र के सबब ज़रूर अ़ज़ाब में मुब्तला होना, हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ाइदा देगी। (57) जिस की त़रफ़ हम तुम्हें दा'वत देते हैं। (58) या'नी वक़्ते अ़ज़ाब (59) और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल वग़ैरा से हाथ न आ सके (60) कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके, येह सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यूं इ़बादत में उस क़ादिरे बरह़क़ का शरीक करते हो।

www.dawateislami.net

श-ज-रए आ़लिय्या

हज़राते मशाइख़े किराम सिलसिलए मुबारका क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या

या इलाही रह़्म फ़रमा मुस्त़फ़ा[1] के वासित़े
या रसूलल्लाह करम कीजिये ख़ुदा के वासित़े

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा[2] के वासित़े
कर बलाएं रद शहीदे करबला[3] के वासित़े

सय्यिदे सज्जाद[4] के सदके़ में साजिद रख मुझे
इ़ल्मे ह़क़ दे बाक़िरे[5] इ़ल्मे हुदा के वासित़े

सिद्के़ सादिक़[6] का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम[7] और रज़ा[8] के वासित़े

बहरे मा'रूफ़ो[9] सरी[10] मा'रूफ़ दे बे ख़ुद सरी
जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे[11] बा सफ़ा के वासित़े

बहरे शिब्ली[12] शेरे ह़क़ दुन्या के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे वाहि़द[13] बे रिया के वासित़े

बुल फ़रह़[14] का सदक़ा कर ग़म को फ़रह़ दे हुस्नो सा'द
बुल ह़सन[15] और बू सई़दे[16] सा'दे ज़ा के वासित़े

क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरियों में उठा
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे[17] क़ुदरत नुमा के वासित़े

اَحسَنَ اللّٰهُ لَهُمْ رِزْقًا (1) से दे रिज़्क़े ह़सन
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल अस्फ़िया[18] के वासित़े

नस्र अबी[19] सालेह़ का सदक़ा सालेह़ो मन्सूर रख
दे ह़याते दीं मुह़िय्ये[20] जां फ़िज़ा के वासित़े

तूरे इ़रफ़ानो उ़लुव्वो ह़म्दो ह़ुस्ना व बहा
दे अ़ली[21] मूसा[22] ह़सन[23] अह़मद[24] बहा[25] के वासित़े

---

1 :.... या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें अच्छी रोज़ी अ़त़ा फ़रमाई।

www.dawateislami.net

बहरे इब्राहीम 26 मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी 27 बादशाह के वासित़े
ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शह ज़िया 28 मौला जमालुल औलिया 29 के वासित़े
दे मुह़म्मद 30 के लिये रोज़ी कर अह़मद 31 के लिये
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह 32 से ह़िस्सा गदा के वासित़े
दीनो दुन्या के मुझे ब-रकात दे ब-रकात से
इ़श्क़े ह़क़ दे इ़श्क़ी 33 इ़श्क़े इन्तिमा(1) के वासित़े
हुब्बे अहले बैत दे आले मुह़म्मद 34 के लिये
कर शहीदे इ़श्क़े ह़म्ज़ा 35 पेशवा के वासित़े
दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर
अच्छे प्यारे 36 शम्से दीं बदरुल उ़ला के वासित़े
दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
ह़ज़रते आले रसूले 37 मुक़्तदा के वासित़े
कर अ़त़ा अह़मद रज़ाए अह़मदे मुर्सल मुझे
मेरे मौला ह़ज़रते अह़मद रज़ा 38 के वासित़े
पुर ज़िया कर मेरा चेहरा ह़श्र में ऐ किब्रिया
शह ज़ियाउद्दीन 39 पीरे बा सफ़ा के वासित़े
(2) اَحیِنَا فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا سَلَامٌ بِالسَّلَام
क़ादिरी अ़ब्दुस्सलाम 40 अ़ब्दे रज़ा के वासित़े
इ़श्क़े अह़मद में अ़त़ा कर चश्मे तर सोज़े जिगर
या ख़ुदा **इल्यास** 41 को अह़मद रज़ा के वासित़े
सदक़ा इन आ'यां का दे छे ऐ़न इ़ज़्ज़, इ़ल्मो अ़मल
अ़फ़्वो इ़रफ़ां, आ़फ़िय्यत इस बे नवा के वासित़े

मदीना

1 :.... या'नी इ़श्क़ की निस्बत रखने वाले।

2 :.... या'नी हमें दीन व दुन्या में सलामती अ़त़ा फ़रमा।

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعه
تفسير ابن كثير	ابو الفداء حافظ عماد الدين اسماعيل بن عمر ۷۷۴ھ	دارالكتب العلمية بيروت
التفسيرات الاحمدية	علامة الشيخ احمد ملاجيون جونپوری ۱۱۳۰ھ	پشاور
تفسير الطبری	ابو جعفر محمد بن جرير الطبری ۳۱۰ھ	دارالكتب العلمية بيروت
تفسير روح البيان	الشيخ امام اسماعيل حقی البروسوی ۱۱۳۷ھ	كوئٹه
تفسير عبدالرزاق	امام عبد الرزاق بن همام الصنعانی ۲۱۱ھ	دارالكتب العلمة بيروت
تفسير البحر المحيط	ابو حيان محمد بن يوسف الاندلسی ۷۴۵ھ	دارالكتب العلمية بيروت
تفسير البغوی	امام ابو محمد حسين بن مسعود البغوی ۵۱۶ھ	دارالكتب العلمية بيروت
صحيح البخاری	امام محمد بن اسماعيل البخاری ۲۵۶ھ	دارالكتب العلمة بيروت
صحيح مسلم	امام مسلم بن الحجاج بن مسلم القشيری ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بيروت
سنن الترمذی	امام ابو عيسیٰ محمد بن عيسیٰ الترمذی ۲۷۹ھ	دار الفكر بيروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سليمان بن الاشعث السجستانی ۲۷۵ھ	دار احياء التراث العربی
سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعيب النسائی ۳۰۳ھ	دارالكتب العلمية بيروت
سنن ابن ماجة	امام ابو عبد الله محمد بن يزيد ابن ماجة ۲۷۳ھ	دارالمعرفة بيروت
الموطا	امام الائمة مالک بن أنس ۱۷۹ھ	المكتبة العصرية بيروت
شعب الايمان	امام ابوبكر احمد بن الحسين البيهقی ۴۵۸ھ	دارالكتب العلمية بيروت
المعجم الكبير	حافظ ابوالقاسم سليمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ	دار احياء التراث العربی
مشكوة المصابيح	امام محمد بن عبد الله الخطيب التبريزی ۷۴۲ھ	دارالكتب العلمية بيروت
مجمع الزوائد	حافظ نور الدين علی بن ابی بكر ۸۰۷ھ	دار الفكر بيروت

www.dawateislami.net

مسند الفردوس	حافظ شیرویہ بن شہر دار الدیلمی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت
شرح السنة	امام حسین بن مسعود البغوی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
سنن الدارمی	امام ابو محمد عبد اللّٰہ بن عبد الرحمن الدارمی ۲۵۵ھ	دار المعرفة بیروت
سنن الدار قطنی	امام علی بن عمر الدار قطنی ۳۸۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
السنن الکبری	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیہقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم النیشاپوری ۴۰۵ھ	دار المعرفة بیروت
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی المنذری ۶۵۶ھ	دار الفکر بیروت
الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
کشف الخفاء	امام اسماعیل بن محمد العجلونی ۱۱۶۲ھ	مؤسسة الرسالة بیروت
موسوعة للامام ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابو بکر عبد اللّٰہ بن محمد القرشی ۲۸۱ھ	المکتبة العصریة بیروت
کنز العمال	علامہ علاء الدین علی المتقی بن حسام الدین ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
حلیة الاولیاء	امام حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ الاصبہانی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الزہد الکبیر	امام ابو بکر احمد بن الحسین بن علی البیہقی ۴۵۸ھ	مؤسسة الکتب الثقافیة بیروت
الزہد	امام ابو عبد اللّٰہ احمد بن محمد بن حنبل ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید مصر
کتاب الزہد	شیخ الاسلام امام عبد اللّٰہ بن مبارک المروزی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرء وف المناوی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مرآة المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
شرح مسند ابی حنیفة	امام الہمام علامہ علی القاری الحنفی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
القول البدیع	حافظ محمد بن عبد الرحمن السخاوی ۹۰۲ھ	مؤسسة الریان بیروت
وسائل الوصول	الشیخ یوسف بن اسماعیل النبہانی ۱۳۵۰ھ	دار المنہاج بیروت

www.dawateislami.net

الشمائل المحمدية	امام ابو عيسي محمد بن سورة الترمذي٢٧٩ھ	دار احياء التراث العربى
المختصر القدورى	علامه ابو الحسين احمد بن محمدالقدورى ٤٢٨ھ	مكتبه ضيائيه راوالپنڈى
الهداية	ابو الحسن على بن ابى بكر المرغينانى٥٩٣ ھ	دار احياء التراث العربى
الدرالمختار	امام علاء الدين محمد بن على الحصكفى١٠٨٨ھ	دارالمعرفة بيروت
ردالمحتار	امام محمد امين ابن عابدين الشامى ١٢٥٢ھ	دارالمعرفة بيروت
الفتاوى الهندية	علامة نظام الدين الحنفي ١١٦١ھ وجماعة من علماء الهند	دار احياء التراث العربى
الفتاوى الخانية	امام الشيخ قاضى حسن بن منصور الاوزجندى٥٩٢ھ	پشاور
فتح القدير	امام ابن الهمام كمال الدين محمد بن عبد الواحد٦٨١ھ	كوئٹه
المحيط البرهانى	امام محمود بن احمد البخارى٦١٦ھ	دار احياء التراث العربى
تبيين الحقائق	امام فخر الدين عثمان بن على الزيلعى الحنفى٧٤٣ھ	دارالكتب العلمية بيروت
النهر الفائق	امام ابن نجيم سراج الدين عمر بن ابراهيم الحنفي ١٠٠٥ھ	ملتان
نورالايضاح	علامة ابوالاخلاص حسن بن عمار الشرنبلالي ١٠٦٩ھ	بركات المدينه
الجوهرة النيرة	علامة ابوبكر بن على الحداد ٨٠٠ھ	كراچى
البحر الرائق	امام ابن نجيم زين الدين بن ابراهيم الحنفي ٩٧٠ھ	دارالكتب العلمية بيروت
غنية المتملي	علامة محمد ابراهيم بن الحلبي ٩٥٦ ھ	لاهور
منية المصلي	علامة سديدالدين محمد بن محمد الكاشغرى ٧٠٥ھ	ضياء القران لاهور
خلاصة الفتاوى	علامة طاهر بن عبدالرشيد البخارى ٥٤٢ ھ	كوئٹه
منحة الخالق	علامة سيد محمد امين ابن عابدين الشامي ١٢٥٢ھ	كوئٹه
فتاوى رضويه	اعلى حضرت امام احمد رضا بن تقي علي خان ١٣٤٠ھ	رضا فاؤنڈيشن لاهور
بهار شريعت	صدر الشريعه علامه مفتي امجد علي قادرى ١٣٦٧ھ	مكتبة المدينه كراچي

www.dawateislami.net

احیاء علوم الدین	امام محمد بن احمد الغزالی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
بہجۃ الاسرار	امام علی بن یوسف الشطنوفی ۷۱۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تنبیہ المغترین	امام عبد الوہاب بن احمد بن علی الشعرانی ۹۷۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت
کیمیائے سعادت	امام محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ تہران
مکاشفۃ القلوب	امام محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
منہاج العابدین	امام محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
قوت القلوب	الشیخ ابو طالب محمد بن علی المکی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
العقد الفرید	امام احمد بن محمد بن عبد ربہ الاندلسی ۳۲۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
اتحاف السادۃ المتقین	سید محمد بن محمد الحسینی الزبیدی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار نیشاپوری ۶۲۷ھ	انتشارات گنجینہ تہران
راحت القلوب	فرید الملت و الدین بابا فرید الدین گنج شکر ۶۶۸ھ	شبیر برادرز لاہور
تاریخ مدینۃ دمشق	ابن عساکر امام ابو القاسم علی بن الحسن ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت
المجالسۃ وجواہر العلم	ابو بکر احمد بن مروان الدینوری المالکی ۳۳۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الکامل لابن عدی	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی الجرجانی ۳۶۵ھ	دارالفکر بیروت
التعریفات	علامۃ السید الشریف علی بن محمد الجرجانی ۸۱۶ھ	دار المنار
سبع سنابل	سید مولانا میر عبد الواحد حسینی بلگرامی ۱۰۱۷ھ	مکتبہ قادریہ نظامیہ لاہور
پردے کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
چندے کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु़-रुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ई़दैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहु़ल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ई़द) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्हि़ल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

www.dawateislami.net

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़्हात : 60)
(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़्हात : 46)
(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़्हात : 70)
(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़्हात : 93)
(19,20,21) जदुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार
(अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी)
(कुल सफ़्हात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 160)
(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 200)
(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्हात : 33)
(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्हात : 164)
(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्हात : 32)
(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़्हात : 39)
(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्हात : 152)
(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्हात : 43)
(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 196)
(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़्हात : तक़रीबन 63)
(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़्हात : 325)
(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)
(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)
(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)
(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़्हात : 112)
(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)
(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)
(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात : 124)
(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)
(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़्हात : 275)

www.dawateislami.net

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)

(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

www.dawateislami.net

﴾शो'बए दर्सी कुतुब﴿

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

﴾शो'बए तख़रीज﴿

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

(87) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 274)

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

(88) सरकार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़ह़ात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़ह़ात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें ह़िस्सए दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 32)

www.dawateislami.net

(91) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इ़लाज (कुल सफ़ह़ात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)
(कुल सफ़ह़ात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िकमत (कुल सफ़ह़ात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़ह़ात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़ह़ात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 33)
(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़ह़ात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़ह़ात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2)(कुल सफ़ह़ात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़ह़ात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़ह़ात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़ह़ात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़ह़ात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (4) (कुल सफ़ह़ात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़ह़ात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़ह़ात : 32)

www.dawateislami.net

(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)
(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)
(117) आंखो का तारा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़ह़ात : 32)
(119) बा ब-रकत रोटी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़ह़ात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्द भरी दास्तान (कुल सफ़ह़ात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़ह़ात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 101)
(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 32)
(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़ह़ात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़ह़ात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़ह़ात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अहमदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com